

हरियाणा सरकार

श्रम विभाग

अधिसूचना

दिनांक 29 मार्च, 2005

संख्या 14/58/2002-4 श्रम :- भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकर (नियोजन तथा सेवा शर्त विनियमन) अधिनियम, 1996 (1996 का अधिनियम 27), की धारा 62 की उपधारा (2) के साथ पठित उपधारा (1) तथा धारा 40 की उपधारा (2) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों तथा इस निमित्त उन्हें समर्थ बनाने वाली सभी अन्य शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकारों के नियोजन तथा सेवा शर्तों तथा उनके संरक्षण, स्वास्थ्य तथा कल्याण उपायों के विनियमित करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात् :-

अध्याय I

भाग- I

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम, लागू होना और प्रारम्भ :- (1) ये नियम हरियाणा भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकर (नियोजन तथा सेवा-शर्त विनियमन) नियम, 2005, कहे जा सकते हैं।

(2) ये ऐसे किसी स्थापन से संबंधित भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य को लागू होंगे, जिसके संबंध में समुचित सरकार अधिनियम के अधीन राज्य सरकार है।

(3) ये राजपत्र में इनके प्रकाशन की तिथि को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं— (1) इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "अधिनियम" से भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकर (नियोजन तथा सेवा-शर्त विनियमन) अधिनियम, 1996 (1996 का केन्द्रीय अधिनियम 27); अभिप्रेत है;

(ख) "प्रवेश" या "निर्गम" से कोई गतिपथ मार्ग, सीढ़िया, प्लेटफार्म, निसैनी और कोई अन्य साधन, जो किसी भवन कर्मकार द्वारा सामान्यतया कार्यस्थल में प्रवेश करने या उससे चले जाने या खतरे की दशा में बचने के लिए उपयोग करने के लिए है;

(ग) "अनुमोदित" से यथास्थिति, मुख्य निरीक्षक या राज्य सरकार द्वारा लिखित में अनुमोदित अभिप्रेत है;

(घ) "आधार-पट" से धातु मचान की दशा में टैंकों से भार का विभाजन करने के लिए पट्टी अभिप्रेत है;

(ङ) मचान के संबंध में "खंडक कक्ष" से, मचान के क्षैतिज या उर्ध्व सहारों के मध्य का वह भाग अभिप्रेत है चाहे वह उस भाग से टिका हुआ हो या उसके सहारे हो, जहां से भाग निलम्बित होता है और जो लम्बाई में संलग्न है;

(च) "अनुबंधनी" से मचान में स्थिरता के लिए आड़े-तिरछे रूप से लगाया गया जुड़ने और कसने वाला घटक अभिप्रेत है;

(छ) "दिवाल" से कार्यकरण दाब की प्रपेक्षा निम्न दाब के अधीन कार्यकरण कोष्ठ को मुक्त वायु से या किसी अन्य कोष्ठ से पृथक् करने वाली कोई वायुरोधी संरचना अभिप्रेत है;

(ज) "नीव कोष्ठक" से कोई ऐसा वायु या जलरोधी कोष्ठ, अभिप्रेत है जिसमें व्यक्तियों के लिए समुद्री तल पर वायु मंडलीय दाब की अपेक्षा अधिक वायु दाब के अधीन जल स्तर से नीचे सामग्री के उत्खनन का कार्य करना संभव हो;

(झ) "काफरबांध" से ऐसी संरचना अभिप्रेत है जिसका सन्निर्माण सम्पूर्ण या भागरूप से जल स्तर से नीचे या भूगर्भ में भीतर जल स्तर से नीचे किया गया है और ऐसे कार्यस्थल का उपबंध करने के लिए आवश्यक है, जो जलमुक्त है;

(ञ) "सक्षम" व्यक्ति से राज्य सरकार द्वारा उस रूप में अनुमोदित कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो राज्य में किसी परीक्षण स्थापन का है और जिसके पास उत्पापक साधित्रों, उत्पापक गियरों, तार-रज्जुओं या दाब संयंत्र या उपस्कर के परीक्षण, परीक्षा या तापानुशीलन और प्रमाणिकरण के प्रयोजनों के लिए पर्याप्त अर्हता, अनुभव और कौशल है;

(ट) "संपीडित वायु" से उस दाब तत्त्व यांत्रिक रूप से बढ़ाई गई वायु अभिप्रेत है जो समुद्र तल पर वायु मंडलीय दाब से अधिक है;

(ठ) "सन्निर्माण स्थल" से कोई ऐसा स्थल अभिप्रेत है जहां भवन या अन्य सन्निर्माण से संबंधित कोई प्रक्रियाएं या संक्रियाएं की जाती हैं;

- (ड) "प्रवहणी" से कोई ऐसी यांत्रिक युक्ति अभिप्रेत है जिसका उपयोग एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक भवन सामग्री, वस्तुएं या पैकेज या ठोस प्रपुंज के परिवहन के लिए भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में किया जाता है;
- (ढ) "खतरा" से दुर्घटना का या क्षति का या स्वास्थ्य के लिए खतरा अभिप्रेत है;
- (ण) "निधारना" से व्यक्तियों का किसी मैन-लाक में समुद्र तल पर वायु मंडलीय दाब तक द्रुत विसंपीडन और इसके पश्चात् तत्परता से किसी निधारन लोक में उनका पुनः संपीडन अभिप्रेत है; जहां उनका तब विसंपीडन अनुमोदित प्रक्रियाओं के अनुसार समुचित विसंपीडन टेबल के अनुरूप किया जाता है;
- (त) "भजित करने का कार्य" से किसी भवन से भिन्न किसी भवन या संरचना का सम्पूर्ण या आंशिक रूप से खण्डकरण करने या गिराने के आनुषंगिक या उससे संबंधित कार्य अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत मशीनों या अन्य उपस्कर का हटाना या खण्डकरण करना आता है;
- (थ) "उत्खनन" से सन्निर्माण या भजित करने के कार्य के संबंध में मिटटी, चट्टान या अन्य सामग्री का हटाना अभिप्रेत है;
- (द) "कच्चा काम" से दूला या आकृति के लिए संरचनात्मक सहारा और अनुबंध अभिप्रेत है;
- (ध) "प्रज्वलन ताप" से न्यूनतम लिक्विड ताप अभिप्रेत है जिस पर कोई चिंगारी या ज्वाला लिक्विड से ऊपर वाष्प शून्य में तात्क्षणिक चमक पैदा करती है;
- (न) "प्ररूप" से इन नियमों से संलग्न प्ररूप अभिप्रेत है;
- (प) "चौखटा या प्रतिरूपक मचान" से ऐसा मचान अभिप्रेत है जिसका विनिर्माण इस प्रकार किया जाता है कि मचान की ज्यामिति पूर्व अवधारित हो और मुख्य घटकों का आपेक्षित फासला नियत हो;
- (फ) "रक्षक शलाका" से स्तम्भ को सुरक्षित करने के लिए क्षैतिज शलाका अभिप्रेत है जो व्यक्तियों को गिरने से बचाने के लिए मचानों, भूमि मार्गों, धावन पथों और मार्गिकाओं के खुली तरफ के पार्श्व में परिनिर्मित की गई है;
- (ब) "परिसंकट" से खतरा या संभावित खतरा अभिप्रेत है;
- (भ) "परिसंकटमय पदार्थों" से कोई ऐसा पदार्थ अभिप्रेत है जो उसकी विस्फोटकता, जलनशीलता, विघटनाभिकता, अविषालु या संक्षारक गुणों या अन्य समान लक्षणों के कारण—
- (i) क्षति पहुंचा सकता है; या
 - (ii) मानव-तंत्र को विपरीत रूप से प्रभावित कर सकता है; या
 - (iii) हथालने, परिवहन या भंडारण करते समय कार्य-पर्यावरण में जीवन को हानि या सम्पत्ति को नुकसान पहुंचा सकता है और राष्ट्रीय मानकों के अधीन या उस दशा में जहां ऐसे मानक विद्यमान नहीं हैं, साधारणतः स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार इस रूप में वर्गीकृत है;
- (म) "उच्च दाब वायु" से वातीय औजारों और युक्तियों को शक्ति प्रदाय करने के लिए प्रयुक्त वायु अभिप्रेत है;
- (य) "स्वतंत्र रूप से सहबद्ध मचान" से कोई ऐसा मचान अभिप्रेत है जिसका कार्यकरण प्लेटफार्म, आधार से टैकों की दो या अधिक पंक्तियों के सहारे है और जो आवश्यक सहबद्धों के अलावा भवन से पूर्णतया या मुक्त रूप से खड़ा है;
- (यक) "आड़" से क्षैतिज रूप से फैला हुआ और लम्बाई में मचान को जकड़े हुए कोई घटक अभिप्रेत है और जो अद्वार या मध्यपट्टी लिए सहारे के रूप में कार्य करता है;
- (यख) "उत्थापक साधित्र" से सामग्री, वस्तुओं या भवन कर्मकार के उत्थापन के लिए प्रयुक्त कोई क्रेन, उत्तोलक, डेरिक, विंच, जिन फोल शीर लैंग्ज, जैक, धिरनी बालंब या अन्य उपस्कर अभिप्रेत है;
- (यग) "उत्थापक गियर" से किसी उत्थापक साधित्र की रज्जु जंजीर, हुक, दौला और अन्य उपसाधक अभिप्रेत है;
- (यघ) "लाक परिचर" से किसी मैन-लाक या मैडिकल लाक का कोई ऐसा प्रभारी व्यक्ति अभिप्रेत है जो ऐसे लाकों में व्यक्तियों के संपीडन, पुनः संपीडन या विसंपीडन के लिए सीधा उत्तरदायी है।
- (यड) "न्यून दाब वायु" से कार्यकरण कोष्ठों और मैन लाकों और मैडिकल लाकों के निपीडन के लिए प्रदत्त वायु अभिप्रेत है;
- (यच) "बारुद पर" से ऐसा स्थान अभिप्रेत है जिसमें, चाहे भूमि के ऊपर या उसके नीचे, विस्फोटकों का भंडारण किया जाता है या रखे जाते हैं;
- (यछ) "मैन-लाक" से मैडिकल लाक से भिन्न कोई लाक अभिप्रेत है जिसका उपयोग कार्यकरण कोष्ठ में प्रवेश करने वाले या उसे छोड़ने वाले व्यक्तियों के संपीडन या विसंपीडन के लिए किया जाता है;

- (यज) "सामग्री उत्तोलक" से शक्ति या शारीरिक श्रम से प्रचलित निलम्बित कोई प्लेटफार्म या बाल्टी अभिप्रेत है जिनका स्तम्भ शलाकाओं (गार्डरेल) में प्रचालन किया जाता है और अनन्य रूप से सामग्री के उत्थापन या उतारने के लिए प्रयोग किया जाता है तथा प्रवहण से बाहर किसी बिन्दु से प्रचालन और नियंत्रण किया जाता है;
- (यझ) "सामग्री लाक" से ऐसा कोष्ठ अभिप्रेत है जिनमें से होकर सामग्री और उपस्कर एक वायुदाब पर्यावरण से अन्य में भेजे जाते हैं;
- (यज) "राष्ट्रीय मानकों" से भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा अनुमोदित मानक और भारतीय मानक ब्यूरो के ऐसे मानकों के अभाव में किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित मानक अभिप्रेत है;
- (यट) "पार्श्व-वर्ध" से किसी भवन के भवनमुख से आगे निकली हुई संरचना जिसका भीतरी सिरा जकड़ा हुआ है, अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत शहतीर या अन्य सहारा आता है;
- (यट) "संयंत्र या उपस्कर" के अन्तर्गत कोई संयंत्र, उपस्कर, गियर मशीनरी, साधित्र या साधन अथवा उसका कोई पुर्जा आता है;
- (यड) "दाब" से स्तम्भों में उतना वायु दाब अभिप्रेत है जो वायुमंडलीय दाब से अधिक है;
- (यद) "दाब संयंत्र" से वायु मंडलीय दाब से अधिक दाब पर प्रचालित उसके पाइपों और अन्य फिटिंगों के साथ दाब वाहिका अभिप्रेत है;
- (यण) "अड़वार" से कोई क्षैतिज घटत अभिप्रेत है जिस पर कार्यकरण प्लेटफार्म का बोर्ड, तख्ता या मंच रखा जाता है;
- (यत) "उत्तरदायी व्यक्ति" से नियोजक द्वारा नियुक्त ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो विनिर्दिष्ट कर्तव्य या कर्तव्यों का पालन करने के लिए उत्तरदायी हो और जिसके पास ऐसे कर्तव्य या कर्तव्यों के उचित पालन के लिए पर्याप्त ज्ञान और अनुभव तथा अपेक्षित प्राधिकार हो;
- (यथ) "प्रकट संयोजी" से दो विपरीत सतहों के बीच किसी ट्यूब को कसने के लिए प्रयुक्त संयोजी ट्यूब और फिटिंग का समंजन अभिप्रेत है;
- (यद) "समकोण युग्मक" से समकोण पर ट्यूबों को जोड़ने के लिए रिव्वेल या अड़वार युग्मक से भिन्न कोई युग्मक अभिप्रेत है;
- (यध) "राक बोल्ट" से यांत्रिक प्रसरण बोल्ट या सीमेंटयुक्त या रेजिनबंधन प्रणाली के साथ प्रयुक्त बोल्ट अभिप्रेत है जो राक क्षमता में वृद्धि करने के लिए महाराव या सुरंग की दीवार में बेधित छिद्र में लगाया जाता है;
- (यन) "छत ब्रेकैट" से ढलवां छत सन्निर्माण में प्रयुक्त ऐसे ब्रेकैट अभिप्रेत है जिनमें खिसकने से रोकने के लिए नुकीले बिन्दु या जकेड़ने के अन्य साधन हैं;
- (यप) "सुरक्षा आवरण" से जलप्लावन या जलप्लावित सुरंग से आश्रय के और निकलने के सुरक्षित साधन की व्यवस्था करने के लिए सुरक्षा आवरण और दीवाल के बीच में सुरंग के शिखर को जलप्लावित होने से रोकने की दृष्टि से मुख और दीवाल के बीच संपीड़ित वायु सुरंग के उपरी भाग के आर-पार रखा गया कोई वायु और जलरोधी छिद्रपट अभिप्रेत है;
- (यफ) "निरापद कार्यकरण भार" से उत्थापक गियर या उत्थापक साधित्र की किसी वस्तु के संबंध से सक्षम व्यक्ति द्वारा यथा निर्धारित और प्रमाणित वह भार अभिप्रेत है जो अधिकतम भार है जो ऐसी वस्तु या साधित्र पर सामान्य कार्यकरण स्थितियों में सुरक्षित रूप से रखा जा सकता है;
- (यब) "मंचान" से कोई ऐसी अस्थायी रूप से तैयार की गई नई संरचना, जिससे या जिस पर से भवन कर्मकार, ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के संबंध में कार्य करते हैं, जिनको ये नियम लागू होते हैं और कोई ऐसी अस्थायी रूप से तैयार की गई संरचना, जो भवन कर्मकार को ऐसे स्थान पर पहुंचने में समर्थ बनाती है या सामग्री को वहां तक ले जाने में समर्थ बनाती है जहां पर उक्त कार्य किया जाता है अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत कोई रस्सक शलाका, रोक फलक या अन्य रक्षा कवच और सभी फिटिंग के साथ कोई कार्यकरण प्लेटफार्म, मार्गिका, धावन, निसैनी या सोपान-निसैनी (ऐसी निसैनी या सोपान-निसैनी से भिन्न जो ऐसी संरचना की भागरूप नहीं है) आती है, किन्तु इसके अन्तर्गत उत्थापक साधित्र या उत्थापक मशीन या कोई संरचना नहीं आती है जो केवल ऐसे कोई साधित्र या ऐसी कोई मशीन को सहारा देने के लिए है या अन्य संयंत्र या उपस्कर को सहारा देने के लिए प्रयुक्त है;
- (यभ) "अनुसूची" से इन नियमों से उपाबद्ध कोई अनुसूची अभिप्रेत है;
- (यम) "धारा" से अधिनियम की धारा अभिप्रेत है;
- (यय) "खंड" के अन्तर्गत सुरंग अनुप्रस्थ काट की वक्रता के लिए निर्मित और सुरंग के आधार परिवेश के सहारे के लिए प्रयुक्त ढलवां लोहा या पूर्व निर्मित कंकरीट विभाजित संरचना आती है;

- (ययक) "सर्विस शीफ्ट" से किसी निर्माणधीन में भवन कर्मकारों के आने जाने या सामग्री के लाने ले जाने के लिए संकट अभिप्रेत है;
- (ययख) "शीफ्ट" से क्षैतिज से पैतालीस डिग्री से अधिक कोण पर अनुदैर्घ्य अक्ष वाला कोई उत्खनन अभिप्रेत है, जो—
- (i) किसी भवन कर्मकार या सामग्री के किसी सुरंग में आने-जाने या उसमें से लाने-ले जाने के लिए है, या
 - (ii) किसी विद्यमान सुरंग की ओर है;
- (ययग) "ढाल" से कोई जंगम चौखटा अभिप्रेत है जो सुरंग के खान अताग्र और उसके ठीक पीछे के आधार को सहारा देने के लिए है और इसके अन्तर्गत सुरंग में उत्खनन करने और उत्खनित क्षेत्रों को सहारा देने के लिए परिकल्पित उपस्कर आता है;
- (ययघ) "आधार पट्टिका" से आधार पट्ट या काष्ठ मयान की खड़ी बल्ली से आलम्बी स्थल पर भार के वितरण के लिए प्रयुक्त कोई घटक अभिप्रेत है;
- (ययङ) "टोस या अच्छे सन्निर्माण" से ऐसा सन्निर्माण अभिप्रेत है जो सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के या उस दशा में जहां ऐसे राष्ट्रीय मानक विद्यमान नहीं हैं वहां अन्य सामान्य रूप से स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय इंजीनियरी मानकों या व्यवहार संहिता के अनुरूप है;
- (ययच) "टोस या अच्छी सामग्री" से उस क्वालिटी की सामग्री अभिप्रेत है जो सुसंगत राष्ट्रीय मानकों या उस दशा में जहां ऐसे राष्ट्रीय मानक विद्यमान नहीं हैं वहां अन्य सामान्य रूप से स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय इंजीनियरी मानकों या व्यवहार संहिता के अनुरूप है;
- (ययछ) "खड़ी बल्ली" से मयानों के सन्निर्माण में उर्ध्व द्वारा या स्तंभ के रूप में प्रयुक्त ऐसा घटक जो भार को आधार पर या टोस सन्निर्माण पर आरोपित कर देता है, अभिप्रेत है;
- (ययज) "मानक सुरक्षित प्रचालन व्यवहारों" से वे व्यवहार अभिप्रेत हैं जिनकी पालना भवन और अन्य सन्निर्माण क्रियाकलापों में कर्मकारों की सुरक्षा और स्वास्थ्य तथा ऐसे क्रियाकलापों में प्रयुक्त मशीनरी और उपस्कर के सुरक्षित प्रचालन के लिए की जाती है और ऐसे व्यवहार निम्नलिखित सभी या किसी के अनुरूप होंगे, अर्थात्—
- (i) भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा अनुमोदित सुसंगत मानक;
 - (ii) राष्ट्रीय भवन संहिता;
 - (iii) उपस्कर और मशीनरी के सुरक्षित उपयोग के लिए विनिर्माता के विनिर्देश;
 - (iv) समय-समय पर सशोधित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रकाशित सन्निर्माण उद्योग में सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार संहिता;
- (ययझ) "राज्य सरकार या सरकार" से अभिप्रेत है, हरियाणा राज्य सरकार;
- (ययञ) "इस्पात की शलाका" के अन्तर्गत उत्सात क्षेत्रों का आधार बनाने और स्थिरीकरण के प्रयोजन के लिए प्रयुक्त किसी विशिष्ट सुरंग अनुप्रस्थ काट की अपेक्षाओं के अनुरूप आकृति के सभी इस्पात के बीम और अन्य संरचनात्मक घटक आते हैं; रज्जुओं या जंजीरों के माध्यम से निलंबित और उपर तथा नीचे किए जाने योग्य मयान अभिप्रेत है किन्तु इसके अन्तर्गत बोसुन कुर्सी या वैसा ही साधित्र नहीं है;
- (ययट) "लटकी हुई मयान" से रस्सी या चेन के साधनों द्वारा लटकी हुई मयान अभिप्रेत है तथा उसको खिंचने तथा नीचे ले जाने के लिए समर्थ है किन्तु इसमें बोटसवेन चेयर या उस प्रकार के यंत्र शामिल नहीं हैं ;
- (ययठ) "परीक्षण स्थापन" से इन नियमों के अधीन अपेक्षित उत्पापक साधित्रों या उत्पापक गियर या तार रज्जुक के परीक्षण, परीक्षा, तापानुशीलन करने या वैसे ही अन्य परीक्षण या प्रमाणन के लिए राज्य सरकार द्वारा यथा अनुमोदित परीक्षण और परीक्षा करने की प्रसुविधाओं सहित कोई स्थापन अभिप्रेत है;
- (ययड) "बंधन" से मयान को किसी दृढ़ स्थिरक स्थान से जोड़ने में प्रयुक्त समंजन अभिप्रेत है;
- (ययढ) "रोक फलक" से कोई ऐसा घटक अभिप्रेत है जो भवन कर्मकार और सामग्री के कार्यकरण प्लेटफार्म, प्रवेश चौकी, प्रवेश मार्ग, एक पहिया ठेला, ढाल या अन्य प्लेटफार्म पर से गिरने का निवारण करने के लिए उसके ऊपर स्थिर किया गया है;
- (ययण) "मध्यपट्टी" से किसी स्वतंत्र संयोजन मयान में क्षैतिज रूप से रखी गई और एक आड़ की दूसरी से या एक टंक को दूसरे से अनुप्रस्थत बंधने के लिए कोई घटक अभिप्रेत है;

- (यद्यत) "कैची मचान" के अन्तर्गत कोई ऐसा मचान आता है जिसमें प्लेटफार्म के लिए आधार निम्नलिखित में से कोई है और जो स्थाबल है, अर्थात्:-
- (i) विभक्त सिरा, (ii) मुड़वां (iii) सोपान-सीडी, (iv) तिपडिया, या (v) पूर्वोक्त में किसी के समान चलाय गान साधन;
- (यद्यथ) "नालिकाकृत मचान" से नालिकाओं और युग्मकों से सन्निर्मित मचान अभिप्रेत है;
- (यद्यद) "सुरंग" से ऊपरिभार के नीचे उत्खनन द्वारा बनाया गया भूमिगत रास्ता अभिप्रेत है जिसमें से कोई भवन कर्मकार काम करने के लिए प्रवेश करता है या जिसमें से प्रवेश करने की अपेक्षा है;
- (यद्यथ) "अंतर्गम" से शैफ्ट सुरंग, नीव कौष्टक या काफर बांध के घेरे के भीतर या कोई स्थान अभिप्रेत है;
- (यद्यन) "यान" से कोई यान अभिप्रेत है जो यांत्रिक या वैद्युत शक्ति से नोदित या चालित है और इसके अन्तर्गत ट्रैलर, कर्षण इंजन, ट्रैक्टर, सड़क-निर्मात्री मशीन और परिवहन उपस्कर आते हैं;
- (यद्यप) "कार्यकरण कोष्ठ" से सन्निर्माण स्थल का कोई ऐसा भाग अभिप्रेत है जहां संपीडित वायु प्रयोग में काम किया जाता है किन्तु इसके अन्तर्गत मेन-लाक या मेडिकल-लाक नहीं आता है;
- (यद्यफ) "कार्यकरण प्लेटफार्म" से कोई प्लेटफार्म अभिप्रेत है जिसका उपयोग भवन कर्मकारों या सामग्रियों को सहारा देने के लिए किया जाता है और इसके अन्तर्गत कार्यकरण मंच आता है;
- (यद्यब) "कार्यकरण दाब" से कार्यकरण कोष्ठ में का दाब अभिप्रेत है, जिसमें भवन कर्मकार को रखा जाता है;
- (यद्यभ) "कार्यस्थल" से वे सभी स्थान अभिप्रेत हैं जहां भवन कर्मकारों से उपस्थित रहने या काम करने के लिए जाने की अपेक्षा है और जो नियोजक के नियंत्रण के अधीन हैं।

(2) उन शब्दों या पदों के, जो इन नियमों में परिभाषित नहीं किए गए हैं किन्तु अधिनियम में परिभाषित या प्रयुक्त हैं, वहीं अर्थ होगा जो अधिनियम में उनका है।

अध्याय - II

राज्य सलाहकार समिति

3. धारा 4 राज्य सलाहकार समिति का गठन - राज्य भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकार सलाहकार समिति (जिससे इसमें इसके पश्चात् राज्य सलाहकार समिति कहा गया है) निम्नलिखित से मिलकर बनेगी-

- (क) अध्यक्ष, जो राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाएगा;
- (ख) राज्य विधानमण्डल के दो सदस्य जो राज्य विधान मण्डल द्वारा सदस्यों के रूप में निर्वाचित किए जाएंगे;
- (ग) एक सदस्य केन्द्रीय सरकार द्वारा मनोनीत किया जाएगा;
- (घ) मुख्य निरीक्षक, पदेन सदस्य;
- (ङ) भवन कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन व्यक्ति राज्य सरकार द्वारा सदस्यों के रूप में मनोनीत किए जाएंगे;
- (च) तीन व्यक्ति, जिनका नामनिर्देश भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य से संसक्त नियोजकों का प्रतिनिधित्व करने के लिए राज्य सरकार द्वारा किया जाएगा;
- (छ) पांच व्यक्ति, राज्य सरकार द्वारा मनोनीत किए जाएंगे जिनमें से एक राज्य स्तरीय वास्तुविदों के संगम से, एक इंजीनियरों में से दुर्घटना बीमा संस्था का जो भवन संरचना का अनुभव रखता हो, एक कल्याण विशेषज्ञ तथा एक मीडिया का प्रतिनिधित्व करने वाला होगा।

4. धारा 4 पदवाधि - (1) राज्य सलाहकार समिति का अध्यक्ष, राजपत्र में उराकी नियुक्ति अधिसूचित की जाने की तारीख से पांच वर्ष की अवधि के लिए पद धारण करेगा।

(2) नियम 3 के खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक सदस्य, पांच वर्ष के लिए या यथारिथति, राज्य विधानमण्डल के सदस्य रहने तक, इसमें जो भी पूर्वतर हो, पद धारण करेगा।

(3) नियम 3 के खण्ड (ग), खण्ड (घ) और (ङ) में निर्दिष्ट सदस्य, ऐसी अवधि के दौरान इस रूप में पद धारण करेंगे, जो राज्य सरकार विनिर्दिष्ट करे।

(4) नियम 3 के खण्ड (ड), खण्ड (च) और खण्ड (छ) में निर्दिष्ट प्रत्येक सदस्य, उस तारीख से प्रारम्भ होने वाली पांच वर्ष की अवधि के लिए इस रूप में पद धारण करेंगे, जिसको उसकी नियुक्ति राजपत्र में अधिसूचित की जाती है :

परन्तु जहां ऐसे किसी सदस्य के उत्तराधिकारी की नियुक्ति उक्त पांच वर्ष की अवधि की समाप्ति पर या उसके पहले अधिसूचित नहीं की जाती है तो ऐसा सदस्य उसके पद की अवधि समाप्त होने पर भी तब तक ऐसा पद धारण करता रहेगा जब तक कि उसके उत्तराधिकारी की नियुक्ति राजपत्र में अधिसूचित नहीं कर दी जाती है।

(5) यदि कोई सदस्य समिति की किसी बैठक में भाग लेने में असमर्थ है तो अध्यक्ष ऐसे सदस्य को लिखित में सूचना देने के पश्चात् बैठक में उपस्थित होने के लिए ऐसे सदस्य के प्रतिस्थानी को नामनिर्दिष्ट कर सकेगा और ऐसे प्रतिस्थानी सदस्य के उक्त बैठक की बाबत ऐसे सदस्य की सभी अधिकार और विशेषाधिकार प्राप्त होंगे।

(6) राज्य सलाहकार समिति का प्रत्येक पांच वर्ष के पश्चात् पुनर्गठन किया जाएगा।

5. धारा 4 त्यागपत्र - (1) राज्य सलाहकार समिति का कोई सदस्य, जो पदेन सदस्य नहीं है, ऐसी समिति के अध्यक्ष को पूर्व जानकारी देकर श्रम सचिव के माध्यम से राज्य सरकार को सम्बोधित लिखित में पत्र देकर अपने पद को त्याग सकेगा।

(2) ऐसे सदस्य का स्थान उस तारीख से जिसका राज्य सरकार द्वारा त्यागपत्र स्वीकार किया जाता है या उस सरकार द्वारा त्यागपत्र की प्राप्ति की तारीख से तीस दिन के अवसान पर, इसमें जो भी पूर्वतर हो, रिक्त हो जाएगा।

6. धारा 4 सदस्यता का समाप्त होना - यदि राज्य सलाहकार समिति का कोई सदस्य, जो पदेन सदस्य नहीं है, ऐसी समिति के अध्यक्ष से ऐसी अनुपस्थिति के लिए छुट्टी प्राप्त किए बिना उक्त समिति की लगातार तीन बैठकों में उपस्थित रहने में असमर्थ रहता है तो वह ऐसी समिति का सदस्य नहीं रह जाएगा।

परन्तु यह कि राज्य सरकार, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि ऐसा सदस्य तीन लगातार बैठकों में उपस्थित रहने से पर्याप्त कारण से निर्वारित किया गया था तो वह निदेश दे सकेगी कि सदस्यता की ऐसी समाप्ति नहीं होगी और ऐसा निदेश दिए जाने पर ऐसा सदस्य ऐसी समिति का सदस्य बना रहेगा।

7. धारा 4 सदस्यता के लिए निरर्हता - (1) कोई व्यक्ति, राज्य सलाहकार समिति का सदस्य होने के लिए निरर्ह होगा -

(i) यदि वह विकृतचित्त का है और किसी सक्षम न्यायालय द्वारा ऐसा घोषित किया गया है;

(ii) यदि वह अननुमोचित दिवालिया है, या

(iii) यदि वह किसी ऐसे अपराध के लिए सिद्धदोष उहराया गया है जिसमें राज्य सरकार की राय में नैतिक अधमता अन्तर्वलित है।

(2) यदि यह प्रश्न उद्भूत होता है कि क्या कोई निरर्हता उपनियम (1) के अधीन उपगत की गई है, तो ऐसे प्रश्न का विनिश्चय राज्य सरकार करेगी।

8. धारा 4 सदस्यता से हटाया जाना - राज्य सरकार, राज्य सलाहकार समिति के किसी सदस्य को पद से हटा सकेगी यदि उसकी राय में उक्त सदस्य ऐसे हित का प्रतिनिधि नहीं रह गया है जिसका उसके द्वारा ऐसी समिति में प्रतिनिधित्व करना तात्पर्यित है:

परन्तु ऐसे किसी सदस्य को तब तक नहीं हटाया जाएगा जब तक कि इस नियम के अधिन प्रस्तावित कारवाई के विरुद्ध अभ्यावेदन करने के लिए उसे उचित अवसर न दे दिया गया हो।

9. धारा 4 रिक्तियां भरने की रीति - जब राज्य सलाहकार समिति की सदस्यता में कोई रिक्ति होती है या रिक्ति होने की संभावना है, तब ऐसी समिति का अध्यक्ष, राज्य सरकार को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और ऐसी रिपोर्ट की प्राप्ति पर राज्य सरकार, उस प्रवर्ग के व्यक्तियों में से, जिसका कि सदस्यता रिक्त करने वाला व्यक्ति है, नियुक्ति द्वारा रिक्ति भरने के लिए कदम उठाएगी और इस प्रकार नियुक्त व्यक्ति, उस सदस्य की शेष अवधि के लिए पद धारण करेगा जिसके स्थान पर उसकी नियुक्ति की गई है।

10. धारा 4 राज्य सलाहकार समिति के कर्मचारिवृन्द - (1) राज्य सरकार, अपने किसी एक अधिकारी को जो श्रम आयुक्त की पदवी से कम का न हो राज्य सलाहकार समिति के सचिव के रूप में नियुक्त कर सकेगी और ऐसी समिति को उसके कृत्यों को कार्यान्वित करने में समर्थ बनाने के लिए उस सरकार की सेवा में ऐसे अन्य कर्मचारिवृन्द नियुक्त कर सकेगी, जो वह ठीक समझे।

(2) ऐसे कर्मचारिवृन्द को ऐसा पारिश्रमिक संदेय होगा, जिसका विनिश्चय समय-समय पर, राज्य सरकार द्वारा किया जाए।

11. धारा 4 राज्य सलाहकार समिति के सचिव के कृत्य -

(i) समिति की बैठक को बुलाने में ऐसी समिति के अध्यक्ष की सहायता करेगा;

(ii) ऐसी समिति की बैठकों में उपस्थिति हो सकेगा किन्तु ऐसी बैठकों में मत देने का हकदार नहीं होगा;

(iii) ऐसी समिति की बैठकों कार्यवृत्त का अभिलेख रखेगा; और

(iv) ऐसी समिति की बैठकों में लिए गए विनिश्चयों को कार्यान्वित करने के आवश्यक उपाय करेगा।

12. धारा 4 सदस्यों के भत्ते - (1) राज्य सलाहकार समिति के शासकीय सदस्यों को यात्रा-भत्ता पदीय कर्तव्यों के लिए उसके द्वारा की गई यात्रा के संबंध में उसे लागू नियमों द्वारा शासित होगा और उसे वेतन का संदाय करने वाले प्राधिकारी द्वारा संदत्त किया जाएगा।

(2) राज्य सलाहकार समिति के गैर-शासकीय सदस्य को ऐसी समिति की बैठकों में उपस्थित रहने के लिए यात्रा भत्ते का संदाय ऐसी दर से किया जाएगा जो राज्य ग्रेड-1 अधिकारी को संदेय है।

13. धारा 4 कारबार का निपटारा - (1) ऐसा प्रत्येक विषय जिस पर विचार करने की राज्य सलाहकार समिति से अपेक्षा है, उस पर उस समिति की बैठक में विचार किया जाएगा या यदि ऐसी समिति का अध्यक्ष ऐसा निर्देश दे तो राय के लिए आवश्यक कागजपत्र प्रत्येक सदस्य को भेजे जाएंगे और विषय का निपटारा बहुमत के विनिश्चय के अनुसार किया जाएगा।

परन्तु यह कि जहां किसी विषय पर बहुमत की कोई राय नहीं है और ऐसी समिति के सदस्य समान रूप से बंटे हुए हैं वहां अध्यक्ष द्वितीयक या निर्णायक मत देगा।

स्पष्टीकरण- इस नियम के प्रयोजन के लिए "राज्य सलाहकार समिति का अध्यक्ष" पद के अन्तर्गत ऐसी समिति का अध्यक्ष आता है जो बैठक की अध्यक्षता करने के लिए नियम 15 के उपनियम (2) के अधीन नामनिर्दिष्ट या चयनित किया गया है।

(2) राज्य सलाहकार समिति का कोई कृत्य या कार्यवाही केवल इस कारण से अविधिमान्य नहीं होगी कि समिति के गठन में कोई रिक्ति है या कोई त्रुटि है।

14. धारा 4 बैठकों - (1) राज्य सलाहकार समिति की बैठक उन स्थानों पर और ऐसे समयों पर होगी, जिसका विनिश्चय ऐसी समिति का अध्यक्ष करें और इसकी बैठक छह मास में कम से कम एक बार होगी।

(2) ऐसी समिति का अध्यक्ष समिति को प्रत्येक ऐसी बैठक की अध्यक्षता करेगा जिसमें कि वह उपस्थित है और उसकी अनुपस्थिति में वह उसके स्थान पर ऐसी बैठक की अध्यक्षता करने के लिए समिति के किसी सदस्य को नामनिर्देशित कर सकेगा और अध्यक्ष द्वारा ऐसे नामनिर्देशन के अभाव में ऐसी बैठक में उपस्थित ऐसी समिति के सदस्य बैठक की अध्यक्षता करने के लिए सदस्यों में से किसी का चयन कर सकेंगे।

15. धारा 4 बैठकों की सूचना और कारबार की सूची - (1) साधारणतया, राज्य सलाहकार समिति के सदस्यों को प्रस्तावित बैठक की दो सप्ताह की सूचना दी जाएगी।

परन्तु यह कि ऐसी समिति का अध्यक्ष यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि ऐसा करना समीचीन है तो ऐसी बैठक के लिए दीर्घतर अवधि की सूचना दे सकेगा जो एक मास से अधिक की नहीं होगी।

(2) ऐसी समिति की बैठक के लिए कारबार की सूची में सम्मिलित से भिन्न किसी कारबार पर समिति के अध्यक्ष की अनुज्ञा के बिना ऐसी बैठक में विचार नहीं किया जाएगा।

16. धारा 4 गणपूर्ति - राज्य सलाहकार समिति की किसी बैठक में किसी कारबार का संव्यवहार तब तक नहीं किया जाएगा जब तक उस बैठक में ऐसी समिति के कम से कम छह सदस्य उपस्थित न हों जिसमें कम से कम राज्य विधान मण्डल का एक सदस्य शामिल होगा।

परन्तु यह कि ऐसी समिति की किसी बैठक में छह सदस्य से कम उपस्थित हैं तो ऐसी समिति का अध्यक्ष, को अन्य तारीख के लिए बैठक के स्थगन की उपस्थित सदस्यों को जानकारी देते हुए और अन्य सदस्यों को सूचना देते हुए कि वह स्थगित बैठक में कारबार को निपटाने की प्रस्थापना करता है चाहे उसमें विहित गणपूर्ति हो या न हो और उस पर उसके दि. यह विधिपूर्ण होगा कि वह उपस्थित सदस्यों की संख्या को विचार में लिए बिना स्थगित बैठक में कारबार का निपटारा करे।

अध्याय III

भाग I

स्थापनों को रजिस्ट्रीकरण

17. धारा 7 स्थापनों के रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करने की रीति - (1) अधिनियम की धारा (7) की उपधारा (1) में निर्दिष्ट आवेदन, इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप-1, में तीन प्रतियों में, अधिनियम की धारा (6) के अधीन नियुक्त उस क्षेत्र के रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को किया जाएगा, जिसमें कि स्थापन द्वारा भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य किया जाना है।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्रत्येक आवेदन के साथ स्थापन के रजिस्ट्रीकरण के लिए फीस का संदाय दर्शाने वाला गंगदेय ड्राफ्ट होगा।

(3) उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्रत्येक आवेदन या तो रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को व्यक्तिगत रूप से किया जायेगा या रजिस्ट्रीकृत डाक से उसे भेजा जायेगा।

(4) उपनियम (1) में निर्दिष्ट आवेदन की प्राप्ति पर, रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, आवेदन पर उसके द्वारा प्राप्ति की तारीख अंकित करने के पश्चात् आवेदक को उसकी अभिसूची देगी।

18. धारा 7 रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र का दिया जाना - (1) रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, नियम 17 के उपनियम (1) के अधीन आवेदन को प्राप्ति के पश्चात् स्थापन को रजिस्टर करेगा और आवेदक को आवेदन की प्राप्ति से तीस दिन के भीतर यदि आवेदक ने इन नियमों में अधिकथित सभी अपेक्षाओं की पूर्ति कर-दी है और ऐसी अवधि के भीतर आवेदन किया है जो अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (क) और (ख) के अधीन विनिर्दिष्ट है तो रजिस्ट्रीकरण-प्रमाण-पत्र जारी करेगा। रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा दिए जाने वाला रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप-III में होगा।

(2) रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप-III में रजिस्टर बनाएगा, जिसमें इन स्थापनों की विशिष्टियां दर्शित होंगी, जिनके सम्बन्ध में उसके द्वारा रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र दिया गया है।

(3) यदि किसी स्थापन के सम्बन्ध में रजिस्ट्रीकरण के प्रमाण-पत्र में विनिर्दिष्ट स्वामित्व या प्रबन्ध या अन्य विशिष्टियों में कोई परिवर्तन होता है तो स्थापन का नियोजक, रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को उस तारीख से तीस दिन के भीतर जिसको ऐसा परिवर्तन होता है, ऐसे परिवर्तन की तारीख तथा विशिष्टियों की और उसके कारणों की सूचना देगा।

19. धारा 7 अतिरिक्त फीस का संदाय और रजिस्टर का संशोधन आदि - (1) जहां नियम (13) के उपनियम (3) के अधीन सूचना की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकरण अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि उस रकम से अधिक रकम संदेय है जिसका संदाय स्थापन के रजिस्ट्रीकरण के लिए फीस के रूप में नियोजक द्वारा किया गया है तो वह ऐसे नियोजक से ऐसी अतिरिक्त राशि का संदाय करने की अपेक्षा करेगा जो ऐसे नियोजक के द्वारा पहले से संदत्त रकम को मिलाकर स्थापन के रजिस्ट्रीकरण के लिए संदेय फीस की ऐसी उच्चतर रकम के बराबर होगी।

(2) जहां नियम (18) के उपनियम (3) में निर्दिष्ट सूचना की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकरण अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप-III में रजिस्टर में यथाप्रविष्ट स्थापन की विशिष्टियों में कोई परिवर्तन कारित किया गया है वहां वह उक्त रजिस्टर और अभिलेख में संशोधन उस परिवर्तन के लिए करेगा जो किया गया है।

परन्तु यह कि रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप-III में रजिस्टर में कोई संशोधन तब तक नहीं करेगा जब तक कि नियोजक द्वारा समुचित फीस का निक्षेप न कर दिया गया हो।

20. धारा 7 रजिस्ट्रीकरण की शर्तें -

(1) नियम 18 के अधीन जारी दिया गया प्रत्येक रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र निम्नलिखित शर्तों के अधीन होगा, अर्थात्:-

(क) रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र अहस्तांतरणीय होगा; अर्थात्

(ख) किसी स्थापन में भवन कर्मकार के रूप में नियोजित कर्मकारों की संख्या किसी भी दिन रजिस्ट्रीकरण के प्रमाण-पत्र में विनिर्दिष्ट अधिकतम संख्या से अधिक नहीं होगी; और

(ग) इन नियमों से जैसा उपबन्धित है उसके सिवाय रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र देने के लिए संदत्त फीस अग्रतिदेय होगी।

(2) नियोजक, पन्द्रह दिन के भीतर रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को कर्मकारों की संख्या या कार्य की शर्तों में किसी परिवर्तन की, यदि कोई हो, सूचना देगा।

(3) नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के प्रारम्भ और पूरा होने से तीस दिन के पहले इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप - IV में उस निरीक्षक को लिखित सूचना भेजेगा जिसकी उस क्षेत्र पर अधिकारिता है जहां प्रस्तावित भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य का निष्पादन किया जाना है जिसमें ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के, यथास्थिति, प्रारम्भ या पूरा होने की वास्तविक तारीख की सूचना होगी।

(4) स्थापन का रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र केवल ऐसे भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य के लिए विधिमान्य होगा जो ऐसे स्थापन द्वारा कार्यान्वित किया गया है जिसके लिए उपधारा (3) के अधीन अपेक्षित सूचना दी गई है।

(5) रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र की एक प्रति परिसर के ऐसे सहजदृश्य स्थान पर प्रदर्शित की जाएगी जहां भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य कार्यान्वित किया जाना है।

21. धारा 7 फीस - नियम 19 के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र मंजूर करने के लिए संदेय फीस वह होगी जो नीचे विनिर्दिष्ट है, अर्थात्; यदि किसी एक दिन में भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के लिए भवन कर्मकार के रूप में नियोजित किए जाने के लिए प्रस्तावित कर्मकारों की संख्या-

(क)	100 तक है	:	2,000-00 रुपये
(ख)	100 से अधिक किन्तु 500 से कम है	:	5,000-00 रुपये
(ग)	500 से अधिक है	:	10,000-00 रुपये

अध्याय III

भाग II

अपील, आदेशों की प्रतियां, फीसों का संदाय आदि

22. धारा 9 अपील अधिकारी के समक्ष अपील फाइल करना - (1) अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (1) के अधीन प्रत्येक अपील व्यक्तित्व या उसके प्राधिकृत अधिवक्ता द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन के रूप में की जाएगी और अपील अधिकारी को व्यक्तिगत रूप से या रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा उसे भेजकर प्रस्तुत की जाएगी।

(2) ज्ञापन के साथ उस आदेश की प्रमाणित प्रति जिसके विरुद्ध अपील की गई है और एक सौ रुपये का मांग देय ड्राफ्ट होगा।

(3) ज्ञापन में संक्षिप्त रूप से और सुभिन्न मदों के अधीन अपील के आधार उपवर्णित होंगे।

(4) जहां अपील ज्ञापन उपनियम (2) और उपनियम (3) के उपबंधों की अनुपालना नहीं करता है यहां अपीलार्थी को अपील अधिकारी द्वारा नियत किए गए समय के भीतर उस प्रयोजन के संशोधन करने के लिए वापस किया जाएगा जो उस तारीख से जिसको वह आदेश अपीलार्थी को संसूचित किया गया था, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, तीस दिन से अधिक नहीं होगा।

(5) जहां अपील ज्ञापन व्यवस्थित है वहां अपील अधिकारी अपील को ग्रहण करेगा, उस पर ऐसे अपील की सुनवाई की तारीख पृष्ठांकित करेगा इस प्रयोजन के लिए रखे जाने वाली ऐसी पुस्तिका में अपील को रजिस्टर करेगा, जिसका नाम अपीलों का रजिस्टर होगा।

(6) (i) जब उपनियम (5) के अधीन अपील ग्रहण कर ली जाती है तब अपील अधिकारी, अपील की सूचना उस रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को भेजेगा जिसके आदेश के विरुद्ध अपील की गई है और रजिस्ट्रीकरण अधिकारी उस पर मामले का अभिलेख अपील अधिकारी को भेजेगा।

(ii) अभिलेख प्राप्त होने पर अपील अधिकारी, ऐसी तारीख और ऐसे समय पर जो अपील की सुनवाई के लिए सूचना-पत्र में विनिर्दिष्ट की जाए उसके समक्ष उपस्थित होने के लिए अपीलार्थी को सूचना भेजेगा।

23. धारा 9 सुनवाई की तारीख को उपस्थित होने में असफलता - यदि सुनवाई के लिए नियत तारीख को अपीलार्थी उपस्थित नहीं होता है तो अपील अधिकारी, उपस्थित होने में चूक के लिए अपील को खारिज कर सकता है।

24. धारा 9 अपीलों का प्रत्यावर्तन - जहां कोई अपील, नियम 23 के अधीन खारिज कर दी जाती है वहां अपीलार्थी, अपील के प्रत्यावर्तन के लिए अपील अधिकारी को आवेदन कर सकेगा और यदि अपील अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि अपीलार्थी उपस्थित होने से पर्याप्त कारणों से निवारित किया गया था तो अपील अधिकारी अपील को उसकी मूल संख्या पर प्रत्यावर्तित करेगा।

परन्तु इस नियम के अधीन प्रत्यावर्तन के लिए आवेदन अपील अधिकारी द्वारा ऐसे खारिज किए जाने की तारीख से तीस दिन के पश्चात् ग्रहण नहीं की जाएगी।

25. धारा 9 अपील की सुनवाई - (1) यदि अपीलार्थी, उस समय उपस्थित है जब अपील सुनवाई के लिए ली जाती है तब अपील अधिकारी, अपीलार्थी या उसके प्राधिकृत अधिवक्ता को सुनने के लिए अग्रसर हो और अपील पर उस आदेश की जिसके विरुद्ध अपील की गई है या तो पुष्टि करने वाला, उलटने वाला या फेरफारित करने वाला आदेश पारित करेगा।

(2) अपील अधिकारी के आदेश में अवधारण के लिए बिंदु, उस पर विनिश्चय और ऐसे विनिश्चयों के लिए कारण कथित होंगे।

(3) अपीलार्थी को आदेश संसूचित किया जाएगा और उसकी प्रति उस रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को भेजी जाएगी, जिसके आदेश के विरुद्ध अपील की गई थी।

26. धारा 9 रजिस्ट्रीकरण के आदेश की या अपील में आदेश की प्रति - रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के या अपील अधिकारी के आदेश की प्रति सम्बन्धित व्यक्ति या उसके द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा, प्रत्येक आदेश के लिए एक सौ रुपये की फीस के संदाय के साथ, यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण अधिकारी या अपील अधिकारी को आवेदन करने पर, जिसमें सम्बन्धित अधिकारी द्वारा किए गए आदेश की तारीख और विशिष्टियों विनिर्दिष्ट होंगी, प्राप्त की जा सकेंगी। खो जाने या विकृत हो जाने पर रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र की प्रति वैसी ही फीस के संदाय पर और उसी रीति से प्राप्त की जा सकेंगी।

27. धारा 9 फीस की संदाय - (1) रजिस्ट्रीकरण, अपील, रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र की प्रतियां या दूसरी प्रतियों के प्रदाय के लिए संदाय धन को सभी रकमों, जो इस निमित्त विनिर्दिष्ट की जाए, लेखा शीर्ष के अधीन स्थानीय खजाने में संदत्त की जाएंगी तथा प्राप्त की गई रसीदें यथास्थिति मूल रूप में अपील के आवेदन या ज्ञापन के साथ प्रस्तुत की जाएंगी।

अध्याय IV

हिताधिकारियों के रूप में भवन कर्मकार का पंजीकरण

28. धारा 12 सदस्यता - (1) प्रत्येक भवन कर्मकार जिसने आयु के 18 वर्ष पूरे कर लिए हों किन्तु उसकी आयु साठ वर्ष से कम हो और जो तात्कालिक लागू किसी विधि के अधीन किसी अन्य कल्याण निधि का सदस्य न हो और जिसने तुरन्त पूर्ववर्ती वर्ष में भवन कर्मकार के रूप में नब्बे दिन की सेवा पूरी कर ली हो, निधि में सदस्यता के लिए पात्र होगा।

(2) नीचे विनिर्दिष्ट के अनुसार, आयु सिद्ध करने हेतु उसे प्रमाण पत्र के साथ आवेदन भी देना होगा :-

(i) स्कूल के अभिलेख ;

(ii) जन्म तथा मृत्यु रजिस्टर से प्रमाण पत्र;

(iii) उपरोक्त के प्रमाण पत्र न होने पर, ऐसे चिकित्सा अधिकारी से प्रमाण पत्र जो सरकारी सेवा में चिकित्सा अधिकारी से नीचे के रैंक का न हो ।

(3) नियोजक अथवा ठेकेदार से यह प्रमाण पत्र कि आवेदक भवन कर्मकार है, पंजीकरण हेतु आवेदन के साथ प्रस्तुत किया जाएगा । यदि ऐसा प्रमाण पत्र उपलब्ध न हो तो पंजीकृत भवन कर्मकार यूनियन द्वारा जारी प्रमाण पत्र अथवा सम्बद्ध क्षेत्र के श्रम अधिकारी या औद्योगिक सुरक्षा और स्वास्थ्य सहायक निदेशक द्वारा जारी प्रमाण पत्र अथवा पंचायत के कार्यकारी अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र भी विचारा जा सकता है।

(4) निधि का हिताधिकारी के लिए पात्र बनने के लिए प्रत्येक भवन कर्मकार को प्ररूप V में अपना आवेदन पत्र सचिव अथवा इस निमित्त उस द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी को प्रस्तुत करेगा। प्रत्येक ऐसे आवेदन के साथ इस नियम में वर्णित दस्तावेज और पच्चीस रुपये की पंजीकरण फीस संलग्न की जाएगी।

(5) जहां सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत अधिकारी संतुष्ट हो कि प्रार्थी सभी शर्तों को पूरी करता है तो ऐसा भवन कर्मकार सदस्य के रूप में पंजीकृत किया जाएगा ।

(6) कोई भी व्यक्ति, उप नियम-(5) के अधीन लिए गए निर्णय के विरुद्ध बोर्ड को अपील दायर कर सकता है और उस पर बोर्ड का निर्णय अन्तिम होगा ।

(7) भवन कर्मकार प्ररूप VI में नामांकन भी भरेगा । नामांकन श्रमिक का परिवार बनने पर अथवा परिवार की हैसियत में कोई कानूनी परिवर्तन हो जाने पर पति/पत्नी के नाम पुनरीक्षित किया जाएगा।

(8) सचिव अथवा इस निमित्त उस द्वारा प्राधिकृत अन्य अधिकारी प्रत्येक हिताधिकारी को पहचान पत्र जारी करेगा जिस पर प्ररूप VII में हिताधिकारी की तस्वीर लगाई जाएगी और प्ररूप VIII में इस प्रकार जारी किए गए पहचान पत्रों का रजिस्टर रखा जाएगा।

29. धारा 16 निधि में अंशदान- (1) निधि का हिताधिकारी पच्चीस रुपये प्रतिमास निधि में अंशदान करेगा । इस अंशदान की राशि तीन मास में एक बार बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट, जिला जिसमें सदस्य निवास करता है, के किसी बैंक में अग्रिम में जमा करवानी होगी ।

(2) यदि कोई हिताधिकारी एक वर्ष की अवधि के लिए निरन्तर अंशदान के भुगतान में चूक करता है तो वह निधि का हिताधिकारी नहीं रहेगा। तथापि सचिव अथवा उसकी ओर से इस निमित्त प्राधिकृत अधिकारी परन्तु ऐसा पुनरांश दो बार से अधिक दो रुपये प्रतिमास के जुर्माने के साथ अंशदान के बकाया के परिशोधन पर पुनः प्राप्त कर सकता है, अनुज्ञात नहीं होगा।

30. धारा 62 विवरणी दायर करने के लिए नियोजक का कर्तव्य- (1) प्रत्येक नियोजक, इन नियमों के लागू होने से पन्द्रह दिन के अन्दर सचिव को समेकित विवरणी भेजेगा जिसमें पंजीकरण के रूप में भवन कर्मकारों की मूल मजदूरी, भत्ते और भोजन की निशुल्क आपूर्ति के लिए खर्च की जा रही राशि यदि कोई हो, दर्शाते हुए ब्योरे दिए जाएंगे।

(2) प्रत्येक नियोजक, प्रत्येक मास के पन्द्रह दिन से पहले सचिव अथवा इस निमित्त उस द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को प्ररूप IX में विवरणी भेजेगा जिसमें पंजीकृत के रूप में कर्मकारों के साथ साथ उन कर्मकारों, जो पूर्ववर्ती मास के दौरान सेवा छोड़ गए हैं, के ब्योरे दर्शाए जाएंगे।

(3) प्रत्येक नियोजक, सचिव अथवा इस निमित्त उसकी ओर से प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को प्ररूप संख्या X में विवरण भेजेगा जिसमें शाखाओं, निर्देशकों, प्रबंधकों, अधिभोगियों, भागीदारों, व्यक्ति/व्यक्तियों के सम्बन्ध में विवरण शामिल होंगे जिनका उनकी स्थापना के मामलों पर अन्तिम नियंत्रण होगा।

30. धारा 62 अभिलेखन और रजिस्ट्रों का रख रखाव और प्रस्तुति- (1) प्रत्येक नियोजक एक रजिस्टर रखेगा जिस में भवन कर्मकारों का विवरण होगा तथा अंशदान का रजिस्टर ऐसे रूप में होगा जैसा सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा निर्देश दिए जायें ।

(2) प्रत्येक कर्मचारी जब कभी सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी भवन कर्मकार के सम्बन्ध में अभिलेख प्रस्तुत करने के लिए लिखित में अपेक्षा करता है, तो ऐसा अभिलेख समय पर सम्बद्ध अधिकारी को देगा तथा यदि अभिलेख वापिस नहीं लौटाए जाते हैं तो इस द्वारा इस प्रकार रखे गए अभिलेखों की रसीद जारी की जाएगी।

31. धारा 62 किसी विद्यमान निधि में संचय का अन्तरण- (1) यदि कोई कर्मकार जो इस निधि का सदस्य बनता है, तो संबंधित प्राधिकारी इस निधि के उस सदस्य के नाम में जमा राशियों को अंतरित करेगा।

(2) अन्य कल्याण निधि का प्राधिकार सचिव अथवा इस निमित्त उस द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को, उप-नियम (1) के अधीन अन्तरण की तिथि की प्रत्येक सदस्य के खाते में संचित कुल राशि और अग्रदान की राशि यदि सदस्य द्वारा कोई ली गई हो, दर्शाते हुए प्रस्तुत करेगा।

अध्याय V

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड

33. धारा 62 परिभाषाएं— (1) इस अध्याय में, अन्यथा अपेक्षित न हों तो :—

- (क) "बोर्ड" से अभिप्राय है अधिनियम की धारा 18 के अधीन गठित हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड।
- (ख) "अंशदान" से अभिप्राय है हिताधिकारी द्वारा निधि में भुगतान योग्य धन राशि;
- (ग) "परिवार" से अभिप्राय है पति अथवा पत्नी, नाबालिग पुत्र, जिनमें शारीरिक रूप से विकलांग शामिल है (जो कमाई करने के लिए सक्षम नहीं है) और भवन कर्मकार की अविवाहिता बेटियाँ और उन पर पूरी तरह से निर्भर माता-पिता।
- (घ) "निधि से अभिप्राय" है अधिनियम की धारा 24 के अधीन बोर्ड द्वारा गठित हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण निधि;
- (ङ) "सचिव" से अभिप्राय है अधिनियम की धारा 19 के अधीन नियुक्त, बोर्ड का सचिव;
- (च) "वर्ष" से अभिप्राय है वित्तवर्ष।

34. धारा 18 बोर्ड के सभापति और सदस्यों की पदावधि— सरकारी सदस्यों से भिन्न बोर्ड के सभापति और सदस्यों की पदावधि, उसकी नियुक्ति की तिथि से पांच वर्ष होगी।

35. धारा 18 आकस्मिक रिवित्तियों का भरना— आकस्मिक रिवित्त भरने के लिये नामांकित सदस्य, सदस्य जिस के स्थान पर वह नामांकित किया जाता है, की पदावधि की शेष अवधि के लिये पद धारण करेगा।

36. धारा 20 बोर्ड की बैठक— बोर्ड सामान्यतः तीन मास में एक बार बैठक करेगा;

परन्तु सभापति बोर्ड के एक तिहाई से कम नहीं सदस्यों की लिखित में मांग प्राप्त होने के पन्द्रह दिन के भीतर बोर्ड की बैठक बुलाएगा।

37. धारा 20 सभापति द्वारा बैठक की अध्यक्षता—प्रत्येक बैठक की तिथि, समय और स्थान की जानकारी देने की सूचना, बैठक में सम्पादित किए जाने वाले कारबार की सूची के साथ बैठक से पन्द्रह दिन पहले प्रत्येक सदस्य को पंजीकृत डाक द्वारा अथवा विशेष संदेशवाहक द्वारा भेजी जाएगी;

परन्तु यदि सभापति किसी मामले के विचारण के लिए, जो उसकी राय में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, बैठक बुलाने के लिए कम से कम तीन दिन का नोटिस पर्याप्त समझा जाएगा।

38. धारा 20 बैठक की सूचना और कारबार की सूची— (1) सभापति, बोर्ड की प्रत्येक बैठक की अध्यक्षता करेगा, जिसमें वह उपस्थित हो और यदि किसी कारणवश सभापति, बैठक में उपस्थित होने में असमर्थ है तो सभापति द्वारा नाम निर्देशित कोई सदस्य उस की ओर से बैठक की अध्यक्षता करेगा।

(2) उप नियम (1) के अधीन, यदि सभापति अनुपस्थित हो और सभापति द्वारा कोई सदस्य नामांकित नहीं किया हो तो बैठक में उपस्थित सदस्य, बैठक की अध्यक्षता करने के लिए, अपने में से एक सदस्य को चुन सकेंगे और इस प्रकार चुने गए सदस्य को बैठक के संचालन में सभापति की सभी शक्तियों का प्रयोग करेगा।

(3) बोर्ड की किसी बैठक में कोई भी कारबार तब तक सम्पादित नहीं किया जाएगा जब तक कम से कम छह सदस्य उपस्थित न हो, जिनमें से एक नामांकित सदस्यों में से होगा।

39. धारा 20 राज्य से अनुपस्थिति— यदि कोई सदस्य राज्य से बाहर सभापति को सूचना दिए बिना कम से कम छह मास की अवधि के लिए जाता है तो समझा जाएगा कि उसने बोर्ड से त्याग पत्र दे दिया है।

40. धारा 20 कारबार का संव्यवहार— बोर्ड की बैठक में विचार किए गए प्रत्येक प्रश्न का निर्णय, उपस्थित सदस्यों के बहुमत से किया जाएगा और मतदान में तथा किसी बराबर मतों की घटना में सभापति को निर्णायक मत देने का अधिकार होगा और उसका मत निर्णायक होगा।

41. धारा 20 बैठक का मसौदा— बोर्ड की बैठक में किया गया प्रत्येक निर्णय, उसी बैठक में कार्यरत पुस्तिका में अभिलिखित किया जाएगा और सभापति द्वारा हस्ताक्षरित की जाएगी, कार्यरत पुस्तिका स्थाई अभिलेख होगी।

42. धारा 18 फीस और मत्ते— (1) बोर्ड के प्रत्येक गैर सरकारी सदस्य को, बोर्ड की बैठक में उपस्थित होने के लिए एक सौ रुपए की बैठक फीस अथवा ऐसी राशि, जो राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर नियत की जाए, का भुगतान किया जाएगा। यह फीस उप समिति बैठकों के लिए लागू नहीं होगी।

(2) सभापति को, बोर्ड की बैठक में उपस्थित होने के लिए छः सौ रुपए की बैठक फीस अथवा ऐसी राशि, जो राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर नियत की जाए, का भुगतान किया जाएगा।

43. धारा 22 उपसमितियों की नियुक्ति तथा गठन— बोर्ड द्वारा, अपने कर्तव्यों के उचित निर्वहन हेतु, जो वह उचित समझे ऐसी उप समितियां नियुक्त कर सकती है और ऐसी और उप-समितियों के गैर सरकारी सदस्यों को, उप-समितियों की बैठक में उपस्थित होने के लिए, राज्य सरकार के प्रथम श्रेणी के अधिकारी ऐसी दरों पर यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ता अनुज्ञात किया जाएगा जो अनुज्ञेय हैं।

44. धारा 22 उपसमिति का गठन— (1) समिति में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल होंगे :-

- (क) बोर्ड का सभापति;
- (ख) नियोजकों का एक प्रतिनिधित्व करने वाला एक सदस्य;
- (ग) भवन कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक सदस्य;
- (घ) सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले दो सदस्य जो उप श्रम आयुक्त की पदवी से नीचे के न हों।

(2) बोर्ड का सभापति, उप समिति का भी सभापति होगा यदि किसी समय सभापति अनुपस्थित होगा तो बैठक में उपस्थित सदस्य जो बैठक की अध्यक्षता करने के लिए अपने में से एक सदस्य को चुनेंगे।

(3) उप-समिति की बैठक में तब तक कोई कारबार सम्पादित नहीं होगा जब तक समिति के न्यूनतम तीन सदस्य बैठक में उपस्थित न हो जिनमें से एक सदस्य नियोजकों का प्रतिनिधित्व करने वाला सदस्य और दूसरा भवन कर्मकारों का प्रतिनिधित्व करने वाला सदस्य होगा।

(4) उप-समिति की अवधि इसके गठन की तिथि से एक वर्ष की होगी ;

परन्तु उप-समिति तब तक काम करती रहेगी जब तक नई समिति का गठन नहीं हो जाता;

परन्तु यह और किसी भी दशा में उप-समिति अपने मूल गठन की तिथि से दो वर्ष की अवधि से अधिक नहीं रहेगी।

(5) उप-समिति की सिफारिश उसके निर्णय के लिए बोर्ड के सम्मुख रखी जाएगी।

45. धारा 22 बोर्ड की शक्तियां, कर्तव्य और कृत्य— (1) बोर्ड निम्नलिखित के लिए उत्तरदायी होगा :-

- (क) निधि के प्रशासन से सम्बन्धित सभी मामले;
- (ख) निधि की राशि जमा कराने के लिए नीतियां अधिकथित करना;
- (ग) राज्य सरकार की स्वीकृति हेतु वार्षिक बजट को प्रस्तुत करना;
- (घ) बोर्ड के कार्यकलापों की राज्य सरकार को वार्षिक रिपोर्ट का प्रस्तुत करना;
- (च) अधिनियम के उपबन्धों के अनुसार बोर्ड के लेखा खातों की वार्षिक लेखा परीक्षा ;
- (छ) निधि तथा अन्य प्रभारों के अंशदान का संग्रहण ;
- (ज) बोर्ड के लिए और बोर्ड की ओर से अभियोजन आरम्भ करना।
- (झ) दावों का तीव्र निपटान और अग्रदानों तथा अन्य लाभान्शों की स्वीकृति;
- (ञ) बोर्ड की देय किसी राशि की उचित और समय पर वसूली।

(2) बोर्ड ऐसे मामलों की, जो समय-समय पर राज्य सरकार, इसे निर्दिष्ट करे, सूचना देगा।

46. धारा 19 बोर्ड का सचिव— (1) बोर्ड का सचिव बोर्ड का मुख्य कार्यकारी अधिकारी होगा, बोर्ड का सचिव मुख्य कार्यकारी अधिकारी होने के नाते बोर्ड के अमले पर संपूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण रखेगा।

(2) सभापति की स्वीकृति से, सचिव, बोर्ड की बैठकें बुलाने हेतु सूचना जारी करेगा तथा कार्यवृत्त का रिकार्ड रखेगा और बोर्ड के निर्णय कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाएगा।

47. धारा 19 सचिव और अन्य अधिकारियों की नियुक्ति— (1) श्रम आयुक्त, बोर्ड का सचिव होगा और किन्हीं अन्य राजपत्रित अधिकारियों को बोर्ड द्वारा एक या इस से अधिक संयुक्त सचिव के रूप में नियुक्त कर सकता है जो बोर्ड के सचिव के नियंत्रण तथा अधीक्षण के अधीन कर्तव्यों को करेंगे जो सचिव द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाएगा।

(2) बोर्ड सरकार की पूर्व सहमति से :

- (i) श्रम विभाग के अनेक अधिकारियों को नियुक्त कर सकता है;
- (ii) सरकार के किसी अन्य विभाग के ऐसे अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों को नियुक्त कर सकता है, जिन्हें वह अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों के सफल निर्वहन में बोर्ड की सहायता हेतु आवश्यक समझे।

48. धारा 19 सचिव की प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियां— (1) बोर्ड का सचिव बोर्ड के निर्देश के बिना निधि के प्रशासन के लिए खर्च और आकस्मिक व्यय, आपूर्ति तथा सेवाएं तथा वस्तुओं की खरीद, वापसी की स्वीकृति, उन सीमाओं के अध्यक्षीन जिन तक वह बोर्ड द्वारा समय समय पर किसी एक वस्तु पर खर्च की स्वीकृति के लिए प्राधिकृत है, दे सकता है।

(2) सचिव उपरोक्त उप-नियम (1) में विनिर्दिष्ट के अन्यथा ऐसी अन्य प्रशासनिक तथा वित्तीय शक्तियों का प्रयोग भी कर सकता है जो बोर्ड द्वारा समय-समय पर उसको प्रदत्त की जाए।

(3) बोर्ड समय समय पर ऐसी शर्तों के अध्यक्षीन, जो वह उचित समझे अपने सफल कृत्य करने के लिए आवश्यक समझी गई सीमा तक अपने नियंत्रण और अधीक्षण के अधीन अन्य किसी अधिकारी को प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियां प्रदान कर सकता है।

(4) किसी भी कारण से बोर्ड की बैठक के आयोजन के अभाव में अध्यक्ष को तदर्थ बजट स्वीकृत करने की शक्तियां होंगी जो बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया जाता है या नहीं तक के रूप में समझा जाएगा। इस तदर्थ बजट पर अध्यक्ष, सचिव और संयुक्त सचिव, यदि कोई हो, द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे।

(5) बोर्ड के सचिव को लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्धारित दरों पर बोर्ड के प्रयोजन के लिए भवन किराए पर लेने की पूर्ण शक्ति होगी।

(6) बोर्ड के सचिव को बोर्ड की अपेक्षाओं के अनुरूप अनुबंध आधार पर सेवाएं लेने की पूरी शक्तियां होंगी।

49. धारा 29 हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण निधि— (1) बोर्ड इन नियमों के लागू होने के यथाशीघ्र बाद अधिनियम तथा इन नियमों के अनुसरण में हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण निधि के नाम से निधि का गठन करेगा।

(2) निधि बोर्ड में निहित होगी तथा बोर्ड द्वारा परिशासित होगी।

(3) निधि में निम्नलिखित जमा किये जायेंगे, —

(क) भारत सरकार द्वारा अथवा सरकार द्वारा या किसी स्थानीय प्राधिकरण द्वारा दिया गया अनुदान अथवा ऋण अथवा अग्रदान यदि कोई हो ;

(ख) इन नियमों के अधीन हिताधिकारी द्वारा दिया गया अंशदान;

(ग) बोर्ड द्वारा ऐसे अन्य स्रोतों से प्राप्त सभी राशियां जो केन्द्र सरकार अथवा राज्य सरकार द्वारा विनिश्चित की जायें।

50. धारा 62 मातृत्व भत्ता— प्रत्येक महिला कर्मी जो निधि का हिताधिकारी है को उस द्वारा प्रसूति काल में एक हजार रुपये मातृत्व भत्ता के रूप में दिये जाएंगे, प्ररूप XI में आवेदन करना होगा जिसके साथ ऐसे अन्य दस्तावेज भी लगाने होंगे जो इस भत्ते के लिए प्रस्तुत करने हेतु विनिर्दिष्ट किया जाए; परन्तु यह भत्ता दो बार से अधिक अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

51. धारा 62 पेंशन के लिए पात्रता— निधि का सदस्य, जो इन नियमों के प्रारम्भ के बाद एक वर्ष से कम न हो के लिए भवन कर्मकार के रूप में कार्य कर रहा है, साठ वर्ष की आयु पूरी करने पर पेंशन के लिए हकदार होगा। पेंशन साठ वर्ष की आयु पूरी करने के अगले महीने के प्रथम दिन से देय होगी।

52. धारा 62 पेंशन का भुगतान करने के लिए प्रक्रिया— (1) पेंशन के लिए आवेदन बोर्ड के सचिव अथवा प्रयोजन के लिए उस द्वारा प्राधिकृत अधिकारी को प्ररूप संख्या XII में प्रस्तुत किया जाएगा।

(2) यदि बोर्ड के सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत अधिकारी की राय में आवेदक पेंशन के लिए पात्र है, तो वह पेंशन की स्वीकृति देगा और आवेदक को पेंशन स्वीकृति आदेश भेजेगा।

परन्तु कोई भी आवेदन तब तक अस्वीकृत नहीं किया जाएगा जब तक आवेदक को सुनवाई का अवसर नहीं दिया जाता।

(3) यदि यह पाया जाता है कि आवेदक पेंशन के लिए पात्र नहीं है, तो आवेदन रद्द किया जाएगा, और उसी अनुसार आवेदक को सूचित किया जाएगा।

(4) आवेदक उपनियम (3) के अधीन लिए गए निर्णय के विरुद्ध आदेश की प्राप्ति की तिथि से साठ दिन के भीतर बोर्ड के समक्ष अपील दायर कर सकता है।

परन्तु बोर्ड पर्याप्त लिखित कारणों के लिए अपील दायर करने में एक वर्ष तक की देरी को भी माफ कर सकता है।

(5) पेंशन की राशि एक सौ पचास रुपए प्रतिमास होगी। दस रुपए की बढ़ोतरी पांच वर्ष से आगे सेवा के प्रत्येक सम्पूर्ण वर्ष के लिए दी जाएगी। बोर्ड सरकार के पूर्व अनुमोदन से पेंशन संशोधित कर सकता है।

(6) पेंशन स्वीकृति देने वाला प्राधिकारी प्ररूप XIII में एक रजिस्टर रखेगा।

53. धारा 62 मकान की खरीद अथवा निर्माण हेतु अग्रदान— (1) बोर्ड सदस्य के आवेदन पर सीधे ही मकान की खरीद के लिए अथवा मकान के निर्माण के लिए अग्रदान के रूप में पचास हजार रुपए तक की राशि की स्वीकृति दे सकता है। हिताधिकारी को प्ररूप XIV में आवेदन के साथ ऐसे दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

(2) उप-नियम (1) के अधीन कोई भी अग्रदान उन कर्मकारों को स्वीकृत नहीं किया जाएगा जिनकी निधि में निरंतर पांच वर्षों की सदस्यता नहीं होगी और अधिवाषित के लिए पन्द्रह वर्ष की सेवा नहीं होगी।

(3) समापन प्रमाण पत्र अग्रदान प्राप्त पत्र अग्रदान करने की तिथि से छः मास के भीतर बोर्ड के सचिव को प्रस्तुत किया जाएगा। अग्रदान के रूप में स्वीकृत राशि की वसूली बराबर किस्तों में की जाएगी जो बोर्ड द्वारा नियत की जाए।

54. धारा 62 अशक्तता पेंशन— (1) बोर्ड हिताधिकारी को, जो लकवा, कुष्ठरोग, कैंसर, तपेदिक, दुर्घटना आदि के कारण स्थाई रूप से अशक्त हुआ है, स्वीकृति दे सकता है। पेंशन के अतिरिक्त वह अशक्तता को प्रतिशतता पर निर्भरता के लिए तथा ऐसी शर्तों के अधीन जो बोर्ड द्वारा नियत की जाएं, पांच हजार रुपये से अधिक नहीं, के अनुग्रहपूर्वक भुगतान के लिए पात्र होगा।

(2) उपनियम (1) के अधीन पेंशन और अनुग्रहपूर्वक भुगतान के लिए आवेदन प्रारूप XV में ऐसे प्रमाणपत्र तथा अन्य दस्तावेजों के साथ किया जाएगा जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किये जायें।

55. धारा 62 औजारों को खरीदने हेतु ऋण— निधि के सदस्यों को औजारों को खरीदने के लिए ऋण रूप में पांच हजार रुपये की राशि स्वीकार की जाएगी। जिन्होंने निधि में तीन वर्ष की सदस्यता पूरी कर ली हो और जो नियमित रूप से अंशदान भेज रहे हों, वे इस ऋण के लिए पात्र होंगे। हिताधिकारी की आयु के पचपन वर्ष पूरे नहीं होने चाहिए। ऋण राशि की वसूली अधिकतम साठ किस्तों में की जाएगी। प्रारूप XVI में से इस ऋण के लिए आवेदन ऐसे अन्य दस्तावेजों के साथ किया जाएगा जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

56. धारा 62 मृत्यु लाभ का भुगतान— बोर्ड मृत सदस्य के नामजदों/आश्रितों को अन्तिम संस्कार के खर्च हेतु एक हजार रुपये की राशि स्वीकृत कर सकता है। इस लाभ के लिए आवेदन प्रारूप XVII में किया जाएगा।

57. धारा 62 मृत्यु लाभ के लिए आवेदन— बोर्ड मृत्यु होने की दशा में मृत्यु लाभ के लिए सदस्य के नामजदों/आश्रितों को पंद्रह हजार रुपये की राशि स्वीकृत कर सकता है। यदि मृत्यु नियोजन की प्रक्रिया के दौरान किसी दुर्घटना के कारण हुई हो तो सदस्य के नामजद/आश्रितों को मृत्यु लाभ के लिए पचास हजार रुपये दिए जाएंगे।

58. धारा 62 मृत्यु लाभ हेतु आवेदन (1) नामजद व्यक्ति जो इस नियम के अधीन, मृत्यु लाभ के लिए पात्र है, बोर्ड के सचिव अथवा इस नियम के अधीन प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को आवेदन प्रस्तुत करेगा तथा प्रारूप XVIII में आवेदन सचिव या उस द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को प्रस्तुत करेगा। सरकारी डाक्टर द्वारा, जो चिकित्सा अधिकारी के रैंक से नीचे का ना हो द्वारा जारी मृत्यु/दुर्घटना के सम्बन्ध में प्रमाण पत्र आवेदन तथा बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट अन्य दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत किया जाएगा।

(2) सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत अधिकारी आवेदन की प्राप्ति पर आवेदक की पात्रता के संबंध में जांच करेगा।

(3) यदि सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत अधिकारी की संतुष्टि हो जाती है कि व्यक्ति जिसने वित्तीय सहायता के लिए आवेदन किया है ऐसे लाभ के लिए पात्र है तो वह राशि स्वीकृत कर सकता है।

(4) स्वीकृति देने वाला प्राधिकारी इस प्रयोजन के लिए प्रारूप XIX में एक रजिस्टर रखेगा।

(5) उपनियम (3) के अधीन लिए गए किसी निर्णय से व्यथित व्यक्ति उस उप-नियम के अधीन आदेश की प्राप्ति की तिथि से साठ दिन के भीतर बोर्ड के समक्ष अपील कर सकता है और उस पर बोर्ड का निर्णय अन्तिम होगा।

59. धारा 62 हिताधिकारियों के लिए चिकित्सा सहायता— बोर्ड उन हिताधिकारियों के लिए वित्तीय सहायता स्वीकृत कर सकता है जो दुर्घटना अथवा किसी रोग के कारण पांच या अधिक दिनों के लिए अस्पताल में इलाज करवा रहे हों। सहायता पहले पांच दिनों के लिए दो सौ रुपये और अगले शेष प्रत्येक दिन के लिए बीस रुपये होंगे, परन्तु अधिकतम एक हजार रुपये होगी। यह सहायता उन हिताधिकारियों को भी दी जाएगी जिनकी दुर्घटना हुई हो और उनके निवास पर ही रोगी को पलस्तर लगाया गया हो। यदि अशक्तता दुर्घटना के परिणामस्वरूप हुई हो, तो कर्मकार अशक्तता की प्रतिशतता के आधार पर अधिकतम पांच हजार रुपये तक की वित्तीय सहायता के लिए पात्र होगा। प्रारूप XX में अथवा XXI में आवेदन पत्र, ऐसे अन्य दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत किया जाएगा जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

60. धारा 62 शिक्षा हेतु वित्तीय सहायता— सदस्यों के बच्चे इस प्रकार की वित्तीय सहायता के लिए पात्र होंगे जो बोर्ड द्वारा ऐसे अध्ययन पाठ्यक्रमों के लिए निर्धारित किए जाएं जैसा बोर्ड द्वारा समय समय पर विनिर्दिष्ट किया जाए। प्रारूप XLIII में आवेदन ऐसे दस्तावेजों के साथ तथा ऐसे समय के भीतर प्रस्तुत किया जाएगा जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए।

61. धारा 62 शादी हेतु वित्तीय सहायता—निरंतर तीन वर्ष की सदस्यता रखने वाले भवन कर्मकार अपने बच्चों की शादी के लिए दो हजार रुपये की वित्तीय सहायता लेने के पात्र होंगे। इस निधि की महिला सदस्य भी अपनी स्वयं की शादी के लिए इस सहायता को पाने की हकदार होगी। यह सहायता हिताधिकारी के दो बच्चों की शादी के लिए स्वीकृत की जाएगी। प्रारूप XXIII में आवेदन पत्र ऐसे अन्य दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत किया जाएगा जो बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

62. धारा 62 पारिवारिक पेंशन— पेंशन भोगी की मृत्यु की दशा में पारिवारिक पेंशन जीवित पति/पत्नी को दी जाएगी। पेंशन की राशि पेंशन भोगी द्वारा ली जा रही पेंशन की पचास प्रतिशत या एक सौ रुपये जो भी अधिक हो, होगी। प्रारूप संख्या XXIV में आवेदन बोर्ड द्वारा यथा विनिर्दिष्ट अन्य दस्तावेजों के साथ पेंशन भोगी की मृत्यु की तिथि से तीन महीने के अन्दर प्रस्तुत किया जाएगा।

63. धारा 62 अनुदानों और ऋणों की वसूली— बोर्ड ऋण और अग्रदान की वसूली के लिए शर्तें अनुबद्ध करने की शक्ति होगी।

64. धारा 62 मृत सदस्य के अंशदान की राशि वापिस करना (1) सदस्य की मृत्यु होने पर उसके खाते में पड़ी अंशदान की राशि उसके नामजद व्यक्ति को दी जाएगी। नामजद व्यक्ति न होने पर राशि का भुगतान उसके विधिक वारिसों को बराबर हिस्सों में किया जाएगा।

(2) मृत्यु लाभ से अन्यथा इन नियमों के अधीन सभी वित्तीय लाभ और दुर्घटना के लिए चिकित्सा सहायता व्यक्ति को निधि का सदस्य बनने के केवल एक वर्ष के बाद भुगतान योग्य होगी।

65. धारा 62 जीवन बीमा पॉलिसी की किस्त देने के लिए निकासी— (1) निधि के सदस्य को निधि में उसके खाते में पड़ी राशि में से जीवन बीमा पॉलिसी की किस्त भरने के लिए स्वीकृति प्रदान की जा सकती है। इस प्रयोजन के लिए राशि की निकासी वर्ष में एक बार से अधिक निकासी अनुज्ञात नहीं की जाएगी।

(2) बीमा किस्त अदा करने के लिए वास्तविक रूप से अपेक्षित राशि सदस्य के निधि खाते में पड़ी राशि से अधिक स्वीकृत नहीं की जाएगी।

(3) पॉलिसी के पूरे ब्यौरे बोर्ड के सचिव को ऐसे रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे जो उस द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

66. धारा 62 निधि को पॉलिसी को सौंपना— (1) राशि निकलवाने के छः महीने के अन्दर पॉलिसी बोर्ड के सचिव को राशि निकलवाने के लिए प्रतिभूति के रूप में दी जाएगी।

(2) किसी पुरानी पॉलिसी की प्राप्ति में किस्त भेजने के लिए राशि निकलवाने हेतु स्वीकृति देते समय, बोर्ड का सचिव जीवन बीमा निगम से सुनिश्चित करेगा कि वह पॉलिसी किसी भार से मुक्त है।

(3) अन्य पॉलिसी के अन्तरण पर पालिसी में कोई भी परिवर्तन बोर्ड सचिव की पूर्व स्वीकृति के बिना नहीं होगा और पॉलिसी में परिवर्तन अथवा नई पॉलिसी में अन्तरण से संबंधित ब्यौरे बोर्ड के सचिव को ऐसे रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे जो उस द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

(4) यदि पालिसी इस प्रकार दी या सौंपी नहीं जाती है तो सदस्य, पालिसी के लिए निधि से निकाली गई, किसी राशि को निधि में तुरन्त ऐसी दर पर ब्याज सहित जमा करेगा और जो सरकार के साथ परामर्श से बोर्ड द्वारा नियत की जाए।

67. धारा 62 पॉलिसी का वापिस करना— बोर्ड, निम्नलिखित परिस्थितियों में पॉलिसी वापिस करेगा, अर्थात—

- (i) अधिकारियों पर स्थाई रूप से सदस्य द्वारा नौकरी छोड़ने पर;
- (ii) शारीरिक अथवा मानसिक अशक्तता के कारण स्थाई रूप से नौकरी छोड़ने पर;
- (iii) नौकरी छोड़ने से पूर्व सदस्य की मृत्यु पर;
- (iv) सदस्य द्वारा नौकरी छोड़ने से पहले दी गई पालिसी की परिपक्वता पर या सदस्य के धनराशि के किसी अन्य तरीके से प्राप्त करने के लिए हकदार होने पर।

68. धारा 27 लेखा—(1) प्रशासनिक खर्चों, सभी ब्याज, किराया और अन्य प्राप्त आय एवं सभी लाभ या हानियां, यदि कोई हों को निकालकर निवेश में, जो विनिर्दिष्ट किये जायें, को जमा तथा नाम जैसी भी स्थिति हो ऐसे में लिए जाएंगे।

(2) बोर्ड का सचिव अथवा उस द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी प्रति वर्ष मार्च के पन्द्रहवें दिन ऐसी अन्य तिथि को, जो सरकार द्वारा निधि की आस्तियों की वर्गीकृत विवरणी से संलग्न वार्षिक रिपोर्ट पर विनिर्दिष्ट की जाए, सरकार को विवरणी प्रस्तुत करेगा।

69. धारा 24 राशि का निवेश— निधि से सम्बन्धित सभी धन राशि या किसी राष्ट्रीयकृत बैंक अथवा अनुसूचित बैंक अथवा भारतीय न्यास अधिनियम, 1882 (1882 का 2), की धारा 20 के खण्ड (क) से (घ) में निर्दिष्ट प्रतिभूतियों में निवेश की जाएगी।

70. धारा 24 निधि का उपयोग— सरकार की पूर्व स्वीकृति के बिना निधि अधिनियम और नियमों में वर्णित प्रयोजनों के अतिरिक्त किसी भी अन्य प्रयोजन के लिए खर्च नहीं की जाएगी।

71. धारा 27 निधि में खर्च— (1) निधि के प्रशासन के लिए सभी खर्च, बोर्ड के सभापति और सदस्यों की फीस और भत्ते, बोर्ड की न्यायोचित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, वेतन, छुट्टी का वेतन, ज्वाइनिंग टाईम का वेतन, यात्रा भत्ता, क्षतिपूर्ति भत्ते, प्रभार भत्ते पेंशन योगदान और कर्मियों पर होने वाले खर्च, स्टेशनरी के खर्च आदि, कोष के प्रशासनिक खाते में से किए जाएंगे।

(2) कोष प्रशासन के लिए सरकार द्वारा खर्च की गई धनराशि-को ऋण राशि माना जाएगा जिसको कोष के प्रशासनिक लेखा खाते से लौटाया जाएगा।

72. धारा 27 बोर्ड के काम काज सम्बन्धी रिपोर्ट— प्रत्येक वित्तीय वर्ष के दौरान, बोर्ड के कामकाज की रिपोर्ट अगले वर्ष 15 जून से पूर्व बोर्ड द्वारा अनुमोदित की जाएगी और उसी वर्ष 31 जुलाई से पहले सरकार के पास पेश करनी होगी।

73. धारा 62 रजिस्ट्रारों और रिपोर्टों की प्रतियां प्रस्तुत करना— बोर्ड का सचिव, रजिस्ट्रारों, कोष की वार्षिक रिपोर्ट की प्रतियां, किसी नियोजक अथवा कोष के सदस्य को, लिखित आवेदन पर और सरकार की स्वीकृति से इस सम्बन्ध में बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट फीस जो इस निमित्त बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, का भुगतान करने पर, उन्हें दे सकेगा।

74. धारा 62 बकाया राशि की वसूली— यदि किसी नियोजक अथवा सदस्य की ओर निकलती राशि बकाया हो, तो बोर्ड का सचिव अथवा उसके द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत अन्य कोई अधिकारी, शेष राशि का पता लगाकर, सम्बन्धित जिला कलक्टर को उस राशि का एक प्रमाण पत्र जारी

करेगा। प्रमाण पत्र मिलने पर जिला कलक्टर, उसी तरीके से यह राशि वसूल करेगा जैसे वह भूमि पर बनते सरकारी राजस्व की शेष राशि की वसूली करता है।

75. धारा 62 अनुबन्ध निष्पादन— सभी आदेश अथवा लेखपत्र बोर्ड के नाम बनाए और निष्पादित किए जाएंगे और बोर्ड द्वारा विनिर्दिष्ट किसी व्यक्ति द्वारा अधिप्रमाणित किए जाएंगे।

अध्याय VI

भाग 1

काम के घंटे, विराम अंतराल और साप्ताहिक छुट्टी आदि

76. धारा 28 काम के घंटे, विराम अंतराल और विस्तृति आदि—

- (1) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित किसी भी भवन निर्माण कर्मकार से एक दिन में नौ घंटे या एक सप्ताह में अड़तालीस घंटे से अधिक के लिए कार्य करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी या कार्य करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।
- (2) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित किसी भी भवन निर्माण कर्मकार से, जब तक वह आधा घंटा से अन्यून का विराम अंतराल नहीं ले लेता है पांच घंटों से अधिक के लिए लगातार कार्य करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी या अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।
- (3) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित भवन निर्माण कर्मकार का कार्यकरण दिन इस प्रकार क्रमांकित किया जाएगा कि विराम अंतराल यदि कोई हो, को मिलाकर किसी भी दिने बारह घंटों से अधिक की विस्तृति नहीं होगा।
- (4) जब कोई भवन निर्माण कर्मकार किसी भवन या अन्य संनिर्माण कार्य में किसी दिन को नौ घंटे से अधिक के लिए या किसी सप्ताह में अड़तालीस घंटे से अधिक के लिए कार्य करता है तो वह अतिकालिक कार्य के बाबत मजदूरी की सामान्य दर से दुगुनी मजदूरी के लिए हकदार होगा।

77. धारा 28 साप्ताहिक विराम, विराम के दिन पर किए गए कार्य के लिए अतिकालिक दर पर संदाय

(1) इन नियमों के उपबंधों के अधीन रहते हुए भवन निर्माण और अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार को प्रत्येक सप्ताह विराम का एक दिन जिसे इसमें इसके पश्चात् विराम दिन कहा गया है अनुज्ञात होगा जो सामान्य रूप से रविवार होगा, किन्तु नियोजक सप्ताह का कोई अन्य दिन विराम दिन के रूप में नियत कर सकता है;

परन्तु यह कि विराम के रूप में नियत किए गए दिन की और ऐसे विराम दिन में कोई पश्चात्तवर्ती परिवर्तन की जानकारी ऐसा परिवर्तन करने से पूर्व इस निमित्त अधिकारिता वाले, निरीक्षक द्वारा विनिर्दिष्ट स्थान पर नियोजन के स्थान में तदर्थक एक सूचना के संप्रदर्शन द्वारा भवन निर्माण कर्मकार को दे दी जाएगी।

(2) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित कोई भी कर्मकार किसी विराम दिन पर कार्य करने के लिए अपेक्षित या अनुज्ञात नहीं होगा जब तक कि उसके द्वारा ऐसे विराम दिन से ठीक पहले या बाद में पांच दिन में से एक संपूर्ण दिन के लिए प्रतिस्थापित विराम पहले से नहीं ले लिया गया था या ले लिया जाएगा।

परन्तु ऐसा कोई प्रतिस्थापन नहीं किया जाएगा जो किसी भवन निर्माण कर्मकार का एक संपूर्ण दिन के लिए किसी विराम दिन के बिना लगातार रूप से दस दिन से अधिक के लिए कार्य करने का कारण हो जाता है।

(3) जहां भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित किसी भवन निर्माण कर्मकार ने किसी विराम दिन पर कार्य किया है और इसे उपनियम (1) तथा उपनियम (2) में यथा उपबंधित उस विराम दिन से पूर्व या बाद के पांच दिन में से कोई एक प्रतिस्थापित विराम दिन दे दिया गया है, ऐसा विराम दिन कार्य के साप्ताहिक घंटों की गिनती करने के प्रयोजन के लिए उस सप्ताह में, जिसमें ऐसा प्रतिस्थापित विराम दिन आता है सम्मिलित किया जाएगा।

(4) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित भवन निर्माण कर्मकार को ऐसे विराम दिन के पूर्ववर्ती दिन को लागू दर पर संगणित किसी विराम दिन के लिए मजदूरी दी जाएगी और यदि उसमें किसी विराम दिन पर कार्य किया है और कोई प्रतिस्थापित विराम दिन दे दिया गया है, ऐसे विराम दिन के लिए, जिस पर उसने काम किया था उसे अतिकालिक दर पर मजदूरी और ऐसे प्रतिस्थापित विराम दिन के पूर्ववर्ती दिन को लागू दर पर ऐसे प्रतिस्थापित विराम दिन के लिए मजदूरी का संदाय किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—1 :— इस नियम के प्रयोजन के लिए “पूर्ववर्ती दिन” से अभिप्रेत है यथास्थित किसी विराम दिन का पूर्ववर्ती वह अंतिम दिन या कोई प्रतिस्थापित विराम दिन जिसको किसी भवन निर्माण कर्मकार ने कार्य किया था और जहां ऐसा प्रतिस्थापित विराम दिन ऐसे विराम दिन के ठीक बाद में पड़ता है ऐसे “पूर्ववर्ती दिन” से अभिप्रेत है ऐसे विराम दिन का पूर्ववर्ती ऐसा अंतिम दिन जिसको ऐसे भवन निर्माण कर्मकार ने कार्य किया था।

स्पष्टीकरण-2 :- इस नियम के प्रयोजन के लिए "सप्ताह" शनिवार रात्रि को मध्यरात्रि पर आरंभ होने वाले सात दिन की कालावधि अभिप्रेत करेगा।

78. धारा 28 रात्रि पारियां - जहां भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित कोई भवन निर्माण कर्मकार किसी ऐसी पारी पर कार्य करता है जिसका मध्यरात्रि के पश्चात् विस्तार होता है,-

- (क) नियम 77 के प्रयोजनों के लिए कोई विराम दिन उस समय से जब ऐसे पारी समाप्त होती है, से आरंभ होने वाले लगातार चौबीस घंटे की कालावधि अभिप्रेत करेगा;
- (ख) मध्यरात्रि के पश्चात् ऐसे घंटे जिनके दौरान ऐसे भवन निर्माण कर्मकार ने कार्य किया है पूर्ववर्ती दिन के लिए गिने जाएंगे; और
- (ग) अगला दिन ऐसी पारी जब समाप्त होती है उस समय से आरंभ होने वाले चौबीस घंटे की अवधि समझी जाएगी।

79. धारा 28 भवन निर्माण कर्मकारों के कतिपय वर्गों को इस अध्याय के उपबंधों का लागू होना-

- (1) अधिनियम की धारा 28 की उपधारा (2) के खंड (क) से (घ) तक के अधीन विनिर्दिष्ट भवन निर्माण कर्मकारों के वर्गों को इस अध्याय के उपबंध निम्नलिखित के अध्याधीन लागू होंगे, अर्थात्:-

- (क) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित कोई भी भवन निर्माण कर्मकार विराम अंतराल को मिलाकर एक दिन में पन्द्रह घंटे या एक सप्ताह में साठ घंटों से अनाधिक के लिए लगातार कार्य करने के लिए अपेक्षित या अनुज्ञात नहीं होगा;

परन्तु यह नियम 76 के उपनियम (2) में अधिकथित अनुसार लगातार कार्य के प्रत्येक पांच घंटे के पश्चात् आधा घंटा से अन्यून के विराम अंतराल दिए जाते हैं;

- (ख) जब तक ऐसे कर्मकार को विराम के लिए चौबीस घंटे का विराम नहीं दिया जाता है, भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित कोई भी भवन निर्माण कर्मकार चौदह लगातार दिन से अनधिक के लिए कार्य करने के लिए अपेक्षित या अनुज्ञात नहीं होगा।

- (2) जहां भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में नियोजित किसी भवन निर्माण कर्मकार की बाबत कार्यकरण घंटे नियम 76 के उपनियम (1) में यथा अधिकथित अनुसार काम के घंटों से अधिक हो गए हैं या जहां ऐसा कर्मकार इस नियम के उपनियम (1) के लागू होने के कारण किसी विराम दिन से वंचित कर दिया गया है ऐसे कर्मकार को ऐसे दैनिक या साप्ताहिक घंटों को अतिरिक्त किए गए कार्य और ऐसे विराम दिन पर किए गए कार्य की बाबत सामान्य मजदूरी की दर से दुगुनी दर पर संदाय किया जाएगा।

अध्याय VI

भाग II

भवन कर्मकारों का कल्याण

80. धारा 33 तथा धारा 34 शौचालय और मूत्रालय सुविधा- यथास्थिति शौचालय या मूत्रालय अधिनियम की धारा 33 के अधीन उपबंधित की अपेक्षानुसार ये यथा विनिर्दिष्ट टाइप के होंगे, अर्थात्:-

- (क) प्रत्येक शौचालय ढका हुआ होगा और इस प्रकार विभाजित होगा ताकि एकांतता सुनिश्चित कर सके तथा उसमें यथोचित दरवाजा और कसाव होंगे;
- (ख) (i) जहां पुरुष और महिला दोनों भवन निर्माण कर्मकार नियोजित किए जाते हैं वहां शौचालयों या मूत्रालयों के प्रत्येक खंड के बाहर की तरफ एक सूचना संप्रदर्शित की जाएगी उसमें यथास्थिति "केवल पुरुषों के लिए" या "केवल महिलाओं के लिए" ऐसे कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली भाषा में लिखा जाएगा;
- (ii) ऐसी सूचना में यथास्थिति पुरुष की या महिला की आकृति भी लगी होगी;
- (ग) प्रत्येक शौचालय या मूत्रालय सुविधाजनक रूप से स्थित होगा और सभी समयों पर भवन निर्माण कर्मकारों की पहुंच में होगा;
- (घ) प्रत्येक शौचालय या मूत्रालय यथोचित रूप से प्रकाशित होगा और सभी समयों पर स्वच्छ तथा स्वच्छता की दशा में रखा जाएगा;
- (ङ) फ्लेश सिवरेज प्रणाली से संसक्त से भिन्न प्रत्येक शौचालय या मूत्रालय लोक स्वास्थ्य प्राधिकारियों की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगा;
- (च) पानी का नल या किसी अन्य साधन से इस प्रकार व्यवस्था की जाएगी ताकि प्रत्येक शौचालय या मूत्रालय में या उसके निकट सुविधाजनक रूप से पहुंच सके;

- (छ) प्रत्येक शौचालय या मूत्रालय की दीवारें, भीतरी छतें और विभाजनों पर चार मास की प्रत्येक अवधि में एक बार सफेदी या रंग किया जाएगा।

81. धारा 37 कैटीन - (1) ऐसे प्रत्येक स्थान में जिसमें दो सौ पचास से अन्धन भवन निर्माण कर्मकार साधारणतः नियोजित किए जाते हैं वहां ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों का नियोजक ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के उपयोग के लिए इस नियम में यथा विनिर्दिष्ट रीति में यथोचित कैटीन का प्रबंध करेगा।

- (2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट कैटीन में ऐसी कैटीन का उपयोग करने वाले भवन निर्माण कर्मकारों की सुविधा के लिए पर्याप्त फर्नीचर सहित एक डाइनिंग हाल, एक रसोई, स्टोर कक्ष, पेंटी और भवन निर्माण कर्मकारों तथा बर्तनों के लिए पृथक् रूप से धुलाई के स्थान होंगे।
- (3) (i) उपनियम (1) में निर्दिष्ट कैटीन जब भी कोई व्यक्ति इसमें पहुंच रखता है सभी समयों पर पर्याप्त रूप से प्रकाशित रहेगी;
- (ii) ऐसी कैटीन का फर्श चिकनी और अप्रवेश्य सामग्री का बनस होगा तथा ऐसी कैटीन की भीतरी दीवारों पर कम से कम प्रत्येक छह मास में एक बार सफेदी की जाएगी या रंग किया जाएगा;
- परन्तु ऐसी कैटीन की रसोई की ऐसी भीतरी दीवारों पर प्रत्येक तीन मास में एक बार सफेदी की जाएगी।
- (4) (i) उपनियम (1) में निर्दिष्ट कैटीन की प्रसीमाएं साफ और स्वच्छ हालत में रखी जाएंगी;
- (ii) ऐसी कैटीन से अपशिष्ट पानी उपयुक्त ढकी हुई नालियों में ले जाया जाएगा और ऐसी कैटीन के आस पास में इकट्ठा नहीं होने दिया जाएगा;
- (iii) ऐसी कैटीन से जूठन के संग्रहण और व्ययन के लिए उपयुक्त इंतजाम किया जाएगा।
- (5) उपनियम (1) में निर्दिष्ट कैटीन का भवन किसी शौचालय या मूत्रालय या धूल, धुआं या आपत्तिजनक भाप के किसी स्रोत से कम से कम पंद्रह प्वाइंट दो मीटर की दूरी पर स्थित होगा।

82. धारा 37 कैटीन में परोसे जाने वाले खाद्य पदार्थ- नियम 81 के उपनियम (1) में निर्दिष्ट कैटीन में परोसे जाने वाले खाद्य पदार्थ और अन्य चीजें भवन निर्माण कर्मकारों की सामान्य आहारी आदतों के अनुरूपतः होंगी।

83. धारा 37 कार्य स्थानों पर चाय और हल्का भोजन का परोसा जाना- ऐसे किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर जहां कोई कार्य स्थान नियम 81 के उपनियम (1) के अधीन उपबंधित कैटीन से शून्य प्वाइंट दो किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थित है ऐसे स्थान पर ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों को चाय और हल्का नाश्ता परोसने के लिए ऐसे स्थान पर भवन निर्माण कर्मकारों को नियोजित करने वाले नियोजक द्वारा इंतजाम किया जाएगा।

84. धारा 37 खाद्य पदार्थ के प्रभार- (1) नियम 81 के उपनियम (1) के अधीन उपबंधित कैटीन में परोसे गए खाद्य पदार्थ, सुपेय और अन्य चीजों के लिए प्रभार "न लाभ न हानि" पर आधारित होंगे तथा ऐसी वस्तुओं की मूल्य सूची ऐसी कैटीन में सहज दृश्यतः संप्रदर्शित की जाएगी।

- (2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट वस्तुओं के मूल्य निकालते समय निम्नलिखित को व्यय के रूप में विचार में नहीं लिया जाएगा, अर्थात्:-
- (क) ऐसी कैटीन की भूमि और भवन के लिए किराया;
- (ख) भवन और ऐसी कैटीन में उपलब्ध कराए गए उपस्कर के लिए अवकाश और अनुरक्षण प्रभार;
- (ग) क्रय करने, मरम्मत और उपस्कर जिसके अंतर्गत फर्नीचर, क्राकरी, कटलरी, बर्तन भी हैं, के स्थान पर दूसरे बदलने की तथा ऐसी कैटीन के कर्मचारियों को उपलब्ध कराई गई वर्दी की लागत;
- (घ) जल प्रभार और ऐसी कैटीन की रोशनी और संवातन के लिए उपगत अन्य प्रभार; और
- (ङ) ऐसी कैटीन के लिए फर्नीचर और अन्य उपस्कर उपलब्ध कराए जाने और उनके अनुरक्षण के लिए खर्च की गई रकम पर व्याज।

अध्याय VI

भाग III

सूचनाएं, रजिस्टर, अभिलेख और आंकड़े का संग्रहण

85. धारा 30 मजदूरी कालावधि आदि की सूचना- (1) प्रत्येक नियोजक उसके नियंत्रणाधीन स्थापन के कार्य स्थान के सहज दृश्य स्थान पर ऐसे स्थापन में कार्य करने वाले भवन निर्माण कर्मकारों कार्य घंटे, उनकी मजदूरी कालावधि, ऐसी मजदूरियों के संदाय की तारीख, ऐसे स्थापन की अधिकारित वाले निरीक्षकों के नाम और पते, ऐसे कर्मकारों की असदत्त मजदूरी के संदाय की तारीख दर्शित करने वाली, सूचना अंग्रेजी, हिन्दी में और ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली स्थानीय भाषा में संप्रदर्शित करवाएगा।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट सूचना की एक प्रति अधिकारिता वाले निरीक्षक को भेजी जाएगी और जब भी ऐसी सूचना में अंतर्विष्ट तथ्यों की बाबत कोई परिवर्तन होता है, ऐसा परिवर्तन ऐसे निरीक्षक को नियोजक द्वारा भेज दिया जाएगा।

83. धारा 46 प्रारंभ और पूरा होने की सूचना— (1) प्रत्येक नियोजक उसके नियंत्रणाधीन किसी भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण कार्य के प्रारंभ होने से कम से कम तीस दिन पहले ऐसे प्रारंभ वास्तविक तारीख, पूरा होने की अधिसंभाव्य तारीख और ऐसे भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण कार्य की बाबत अधिनियम की धारा 46 की उपधारा (1) में यथा निर्दिष्ट ऐसी अन्य विशिष्टियों को संसूचित करते हुए इन नियमों से संलग्न प्रारूप-IV में एक लिखित सूचना अधिकारिता वाले निरीक्षक को भेजेगा या भिजवाएगा।

(2) जहां उपनियम (1) के अधीन भेजी गई विशिष्टियों में से किसी में भी कोई परिवर्तन होता है, नियोजक ऐसे परिवर्तन के दो दिन के भीतर अधिकारिता वाले निरीक्षक को ऐसे परिवर्तन की सूचना देगा।

(3) उपनियम (1) की कोई भी बात भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण कार्य के ऐसे वर्ग की दशा में लागू नहीं होगी जिसे राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा आपातकालीन कार्य होना विनिर्दिष्ट करती है।

87. धारा 38 भवन निर्माण कर्मकारों के रूप में नियोजित व्यक्तियों का रजिस्टर— प्रत्येक नियोजक ऐसे प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत स्थापन की बाबत जहां वह भवन निर्माण कर्मकार नियोजित करता है इन नियमों से संलग्न प्रारूप XXV में एक रजिस्टर घोषित करेगा।

88. धारा 62 के साथ पठित धारा 30 मस्टर रोल, मजदूरी रजिस्टर, कटौती रजिस्टर, अतिकालिक रजिस्टर और मजदूरी बहियों और सेवा प्रमाण पत्रों का जारी किया जाना — (1) प्रत्येक नियोजक प्रत्येक ऐसे कार्य की बाबत जिस पर वह भवन निर्माण कर्मकारों को लगाता है निम्नलिखित घोषित करेगा —

- (क) इन नियमों से संलग्न प्रारूप XXVI और प्रारूप XXVII में क्रमशः एक मस्टर रोल और एक रजिस्टर; परन्तु यह कि इन नियमों से संलग्न प्रारूप XXVIII में मजदूरी सह-मस्टर रोल का एक सम्मिलित रजिस्टर जहां ऐसे भवन निर्माण कर्मकार के लिए मजदूरी कालावधि एक पक्ष या इससे कम है नियोजक द्वारा वर्णित किया जाएगा;
- (ख) इन नियमों में संलग्न प्रारूप XXIX, प्रारूप XXX और प्रारूप XXXI में क्रमशः नुकसानी या हानि के लिए रजिस्टर, जुर्मानों का रजिस्टर और अग्रियों का रजिस्टर;
- (ग) अतिकालिक कार्य, यदि कोई हो, के घंटों की संख्या और उसके लिए संदत्त मजदूरी का उसमें अभिलेख करने के लिए इन नियमों से आबद्ध प्रारूप XXXII में अतिकाल का एक रजिस्टर;

(2) प्रत्येक नियोजक ऐसे प्रत्येक कार्य की बाबत जिस पर वह भवन निर्माण कर्मकार को लगाता है,—

- (क) जहां मजदूरी कालावधि एक सप्ताह या इससे अधिक है ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों को इन नियमों से संलग्न प्रारूप XXXIII में ऐसे प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार को मजदूरी पुस्तिका जारी करेगा जिसमें उनको मजदूरी के संचितरण से कम से कम एक दिन पूर्व प्रविष्टियां की जाएगी;
- (ख) ऐसे कार्य के पूर्व होने के कारण या किसी अन्य कारण से उसकी सेवा की समाप्ति पर ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों को इन नियमों से संलग्न प्रारूप XXXIV में ऐसा प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार को एक सेवा प्रमाणपत्र जारी करेगा।
- (ग) मजदूरी या मस्टर रोल-कम-मजदूरी रजिस्टर, जैसी भी स्थिति हो, पर उससे सम्बन्धित प्रविष्टियों के सामने प्रत्येक ऐसे भवन कर्मकार के हस्ताक्षर या अंगूठा निशान लेना तथा ऐसी प्रविष्टियां नियोजक या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा शीघ्र प्रमाणित की जाएगी।

(3) ऐसे किसी स्थापन की बाबत जिसकी मजदूरी संदाय अधिनियम, 1936 (1936 का 4) या न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 (1948 का 11) या ठेका श्रम (विनियमन और उत्पादन) अधिनियम, 1970 (1970 का 37) लागू होते हैं ऐसे अधिनियमों में से किसी भी अधिनियम या उनके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी नियोजक द्वारा रखे जाने वाले निम्नलिखित अपेक्षित रजिस्टर और अभिलेखों को इन नियमों के अधीन उस नियोजक द्वारा रखे गये रजिस्टर और अभिलेख समझा जाएगा, अर्थात्—

- (क) मस्टर रोल;
- (ख) मजदूरियों का रजिस्टर;
- (ग) कटौतियों का रजिस्टर;
- (घ) अतिकाल का रजिस्टर;
- (ङ) जुर्मानों का रजिस्टर;
- (च) अग्रियों का रजिस्टर; तथा
- (छ) मजदूरी-सह-मस्टर रोल का सम्मिलित रजिस्टर।

(4) इन नियमों में किसी बात के होते हुए भी, जहां इन नियमों के अधीन विनिर्दिष्ट किसी प्रारूप के बदले में कोई सम्मिलित या अनुकल्पिक प्रारूप का, किसी अन्य अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुपालन के लिए या प्रशासनिक सुविधा के लिए

कार्य के दोबारा करने से बचने के लिए किसी नियोजक द्वारा उपयोग किया जाना जाता है वहाँ ऐसे सम्मिलित या अनुकल्पिक प्ररूप का राज्य सरकार के पूर्व अनुमोदन से उपयोग किया जा सकेगा।

(5) प्रत्येक नियोजक के कार्य स्थल के सहज दृश्य स्थान पर, भवन निर्माण कर्मकारों के अधिनियम और इन नियमों के संक्षिप्त सार को अंग्रेजी और हिन्दी में तथा ऐसी भवन निर्माण कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली किसी भाषा में संप्रदर्शित करेगा।

(6) प्रत्येक नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि अधिनियम या इन नियमों के अधीन पोषित किए जाने वाले अपेक्षित रजिस्टर या अन्य अभिलेखों को पूर्ण और अद्यतन रखा जाता है तथा अन्यथा उपबंधित के सिवाय संबद्ध कार्य स्थान की प्रसीमाओं के भीतर किसी कार्यालय या निकटतम सुविधाजनक भवन में रखा जाता है।

(7) किसी स्थापन से संबंधित रजिस्टर और अन्य अभिलेखों को जिनका अधिनियम और इन नियमों के अधीन पोषित किया जाना अपेक्षित है, सुपाठ्य अंग्रेजी में और हिन्दी में यह ऐसे स्थापन में नियोजित भवन निर्माण कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली भाषा में पोषित किया जाएगा।

(8) उपनियम (7) में निर्दिष्ट प्रत्येक रजिस्टर या अन्य अभिलेख को उस नियोजक द्वारा, जिससे ऐसा रजिस्टर या अन्य अभिलेख संबंध रखता है, उसमें अंतिम प्रविष्टि की तारीख से तीन कलेण्डर वर्ष की अवधि के लिए मूल रूप में बनाए रखा जाएगा।

(9) अधिनियम या इन नियमों के अधीन पोषित प्रत्येक रजिस्टर अभिलेख या सूचना की मांग किए जाने पर निरीक्षक या अधिनियम के अधीन किसी अन्य प्राधिकारी या ऐसे प्रयोजन के लिए राज्य सरकार द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा या संबद्ध नियोजक द्वारा प्रस्तुत करवाया जाएगा।

(10) जहां किसी मजदूरी कालावधि के दौरान किसी भवन निर्माण कर्मकार की मजदूरी से कोई कटौती नहीं की गई है या ऐसे भवन निर्माण कर्मकार पर कोई जुर्माना अधिरोपित नहीं किया गया है या ऐसे भवन निर्माण कर्मकार द्वारा कोई अतिकालिक कार्य संपादित नहीं किया गया है या ऐसे भवन निर्माण कर्मकार को अतिकालिक कार्य के लिए संदाय नहीं किया गया है की दशा में यथास्थिति प्ररूप XXIX, XXX, XXXI या XXXII में पोषित सुसंगत रजिस्टर में समुचित स्थान पर ऐसी मजदूरी कालावधि के सामने "शून्य" प्रविष्टि की जाएगी।

89. धारा 82 विवरणियां किसी रजिस्ट्रीकृत स्थापन का प्रत्येक नियोजक इन नियमों से संलग्न प्ररूप- XXXV में दो प्रतिभों में ऐसे स्थापन की बाबत एक विवरणी अधिकारिता वाले रजिस्ट्रीकरण अधिकारी सहित अधिकारिता वाले निरीक्षक को एक प्रति के साथ प्रतिवर्ष भेजेगा ताकि उसके पास प्रत्येक कलेण्डर वर्ष की समाप्ति के ठीक बाद पंद्रह फरवरी तक पहुंच सके।

अध्याय - VII

भाग-I

सुरक्षा और स्वास्थ्य

साधारण उपबन्ध

90. धारा 40 अत्यधिक शोर, कम्पन आदि - नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि अत्यधिक शोर या कम्पन के बुरे प्रभावों से भवन कर्मकारों की संरक्षा के लिए पर्याप्त उपाय किए गए हैं और ऐसे सन्निर्माण स्थल पर शोर का प्रबलता स्तर किसी भी दशा में इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची I में अधिकथित सीमा से अधिक न हो।

91. धारा 40 अग्नि से परित्राण - नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

(क) ऐसे सन्निर्माण स्थल पर निम्नलिखित की व्यवस्था की जाती है- (i) अग्निशमन उपस्कर जो ऐसे सन्निर्माण स्थल पर किसी सम्भावित अग्नि के शनन के लिए पर्याप्त हो ;

(ii) राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप पर्याप्त दबाव पर पर्याप्त जल का प्रदाय;

(iii) खण्ड (क) के उपखण्ड (i) के अधीन उपबन्धित अग्निशमन उपस्कर के प्रचालन के लिए अपेक्षित संख्या में प्रशिक्षित व्यक्तियों की संख्या उचित रूप से अनुरक्षित की जाती है तथा उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा वर्ष में कम से कम एक बार नियमित अंतराल पर निरीक्षित की जाएगी तथा ऐसे निरीक्षणों का अभिलेख रखा जाता है ; तथा

(ख) भवन कर्मकारों के परिवहन के लिए प्रयुक्त प्रत्येक लांच या नौका या अन्य यान और प्रत्येक उत्पादक साधित्र जिसके अन्तर्गत चलित कैन आती है के कैंबिन की दशा में उपयुक्त प्रकार के वहनीय अग्निशमन उपस्कर की पर्याप्त संख्या की व्यवस्था ऐसे प्रत्येक लांच या नौका या यान या उत्पादक साधित्र पर की जाएगी।

92. धारा 40 आपातकालीन कार्य योजना - नियोजक किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि उस दशा में जहां ऐसे सन्निर्माण स्थल पर पांच सौ से अधिक भवन कर्मकार नियोजित किए जाते हैं वहां निम्नलिखित आपात स्थितियां ,

(i) जैसे—

- (क) अग्नि और विस्फोट,
- (ख) उत्पापक साधित्रों और परिवहन उपकरणों का ढह जाना,
- (ग) भवन, शैड या संरचनाओं आदि का ढह जाना,
- (घ) गैस रिसाव या खतरनाक मालों या रसायनों का छलकना,
- (ङ) भवन कर्मकारों का डूबना, वाहिकाओं का धंसना, और
- (च) भू-स्खलन, भवन कर्मकार का दब जाना, जलप्लावन, आंधी और अन्य प्राकृतिक विपत्तियों से निपटने के लिए आपात्कालीन कार्य योजना तैयार की जाती है और महानिदेशक के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की जाती है।

93. धारा 40 मोटरों, आदि की बाड़ लगाना — नियोजक किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी मोटरों, दंतचक्र, जंजीरों और घर्षण, गियरों, गतिपालक चक्र, धुरातंत्र मशीनरी के खतरनाक और चलित पुर्जों (चाहे यांत्रिक शक्ति से चालित हों या न हों) और वाष्प पाइपों की सुरक्षित रूप से बाड़ या लपेट लगाई जाती है;
- (ख) मशीनरी के खतरनाक पुर्जों की बाड़ ऐसी मशीनरी के गतिशील रहते या उसका प्रयोग करते समय डटाई नहीं जाती है;
- (ग) किसी मशीनरी का कोई पुर्जा जो गतिशील है और जिसकी सुरक्षित रूप से बाड़ नहीं लगाई गई है का निरीक्षण, स्नेहन, समायोजन या मरम्मत ऐसे व्यक्ति द्वारा की जाती है जो ऐसे निरीक्षण, स्नेहन समायोजन या मरम्मत के लिए कुशल व्यक्ति है;
- (घ) मशीनों के पुर्जे तब साफ किए जाते हैं जब ऐसी मशीन रोकी जाती है;
- (ङ) जब कोई मशीन संरक्षी सेवा या मरम्मत के लिए रोकी जाती है तब यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त उपाय किए जाते हैं कि ऐसी मशीन अचानक पुनः चालू न हो जाए।

94. धारा 40 अत्यधिक भार का उत्पादन और वहन — कोई नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कोई भवन कर्मकार अपने हाथ से या सिर पर या उसका पीठ या कंधों पर कोई सामग्री, वस्तु औजार या साधित्र भार से अधिक नहीं उठाता है या ले जाता है जिसकी अधिकतम सीमा निम्नलिखित सारणी में दी गई है :

व्यक्ति	अधिकतम भार
वयस्क पुरुष	55 कि.ग्रा.
वयस्क स्त्री	30 कि.ग्रा.
कुमार पुरुष	30 कि.ग्रा.
कुमारी स्त्री	20 कि.ग्रा.

जब तक कि किसी अन्य भवन कर्मकार या यांत्रिक युक्ति द्वारा सहायता न ली गई हो।

- (ख) कोई भवन कर्मकार अन्य भवन कर्मकारों की सहायता से हाथ से या सिर पर या उनकी पीठ या कंधों पर कोई सामग्री, वस्तु औजार या साधित्र उस भार से अधिक नहीं उठाता है या ले जाता है, जो खण्ड (क) के अधीन पृथक-पृथक रूप से प्रत्येक भवन कर्मकार के लिए दी गई अधिकतम सीमा के कुल योग भार से अधिक है, जब तक कि यांत्रिक युक्ति द्वारा सहायता न ली गई हो।

95. धारा 40 स्वास्थ्य और सुरक्षा नीति — (1) (क) पचास या अधिक भवन कर्मकारों को नियोजित करने वाला प्रत्येक स्थापन भवन कर्मकारों की बाबत नीति का लिखित कथन तैयार करेगा और उसे मुख्य निरीक्षक के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करेगा।

- (ख) खण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति में निम्नलिखित अन्तर्निष्ठ होंगे, अर्थात्—

- (i) भवन कर्मकारों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरणीय संरक्षण के संबंध में स्थापन का आशय और प्रतिबद्धताएं;
- (ii) अधिक्षेपियों के विभिन्न स्तरों पर उत्तरदायित्व को विनिर्दिष्ट खण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति के कार्याव्यवस्था के लिए किए गए संगठनात्मक उद्देश्य;
- (iii) प्रमुख नियोजक, ठेकेदार, उप ठेकेदार, परिवहनकर्ता या अन्य अधिकारियों के जो भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में अन्तर्ग्रास्त हैं, उत्तरदायित्व;
- (iv) सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के जोखिम के निर्धारण के लिए तकनीकें और ढंग तथा उनके लिए उपचारी उपाय;
- (v) सन्निर्माण कार्य में लगे हुए भवन कर्मकारों, प्रशिक्षकों पर्यवेक्षकों या अन्य व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए इन्तजाम;
- (vi) खण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति को प्रभावी करने के लिए अन्य इन्तजाम;

(ग) खण्ड (ख) के उपखण्ड (i) में निर्दिष्ट आशय और प्रतिबद्धता को, संग्रह, मशीनरी, उपस्कर, सामग्री और भवन कर्मकारों को लगाने के संबंध में विनिश्चित करते समय ध्यान में रखा जाएगा।

(2) प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित उपनियम (1) के खण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति की एक प्रति मुख्य निरीक्षक को भेजी जाएगी।

(3) स्थापन, उपनियम (1) के खण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति का निम्नलिखित परिस्थितियों के अधीन रहते हुए, जब कभी आवश्यक समझा जाए, पुनरीक्षण करेगा; अर्थात्:-

(i) जब कभी ऐसा कोई विस्तार या उपांतरण ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में किया जाता है जिसका कि भवन कर्मकारों की सुरक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा, या

(ii) जब कभी ऐसा कोई नया भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य, पदार्थ, वस्तुएं या तकनीकें जोड़ी जाती हैं, जिनका भवन कर्मकारों के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर प्रभाव पड़ेगा।

(4) उपनियम (1) के उपखण्ड (क) में निर्दिष्ट नीति की एक प्रति हिन्दी और ऐसी स्थानीय भाषा में जो भवन कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाती है, सन्निर्माण स्थल पर किसी सहजदृश्य स्थान पर प्रदर्शित की जाएगी।

96. धारा 40 खतरनाक और हानिप्रद पर्यावरण—कोई नियोजक, भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) जब कोई आंतर दहन इंजन परिरुद्ध स्थान पर उत्खनन या सुरंग या किसी अन्य कार्य स्थान में रचित किया जाता है जहां प्रति दस लाख से पचास अंश से कम वायुमंडल के कार्बन मोनोऑक्साइड अंश रखने के लिए न तो प्राकृतिक संवातन और न ही कृत्रिम संवातन प्रणाली पर्याप्त है, स्वास्थ्य परिसंकटों से भवन कर्मकारों को बचाने की दृष्टि से ऐसे कार्यस्थल पर पर्याप्त और उपयुक्त उपाय किए जाते हैं;

(ख) किसी भवन कर्मकार को, ऐसी किसी परिरुद्ध जगह या टैंक या ट्रैंच या उत्खनन में, जिसमें ऐसी प्रकृति की उतनी मात्रा में कोई धूल, धूम या अन्य उपद्रव्य बंद कर दिए गए हैं जो भवन कर्मकारों को हानिकर या क्लेशकर हो सकते हैं या जिसमें विस्फोटक, विषैला, अवायुकर या गैसीय सामग्री या हानिकर वस्तुएं ले जाई गई हैं या भंडारित की गई हैं या जिसमें शुष्क बर्फ प्रशीतक के रूप में प्रयुक्त किया गया है या जिसे धूमित किया गया है या जिसमें आक्सीजन की कमी की संभावना है, जब तक कि ऐसी धूल, धूम या अन्य उपद्रव्य और खतरों को जो उपस्थित हो सकते हैं, दूर करने के लिए और उसमें और वृद्धि होने के निवारण के लिए सभी व्यवहार्य कदम न उठा लिए गए हों, और ऐसे कार्य स्थान या टैंक या ट्रैंच या उत्खनन को ऐसे भवन कर्मकारों के प्रवेश के लिए सुरक्षित और ठीक होने के लिए उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा प्रमाणित न कर दिया गया हो, प्रवेश करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

97. धारा 40 शिरोपरी संरक्षा—(1) नियोजक, भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर सुनिश्चित करेगा कि शिरोपरी संरक्षा का परिनिर्माण निर्माणाधीन प्रत्येक भवन की परिधि के साथ करेगा जब उसके पूर्ण होने पर ऊंचाई में पन्द्रह मीटर या उससे अधिक होगी।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट शिरोपरी संरक्षा चौड़ाई में दो मीटर से कम नहीं होगी और भवन के आधार के ऊपर पांच मीटर से अनधिक की ऊंचाई पर परिनिर्मित की जाएगी और ऐसे शिरोपरी संरक्षा की बाहरी कोर उसकी भीतरी कोर से एक सौ पचास मिलीमीटर ऊंची होगी या उसका परिनिर्माण भवन में उसकी क्षैतिज ढलान से बीस डिग्री से अनधिक के कोण पर किया जाएगा।

(3) नियोजक भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य पर यह सुनिश्चित करेगा कि सामग्री, वस्तुओं या पदार्थों के गिरने की जोखिम वाले किसी क्षेत्र को रस्सियों से बांध दिया गया है या घेरा डाल दिया गया है। ऐसे क्षेत्र में कार्य पर भवन कर्मकारों से भिन्न व्यक्तियों की असावधानता प्रदेश से अन्यथा उचित रूप से रक्षित कर दिया गया है।

98. धारा 40 फिसलने, व्यवधान, विदारण, डूबने और गिरने संबंधी परिसंकट—(1) भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर सभी गलियां प्लेटफार्म और सन्निर्माण कार्य के अन्य स्थानों को, नियोजक द्वारा धूल, मलबा या वैसी ही सामग्री के इकट्ठा होने से और अन्य बाधाओं से कारित कर सकती है, मुक्त रखा जाएगा।

(2) कोई तीक्ष्ण रूप से प्रक्षेपण या निकला हुआ भाग या वैसे ही निकले हुए भाग को जो भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर भवन कर्मकार को कोई विदारण परिसंकट कारित कर सकता है, नियोजक द्वारा हटा दिया जाएगा या उपयुक्त उपाय करके अन्यथा सुरक्षित किया जाएगा।

(3) कोई नियोजक किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कर्मकार को सन्निर्माण कार्य पर ऐसे गलियारे या मंचान, प्लेटफार्म या किसी अन्य उत्पादित कार्यकरण स्थान का प्रयोग करने के लिए अनुज्ञात नहीं करेगा जो फिसलन भरी और खतरनाक स्थिति में हैं और यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे जल, ग्रीस तेल या अन्य वैसे ही पदार्थ को जो स्थल की फिसलभरी कर सकते हैं, हटा दिया जाए या उसे फिसलने के संकट से सुरक्षित करने के लिए बालू, बुरादा डाल दिया जाएगा या उपयुक्त सामग्री से आच्छादित कर दिया जाए।

(4) जब कभी किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर भवन कर्मकार जल में गिरने के संकट में फँस सकते हैं वहाँ उन्हें नियोजक द्वारा बचाने और ऐसे संकट से बचाने के लिए समुचित उपस्कर उपलब्ध कराए जाएंगे और यदि मुख्य निरीक्षक यह उचित समझता है तो ऐसे कार्यस्थल पर नियोजक द्वारा प्रशिक्षित कार्मिक सहित पूर्णतया सज्जित नौका या लांच की व्यवस्था की जाएगी।

(5) प्रत्येक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर प्रत्येक खुली जगह या द्वार, जिसमें या जिसमें से कोई भवन या अन्य सन्निर्माण कर्मकार, यान या उत्पादक साधित्र या अन्य उपस्कर गिर सकते हैं, ऐसे गिरने से रोकने के लिए नियोजक द्वारा आच्छादित या उपयुक्त रूप से रक्षित की जाएगी सिवाय वहाँ जहाँ कार्य की प्रकृति के कारणों से मुक्त पहुँच आवश्यक है।

(6) जहाँ कहीं किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर भवन कर्मकारों को ऐसे कार्य पर नियोजित रहते समय उंचाई से गिरने के संकट का जोखिम है, नियोजक द्वारा ऐसे संकट से उन्हें बचाने के लिए पर्याप्त उपस्कर या साधनों की व्यवस्था की जाएगी। ऐसे उपस्कर या साधन राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होंगे।

(7) जहाँ कहीं भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य से संबंधित सन्निर्माण स्थल पर किसी सामग्री, उपस्कर या भवन कर्मकार के गिरने की संभावना है वहाँ राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नियोजक द्वारा पर्याप्त और उपयुक्त सुरक्षा की व्यवस्था की जाएगी।

99. धारा 40 धूल, गैस, धूम आदि कोई—नियोजक, धूल गैस या धूम के संकेन्द्रण का निवारण, अनुज्ञेय सीमा के भीतर उनके संकेन्द्रण के नियंत्रण के लिए उपयुक्त साधनों की व्यवस्था करेगा जिससे कि ये किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर भवन कर्मकार को क्षति या स्वास्थ्य संकट कारित न करें।

100. धारा 40 संक्षारक पदार्थ—नियोजक, यह सुनिश्चित करेगा कि संक्षारक पदार्थ जिसके अन्तर्गत क्षार और अम्ल भी है, किसी भवन या सन्निर्माण कार्य पर ऐसे पदार्थों से संबंधित व्यक्ति द्वारा ऐसी रीति से भण्डारित और प्रयोग किए जाएं जिससे यह भवन या अन्य सन्निर्माण कर्मकार को खतरा उत्पन्न न करे और नियोजक द्वारा ऐसे पदार्थों के हथालने या उपयोग के दौरान उपयुक्त संरक्षात्मक उपस्कर की व्यवस्था की जाएगी और ऐसे पदार्थों में भवन या अन्य सन्निर्माण कर्मकार पर गिरने की दशा में नियोजक द्वारा तुरन्त उपयुक्त उपाय किए जाएंगे।

101. धारा 40 नेत्र संरक्षण—नियोजक द्वारा नेत्रों के संरक्षण के लिए उपयुक्त वैयक्तिक संरक्षा उपस्कर की व्यवस्था की जाएगी और भवन कर्मकार, जो वेल्डिंग, कर्तन, छीलन, पीसने या इसी प्रकार की सक्रियाओं में, जो भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर उसके नेत्रों को संकट कारित कर सकते हैं, उनका उपयोग करेंगे।

102. धारा 40 सिर का संरक्षण और अन्य संरक्षा दस्त्र—(1) प्रत्येक भवन कर्मकार से जिससे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के क्षेत्रों के भीतर कार्य करने या वहाँ से जाने की अपेक्षा है, जहाँ कहीं उस पर वस्तुओं या सामग्री के गिरने का संकट है नियंत्रक द्वारा राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रकार के और परीक्षित सुरक्षा हेलमेटों की व्यवस्था की जाएगी।

(2) प्रत्येक भवन कर्मकार को जिससे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर जल में या गीली कंक्रीट में या इसी प्रकार के अन्य कार्य करने की अपेक्षा है, नियोजक द्वारा उपयुक्त वाटर-प्रूफ जूतों की व्यवस्था की जाएगी।

(3) प्रत्येक भवन कर्मकार को जिससे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर वर्षा में या इसी प्रकार की गीली स्थितियों में कार्य करने की अपेक्षा है, नियोजक द्वारा टोप के साथ वाटर-प्रूफ कोट की व्यवस्था की जाएगी।

(4) प्रत्येक भवन कर्मकार को जिससे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर क्षार, अम्ल या अन्य वैसे ही संक्षारक पदार्थों का उपयोग और हथालने की अपेक्षा है नियोजक द्वारा राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप समुचित संरक्षात्मक उपस्कर की व्यवस्था की जाएगी।

(5) प्रत्येक भवन कर्मकार को जो भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर ऐसी तीक्ष्ण वस्तुओं के हथालने में लगा है जो हाथों की क्षति कारित कर सकती हैं, नियोजक द्वारा राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उपयुक्त दस्तानों की व्यवस्था की जाएगी।

103. धारा 40 वैद्युत परिसंकट—नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य को प्रारम्भ करने से पहले किसी ऐसे वैद्युत उपस्कर या साधित्र, मशीन या विद्युतमय वैद्युत सर्किट से, जो किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर उसके नियोजन के दौरान वैद्युत परिसंकट कारित कर सकता है, शारीरिक संपर्क में आने से किसी कर्मकार के निवारण करने के लिए पर्याप्त उपाय करेगा।

(2) नियोजक, भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के किसी सहज दृश्य स्थान पर हिन्दी में और किसी ऐसी स्थानीय भाषा में जो बहुसंख्यक भवन कर्मकारों द्वारा समझी जाती हो, उपयुक्त चेतावनी प्रतीकों को प्रदर्शित और उनका अनुरक्षण करेगा।

(3) किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के ऐसे कार्यस्थलों पर जहाँ भूमिगत विद्युत शक्ति लाइनों की सही स्थिति ज्ञात नहीं है वहाँ ऐसे जैक हैमर (हथौड़ा), सबल या अन्य दस्ती औजार का प्रयोग करने वाले भवन कर्मकारों को, जो विद्युतमय वैद्युत लाइन के संसर्ग में आ सकते हैं, नियोजक द्वारा राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रकार के विद्युतराधी संरक्षक दस्ताने और जूतादि की व्यवस्था की जाएगी।

(4) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि, यावत् साध्य, कोई तार जो जल के संसर्ग में आ सकता है या जो यांत्रिक रूप से क्षतिग्रस्त है, किसी भवन या सन्निर्माण कार्य पर भूमि या फर्श पर छूटा न रह जाए।

(5) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर प्रयुक्त सभी वैद्युत साधित्र और धारा प्रवहन उपस्कर ठोस सामग्री से बनाए गए हों और उचित और पर्याप्त रूप से भू-संपर्कित किए गए हों।

(6) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर सभी अस्थायी वैद्युत संस्थापन भू-क्षरण परिपथ नियोजक से उपबन्धित हैं।

(7) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा, कि किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य पर सभी वैद्युत संस्थापन तत्समय प्रवृत्त किसी विधि या अपेक्षाओं-को पूरा करते हैं।

104. धारा 40 यानीय यातायात-- (1) जब कभी कोई भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य किसी सड़क पर या किसी स्थान पर जो सड़क से अति निकट अवस्थित है, किया जा रहा हो, जहां कोई यानीय यातायात भवन कर्मचारों को क्षतिकारित कर सकता है वहां नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसा भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य को रोधक किया जाता है और ऐसे खतरे से निवारण के लिए उपयुक्त चेतावनी प्रतीक और प्रकाशों का प्रदर्शन या परिनिर्माण किया जाता है और यदि आवश्यक हो तो वह ऐसे यातायात को नियंत्रित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को लिखित में अनुरोध कर सकेगा।

(2) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर प्रयुक्त सभी यान मोटर यान अधिनियम, 1988 (1988 का 59) और उसके अधीन बनाए गए नियमों की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं।

(3) नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी वर्ग या वर्णन के यानों का ड्राईवर जिनका प्रचालन भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर किया जा रहा है, मोटर यान अधिनियम, 1988(1988 का 59) के अधीन विधिमाम्य चालन अनुज्ञप्ति का धारण करते हैं।

105. धारा 40 संरचनाओं का स्थायित्व-- नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी संरचना की कोई दीवार, चिमनी या अन्य संरचना या उसका कोई भाग ऐसी स्थिति में अरक्षित न छोड़ा जाए कि यह वायु दबाव, कंपन के कारण या भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य स्थल पर किसी अन्य कारण से न गिरे, न ढहे या न कमजोर हो।

106. धारा 40 गलियारों, आदि का प्रदीपन-- नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के उस स्थल पर जहां भवन कर्मचारों से कार्य करने या निकलने की अपेक्षा है, सुरक्षित कार्यकरण स्थितियां बनाए रखने के लिए पर्याप्त प्रदीपन की व्यवस्था हो और गलियारों, सीढ़ियों और उतराई के स्थलों के लिए उससे कम प्रदीपन न हो जिसका उपबन्ध सुसंगत राष्ट्रीय मानकों में किया गया है।

107. धारा 40 सामग्री का चट्टा लगाना-- नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि--

- (क) सभी भवन सामग्रियों का भंडारण या चट्टा लगाई किसी गलियारे या कार्यस्थल पर अवरोध से बचने के लिए सुरक्षित और व्यवस्थित रीति से की जाती है;
- (ख) सामग्री के ढेर का भंडारण या चट्टा लगाई ऐसे रीति से की जाती है जिससे स्थायित्व सुनिश्चित हो सके;
- (ग) किसी फर्श या प्लेटफार्म पर सामग्री या उपकरण का भंडारण ऐसी मात्रा से अधिक नहीं किया जाता है जो उसको सुरक्षित वहन क्षमता से अधिक हो;
- (घ) फर्श या प्लेटफार्म के किसी किनारे के इतने समीप भंडारण या स्थानन नहीं किया जाता है जो ऐसे व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो जो उसके नीचे या समीप में कार्य कर रहे हों।

108. धारा 40 मलबे का व्ययन-- नियोजक किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि--

- (क) मलबे की उठाई-धराई और व्ययन ऐसी किसी पद्धति से किया जाता है जो किसी व्यक्ति की सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न न करे;
- (ख) मलबे का इस प्रकार एकत्रित करना अनुज्ञात नहीं किया जाता है जो परिसंकटमय हो जाए;
- (ग) धूल को अनुज्ञात सीमा में रखने के लिए मलबे को पर्याप्त रूप से नम रखा जाता है;
- (घ) मलबे को ऐसे भवन या सन्निर्माण कार्य की किसी, ऊंचाई से भीतर या बाहर नहीं फेंका जाता है;
- (ङ) कार्य के पूरा होने पर, बची हुई भवन सामग्री, वस्तु या अन्य पदार्थ या मलबे का व्ययन, किसी यातायात या व्यक्ति को कोई परिसंकट से बचाने के लिए यथावश्यक किया जाता है।

109. धारा 40 तलों का संख्यांकन और चिन्हांकन-- नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य का प्रत्येक तल या स्तर, ऐसे तल या स्तर पर पहुंचने का स्थान समुचित रूप से संख्यांकित या चिन्हांकित है।

110. धारा 40 सुरक्षा हेलमेटों और जूतों का प्रयोग-- नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि सभी व्यक्ति, जो भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य में कोई कार्य या सेवा कर रहे हैं, राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सुरक्षा जूते और हेलमेट पहनते हैं।

अध्याय -VII

भाग II

चिकित्सीय सुविधाएं

111. धारा 40 भवन निर्माण कर्मकारों की चिकित्सीय परीक्षा आदि—नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) (i) ऐसा कोई भवन निर्माण कर्मकार जो ऐसे कार्य जिसमें जोखिम या परिसंकट अंतर्निहित है के लिए नियोजित किया जाता है, ऐसे कर्मकार के कालिक स्वास्थ्य परीक्षा के लिए जैसा मुख्य निरीक्षक समुचित समझता है उसकी चिकित्सक दृष्टि जांच ऐसे अन्तर्गल पर कर ली जाती है जैसा मुख्य निरीक्षक समय-समय पर निर्देश देता है;
- (ii) केन, विंच या अन्य उत्पादक यन्त्रायात उपस्कर या यान के प्रत्येक आपरेटर की, ऐसे आपरेटर के नियोजन से पूर्व और पुनः कर्त्तव्य: ऐसे अन्तर्गल पर जैसा मुख्य निरीक्षक समय-समय पर निर्देश देता है चिकित्सक दृष्टि जांच कर ली जाती है;
- (iii) उपखंड (i) और उपखंड (ii) में निर्दिष्ट चिकित्सीय परीक्षा इन नियमों से संलग्न अनुसूची-II के अनुसार है और ऐसे चिकित्सा अधिकारियों द्वारा या ऐसे अस्पतालों पर संचालित होगी जो राज्य सरकार द्वारा इस प्रयोजन के लिए समय-समय पर अनुमोदित की जाती है;
- (iv) किसी ऐसे भवन निर्माण कर्मकार की दशा में जो ऐसे कर्मकार को नियत नौकरी या कार्य के कारण से विशेष उपजीविका जन्म स्वास्थ्य परिसंकट के लिए आरक्षित छोड़ दिया जाता है उपखंड (i) या उपखंड (ii) में निर्दिष्ट उस कालिक चिकित्सीय परीक्षा के अन्तर्गत उपजीविका जन्म रोग के निदान के लिए ऐसे भवन निर्माण कर्मकार की जांच करने वाले सन्निर्माण चिकित्सा आ. जारी द्वारा आवश्यक समझा गया ऐसा विशेष अन्वेषण भी है;
- (ख) खंड (क) के उपखंड (i) या उपखंड (ii) में निर्दिष्ट चिकित्सीय परीक्षा के लिए कोई भवन निर्माण कर्मकार प्रभारित नहीं किया जाता है और ऐसी परीक्षा का खर्च ऐसे भवन निर्माण कर्मकार को नियोजित करने वाले नियोजक द्वारा वहन किया जाता है;
- (ग) खंड (क) के उपखंड (i) या उपखंड (ii) में निर्दिष्ट चिकित्सीय परीक्षा का प्रमाण-पत्र इन नियमों से संलग्न प्ररूप-XXXVI में जारी किया जाता है;
- (घ) उसके द्वारा नियोजित प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार का खंड (क) के उपखंड (i) या उपखंड (ii) में निर्दिष्ट चिकित्सीय परीक्षा का अभिलेख इन नियमों से संलग्न प्ररूप-XXXVII में एक रजिस्टर में प्रेषित किया जाता है और ऐसा रजिस्टर भांग किए जाने पर अधिकारिता वाले निरीक्षक को उपलब्ध कराया जाएगा;
- (ङ) यदि खंड (क) के उपखंड (i) या उपखंड (ii) के अधीन किसी भवन निर्माण कर्मकार की जांच कर रहे सन्निर्माण चिकित्सीय अधिकारी की यह राय है कि इस प्रकार परीक्षित ऐसे भवन निर्माण कर्मकार का उस भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य से, जिस पर वह नियोजित किया जाता है, दूर ले जाया जाना स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अपेक्षित है, ऐसा चिकित्सा अधिकारी तदनुसार ऐसे भवन निर्माण कर्मकार के नियोजक को जानकारी देगा और ऐसा नियोजक जहां ऐसा कर्मकार हिताधिकारी के रूप में रजिस्ट्रीकृत है ऐसी राय से बोर्ड को इतितला देगा।

112. धारा 40 सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारियों के कर्त्तव्य—(1) नियम, 111 के खंड (क) के उपखंड (i) या उपखंड (ii) में निर्दिष्ट चिकित्सीय परीक्षा किसी सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी द्वारा की जाएगी।

(2) ऐसे सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी के कर्त्तव्य और जिम्मेदारियां नीचे दी गई अनुसार होंगी; अर्थात्—

- (क) भवन निर्माण कर्मकारों की चिकित्सीय परीक्षा;
- (ख) प्राथमिक-उपचार देखरेख जिसमें आपात चिकित्सीय उपचार भी सम्मिलित है;
- (ग) इन नियमों के अनुसार संबद्ध प्राधिकारियों को उपजीविका जन्म बीमारियों की अधिसूचना;
- (घ) प्रतिरक्षण सेवाएं;
- (ङ) चिकित्सी अभिलेख अनुरक्षण और रख-रखाव;

- (घ) स्वास्थ्य शिक्षा जिसमें परिवार कल्याण पर सलाहकार सेवाएं, व्यक्तिगत स्वच्छता, पर्यावरण स्वच्छता और सुरक्षा भी है ;
- (ङ) परामर्श सेवाएं।

113. धारा 40 उपजीविका जन्य स्वास्थ्य केन्द्र—नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य जिसमें इन नियमों से संलग्न अनुसूची-III के अधीन विनिर्दिष्ट परिसंकटपथ प्रक्रियाएं अंतर्गत हैं, के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) ऐसे स्थल पर चल या स्थिर उपजीविका जन्य स्वास्थ्य केन्द्र का प्रबंध कर दिया जाता है और सुव्यवस्था में रखा जाता है;
- (ख) खंड (क) में निर्दिष्ट उपजीविका जन्य स्वास्थ्य केन्द्र पर इन नियमों से संलग्न अनुसूची-IV में अधिकथित मापमान के अनुसार सेवाएं और सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाती हैं;
- (ग) उपजीविका जन्य स्वास्थ्य केन्द्र पर नियुक्त सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी इन नियमों से संलग्न अनुसूची-V में यथा अधिकथित अर्हता रखता है;

114. धारा 40 एम्बुलेंस कमरा—नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) यदि ऐसे सन्निर्माण स्थल पर पांच सौ या इससे कम कर्मकार नियोजित किए जाते हैं वहां ऐसे सन्निर्माण स्थल पर एक एम्बुलेंस कमरा है या किसी निकट के अस्पताल से एम्बुलेंस कमरा उपलब्ध करवाने की व्यवस्था है और ऐसा एम्बुलेंस कमरा किसी अर्हता प्राप्त नर्स के भार साधन में है और ऐसे एम्बुलेंस कमरा की सेवा ऐसे सन्निर्माण स्थल पर नियोजित भवन निर्माण कर्मकार को जब वह काम पर है प्रत्येक समय पर उपलब्ध है;
- (ख) यदि ऐसे सन्निर्माण स्थल पर पांच सौ से अधिक भवन और अन्य सन्निर्माण नियोजित किए जाते हैं वहां प्रभावी संचार पद्धति के साथ एक एम्बुलेंस कमरा है और ऐसा एम्बुलेंस कमरा किसी अर्हता प्राप्त नर्स के भार साधन में है और ऐसे एम्बुलेंस कमरा की सेवा ऐसे सन्निर्माण स्थल पर नियोजित भवन निर्माण कर्मकार को जब वह काम पर है प्रत्येक समय पर उपलब्ध है और ऐसा एम्बुलेंस कमरा किसी सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी के संपूर्ण भार साधन में है;
- (ग) खंड (क) या खंड (ख) में निर्दिष्ट एम्बुलेंस कमरा इन नियमों से संलग्न अनुसूची-VI में विनिर्दिष्ट वस्तुओं से सज्जित है;
- (घ) खंड (क) या खंड (ख) में निर्दिष्ट एम्बुलेंस कमरा पर उपचारित दुर्घटनाओं और बीमारियों के सभी मामलों का अभिलेख प्रेषित किया जाता है और मांग किए जाने पर अधिकारिता वाले निरीक्षण को प्रस्तुत किया जाता है।

115. धारा 40 एम्बुलेंस वेन—नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे सन्निर्माण स्थल पर एक एम्बुलेंस वेन उपलब्ध है या भवन निर्माण कर्मकारों की दुर्घटना या बीमारी के गंभीर मामलों को अस्पताल के लिए तत्परता से परिवहन के लिए ऐसे एम्बुलेंस वेन उपलब्ध कराने के लिए निकट के अस्पताल से व्यवस्था करवा दी जाती है और ऐसा एम्बुलेंस वेन अच्छी मरम्मत में रखा जाता है और इन नियमों से संलग्न अनुसूची-VII में विनिर्दिष्ट मानक सुविधाओं से सुसज्जित रहता है।

116. धारा 40 स्ट्रेचर—नियोजक, भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे सन्निर्माण स्थल पर आपातकाल में आसानी से उपलब्ध कराए जाने के लिए स्ट्रेचर की पर्याप्त संख्या का प्रबंध कर दिया जाता है।

117. धारा 40 भवन निर्माण कर्मकारों के लिए उपजीविका जन्य स्वास्थ्य सेवाएं—(1) नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य निर्माण स्थल पर, जहां पांच सौ से अधिक भवन निर्माण कर्मकार नियोजित किए जाते यह सुनिश्चित करेगा कि:-

- (क) ऐसे सन्निर्माण स्थल पर सभी समयों पर विशेष चिकित्सीय सेवा या उपजीविका जन्य स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध है और ऐसी सेवा—
- (i) प्राथमिक उपचार और आपातकालीन उपचार का प्रबन्ध करेगी;
 - (ii) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के लिए उनके नियोजन से पूर्व उपजीविका जन्य परिसंकटों के लिए और उसके पश्चात् समय-समय पर ऐसे अन्तरालों पर जैसा मुख्य निरीक्षक द्वारा विनिर्दिष्ट किया जावे विशेष चिकित्सीय सेवा का संचालन करेगी;
 - (iii) ऐसी चिकित्सीय सेवा के प्राथमिक उपचार कर्मिकों के प्रशिक्षण का संचालन करेगी;
 - (iv) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के स्वास्थ्य को परिसंकटों से बचाने के लिए ऐसे नियोजक को कार्य की दशाओं और अपेक्षित सुधार पर सलाह देगी;
 - (v) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों में स्वास्थ्य शिक्षा जिसमें परिवार कल्याण भी सम्मिलित है, प्रोन्नत करेगी;
 - (vi) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के लिए हानिप्रद होने के संदिग्ध रासायनिक, भौतिक या जैव कारकों का पता चलाने, मापन और मूल्यांकन करने में अधिकारिता वाले निरीक्षक का सहयोग करेगी;
 - (vii) टिटनेस, मोतीझाड़ा, हैजा के और अन्य संक्रामक बीमारियों के विरुद्ध ऐसे सभी भवन निर्माण कर्मकारों के लिए प्रतिरक्षण का जिम्मा लेगी;

- (ख) खंड (क) में निर्दिष्ट विशेष चिकित्सीय सेवा ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के उपचार, नौकरी नियोजन, दुर्घटना निवारण और कल्याण के मामलों में राज्य सरकार के श्रम विभाग या किसी अन्य संबद्ध विभाग या सेवा के साथ सहयोग करती है,
- (ग) खंड (क) में निर्दिष्ट विशेष चिकित्सीय सेवा की अध्यक्षता किसी सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी द्वारा की जाती है और उसमें यथोचित कर्मचारीवृंद, प्रयोगशाला और अन्य उपस्करों की व्यवस्था की जाती है;
- (घ) खंड (क) में निर्दिष्ट विशेष चिकित्सीय सेवा के परिसर सुविधानुसार सुगम है जिनमें कम से कम एक प्रतीक्षालय कक्ष, एक परामर्श कक्ष, एक उपचार कक्ष, एक प्रयोगशाला और ऐसी सेवा की नर्सों और अन्य कर्मचारीवृंद के लिए उपयुक्त निवास सुविधा होती है,
- (ङ) खंड (क) में निर्दिष्ट विशेष चिकित्सीय सेवा खंड (क) के उपखंड (i) से (vii) में निर्दिष्ट इसके कार्यकलापों के संबंध में अभिलेख प्रेषित करती है तथा प्रत्येक तीन मास में एक बार निम्नलिखित पर, लिखित रूप में जानकारी मुख्य निरीक्षक को भेजती है,

(i) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों के स्वास्थ्य की दशा; और

(ii) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों में से किसी को भी होने वाली उपजीविका जन्य क्षति या बीमारी की प्रकृति और कारण ऐसे कर्मकार को उपलब्ध कराया गया उपचार और ऐसी क्षति या बीमारी के आवर्तन निवारण में लिए गए उपाय।

118. धारा 40 विषयता या उपजीविकाजन्य बीमारियों की सूचना— नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जब कोई भवन निर्माण कर्मकार इन नियमों से संलग्न अनुसूची VIII में विनिर्दिष्ट किसी बीमारी के संस्पर्श में आता है तो इन नियमों से संलग्न प्ररूप XXXVIII में एक सूचना अधिकारिता वाले निरीक्षक और उस बोर्ड को अविलम्ब भेज दी जाती है जिसके साथ ऐसा भवन निर्माण कर्मकार एक हिताधिकारी के रूप में रजिस्ट्रीकृत किया जाता है,
- (ख) यदि कोई चिकित्सा व्यवसायी या सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी खंड (क) में निर्दिष्ट किसी बीमारी से पीड़ित किसी भवन निर्माण कर्मकार की देखभाल करता है तो ऐसा चिकित्सा व्यवसायी या सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी ऐसे भवन निर्माण कर्मकार का नाम और संपूर्ण विशिष्टियों और उसके द्वारा उस बीमारी के विषय में जिससे वह पीड़ित है अविलम्ब सूचना मुख्य निरीक्षक को भेज दी जाती है।

119. धारा 40 प्राथमिक उपचार पेटियों— नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) प्राथमिक उपचार पेटियों या अल्मारियों की पर्याप्त संख्या का भवन निर्माण कर्मकारों को प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराए जाने के लिए प्रबंध किया जाता है तथा प्रेषित किए जाते हैं;
- (ख) प्रत्येक प्राथमिक उपचार पेटि या अल्मारी स्पष्टतः "प्राथमिक उपचार" चिह्नित की जाती है और इन नियमों से संलग्न अनुसूची IX में विनिर्दिष्ट वस्तुओं से सुसज्जित रहती है;
- (ग) प्राथमिक-उपचार पेटि या अल्मारी में प्राथमिक उपचार के लिए अपेक्षित वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रखा जाता है और ऐसी पेटि या अल्मारी को इस प्रकार रखा जाता है ताकि इसकी धूल या अन्य बाह्य पदार्थ के संदूषण से तथा आद्रता के भेदन से संरक्षा की जा सके तथा ऐसी पेटि या अल्मारी प्राथमिक उपचार में प्रशिक्षित किसी ऐसे व्यक्ति के भार साधन में रखी जाती है तथा कार्यकरण के घंटों के दौरान सदैव आसानी से उपलब्ध रहता है।

120. धारा 40 आपातकालीन देखभाल सेवाएं या आपातकालीन उपचार— नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) निम्नलिखित का नियंत्रण करने के लिए अनिवार्य जीवन रक्षक सहायक और अपेक्षित साधन उपलब्ध करा दिए जाते हैं और किसी सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारी के पर्यवेक्षण के अधीन रखे जाते हैं—

(i) सिर की क्षति और मेरुदंड की क्षति;

(ii) रक्त बहना;

(iii) अस्थियों और जोड़ों का भंग और विसंधान;

(iv) कुचलकर क्षति;

(v) आघात जिसमें विद्युत आघात भी सम्मिलित है;

(vi) किसी भी कारण से निर्जलित होना;

(vii) सांप का काटना, कीड़े का काटना, बिच्छु और मधुमक्खी का डंक मारना;

(viii) जलने जिसमें रासायनिक जलन भी सम्मिलित है;

- (ix) मोड़ या विविध पक्षाघात;
 - (x) अन्य शल्य चिकित्सा संबंधी, स्त्री रोग संबंधी, अवरोधन संबंधी या बाल चिकित्सा संबंधी आपातकाल;
 - (xi) डूब जाना;
 - (xii) भवन निर्माण कर्मकारों को लू लगना और पाला मारना।
- (ख) खंड (क) के उपखंड (i) से (xii) में निर्दिष्ट किसी भी आपातकालिक परिस्थिति के लिए आवश्यक जीवन साधन किसी क्षतिग्रस्त या किसी बीमार भवन निर्माण कर्मकार को ऐसे भवन निर्माण स्थल से किसी हस्पताल तक उसके परिवहन के दौरान और ऐसे हस्पताल में किसी डाक्टर द्वारा ऐसे भवन निर्माण कर्मकार के देख भाल किए जाने तक उपलब्ध करा दिए जाते हैं,
- (ग) समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा यथा विनिर्दिष्ट ऐसे भवन निर्माण स्थल पर विशेष स्थानीय दशाओं और सन्निर्माण कर्मकार प्रक्रियाओं से उद्भूत भवन निर्माण कर्मकारों की आपातकालीन देखभाल या उपचार के लिए अपेक्षित कोई अन्य उपस्कर या सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाती हैं,

अध्याय VII

भाग III

उत्थापक साधित्र और गियर

121. धारा 40 उत्थापक साधित्र का सन्निर्माण और अनुरक्षण— नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर—

- (क) सभी उत्थापक साधित्र, जिनमें उनके भाग तथा कार्यकरण गियर चाहे वे स्थिर हैं या चल रहे हैं ऐसे साधित्रों को एन्करिंग या स्थिरीकरण में प्रयुक्त कोई संयंत्र या गियर भी सम्मिलित हैं—
 - (i) ठोस सन्निर्माण, ठोस सामग्री के हैं और पर्याप्त मजबूत हैं जिससे कि वे प्रयोजन की पूर्ति कर सकें जिसके लिए उनका प्रयोग होना है और ऐसे सभी साधित्र प्रत्यक्ष गलतियों से मुक्त होंगे, और
 - (ii) उन्हें अच्छी मरम्मत द्वारा और कार्यकरण दशा में बनाए रखा गया है;
- (ख) (i) प्रत्येक ड्रम या धिरनी, जिसके चारों ओर उत्थापक साधित्र की रस्सी लिपटी रहती है, ऐसी रस्सी के संबंध में पर्याप्त व्यास और ठोस सन्निर्माण की है;
- (ii) कोई रस्सी जो उत्थापक साधित्र के वाइंडिंग ड्रम पर समाप्त होती है, ऐसे ड्रम के साथ सुरक्षित रूप से बंधी है और ऐसे उत्थापक साधित्र की प्रत्येक प्रचालन स्थिति में ऐसी रस्सी के कम से कम तीन धुमाल ऐसे ड्रम पर रहें;
- (iii) ड्रम का फ्लैज रस्सी की अंतिम सतह से परे, रस्सी के व्यास से दुगुना प्रक्षेपित है और यदि ऐसा प्रक्षेपण उपलब्ध नहीं है तो ऐसी रस्सी को ऐसे ड्रम से निकलने से रोकने के लिए एंटी-स्लैकनेस गार्ड जैसे अन्य उपाय उपलब्ध कराये जाएंगे;
- (ग) प्रत्येक उत्थापक में पर्याप्त और दक्ष ब्रेक लगाए गए हैं जो—
 - (i) लटके हुए भार (जिसमें जांच भार भी है) को गिरने से रोकने में और जब भार नीचे किया जा रहा हो तो ऐसे भार को प्रभावी ढंग से नियंत्रण करने में समर्थ है;
 - (ii) बिना आघात पहुंचाए कार्य कर सकते हैं ;
 - (iii) शूज से युक्त हैं जिन्हें परिचालन के लिए आसानी से हटाया जा सकता है; और
 - (iv) समायोजन के सरल और आसान पहुंच वाले साधनों से युक्त है ;

परन्तु यह कि इस खंड में दिया गया कुछ भी माप लिंच पर लागू नहीं होगा, जो इस खंड के अनुसरण में यथा उपलब्ध कराई गई ब्रेक के साथ उतने ही सुरक्षित रूप से प्रचालित की जा सकती है :

(घ) प्रत्येक उत्पापक साधित्र के नियंत्रण—

- (i) इस प्रकार स्थित होंगे कि ऐसे साधित्र के चालक के पास अपने खड़े होने के स्थान या सीट पर प्रचालन के लिए व्यापक जगह हो और उसे भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य का यथासाध्य अनिवारित अवलोकन हो, और यह कि वह भार और रस्सियों से दूर हो, और यह कि उसके ऊपर से कोई भार नहीं गुजरे;
- (ii) ऐसे साधित्र के उचित प्रचालन के लिए अरगोनोमीटरिक विचारों पर सम्यक् ध्यान देते हुए स्थित किए गए हैं;
- (iii) इस प्रकार अवस्थित हैं कि ऐसे साधित्र का चालक ऐसे साधित्र के पूर्ण प्रचालन के समय हील खंड की ऊंचाई से ऊपर रहता है;
- (iv) ऊपर या उसके पार्श्वस्थ पर उनके प्रयोजन और उनके प्रचालन की रीति के लिए स्पष्ट चिन्हांकन हैं;
- (v) में, जहां आवश्यक है, वहां आकस्मिक संचलन या सरकाव को रोकने के लिए युक्ति लगाई गई है;
- (vi) परिणामिक भार संचलन की दिशा में यथासाध्य गतिमान हो, और
- (vii) जहां स्वचालित ब्रेक लगाई गई है, बिजली चले जाने की दशा में स्वतः ही अपनी तटस्थ स्थिति में आ जाए।

122. धारा 40 उत्पापक साधित्र की जांच और कालिक परीक्षण— नियोजक भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी उत्पापक साधित्रों का इनके सभी भागों और गियरों सहित, चाहे वे स्थिर हैं अथवा चलायमान प्रथम बार प्रयोग में लाने से पूर्व, या इसमें, इसकी क्षमता अथवा स्थिरता को प्रभावित करने के लिए दायी परिवर्तन या मरम्मत करने के पश्चात् या निर्माण स्थल पर खड़ा करने के पश्चात् और प्रत्येक पांच वर्ष में कम से कम एक बार इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची X में विनिर्दिष्ट रीति में सक्षम व्यक्ति द्वारा जांच और परीक्षण किया गया है;
- (ख) सभी उत्पापक साधित्रों का प्रत्येक बारह मासों में कम से कम एक बार सक्षम व्यक्ति द्वारा अच्छी तरह से परीक्षण किया जाता है और जहां अच्छी तरह से परीक्षण किया जाता है और जहां ऐसा परीक्षण करने वाला सक्षम व्यक्ति यह राय बनाता है कि उत्पापक साधित्र सुरक्षित रूप से निरंतर कार्य नहीं कर सकता, तो वह उत्पापक साधित्र के स्वामी को अपनी राय की तुरन्त लिखित में सूचना देगा।

स्पष्टीकरण— इस नियम के प्रयोजन के लिए अच्छी तरह से परीक्षण से चाक्षुष परीक्षण अभिप्रेत है, जो यदि आवश्यक है तो अन्य साधनों जैसे परीक्षण किए गए भागों को सुरुक्षा के विषय में विश्वसनीय निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए परिस्थितियों के अनुसार की गई थोड़ी जांच से संपूर्ण होता है।

123. धारा 40 स्वचालित सुरक्षित भार सूचक— (1) नियोजक भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (i) प्रत्येक क्रेन के साथ जो यदि इस प्रकार बनी है कि निरापद कार्यकरण भार जिन को ऊपर या नीचे करके अथवा अन्य किसी प्रकार से परिवर्तित हो सकता है, निरापद कार्यकरण भार का स्वतः सूचक जुड़ा है जो जब कभी भार, निरापद कार्यकरण भार से अधिक हो जाता है तो संचालक को चेतावनी देता है;
- (ii) जहां भी संभव हो कट आउट लगाये गये हैं जो यदि भार निरापद कार्यकरण भार से अधिक हो जाता है तो प्रत्येक क्रेन के उत्पापक भाग के संचलन को स्वतः ही रोक देता है;

(2) उप नियम (1) के उपबंध सभी को लागू हैं सिवाय वहां जहां स्वचालित निरापद कार्यकरण भार सूचक लगाना संभव नहीं है, उस दशा में क्रेन पर संगत आनतियों अथवा जिब के अर्थव्यासों पर लगी निरापद कार्यकरण भार दर्शाने वाली सारणी पर्याप्त समझी जाएगी।

124. धारा 40 संस्थापना— (1) नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) स्थापित उत्पापक साधित्रों की संस्थापना—

- (i) सक्षम व्यक्तियों द्वारा की गई है;
- (ii) इस रीति से की गई है कि ऐसे साधित्र भार, कंपन या अन्य असर के कारण विस्थापित नहीं हो सकते;
- (iii) इस रीति से की गई है कि ऐसे साधित्रों का आपरेटर भार, रस्सी या ड्रम के कारण होने वाले खतरों से बचा रहेगा; और
- (iv) इस रीति से की गई है कि आपरेटर या तो प्रचालन के क्षेत्र को देख सकता है या फिर सभी भार लादने और भार उतारने वाले स्थलों से सिग्नल या अन्य सम्पर्क प्रणाली से संपर्क कर सकता है;

(ख) उत्पापक साधित्रों के भागों तथा भार—

- (i) स्थिर वस्तुओं जैसे दीवारें और चौकी; या
- (ii) इलेक्ट्रिकल चालकों के बीच पर्याप्त निर्बाधन दिया गया है;

- (ग) उत्पापक साधित्रों को, जब उन्हें वायु भार लदान के लिए प्रयोग किया जाए तो ऐसे भार लदान को सुरक्षित रूप से सहन करने के लिए अतिरिक्त शक्ति, मजबूती और दृढ़ता दी गई है।
- (घ) उत्पापक साधित्र के किसी भाग में, ऐसे साधित्र की सुरक्षा को प्रभावित करने वाले संरचनात्मक परिवर्तन या मरम्मत सुक्ष्म व्यक्ति की इस आशय की राय लिए बगैर नहीं की गई है।

125. धारा 40 विंचिज- नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) (i) यदि नियंत्रक लीवर अत्यधिक घर्षण या प्ले से आपरेट होता है तो विंचिज का प्रयोग नहीं किया जाता है;
- (ii) दोहर गियर विंचिज का प्रयोग तब तक नहीं किया जाए जब तक गियर शिफ्ट को लाक करने का सकारात्मक उपाय नहीं दिया हो;
- (iii) दो गियर वाली विंच पर गियर बदलते समय फाल और हुक असेम्बली के अतिरिक्त कोई अन्य भार न हो;
- (iv) विंच आपरेटर को अप्रसामान्य मौसम के प्रति पर्याप्त सुरक्षा दी गई है;
- (v) विंच आपरेटरों के लिए अस्थायी स्थानों या आश्रयों के, जो विंच आपरेटरों या अन्य भवन निर्माण कर्मकारों के लिए परिसंकट उत्पन्न कर सकते हैं, प्रयोग की अनुज्ञा नहीं है;
- (ख) प्रत्येक भाप विंच को प्रयोग में लाने पर-
- (i) छूटती भाप से निर्माण स्थल या अन्य कार्य स्थल के किसी भाग को धुंधला पड़ जाने से या किसी भवन निर्माण कर्मकार को अन्य रूप से होने वाली प्रतिबाधा या क्षति को रोकने के लिए उपाय किए गए हैं;
- (ii) विंच आपरेटरों को पहिया टाइप नियंत्रणों पर छोटे हैंडलों के सिवाय विंच नियंत्रण विस्तारों का प्रयोग करने की अनुमति नहीं है और यह कि ऐसे लीवर पर्याप्त मजबूत और सुरक्षित हैं और आलम्ब पर तथा स्थायी नियंत्रक लीवर पर धातु सम्बन्धनों के साथ जकड़े हुए हैं;
- (iii) विस्तारित नियंत्रण लीवर, जो अपने भार के कारण गिर जाते हैं, प्रतिसंतुलित हैं;
- (ग) किसी भवन निर्माण कर्मकार को प्रत्येक इलैक्ट्रिक विंच कार्य करते समय, किसी त्रुटि की दशा में किसी इलैक्ट्रिक नियंत्रण सर्किट को स्थानांतरित करने, उनमें परिवर्तन करने या उनका समायोजन करने की अनुज्ञा नहीं है।
- (घ) भवन निर्माण कार्य के लिए इलैक्ट्रिक विंचों का प्रयोग वहां नहीं किया जाएगा जहां-
- (i) इलैक्ट्रो-मैग्नेटिक ब्रेक भार को उठाए रखने में असमर्थ है; या
- (ii) एक या अधिक नियंत्रण स्थल, चाहे वे उत्तोलन के लिए हैं अथवा नीचे उतारने के लिए हैं, सुचारु रूप से कार्य नहीं कर रहे हैं।

126. धारा 40 बाल्टियां- नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि टिप-अप बाल्टियों में ऐसी युक्ति लगी है जो आकस्मिक उलटने को प्रभावकारी ढंग से रोकती है।

127. धारा 40 पहचान और निरापद कार्यकरण भार का चिन्हांकन- नियोजक, भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माणस्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि -

- (क) प्रत्येक उत्पापक साधित्र और वियोजित गियर इसके निरापद कार्यकरण भार और पहचान के लिए स्थापित करके या अन्य किसी उपयुक्त साधन द्वारा स्पष्ट रूप से चिन्हांकित किए गए हैं;
- (ख) (i) प्रत्येक डैरिक (केन डैरिक से भिन्न)- जब ऐसे डैरिक का प्रयोग निचले ब्लॉक के साथ एकल क्रय में या सभी ब्लॉक स्थितियों में संघ क्रय में किया जाता है, उसके निरापद कार्यकरण भार के लिए स्पष्ट रूप से चिन्हांकित है;
- (ii) क्षैतिज से न्यूनतम कोण, जिस पर डैरिक का प्रयोग किया जा सकता है सुपाठ्य रूप से चिन्हांकित है;
- (ग) प्रत्येक ऐसा उत्पापक साधित्र जिसका एक से अधिक कार्यकरण भार है, ऐसे प्रभावी साधनों से युक्त है जो आपरेटर को प्रयोग की सभी स्थितियों के अधीन प्रत्येक स्थान पर निरापद कार्यकरण भार निश्चित करने में समर्थ करता है;
- (घ) अस्थापक गियरों का ऐसी स्थितियों के अधीन जिनमें ऐसे गियर प्रयोग किए जा सकते हैं निरापद कार्यकरण भार अभिनिश्चित करने में ऐसे गियर का प्रयोग करने वाले कर्मकार को समर्थ करने के लिए साधन दिए गए हैं और ऐसे साधन निम्नलिखित को सम्मिलित करेंगे-
- (i) स्लिंग या किसी टेबलेट या पेन स्लिंग की दशा में टिकाऊ सामग्री की रिंग पर जो उससे दृढ़ता से जुड़ी है पर विशुद्ध अंकों या अक्षरों में निरापद कार्यकरण भार का चिन्हांकरण और

- (ii) या तो उपखंड (i) में विनिर्दिष्ट साधन अथवा तार रस्सी स्लिंग की दशा में विभिन्न आकारों को तार रस्सी स्लिंगों के निरापद कार्यकरण भार का कथन करने वाली सूचना जो इस प्रकार प्रदर्शित की गई है कि किसी भी संबद्ध भवन निर्माण कर्मकार द्वारा आसानी से पढ़ी जा सके।

128. धारा 40 उत्थापक साधित्रों और उत्थापक गियरों की लदायी- नियोजक, भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर वह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) कोई उत्थापक साधित्र, उत्थापक गियर या तार रस्सी असुरक्षित तरीके से या ऐसी रीति में प्रयोग नहीं की जा रही जिसमें भवन निर्माण कर्मकार के जीवन को जोखिम हो और यह कि उन पर उस दशा को छोड़कर जब जांच प्रयोजनों के लिए, किसी सक्षम व्यक्ति के निर्देशनाधीन इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची X में विनिर्दिष्ट रीति के अनुसार लदाई की जाती है, उनके निरापद कार्यकरण भार से अधिक लदाई नहीं की जाएगी।
- (ख) कोई उत्थापक साधित्र और उत्थापक गियर या कोई अन्य सामग्री की उठाई, धराई करने वाला साधित्र प्रयोग में नहीं लाया गया है, यदि,
- (i) अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक का जांच या परीक्षण के प्रमाणपत्र अथवा इन नियमों के अधीन दिए गए प्रमाण अथवा इन नियमों के अधीन दिए अनुसार रखे गए अधिप्रमाणित अभिलेखों के प्रति निर्देश में समाधान नहीं हो गया है;
- (ii) ऐसे निरीक्षक की दृष्टि में, कोई उत्थापक साधित्र उत्थापक गियर या कोई सामग्री की उठाई धराई करने वाला साधित्र भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य में प्रयोग के लिए सुरक्षित नहीं है;
- (iii) कोई दुली ब्लाक भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में तब तक प्रयोग नहीं किया गया जब तक ऐसे ब्लाक पर निरापद कार्यकरण भार और पहचान स्पष्ट रूप से चिह्नित नहीं की गई;

129. धारा 40 आपरेटर का केब या केबिन- नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) बाह्य सेवा वाली प्रत्येक उत्थापक मशीन के आपरेटर को एक केब या केबिन दिया गया है जो-
- (i) अग्नि प्रतिरोधक सामग्री से बना है;
- (ii) उपयुक्त सीट और एक फुट रेस्ट से युक्त है और जिसमें बंधन से सुरक्षा दी गई है;
- (iii) आपरेटर की प्रचालन के क्षेत्र के पर्याप्त अवलोकन की सुविधा देता है;
- (iv) आपरेटर को केब में कार्यकरण भागों तक आवश्यक पहुंच की सुविधा देता है;
- (v) आपरेटर को मौसम के प्रति पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करता है;
- (vi) पर्याप्त रूप से संचालित है; और
- (vii) उपयुक्त अग्निशामकों से युक्त है।

130. धारा 40 उत्थापक साधित्रों का प्रचालन- नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य के स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) प्रत्येक केन चालक या उत्थापक आपरेटर के पास विशिष्ट उत्थापक साधित्र के प्रचालन के लिए पर्याप्त कुशलता और प्रशिक्षण है;
- (ख) कोई अठारह वर्ष से कम आयु का व्यक्ति किसी उत्थापक साधित्र या स्काफोल्ड विंच के नियंत्रण पर नहीं है या आपरेटर को सिग्नल देने का कार्य नहीं कर रहा है;
- (ग) प्रशिक्षित आपरेटर द्वारा उत्थापक साधित्र को गति में आने से रोकने के लिए पूर्वावधानी ली जा रही है;
- (घ) उत्थापक साधित्र का प्रचालन सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सिग्नलों द्वारा शासित है;
- (ङ) उत्थापक साधित्र के आपरेटर का ध्यान भंग नहीं होता है, जब वह कार्य कर रहा है;
- (च) कोई केन उत्तोलक, विंच या अन्य उत्थापक साधित्र अथवा ऐसी केन, उत्तोलक, विंच या अन्य उत्थापक साधित्र के किसी भाग पर सिवाय जांच प्रयोजनों के निरापद कार्यकरण भार से अधिक नहीं लगाया जाता है;
- (छ) उत्तोलक प्रचालन के दौरान किसी व्यक्ति को ऐसे प्रचालन में भार के नीचे खड़े होने या गुजरने से रोकने के लिए प्रभावी पूर्वावधानी ली गई है;
- (ज) आपरेटर उत्थापक साधित्र को ऐसी दशा में जब शक्ति चाल हो या ऐसे साधित्र पर भार लगाया गया है, बिना देख-रेख के नहीं छोड़ता है;
- (झ) कोई व्यक्ति लटके हुए भार पर या उत्थापक साधित्र पर सवारी नहीं करता है;

- (अ) भार का प्रत्येक भाग, जब भार उत्तोलन हो रहा या नीचे किया जा रहा हो, किसी खतरे को रोकने के लिए पर्याप्त रूप से लटकाया और सहारा दिया गया है;
- (ट) ईंटों, टाइलों, स्लेटों या अन्य सामग्री के उत्तोलन के लिए प्रत्येक पात्र, जो ऐसी किसी सामग्री को गिरने से रोकने के लिए उपयुक्त रूप से बंद है;
- (ठ) उत्तोलन प्लेटफार्म, उस समय बंद रहता है, जब खुली सामग्री अथवा भार से लदे व्हील बैरीस सीधे ऐसे प्लेटफार्म पर रखे जाते हैं या जब ऐसी सामग्री अथवा व्हील-बैरीस नीचे उतारे जाते हैं;
- (ड) कोई सामग्री किसी उत्पादक साधित्र से इस प्रकार ऊपर, नीचे या धीमी नहीं की जाती है जिससे ऐसे साधित्र को अचानक झटका लगे;
- (ढ) किसी बैरो के उत्तोलन के समय ऐसे बैरो का कोई पहिया तब तक सहारे के साधान के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जाता है जब तक ऐसे पहिए के एक्सिल को बियरिंग में से बाहर फिसलने से रोकने के पर्याप्त उपाय नहीं कर लिए जाते हैं;
- (ण) लंबी वस्तुओं जैसे प्लेक्स या गर्डरस के साथ ऐसी वस्तुओं को ऊपर या नीचे करते समय खतरे की किसी संभावना को समाप्त करने के लिए टैंग लाईन्ज लगाई जाती हैं;
- (त) सामग्री को नीचे उतारने की प्रक्रिया के दौरान, किसी भवन निर्माण कर्मकार को, ऐसी सामग्री की लदाई और उतराई देखने के लिए खाली स्थान में झुकने की अनुज्ञा नहीं है;
- (थ) ऐसे स्थानों पर जहां यातायात का प्रवाह नियमित रहता है, भारों का उत्तोलन बंद स्थान पर किया जाता है या उस दशा में वहां उत्तोलन बंद स्थान में किया जाता है तो ऐसा उत्तोलन के समय के दौरान यातायात रोकने अथवा मोड़ने के उपाय किये जाते हैं;
- (द) भार को उसके उत्तोलन या उतराई के दौरान किसी अन्य वस्तु के संपर्क में आने से रोकने के लिए पर्याप्त कदम उठाये गए हैं जिससे ऐसे भार को खिसकने से बचाया जा सके;
- (ध) भारी भारों को ऊपर या नीचे करते हुए, भारी भार को दिशा देने के लिए साधित्र उपलब्ध कराये गए हैं और उनका प्रयोग किया जाता है जिससे ऐसे भार को ऊपर या नीचे करने के दौरान भवन निर्माण कर्मकारों के हाथों को दबने से बचाया जा सके।

131. धारा 40 उत्तोलक— नियोजक भवन निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) उत्तोलक टावरों सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार परिकल्पित किए गए हैं;
- (ख) उत्तोलक शाफ्ट में —
 - (i) भूमि तल पर ऐसी शाफ्ट के चारों तरफ,
 - (ii) अन्य पर्याप्त बाड़ लगाई गई है, अन्य सभी तलों पर ऐसी शाफ्ट तक पहुंच के चारों तरफ, कठोर पैन्ल या अन्य पर्याप्त बाड़ लगाई गई है,
- (ग) उत्तोलक शाफ्ट की दीवारें, पहुंच मार्गों के सिवाय, ऐसी शाफ्ट के फर्श या पहुंच के प्लेटफार्म से कम से कम दो मीटर ऊंची हैं,
- (घ) उत्तोलक के पहुंच मार्गों पर द्वार लगाए गए हैं, जो—
 - (i) दृश्यता बनाए रखने के लिए जाली से युक्त हैं;
 - (ii) कम से कम दो मीटर ऊंचे हैं, और
 - (iii) ऐसी युक्ति से युक्त हैं जो ऐसे उत्तोलक के प्लेटफार्म के लैंडिंग छोड़ने से पूर्व द्वार बंद कर देती है और जब तक ऐसा प्लेटफार्म लैंडिंग पर न हो द्वार को खुलने से रोकती है;
- (ङ) उत्तोलक के पहुंचमार्ग पर्याप्त रूप से प्रकाशित हैं;
- (च) उत्तोलक प्लेटफार्म की गाइड्स मुड़ने और अटकने, उछलने की दशा में सुरक्षा कैच देकर पर्याप्त प्रतिरोध दिखाती हैं;
- (छ) शिरोपरि बीम और उनके सहारे ऐसे कुल अधिकतम चलायमान और स्थिर भार को जिनको उठाना ऐसी बीम और सहारों द्वारा कम से कम पांच सुरक्षा फैक्टर के साथ उठाना अपेक्षित होगा, उठाने में समर्थ है;
- (ज)
 - (i) पिंजरे या प्लेटफार्म की ओवरवाईडिंग की दशा में उनको पर्याप्त निर्वाध गति उपलब्ध कराने के लिए पिंजरे या प्लेटफार्म के उच्चतम रुकन के ऊपर; और
 - (ii) ऐसे पिंजरे या प्लेटफार्म के निम्नतम रुकने के स्थान के नीचे, खाली स्थान उपलब्ध कराया गया है;

- (झ) उत्तोलक शाफ्ट के मुख के ऊपर सामग्री को ऐसे शाफ्ट में गिरने से रोकने के लिए पर्याप्त आवरण उपलब्ध कराया गया है;
- (ञ) बाह्य उत्तोलक टावर पर्याप्त रूप से मजबूत नींव पर खड़े किए गए हैं और दृढ़ रूप से बंधे, गायड और स्थिर हैं;
- (ट) उस दशा में जब कोई अन्य सीढ़ी आसानी से पहुंच में नहीं है, तब प्रत्येक बाह्य उत्तोलक टावर के निचले तल से मुख तक एक सीढ़ी लगाई गई और ऐसी सीढ़ी राष्ट्रीय मानकों का अनुपालन करेगी;
- (ठ) किसी उत्तोलक इंजन की अंकित क्षमता ऐसे अधिकतम भार से, कम से कम डेढ़ गुणा होगी जो ऐसे इंजन को चलाने के लिए अपेक्षित होगी ;
- (ड) उत्तोलन इंजन की सभी गियरिंग दृढ़ता से बंद है;
- (ढ) उत्तोलन इंजन की भाप पाइप, किसी भवन निर्माण कर्मचारी की ऐसी पाइप से दुर्घटनावश छू जाने से बचाने के लिए पर्याप्त रूप से संरक्षित है;
- (ण) उत्तोलन इंजन के इलैक्ट्रिकल उपस्कर प्रभावी रूप से सुयोजित है;
- (त) उत्तोलक में उत्तोलन इंजन को, जैसे ही ऐसे उत्तोलक का प्लेटफार्म अपने रुकने के उच्चतम स्थान पर पहुंचता है, रोकने के लिए उपयुक्त युक्ति उपलब्ध है ;
- (थ) उत्तोलन इंजन मौसम और गिरती हुई वस्तुओं के प्रति संरक्षण के लिए उपयुक्त आवरण से युक्त है ;
- (द) जनता के किसी आम रास्ते पर लगाया गया उत्तोलन इंजन पूरी तरह से बंद है;
- (ध) सभी भाप निष्कासक पाइपें ऐसी रीति में भाप का निस्सारण करती हैं कि इस प्रकार निस्सारित भाप किसी व्यक्ति को नहीं जलाती या आपरेटर के दृश्य में बाधा नहीं डालती;
- (न) उत्तोलक की गति की दशा तब तक विपरीत नहीं होगी जब तक वह पहले गतिहीन नहीं हो जाता जिससे कि ऐसी विपरीत दिशा में गति से होने वाली हानि से बचा जा सके;
- (प) उत्तोलक व्यक्तियों की सवारी के लिए परिकल्पित नहीं है, ऐसे उत्तोलक के प्लेटफार्म से गति में नहीं लाया जाता है ;
- (फ) उत्तोलक के पालस और रेचेट पहिये, जिसमें ऐसे उत्तोलक के प्लेटफार्म को नीचे करने से पूर्व ऐसे पाल की ऐसे रेचेट पहियों से अलग करना अपेक्षित है, प्रयुक्त नहीं किए जाते हैं ;
- (ब) उत्तोलक का प्लेटफार्म ऐसे अधिकतम भार की, जिसे ऐसा प्लेटफार्म कम से कम तीन सुरक्षा कारक के साथ उठा सकता है, उठाने में समर्थ है;
- (भ) उत्तोलक का प्लेटफार्म उपयुक्त सुरक्षा गियर से युक्त है जो उत्तोलक रस्सी के टूटने की दशा में ऐसे प्लेटफार्म को इसके अधिकतम भार के साथ उठा सकता है;
- (म) उत्तोलक के प्लेटफार्म पर, व्हीलबैरोत या ट्रक सुरक्षित दशा में प्रभावी रूप से अवरुद्ध किये गए हैं;
- (य) उत्तोलक का पिंजरा या प्लेटफार्म, जहां भवन निर्माण कर्मचारों का, लैंडिंग तल पर ऐसे पिंजरे में प्रवेश करना या प्लेटफार्म पर जाना अपेक्षित है, वहां ऐसे पिंजरे या प्लेटफार्म को उस समय जब कोई कर्मकार ऐसे पिंजरे या प्लेटफार्म में प्रवेश करता है या छोड़ता है, गति में आने से रोकने के लिए, लाकिंग इंतजाम की व्यवस्था है ;
- (यक) उत्तोलक के प्लेटफार्म का पार्श्व, जो भार की लदाई के लिए प्रयोग में नहीं होता है ऐसे प्लेटफार्म से भार के किसी भाग को गिरने से रोकने के लिए, टी बोर्ड और तारों के जाल या अन्य किसी उपयुक्त साधनों से युक्त है;
- (यख) उत्तोलक का प्लेटफार्म, जिससे भार के किसी भाग के गिरने की संभावना है, ऐसे की रोकने के लिए पर्याप्त आवरण से युक्त है ;
- (यग) उत्तोलक के प्रति-बाट, जो कई भागों का समूह है, इस प्रकार निर्मित है कि सभी भाग दृढ़ रूप से एक साथ जुड़े हैं;
- (यघ) उत्तोलक के प्रति-बाट गाईड्स के मध्य चलत हैं ;
- (यङ) कार्य के प्रत्येक स्तर पर तथा कर्मकार को ऐसा कार्य करने के लिए पर्याप्त प्लेटफार्म उपलब्ध है;
- (यच) हिन्दी और साथ ही स्थानीय भाषा में सुपाठ्य सूचना निम्नलिखित स्थानों पर उपदर्शित की गई है—
- (i) उत्तोलक के प्लेटफार्म के सहजदृश्य स्थान पर और ऐसी सूचना ऐसे उत्तोलक की भार ले जाने की अधिकतम क्षमता को किलोग्राम में दिखाती है;
- (ii) उत्तोलन इंजन के सहजदृश्य स्थान पर और ऐसी सूचना ऐसे उत्तोलक की भार-उठाने की अधिकतम क्षमता को किलोग्राम में दिखाती है ;

(iii) व्यक्तियों को प्लेटफार्म या पिंजरे में सवारी करने के लिए प्राधिकृत और प्रमाणित उत्तोलक के सहजदृश्य स्थान या ऐसे उत्तोलक पर एक बार में ले जाने के लिए व्यक्तियों की अधिकतम संख्या की कथित ऐसी सूचना ;

(iv) माल और अन्य सामग्री को ले जाने वाले उत्तोलक के सहजदृश्य स्थान पर और ऐसी सूचना यह कथित करती है कि ऐसा उत्तोलक व्यक्तियों की सवारी के लिए नहीं है।

132. धारा 40 उत्पापक साधित्र तक पहुंच के साधन और उन पर बाड़ लगाना— नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) उत्पापक साधित्र के प्रत्येक भाग तक पहुंच के लिए सुरक्षित साधन उपलब्ध हैं ;

(ख) यांत्रिकी शक्ति से चालित प्रत्येक केन या टिप पर आपरेटर के प्लेटफार्म पर दृढ़ बाड़ लगाई गई है और उस तक पहुंच का सुरक्षित साधन उपलब्ध है और जहां प्लेटफार्म तक ऐसी पहुंच सीढ़ी द्वारा है वहां,—

(i) ऐसी सीढ़ी का पार्श्व, ऐसे प्लेटफार्म से समुचित ऊंचाई पर है या उसके स्थान पर कोई अन्य उपयुक्त हेन्डीहोल्ड, व्यक्तियों को ऐसे प्लेटफार्म से गिरने से रोकने के लिए उपलब्ध कराया गया है;

(ii) ऐसे प्लेटफार्म पर उठाई-धराई का स्थान बाधाओं और फिक्सलन से अनुरक्षित है; और

(iii) उस दशा में जब सीढ़ी की ऊंचाई छह मीटर से अधिक है, ऐसी सीढ़ी पर उसकी ऊंचाई के प्रत्येक छह मीटर पर आराम करने के लिए प्लेटफार्म और जहां इस प्रकार उपलब्ध अंतिम प्लेटफार्म और जब सीढ़ी के शीर्ष के बीच दो मीटर से अधिक दूरी है वहां ऐसे शीर्ष पर भी ऐसा प्लेटफार्म उपलब्ध है;

133. धारा 40 डेरिकों का रिगनिंग— नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक डेरिक पर सामयिक तथा संगत रिगनिंग योजना है और ऐसे डेरिकों और उसके गिअर की सुरक्षित रिगनिंग के लिए अन्य आवश्यक जानकारी है।

134. धारा 40 डेरिकों फुट का दृढीकरण— नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि डेरिक के फुट को उसकी सोकट या सहारे से ऊपर निकलने से रोकने के लिए ऊपर उपयुक्त उपाय किये गए हैं।

135. धारा 40 उत्पापक गियर की संरचना और रख-रखाव— नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) प्रत्येक उत्पापक गिअर—

(i) उस कार्य को, जिसके लिए इसका प्रयोग होता है, करने के लिए अच्छे डिजाइन तथा संरचना अच्छी सामग्री और पर्याप्त मजबूती का है;

(ii) अप्रकट त्रुटियों से मुक्त; और

(iii) अच्छी मरम्मत और कार्यकरण दशा में उचित रूप से अनुरक्षित है ;

(ख) प्रयोग के समय गिअर के संघटक नवीकृत किए जाते हैं यदि आयाम के किसी एक बिन्दु पर ये प्रयोगकर्ता द्वारा दस प्रतिशत या अधिक कम हो जाते हैं ;

(ग) कोई चेन, जब खींची जाने पर लंबाई में उसकी लंबाई से पांच प्रतिशत से अधिक बढ़ जाती है या ऐसी चेन की कोई कड़ी विरूपित हो जाती है अथवा अन्यथा नष्ट हो जाती है अथवा उसके ऊपर विकृत बेल्ट उभर आते हैं, प्रयोग में से हटा ली जाती है;

(घ) चेन से जुड़े रिग हुक, सिग्नल और अंतिम कड़ी उसी सामग्री से बने हैं जिससे ऐसी चेन बनी है;

(ङ) किसी चुम्बकीय उत्पापक साधित्र को की जाने वाली इलैक्ट्रिक आपूर्ति की वोल्टेज में उतार-चढ़ाव दस प्रतिशत कम या दस प्रतिशत से अधिक नहीं है।

136. धारा 40 उत्पापक गियरों की जांच और कालिक परीक्षण— नियोजक भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य के स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) कोई उत्पापक गिअर विनिर्माता के लिए इसके प्रयोग से पूर्व या इसमें कोई सारभूत परिवर्तन, जो इसके किसी भाग को इसकी सुरक्षा को प्रभावित करने का दाया बनाते हैं, करने के पश्चात् किसी सक्षम व्यक्ति द्वारा, इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची X में विनिर्दिष्ट रीति में प्रारंभिक रूप से जांचा गया है और ऐसा गिअर ऐसी जांच में परिवर्तित ऐसे गिअर को तत्पश्चात् प्रत्येक पांच वर्ष में कम से कम एक बार इसके स्वामी के उपयोग के लिए जांचा जाएगा;

(ख) प्रयोग किये जा रहे किसी उत्पापक गियर का इन नियमों के उपाबद्ध प्ररूप XXXIX में किसी सक्षम व्यक्ति द्वारा कम से कम बारह मास में एक बार प्रत्येक पूर्णरूपेण परीक्षण किया जाता है ;

- (ग) प्रयोग की जा रही किसी चेन का इसके प्रयोग के लिए कम से कम प्रत्येक मास में एक बार जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा परीक्षण किया जाता है ;
- (घ) इन नियमों के अधीन वियोजित गियरों की प्रारंभिक और कालिक जांच और परीक्षण के प्रमाणपत्र इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप XL में प्राप्त किए जाते हैं।

137. धारा 40 रस्सियां—नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य के लिए किसी रस्सी का प्रयोग तब तक नहीं किया जाएगा जब तक—
- (i) वह अच्छी क्वालिटी की है और पेटेन्ट नुटियों से मुक्त नहीं है।
- (ii) तार रस्सी की दशा में, उसका इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची— X में विनिर्दिष्ट रीति में, सक्षम व्यक्ति द्वारा आजमाईश तथा परीक्षण नहीं किया गया हो।
- (ख) भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य में प्रयुक्त किसी उत्पापक साधित्र और उत्पापक गियर की प्रत्येक तार रस्सी का प्रत्येक तीन मासों में कम से कम एक बार, ऐसे प्रयोग के लिए जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जाता है :

परन्तु जब ऐसी रस्सी में ऐसी कोई तार टूट जाती है तो उसके पश्चात् उसका निरीक्षण, जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा प्रत्येक मास में कम से कम एक बार किया जाएगा।

- (ग) कोई तार—रज्जू भवन या अन्य निर्माण कार्य के लिए प्रयुक्त नहीं की जाएगी यदि उक्त रज्जू की लम्बाई वाले आठ भागों में से किसी एक के आयाम में दृश्यमान टूटी हुई तारों की संख्या उक्त रज्जू के कुल तारों की संख्या के दस प्रतिशत से अधिक हो जाती है या उक्त रज्जू में अत्यधिक टूट-फूट जंग या अन्य कमियों के चिह्न दिखाई देते हैं जो निरीक्षण करने वाले व्यक्ति जो उसका निरीक्षण करता है या निरीक्षक, जिसको अधिकारिता है, की राय में प्रयोग के लिए अनुपयुक्त है।

- (घ) तार—रज्जूओं से हुक, कड़ा और अन्य ऐसे भागों को जोड़ने के लिए रज्जूओं के कुंडी शिरोबन्धन और लूप उपयुक्त छल्ले से बनाए जाते हैं।

- (ङ) किसी तार—रज्जू झूले में बनाए गए छल्ले या लूप शिरोबन्धन निम्नलिखित मानकों के अनुरूप होंगे, अर्थात्—

- (i) तार—रज्जू झूले में रज्जू की पूर्ण लड़ों सहित कम से कम तीन लपेटें और उक्त लड़ों में से प्रत्येक तक आधे तारों तक काटी हुई दो लपेटें होनी चाहिए। प्रत्येक स्थिति में उक्त लड़ों की लपेट रज्जू के बटान की दिशा में होंगी,
- (ii) तार—रज्जू झूलों के किसी शिरोबन्धन में उक्त लड़ों के बाहर निकले हुए सिरें ढक दिए जाएंगे या इस प्रकार उपचारित किए जाएंगे जिससे सिरें पैने न रहें,
- (iii) तन्तुमय रज्जू या रज्जू झूले में कम से कम चार लपेट होनी चाहिए; उक्त लपेट का अन्तिम छोर उपयुक्त रीति में टांका गया होना चाहिए; और
- (iv) कृत्रिम तंतु अन्तिम रज्जू या रज्जू झूले में पूर्ण लड़ों की कम से कम चार लपेट होनी चाहिए जिसके बाद में एक और लपेट प्रत्येक उक्त लड़ तक आधे कटे तन्तुओं की होगी और अन्तिम लपेट आधे बचे शेष वियोजक तन्तुओं की होगी झूलों का कोई भाग जिसमें उक्त लपेटें हैं, तन्तुओं की घटी संख्या सहित, उपयुक्त टेप या अन्य पदार्थ से सुरक्षित रूप से ढका जाना चाहिए;

परन्तु इस उपखण्ड की कोई बात वहां लागू नहीं होगी जहां किसी अन्य प्रकार के झूले का, जिसे उपरोक्त मानकों सहित झूले का समान दर्शित किया गया हो प्रयोग किया गया है।

138. धारा 40 तथा 42 उत्पादक गियरों को ताप—उपकार—नियोजक किसी भवन या अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) आरोपक जंजीरों को छोड़कर, सभी जंजीरें और उक्त केनों के उत्तोलन या अवनयन में प्रयोग किए जाने वाले सभी कुंडे, कुण्डियां और फिरकियां प्रभावी रूप से, किसी सक्षम व्यक्ति के पर्यवेक्षण के अधीन और निम्नलिखित अंतरालों पर तापानुशीलित किए जाएं, अर्थात्—

- (i) ऐसी जंजीरें, कड़े, हुक, कुण्डे और फिरकियां जिनकी लम्बाई साढ़े बारह मिलीमीटर से अधिक नहीं है प्रति छह मास में कम से कम एक बार उक्त तापानुशीलित किए जाएं ; और
- (ii) सभी अन्य ऐसी जंजीरें, कड़े, हुक, कुण्डे और फिरकियां प्रति बारह मास में कम से कम एक बार उक्त रूप में तापानुशीलित किए जाएं :

परन्तु उपखंड (i) और उपखंड (ii) में यथानिर्दिष्ट उक्त तापानुशील अपेक्षित नहीं होगा यदि अधिकारिता प्राप्त निरीक्षक, मुख्य निरीक्षक का अनुमोदन प्राप्त करने के पश्चात् निर्देश देता है कि ऐसी जंजीरों, कड़ों, हुकों, कुण्डों और फिरकियों पर कुछ अन्य उपचार किया जाए और ऐसी दशा में निरीक्षक द्वारा निदेशित उपचार किया जाएगा :

परन्तु यह और कि उक्त केनॉ पर अनन्य रूप से प्रयोग की जाने वाली ऐसी जंजीरों, कड़ों, हुकों, कुण्डों और फिरकियों तथा अन्य उत्तोलन यंत्रों, जो हाथ द्वारा चालित हैं, की दशा में उपखण्ड (i) और उपखण्ड (ii) के उपबंध, यथास्थिति, लागू होंगे मानों यदि छह मास और बारह मास की अवधि के स्थान पर उसमें कमशः बारह मास और दो वर्ष की अवधियां प्रतिस्थापित कर दी गई हैं :

परन्तु यह और कि ऐसी दशा में जहां कि अधिक परिताप्राप्त निरीक्षक की यह राय है कि आकार, डिजाइन, सामग्री या ऐसी जंजीरों, कड़ों, हुकों, कुण्डों और फिरकियों के प्रयोग की आवृत्ति के कारण भवन कर्मकारों के संरक्षण के लिए तापानुशील ताप के लिए इस खंड की आवश्यकता नहीं है, मुख्य निरीक्षक का अनुमोदन प्राप्त करने के पश्चात् वह उक्त नियोजक को लिखित में प्रमाणपत्र देगा कि उक्त प्रमाणन में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन रहते हुए कुण्डों और फिरकियों को उक्त तापानुशीलता से छूट प्रदान की जाती है और तत्पश्चात् इस खंड के उपबंध उक्त छूट के अधीन रहते हुए लागू होंगे :

परन्तु यह और कि यह खंड निम्नलिखित को लागू नहीं होगा :

- (i) चक्र दन्त या दातेदार पहियों पर कार्य करने वाली चूड़ीदार जंजीरें ;
- (ii) चूड़ीदार (अंतराल) जंजीरों, गरारी या तुलन मशीनों से स्थायी रूप से संलग्न कस, हुक और कुण्ड; और
- (iii) हुक और कुण्ड जिनमें बाल बिद्यरिंग या अन्य कठोरीकृत आवरण के पुर्जे हैं।

(ख) उच्चाततीय स्टील या मिश्रधातु स्टील से बनी कोई जंजीर या कोई असंवेष्टित गरारी जिस पर स्पष्टतः ऐसे चिह्न संनिहित किया गया है कि यह उक्त रूप में बनी है।

(ग) उच्चाततीय स्टील या मिश्रधातु स्टील से बनी कोई जंजीर या असंवेष्टित गरारी किसी प्रकार के ताप उपचार के अधीन नहीं होगी सिवाय जहां कि ऐसी जंजीर या असंवेष्टित गरारी की मरम्मत के प्रयोजन के लिए उक्त उपचार आवश्यक है और यह कि उक्त मरम्मत सक्षम व्यक्ति के निदेशन के अधीन की जाती है।

(घ) कि व्यंगारित लोहे की गरारी, जिसके पिछले इतिहास का पता मालूम नहीं है, के बारे में संशय है कि वह गलत ताप पर ताप उपचारित की जाती थी, यह किसी भवन या अन्य निर्माण कार्य में प्रयोग किए जाने के पूर्व प्रसामान्य बना ली जाती है।

139. धारा 40 वास्तविक जांच और परीक्षण, आदि के पश्चात् जारी किए जाने वाले प्रमाणपत्र— नियोजक किसी भवन या अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि नियम 122, नियम 128, नियम 137 और नियम 138 के प्रयोजन के लिए सक्षम व्यक्ति केवल वास्तविक जांच या, यथास्थिति, उक्त नियमों में विनिर्दिष्ट उपकरण के परीक्षण के पश्चात् प्रमाणपत्र जारी करें।

140. धारा 40 आवधिक परीक्षण, परीक्षा और उनके प्रमाणपत्रों का रजिस्टर— नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण कार्य में—

(क) इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLI में एक रजिस्टर रखा जाता है और नियम 121, नियम 128 और नियम 138 के अधीन यथा अपेक्षित उत्थापन साधित्रों, उत्थापन गियरों और उठमा उपचार के ऐसे परीक्षण और परीक्षा की विशिष्टियां ऐसे रजिस्टर में प्रविष्ट की जाती हैं;

(ख) निम्नलिखित में प्रत्येक की बाबत प्रमाणपत्र नीचे यथा उल्लिखित प्ररूपों में सक्षम व्यक्ति से अभिप्राप्त किया जाता है, अर्थात्—

(i) नियम 122 और नियम 138 के अधीन आरम्भिक और आवधिक परीक्षण तथा परीक्षा की दशा में,—

(क) विंच, डेरिक और उनके सहायक गियर के लिए, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLII में;

(ख) क्रेन या उत्तोलक और उनके सहायक गियर के लिए, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLIII में;

(ii) नियम 136 के खण्ड (घ) के अधीन लूज गियर के परीक्षण, परीक्षा और पुनः परीक्षा की दशा में, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XL में;

(iii) नियम 128 के अधीन तार रस्सों के परीक्षण और परीक्षा की दशा में, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLIV में;

(iv) नियम 138 के अधीन लूज गियर की उठमा उपचार और परीक्षा की दशा में, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLV में;

(v) नियम 136 के खंड (ख) के अधीन लूज गियर को वर्णिक संपूर्ण परीक्षा की दशा में, सिवाय वहां के, जहां ऐसी छूट को अपेक्षित विशिष्टियां, खंड (क) में निर्दिष्ट रजिस्टर में संलग्न की गई हैं, इन नियमों से उपबद्ध प्ररूप XLI में, और ऐसे प्रमाण पत्र खंड (क) में निर्दिष्ट रजिस्टर में संलग्न किए जाते हैं।

(ग) खंड (क) में निर्दिष्ट रजिस्टर और ऐसे रजिस्टर के साथ संलग्न खंड (ख) में निर्दिष्ट प्रमाण पत्र,—

(i) यदि ऐसे रजिस्टर और प्रमाण उत्थापन साधित्रों, लूज गियर, तार रस्सों से संबंधित हैं तो ऐसे सन्निर्माण स्थल पर रखे जाते हैं;

- (ii) अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक के समक्ष मांग पर प्रस्तुत किए जाते हैं; और
- (iii) ऐसे रजिस्टर में की गई अंतिम प्रविष्टि की तारीख के पश्चात् कम से कम चार वर्ष के लिए प्रतिधारित किए जाते हैं;
- (घ) ऐसा कोई उत्पाक साधित्र या उत्पाक गियर, जिसको बाबत खंड (क) में निर्दिष्ट रजिस्टर में प्रविष्टि की जानी अपेक्षित है और, यथास्थिति खण्ड (क) या खण्ड (ख) में यथा विनिर्दिष्ट रीति से ऐसे रजिस्टर में परीक्षण और परीक्षा का प्रमाणपत्र सलग्न किया जाना अपेक्षित है, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में तब तक नहीं प्रयुक्त होता जब तक कि अपेक्षित प्रविष्टियां ऐसे रजिस्टर और प्रमाणपत्रों में नहीं कर दी गई हैं।

141. धारा 40 निर्वात और चुम्बकें उत्पाक गियर— नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण कार्य में,—

- (क) किसी निर्वात उत्पाक गियर, चुम्बकीय उत्पाक गियर या किसी अन्य उत्पाक गियर का, जहां इस पर का अपना भार अपवर्षक शक्ति द्वारा धारित किया जाता है, उस समय प्रयोग नहीं किया जाता जबकि कर्मकार ऐसे गियर के नीचे सक्रियाएं कर रहे हों।
- (ख) किसी चुम्बकीय उत्पाक गियर का प्रयोग भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के संबंध में विद्युत के ऐसे वैकल्पिक प्रदाय जैसे बैटरी का उपबंध किया गया है, जो मुख्य विद्युत आपूर्ति के असफल होने की दशा में, तत्काल प्रवर्तन में आ सकती है;
- (ग) कोई भवन कर्मकार उत्पाक गियर या भार या भवन या ऐसे उत्पाक गियर में लटकी हुई अन्य सन्निर्माण सामग्री की झूला क्षेत्र के भीतर कार्य नहीं करेगा।

142. धारा 40 शृंखलाओं और तार रस्सों में गांठ होना— नियोजक, किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में किसी गांठ वाली शृंखला या तार रस्से का प्रयोग नहीं किया गया है।

143. धारा 40 उत्पाक साधित्रों आदि के द्वारा व्यक्तियों को लाना ले जाना— नियोजक यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण कार्य में किसी भवन कर्मकार को निम्नलिखित के सिवाय किसी साधित्र द्वारा उठाया, नीचे लाया या ले जाया नहीं जाएगा।

- (क) क्रेन के केज में चालक के प्लेटफार्म पर; या
- (ख) उत्तोलक पर; या
- (ग) अनुमोदित लटके हुए पाड़ (स्कैफोल्ड) पर :

परन्तु भवन कर्मकार को निम्नलिखित दशा में शक्ति द्वारा उठाया, नीचे लाया अथवा लाया ले जाया जाएगा,—

- (i) परिस्थितियों में जहां किसी उत्तोलक या लटके हुए का प्रयोग युक्ति-युक्त रूप से व्यवहार्य नहीं है और उपनियम (2) की अपेक्षा पूरी कर दी जाती है; या
- (ii) में किसी वायकीय केबल वे या वायकीय रोप में जहां उप नियम (2) की अपेक्षा पूरी कर दी जाती हैं।
- (2) उप नियम (1) के परन्तुक में निर्दिष्ट अपेक्षाएं नीचे दिए गए अनुसार हैं, अर्थात्—
- (i) कि ऐसे परन्तुक में निर्दिष्ट साधित्र को केवल एक स्थिति से दूसरी स्थिति में संचालित किया जा सकता है;
- (ii) कि ऐसे परन्तुक में निर्दिष्ट साधित्र के संबंध में प्रयुक्त कोई विच नियम 125 की अपेक्षाओं को पूरा करती है;
- (iii) कि ऐसे परन्तुक में निर्दिष्ट साधित्र द्वारा निम्नलिखित के सिवाय किसी व्यक्ति को ले जाया नहीं जाएगा :—

(क) किसी कुर्सी या केज में; या

(ख) किसी स्किप या अन्य आधान में जो कम से कम तीन फुट गहरा हो और जो किसी व्यक्ति के सुरक्षित वहन के लिए उपयुक्त हो और ऐसी कुर्सी, केज, स्किप या अन्य आधान अच्छी सन्निर्मिति का है, ठोस सामग्री का बना है और उसमें पर्याप्त शक्ति है और वह उसमें से किसी अधिभोगी को गिर जाने से बचाने के लिए उपयुक्त साधनों सहित उचित रूप से रखा गया है और किसी ऐसी सामग्री या औजार से मुक्त है जो ऐसे अधिभोगी की हाथ की पकड़ या पैर की पकड़ में हस्तक्षेप कर सकता है या अन्यथा उसे नुकसान पहुंचा सकता है; और

(iv) कुर्सी, केज, स्किप या अन्य आधान को ऐसी बुनाई या नोक (टिपिंग) से, जो उसमें किसी अधिभोगी के लिए खतरनाक हो सकती है, रोकने के लिए उपयुक्त त्पाय किए जाएंगे।

144. धारा 40 उत्तोलक वहन करने वाला व्यक्ति— नियोजक भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) तब तक कोई भवन कर्मकार, किसी उत्तोलक द्वारा वहन नहीं किया जाता जिसमें ऐसा केज न लगा हो,—
 - (i) जो इस प्रकार सन्निर्मित है कि जब उसके दरवाजे बंद कर दिए गए हों, तो ऐसे उत्तोलक द्वारा लाये ले जाने वाले किसी भवन कर्मकार को उससे बाहर गिर जाने से यह ऐसे केज के किसी भाग और किसी नियत संरचना के बीच या ऐसे उत्तोलक के किसी संचल भाग से उसके फंस जाने से या उस उत्तोलक मार्ग पर जिसमें ऐसा उत्तोलक चल रहा है, गिरने वाली किसी वस्तु या सामग्री द्वारा आहत होने से निवारित किया जा सके; और
 - (ii) उसके प्रत्येक और इस तरह फिट किया गया है जिससे कि ऐसे दरवाजे से उतरने के लिए स्थान तक पहुंचने की व्यवस्था है जिसमें अच्छी इंटरलाकिंग या अन्य युक्ति यह सुनिश्चित करने के लिए है कि ऐसे दरवाजे को सिवाय तब तक नहीं खोला जा सकता जब कि ऐसा स्थान, उतरने के लिए स्थान पर हो और यह कि ऐसा केज किसी ऐसे स्थान से तब तक नहीं हटाया जा सकता जब तक कि ऐसा दरवाजा बंद न हो।
- (ख) व्यक्तियों को लाने ले जाने के लिए प्रयुक्त ऐसे उत्तोलक के उत्तोलक मार्ग बाड़े का प्रत्येक दरवाजे पर यह सुनिश्चित करने के लिए अच्छी इंटरलाकिंग या युक्ति फिट की गई है ताकि ऐसे दरवाजे को सिवाय तब नहीं खोला जा सकता जब कि केज का ऐसा दरवाजा उतरने के स्थान पर न हो और यह कि ऐसा केज किसी ऐसे स्थान से तब तक नहीं हटाया जा सकता जब तक कि ऐसा दरवाजा बंद न हो।
- (ग) भवन कर्मकारों को लाने ले जाने के लिए प्रयुक्त प्रत्येक उत्तोलक में यह सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त और अच्छी स्वचल युक्तियों का उपबंध किया गया है कि ऐसे उत्तोलक का केज उस निम्नतर बिन्दु के ऊपर वाले बिन्दु पर विश्राम स्थिति की स्थिति में आ जाता है जिस पर ऐसा केज घूम सके।

145. धारा 40 भार के अनुलग्नक— नियोजक भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जब स्लिंग का उत्तोलक की लंबी सामग्रियों के लिए उपयोग किया जाता है, उत्थापक विम का उचित संतुलन करने के लिए स्लिंग लेग्स के बीच स्थान बनाने के लिए उपयोग किया जाता है और जब भार स्लिंग के दो या अधिक बिंदुओं से लटका हुआ होता है, ऐसे स्लिंग के उत्थापक लेग्स के छिद्रों को एक साथ जोड़ दिया जाता है और ऐसे शाकिलों के स्लिंग का छिद्र हुक पर रखा जाता है या ऐसे उत्थापक लेग्स के छिद्रों को, यथास्थिति, उत्तोलक ब्लाक, बाल या संतुलन विम के साथ जोड़ा जाता है ;
- (ख) पत्थर, ईंट, टाइल, स्लेट या अन्य वैसी ही वस्तुओं को उठाने या झुकाने के लिए प्रयुक्त प्रत्येक पात्र या आधान, उत्थापक के साथ इस तरह संलग्न किया जाता है कि ऐसी वस्तुओं को गिरने से रोका जा सके ;
- (ग) लदे हुए व्हील बैरों को उठाने या झुकाने के लिए ऐसे व्हील बैरों को सीधे उत्थापक पर रखकर यह सुनिश्चित किया जाता है कि ऐसे व्हील बैरें हिल डुल न सकें और ऐसा प्लेटफार्म, ऐसे व्हील बैरों में रखी गई अंतर्वस्तु को गिरने से बचाने के लिए घेर दिया जाता है ;
- (घ) किसी उत्तोलक की लैडिंग इस प्रकार डिजाइन और व्यवस्थित की जाती है कि ऐसे उत्तोलक पर भवन कर्मकारों को ऐसे उत्तोलक से किसी सामग्री की लदाई और उतराई के लिए खाली स्थान में झुकने की अपेक्षा न हो।

146. धारा 40 टावर क्रेन— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) प्रशिक्षित और ऊंचाई पर कार्य करने में समर्थ आपरेटर से भिन्न किसी व्यक्ति को टावर क्रेन चलाने के लिए नियोजित नहीं किया जाता है ;
- (ख) वह तल, जिस पर टावर क्रेन खड़ी की जाती है, पर्याप्त सहन क्षमता वाला है ;
- (ग) टावर क्रेनों और रेल पर चढ़ाए गए टावर क्रेनों के ट्रकों के लिए आधार गैस और सपाट सतह वाले हैं और ऐसी क्रेनें उत्खनन से युक्तियुक्त रूप से सुरक्षित दूरी पर खड़ी की जाती हैं और ऐसी क्रेनों के विनिर्माताओं द्वारा यथाविनिर्दिष्ट ढलान सीमाओं के भीतर प्रचालित की जाती हैं ;
- (घ) टावर क्रेनें वहां रोकी जाती हैं जहां निर्माण, प्रचालन और ऐसी क्रेनों के विघटन के लिए साफ स्थान उपलब्ध हो ;
- (ङ) टावर क्रेनें इस प्रकार रोकी जाती हैं कि ऐसी क्रेनों के भार किसी अभिमुख परिसर, सार्वजनिक मार्ग, रेल या ऐसे पावर केबलों के निकट हैंडल नहीं की जाती है सिवाय उन सन्निर्माण कार्यों के, जिनके लिए ऐसी क्रेनों का प्रयोग किया जाता है ;
- (च) जहां दो या अधिक टावर क्रेनें रोकीं और प्रचालित की जाती हैं वह किसी खतर या खतरनाक घटना से बचाने के लिए ऐसी क्रेनों के आपरेटरों के बीच सापेक्ष और उचित संचार सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक सावधानी बरती जाती है ;
- (छ) टावर क्रेनों का प्रयोग ऐसे लोडिंग मैगनेट, या बाल सर्विस के विघटन, एकत्रीकरण और प्रचालन या वैसे ही अन्य प्रचालनों के लिए किया जाता है जो ऐसी क्रेनों की क्रेन संरचना पर अधिक भार—दबाव अधिशोषित कर सकती है ;

(ज) ऐसे क्रेनों के बारे में, टावर क्रेनों और तानक विनिर्माता के अनुदेश, ऐसे क्रेनों को प्रचालित करने के दौरान, अनुसारित किए जाते हैं।

147. धारा 40 उत्पापक विंचों और सिंगनलर, आदि के प्रचालक की योग्यताएँ— नियोजक, किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण कार्य पर सुनिश्चित करेगा कि किसी उत्पापक साधित्र की, चाहे यांत्रिक शक्ति से या अन्यथा चलाने या प्रचालित करने के लिए या ऐसे उत्तोलक साधित्र के चालक या आपरेटर को संकेत देने के लिए या किसी रीगर या डैरिक्स के प्रचालन के रूप में कार्य करने के लिए किसी व्यक्ति को नियोजित नहीं किया जाता है जब तक कि वह—

(i) अठारह वर्ष से अधिक का है;

(ii) पर्याप्त रूप से दक्ष और विश्वसनीय है;

(iii) उत्पापक साधित्र के प्रचालन में अन्तर्ग्रस्त की जानकारी रखता है; और

(iv) आवधिक रूप से चिकित्सीय रूप से जांच की जाती है जैसाकि इन नियमों से उपाबद्ध अनुसूची II में विनिर्दिष्ट है।

अध्याय VII

भाग IV

रनवे और ढलान

148. धारा 40 भवन कर्मकार द्वारा रनवे और ढलान का प्रयोग— किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य करेगा कि—

(क) भवन कर्मकार द्वारा प्रयोग के लिए प्रदत्त रनवे और ढलान की चौड़ाई में चार सौ तीस मिलीमीटर से अन्यून है और पच्चीस मिलीमीटर अन्यून मोटे प्लेक में सन्निर्मित है या ऐसे रनवे या ढलान के सपान तथा ब्रेसिड के संबंध में अपेक्षित समर्पित भार या ढलान और पर्याप्त मजबूती के है तथा रनवे या ढलान के सन्निर्माण सुसंगत राष्ट्रीय मानक के अनुसार है;

(ख) मंजिल या तल ऊपर तीन मीटर से अधिक पर अवस्थित कर्मकार के उपयोग के लिए प्रदत्त प्रत्येक रनवे या ढलान खुला है जिसके साथ पर्याप्त मात्रा में गार्ड रेल है और ऊंचाई एक हजार मिलीमीटर से कम नहीं है।

149. धारा 40 यानों द्वारा प्रयोग— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) सभी रनवे और ढलान पक्के और मजबूत सन्निर्मित हैं तथा सुरक्षित रूप से ब्रेसिड और समर्थित हैं;

(ख) परिवहन उपस्कर जैसे ट्रैलरों, ट्रकों या भारी वाहन के लिए प्रत्येक रनवे या ढलान 3.7 मीटर से कम चौड़ाई की नहीं है तथा उनमें लकड़ी के चक्के लगाए गए हैं या पर्याप्त मजबूती की अन्य सामग्री सामान्तर मोटाई वाले स्थान में दो सौ मिलीमीटर तथा दो सौ मिलीमीटर से कम नहीं है और ऐसे रनवे या ढलान के सिरों से सुरक्षित है तथा ऐसे रनवे या ढलान सुसंगत राष्ट्रीय मंजूरियों के अनुसार बनाए गए हैं।

150. धारा 40 ढलान का झुकाव— नियोजक भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य में यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक ढलान का झुकाव एक बटा चार (वन इन फोर) से अधिक नहीं किया गया है और सामग्री ले जाने वाले या प्रयोग किए जाने वाले व्हील बैरे, भवन कर्मकारों द्वारा प्रयोग किए गए लगातार ढलान की कुल उंचाई 3.7 मीटर से अधिक नहीं है, लम्बाई में कम से कम 1.2 मीटर क्षैतिज अवतरण द्वारा उबड़ खाबड़ नहीं की गई हो जैसा कि सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार उपबंधित है।

151. धारा 40 व्हील बैरो आदि द्वारा उपयोग— नियोजक भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण कार्य को यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) व्हील बैरो हैंडकाटर्स या हैंड ट्रकों के लिए उपयोग किए गए प्रत्येक रनवे ढलान चौड़ाई में एक मीटर से कम नहीं है और पचास मिलीमीटर अन्यून मोटे प्लैकिंग से सन्निर्मित किए गए हैं और ऐसे उपयोग के लिए पर्याप्त रूप से समर्थित और ब्रेसिड हैं।

(ख) फर्श या भूमि से तीन मीटर से अधिक ऊपर अवस्थित प्रत्येक रनवे या ढलान पर्याप्त मजबूती की उचित सुरक्षी रेलिंग के साथ खुली साईड पर उपबंधित है।

अध्याय VII

भाग V

जल या जल से लगे स्थल पर संकर्म करना

152. धारा 40 जल द्वारा परिवहन— (1) नियोजक किसी भवन के निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर निम्नलिखित बातें सुनिश्चित करेगा :-

- (क) जब किसी भवन निर्माण कर्मकार को किसी भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर या किसी अन्य संकर्म स्थल से भवन निर्माण के प्रयोजनों के लिए मार्ग द्वारा जाना हो तब उसके सुरक्षित परिवहन और उसके लिए उपयोग की जाने वाली नौकाओं तथा ऐसे प्रयोजन के उपयोग के लिए उत्तरदायी व्यक्ति को भार साधक बनाने, और उसके सुरक्षित नौवहन तथा अच्छी दशा में रखे जाने के लिए समुचित उपाय किए गए हैं;
- (ख) उन व्यक्तियों की अधिकतम संख्या जिन्हें किसी नौका से सुरक्षित ले जाया जा सके ऐसी होगी कि प्रवृत्त सुसंगत विधि के अधीन प्रमाणित की जाए और वह संख्या ऐसी नौका पर सहज दृश्य स्थान पर मुख्य तथा दर्शाई जाएगी तथा व्यक्तियों की संख्या अधिकतम संख्या से अधिक नहीं होगी।
- (2) उपनियम (1) के अनुरूप होगी, अर्थात् खंड 'क' में निर्दिष्ट नौका निम्नलिखित के अनुरूप होगी, अर्थात्:-
 - (i) ऐसी नौका में सवार भवन निर्माण कर्मकारों को प्रतिकूल मौसम से बचने के लिए पर्याप्त संरक्षण में रखा जाता है ;
 - (ii) ऐसी नौका तत्समय यथाप्रवृत्त सुसंगत विधि के अनुसार पर्याप्त और अनुभवी कर्मीदल द्वारा नियंत्रित की जाती है ;
 - (iii) ऐसी नौका की अड़वाल की दशा में जो ऐसी नौका के डैक के स्तर से आठ सेंटीमीटर से कम है तो ऐसे अड़वाल का खुला किनारा समुचित बाड़ से सज्जित होगा जिसकी उंचाई ऐसे डैक और सकीचों, गूटे से एक मीटर कम नहीं होगी तथा ऐसी बाड़ में उपयोग किए गए वैसे ही पुर्जों की दूरी दो मीटर से अधिक नहीं होगी ;
 - (iv) ऐसी नौका के डैक पर जीवन रक्षा बोया की संख्या ऐसी नौका के कर्मीदल की संख्या दो संकर्म के बराबर होगी तथा दो से कम नहीं होगी;
 - (v) ऐसी नौका के डैक पर की सभी जीवन रक्षा बोया अच्छी दशा में रखी जाएगी और ऐसे स्थान पर रखी जाएगी जिससे कि ऐसी नौका डूबती है तो वह तुरन्त तैरने की स्थिति में हों तथा ऐसे जीवन रक्षा बोया में से एक नौका के चालक (स्टेयरमैन) की आसन पहुंच में होगा तथा दूसरा जीवन रक्षा बोया के बाद के भाग में अव्यस्थित होगा, और
 - (vi) नौका के चालक की स्थिति ऐसी होगी जिससे कि वह सभी आहार युक्तियुक्त निर्बाध रूप से देख सकें।

153-धारा 40 डूबने से बचाव— नियोजक किसी भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर या ऐसे सन्निर्माण स्थल से लगे संकर्म स्थल पर जहां जल है जिसे ये नियम लागू होते हैं, ऐसे स्थल पर भवन निर्माण कार्य में नियोजित कर्मकार अपने नियोजन के अनुक्रम में, वहां से उसके जल में गिरकर डूबने की जोखिम है तो यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे स्थल पर समुचित बचाव उपस्कर दिए गये हैं और उन्हें तुरन्त उपयोग के लिए अच्छी दशा में रखा गया है और ऐसे भवन निर्माण कर्मकार के डूबने के खतरे से तुरन्त बचाव की व्यवस्था के लिए उपाय किए गए हैं और जहां किसी भूमि या उससे लगी संरचना या जल के ऊपर या ऐसे जल पर प्रवाहमान बड़े के किनारे के ऐसे गिरने की विशेष जोखिम है तो वहां स्थान स्थिति ऐसी भूमि, संरचना या प्रवाहमान बड़े पर से ऐसे गिरने को रोकने के लिए उनके किनारे के पास सुरक्षित बाड़ लगाएगा और ऐसे संकर्म पर या ऐसे सन्निर्माण स्थल पर भवन निर्माण कर्मकारों के पहुंचने तथा सामग्री के संचलन के लिए ऐसी बाड़ को हटा सकेगा या उसे कुछ समय के लिए खड़ा नहीं रखेगा।

अध्याय VII

भाग VI

परिवहन और मृदा संचलन उपस्कर

154. धारा 40 मृदा संचलन उपस्कर और यान — नियोजक, भवन सन्निर्माण और अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर निम्नलिखित की बाबत सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी स्थल और मृदा संचलन उपस्कर अच्छी सामग्री उचित डिजाइन ठोस निर्माण के बने हुए हैं तथा जिसके लिए ऐसे उपस्कर के उपयोग के लिए यह सुनिश्चित करना वे सन्निर्माण के प्रयोजनों के लिए संकर्म उपयुक्त हैं और उन्हें मरम्मत करके अच्छी दशा में रखा गया है और सुरक्षित प्रचालन अभ्यास मानकों के अनुसार उनका समुचित उपयोग किया जाता है।

परन्तु आधानों की ढलाई के परिवहन के लिए ट्रक या ट्रेलर बिना किसी कटिनाई के आधानों को ले जाने के लिए पर्याप्त आकारों के हैं तथा ऐसे प्रत्येक ट्रक या ट्रेलर के धारों कोनों पर राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मुड़े आकड़े (विस्ट लांक) लगे हुए हैं और ऐसा ट्रक या ट्रेलर ऐसे उपयोग के लिए तत्समय प्रवृत्त सुसंगत विधि के अधीन किसी प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित है तथा मास में कम से कम एक बार किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा उसका निरीक्षण किया जाता है और ऐसे निरीक्षण का अभिलेख रखा जाता है ;

- (ख) सभी परिवहन या मृदा संचलन उपस्कर और यानों का किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा सप्ताह में कम से कम एक बार निरीक्षण किया जाता है और ऐसे उपस्कर या यान में यदि कोई त्रुटि पायी जाती है तो उसे तुरंत उपयोग से हटा लिया जाता है ;
- (ग) पावर ट्रक और ट्रैक्टरों में प्रभावकारी ब्रेक, हैंडलाइट पिछली बलियां लगी हुई हैं तथा उन्हें अच्छी तरह मरम्मत करके काम के लायक बनाए रखा जाता है ;
- (घ) (i) पावर ट्रकों और ट्रेलरों पर भारी और लम्बी वस्तुएं ले जाने के लिए दोनों तरफ के सीकचे ठोस निर्माण सामग्री के बने हुए हैं और त्रुटि रहित हैं ;
(ii) पावर ट्रकों और ट्रेलरों पर भार को बांधने के लिए लगे सीकचों में ऐसे सीकचों का इधर ऊपर दिखरने से रोकने के लिए ऊपर चारों और आर-पार जंजीरें दी हुई हैं ; और
(iii) ऐसे सीकचों को लदाई या उतराई में सही स्थिति में रखा जाता है ;
- (ङ) लारियों, ट्रकों, ट्रेलरों और वेगनों में लादने और उनसे उतारने के कार्य में लगे भवन सन्निर्माण कर्मकारों के आने जाने के लिए सुरक्षित गैंग मार्ग की व्यवस्था की गई है ;
- (च) ट्रकों और अन्य उपस्कर पर लाने ले जाने की उनकी सुरक्षित भार वहन क्षमता से अधिक भार नहीं होगा तथा ऐसे ट्रकों और उपस्करों पर स्पष्ट रूप से लिखी जाएगी ;
- (छ) हेड ट्रकों के हैंडलों का डिजाइन इस प्रकार का होगा जिससे कि ऐसे ट्रकों पर कार्यरत भवन निर्माण कर्मकारों के हाथों की सुरक्षा हो सके या ऐसे हैंडल पोर रक्षक युक्त होंगे ;
- (ज) ऐसे संकर्म में नियोजित परिवहन उपस्कर में कोई अनधिकृत व्यक्ति सवार नहीं होगा ;
- (झ) किसी परिवहन उपस्कर का ऐसा चालक जो ऐसे उपस्कर पर कार्यरत है किसी सिग्नलर के निदेश के अधीन कार्य करेगा ;
- (ञ) एकल विद्युत प्रदाय या सुरक्षित ऊंचाई पर निर्मित शिरोपरी बैरियरों की बाबत ऐसी पर्याप्त पूर्वावधानी बरती जाएगी जब मृदा संचलन उपस्कर या यानों की किसी चालू विद्युत कण्डक्टर की खतरनाक सीमा के भीतर कार्य किए जाने की अपेक्षा हो ;
- (ट) यानों और मृदा संचलन उपस्कर को ढलवा सस्ते पर उस समय नहीं छोड़ा जाएगा जब ऐसे यानों या उपस्कर के इंजन चालू हों ;
- (ठ) सभी मृदा संचलन उपस्कर, यान और अन्य परिवहन उपस्कर, ऐसे व्यक्ति द्वारा ही प्रचालित किए जाते हैं जो ऐसे उपस्कर, यान या अन्य परिवहन उपस्कर के सुरक्षित प्रचालन के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित हैं और जिसके पास ऐसा प्रचालन कौशल है।

155. धारा 40 पावर चालित बेलचे और उत्खनित्र-- नियोजक भवन निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर सुनिश्चित करेगा कि--

- (क) ऐसे बेलचे या उत्खनित्र चाहे वे वाष्प या विद्युत या अन्तरदहन द्वारा प्रचालित किए जाते हों और जिनका ऐसे संकर्म में उपयोग किया जाता है उन्हें तत्समय राष्ट्रीय मानकों के अधीन यथा अपेक्षित रूप से निर्मित संस्थापित, प्रचालित, प्रशिक्षित है और उनकी जांच की जाती है ;
- (ख) सचल केन के उपयोग के लिए सज्जित उपखनित्र--
(i) ऐसी सचल केन के जांच और परीक्षण इन नियमों के अधीन अपेक्षाओं के अनुसार किया जाता है ;
(ii) केन में स्वतः सुरक्षित कार्य भार संकेतक फिट है।
- (ग) पावर चालित बेलचों के ढोल या झामे ऐसे ढोलों या झामों की मरम्मत करते समय या ऐसे ढोलों या झामों के दांते बदलते समय उनके संचलन को निर्वचित करने के लिए पर्याप्त टेक लगाई गई है।

156. धारा 40 बुलडोजर-- नियोजक भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर सुनिश्चित करेगा कि--

- (क) किसी बुलडोजर का प्रचालक ऐसे बुलडोजर को छोड़ने से पहले--
(i) ब्रेक लगा देता है ;
(ii) ब्लेड और शिपर नीचे गिरा देता है ; तथा
(iii) शिफ्ट लिवर को न्यूट्रल में डाल देता है ;

- (ख) किसी ऐसे बुलडोजर को जिसका उपयोग किया जाता है कार्य समाप्त होने के पश्चात समतल भूमि पर खड़ा करेगा;
- (ग) बुलडोजर को चढ़ाई पर चढ़ाते समय ऐसे बुलडोजर के ब्लेड को नीचे रखना;
- (घ) आपात स्थिति के सिवाय बुलडोजरों के ब्लेडों के ब्रेक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना है।

157. धारा 40 स्क्रेपर— नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण स्थल पर सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) किम ट्रक्टर और स्क्रेपर अपने प्रचालन के समय सुरक्षित रेखा से जुड़े हुए हैं;
- (ख) स्क्रेपर के ब्लेडों को बदलते समय और स्क्रेपर कटोरा (बाउल) टैंक लगा दी गई है;
- (ग) निचले ढाल पर स्क्रेपर का गियर ढाल दिया गया है।

158. धारा 40 एस्फाल्ट परतें मिछाने वाली और उसे अंतिम रूप देने वाली सचल मशीनें— नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण संकर्म स्थल पर सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) मिश्रण उत्पापक लकड़ी या धातु की चादर से बने पिंजरे में होगा और उसे देखने, स्नेहन तथा अनुस्क्षण के लिए उसमें खिड़की बनी होगी;
- (ख) बिटुमेन स्कूप के किनारे मुड़े हुए हैं;
- (ग) जब कोई एस्फाल्ट संयंत्र सार्वजनिक मार्ग पर कार्यरत है तो ऐसे मार्ग पर पर्याप्त यातायात नियंत्रण बनाए रखा जाता है और ऐसे संयंत्र पर कार्यरत भवन निर्माण कर्मकारों को प्रतिबंधित जैकिटें दी जाती हैं;
- (घ) ऐसे कार्य स्थल पर जहां अग्नि कांड से संभावित है वहां पर्याप्त मात्रा में अग्निशामक यंत्र तैयार रखे जाते हैं;
- (ङ) उत्पापक में सामग्री तब डाली जाए जब ऐसे उत्पापक की नाली सूखने के पश्चात गरम हो गई हो;
- (च) एस्फाल्ट का स्तर अभिनिश्चित करने के लिए खुले प्रकाश का उपयोग नहीं किया जाता है;
- (छ) निरीक्षण खिड़की को तब तक न खोला जाए जब तक कि बायलर में दबाव बना रहता है, जो किसी भवन निर्माण कर्मकार को क्षति पहुंचा सकता है।

159. धारा 40 समतल करने वाला यंत्र (पेव्हर)— नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे समतल करने वाले यंत्र के स्पिक के नीचे से आने वाले भवन निर्माण कर्मकारों को रोकने के लिए उसमें समुचित रक्षक लगे हुए हैं।

160. धारा 40 रोड रोलर— नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण संकर्म स्थल पर यह भी सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) भूमि पर रोड रोलर या उपयोग किए जाने से पूर्व ऐसी भूमि को भार वहन क्षमता और सामान्य सुरक्षा विशेषताया ऐसी भूमि के ढलान के किनारों की जांच कर ली गई है;
- (ख) इंजन के गियर में न होने पर रोलर का ढाल पर न चलना।

161. धारा 40 सामान्य सुरक्षा— नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) प्रत्येक वाहन या मृदा संचलन उपस्कर निम्नलिखित से सज्जित है—
 - (i) साईलेंसर;
 - (ii) पिछली बत्ती;
 - (iii) पावर और हाथ की ब्रेकें;
 - (iv) प्रतिवर्ती आलार्म; और
 - (v) आगे से पीछे आने जाने के लिए सर्चलाइट, जो ऐसे वाहन या मृदा संचलन उपस्कर के सुरक्षित चालन के लिए अपेक्षित है;
- (ख) वाहन या मृदा संचलन उपस्कर की गाड़ी उत्खनन की जा रही भूमि से संलग्न अग्र भाग से कम से कम एक मीटर पर रखी जाएगी;
- (ग) जब क्रेन या बेलचों को ले जाया जा रहा हो तो उस क्रेन या बेलचे का सिरा ऐसी ले जाई जा रही दिशा में है और उस क्रेन या बेलचे से संलग्न ढोल या स्कूप ऊपर उठी हुई है और भार रहित है सिवाय तब के जब ऐसी यात्रा उतार की ओर की जा रही हो।

अध्याय VII

भाग VII

कंक्रीट संकर्म

162. धारा 40 कंक्रीट के उपयोग के संबंध में साधारण उपबंध— कोई नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कंक्रीट या पुनर्दलित कंक्रीट के उपयोग से किए सभी सन्निर्माण निम्नानुसार रेखांक पर आधारित है—
- (i) ऐसे सन्निर्माण में उपयोग किए जाने वाले इस्पात और कंक्रीट तथा अन्य सामग्री के विनिर्देश सम्मिलित हैं;
 - (ii) उपखंड (i) में यथा विनिर्दिष्ट सामग्री को सुरक्षापूर्ण लगाने और उठाई-धराई करने के लिए पद्धतियों के संबंध में तकनीकी ब्यौरे दें;
 - (iii) ऐसे सन्निर्माण की प्रत्येक संरचना के प्रकार, क्वालिटी और व्यवस्था को उपदर्शित करें, और
 - (iv) ऐसे सन्निर्माण को पूरा करने के लिए किए जाने वाले उपायों की श्रृंखला का उल्लेख करें;
- (ख) कंक्रीट कार्य के लिए उपयोग किए गए फरमा और टेक संरचनात्मक और आपस में समुचित रूप से कसे हुए या बंधे हुए हैं जिससे कि ऐसे फरमा या टेक की स्थिति और आकार को बनाए रखा जा सके।
- (ग) कंक्रीट संकर्म के लिए उपयोग किए गए फरमा ढांचे में पर्याप्त सांकरी और अन्य सुरक्षित पहुंच ऐसे ढांचे के निरीक्षण के लिए उपलब्ध हैं यदि ऐसा ढांचा दो या इससे अधिक मंजिल का है।

163. धारा 40 कंक्रीट तैयार करना और उसे उड़ेलना तथा कंक्रीट ढांचे को परिनिर्मित करना— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार जो सीमेंट या कंक्रीट का कार्य कर रहा है—
- (i) चुस्त वस्त्र, दस्ताने, हेलमेट या कटोर टोपी, सुरक्षा चश्मे अनुचित जूते और स्विस्त्र या मास्क ऐसे कार्य करने में किसी खतरे से संरक्षा करने के लिए पहने हुए हैं;
 - (ii) ऐसे कार्य करने में खतरे से संरक्षण करने के लिए अपने शरीर को उतना ढके हुए रहेगा जितना कि अपेक्षित है;
 - (iii) ऐसा कार्य करने में अपनी त्वचा से सीमेंट और कंक्रीट को दूर रखने के लिए सभी आवश्यक पूर्वावधानियां बरतेगा।
- (ख) चूने के गड़दों के चारों ओर कंटीले तार लगाए गए हैं और उन्हें ढका गया है;
- (ग) चूने के गड़दों को जिनमें कर्मकारों के जाने की अपेक्षा नहीं की जाती है ऐसे यंत्रों से भरा और खाली किया जाता है;
- (घ) उत्थापकों, उत्तोलकों, विक, बंकरों, प्रदीपकाओं, भरण उपस्तर के भ्रमण पुजों को जो कंक्रीट संकर्म के लिए उपयोग किए जाते हैं और अन्य उपस्तरों को जो भण्डारण, परिवहन और कंक्रीट के तत्वों की अन्य उठाई-धराई में उपयोग किए जाते हैं उनके चारों ओर सुरक्षापूर्ण कंटेदार तार लगाए गए हैं जिससे कि भवन सन्निर्माण कर्मकारों को ऐसे भ्रमण कर रहे पुजों के संपर्क से दूर रखा जा सके;
- (ङ) सीमेंट, चूना और अन्य धूलवाली सामग्री के लिए उपयोग किए जाने वाले स्कूवाहक पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं।

164. धारा 40 बाट्टियां — नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कंक्रीट की बाट्टियां जो केन या वायु केबल मार्गों में उपयोग की जा रही हैं वे प्रक्षेपण से मुक्त हैं जिनसे कंक्रीट का संचयन गिराया जा सके;
- (ख) कंक्रीट बाट्टियां भ्रमण संकेतों द्वारा शासित हैं जो ऐसे भ्रमण से होने वाले किसी खतरे से बचने के लिए आवश्यक हैं।

165. धारा 40 पाईप और पम्प—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) ऐसी कोई पाइ जिस पर पम्प की हुई कंक्रीट के लिए कोई पाईप ले जाई जा रही है वह पर्याप्त मजबूत है जिससे कि वह ऐसी पाइप को उस समय जब ऐसी पाईप कंक्रीट या पानी से या किसी अन्य द्रव से भरी हुई है के लिए सहारा देने के लिए है और उसे भी भवन सन्निर्माण कर्मकारों को दोनों के लिए है, जो उस समय ऐसी पाइ पर सुरक्षा पूर्ण उपस्थित हों;
- (ख) पम्प की गई कंक्रीट का वहन करने के लिए प्रत्येक पाईप,—
- (i) उसके अन्तिम सिरे के बिन्दु पर उसके प्रत्येक मोड़ पर सुरक्षा पूर्वक जुड़ा हुआ है;
 - (ii) ऐसे पाइप के अग्रभाग के निकट एक वायु निर्वातक वाल्व लगा हुआ है; और
 - (iii) वह किसी पम्प नोजल के साथ किसी बोल्ट की गई कालर या अन्य पर्याप्त साधन से सुरक्षा पूर्वक संलग्न है;

(ग) कंक्रीट पम्प का परिचालन मानक संकेतों से शासित होता है जो सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार सुसंगत है;

(घ) किसी कंक्रीट पम्प के आस-पास नियोजित भवन सन्निर्माण कर्मकार सुरक्षा चश्मे पहने हुए हैं।

166. धारा 40 कंक्रीट का मिश्रण करना और उड़ेलना—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) कंक्रीट सम्मिश्रण में ऐसी कोई सामग्री नहीं होगी जो ऐसी कंक्रीट के सेट किए जाने को असामयिक रूप से प्रभावित करे, ऐसी कंक्रीट या संश्लिष्ट इम्पात जो ऐसी कंक्रीट में उपयोग किया गया है को कमजोर करे;

(ख) जब कंक्रीट के शुष्क तत्व परिरुद्ध स्थलों अर्थात् शिलोस में मिश्रित किये जा रहे हों—

(i) मिश्रण के समय धूल को निकाला जाएगा और

(ii) उपखंड (i) में यथा विनिर्दिष्ट धूल के नहीं निकाले जाने की दशा में भवन सन्निर्माण कर्मकार ऐसे मिश्रण करते समय स्वशास्त्र पहनेंगे;

(ग) जब कंक्रीट बाल्टियों से उड़ेली जा रही हो तो भवन सन्निर्माण कर्मकारों को ऐसी बाल्टियों के किसी प्रतिघात के रेंज से दूर रखा जाता है;

(घ) सेट की जाने वाली कंक्रीट का वर्ग भार से नहीं दबाया जा रहा है या नहीं रखा जा रहा है।

167. धारा 40 कंक्रीट प्रपट्ट और स्लैब—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) किसी कंक्रीट, प्रपट्ट या कंक्रीट स्लैब के सभी भाग समान रूप से उठाये गए हैं;

(ख) कंक्रीट प्रपट्ट उनकी अंतिम स्थिति में पर्याप्त रूप से कसे गए हैं और ऐसा कसाव ऐसी स्थिति में तब तक बना रहेगा जब तक ऐसे प्रपट्टों को सन्निर्माण के उस अन्य भाग द्वारा पर्याप्त रूप से सहारा नहीं मिल जाता जिनके लिए ऐसे प्रपट्ट उपयोग में लाये गये हैं;

(ग) कंक्रीट प्रपट्टों का अस्थायी करवाव, जब ऐसे प्रपट्टों को धुमाया जा रहा हो, ऐसे प्रपट्टों के किसी भाग को गिरने से रोकने के लिए सुरक्षित रूप से जकड़ा गया है।

168. धारा 40 प्रतिवर्तित और पृष्ठ तनावग्रस्त तत्व—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) जब कंक्रीट गार्डर और खम्भों पर कंक्रीट का प्रतिवर्तन किया जा रहा हो तब भवन सन्निर्माण कर्मकार सीधे ही जैक उपकरण पर खड़े नहीं होते हैं;

(ख) कोई पूर्वप्रचलित कंक्रीट यूनिट का प्रयोग ऐसे यूनिट के किसी बिन्दु पर और ऐसी युक्तियों के विनिर्माता द्वारा ऐसे संकर्म के लिए विनिर्दिष्ट युक्तियों द्वारा प्रयोग के सिवाय नहीं की जाती है;

(ग) पूर्वप्रचलित कंक्रीट गार्डर या कंक्रीट खम्भों को, परिवहन के दौरान उन्हें कंसकर या अन्य प्रभावी साधनों द्वारा खड़ा रखा जाता है;

(घ) पूर्वप्रचलित कंक्रीट गार्डर या कंक्रीट खम्भों के पूर्व पृष्ठांकित पुतिन के लिए एंकर फिटिंग को ऐसे एंकर फिटिंग के विनिर्माण के अनुदेशों के अनुसार सुरक्षित दशा में रखा जाता है;

(ङ) भवन सन्निर्माण कर्मकार पूर्वप्रचलित कंक्रीट गार्डर या कंक्रीट खम्भों के पृष्ठ तनाव राकिया के दौरान तनाव यन्त्रों और जैक उपकरणों की सीध में या जैकों के पीछे खड़े नहीं होते हैं;

(च) भवन सन्निर्माण कर्मकार पूर्वप्रचलित कंक्रीट गार्डर या कंक्रीट खम्भों के तारों को पृष्ठतनाव के दौरान ऐसे कंक्रीट के ऐसे गार्डरों या खम्भों के उपयोग के पूर्व पर्याप्त रूप से कठोर हो जाने से पहले नहीं काटते हैं।

169. धारा 40 प्रक्रम्यक—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) ऐसा कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार जो स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी हालत में हो, कंक्रीट संकर्म में उपयोग किये जाने वाले प्रक्रम्यकों का प्रचालन करता है;

(ख) कंक्रीट संकर्म कार्य करने वाले प्रचालकों को सम्प्रेषित प्रक्रम्यक की मात्रा को कम करने के लिए सभी व्यावहारिक उपाय करने होते हैं;

(ग) जब विद्युत प्रक्रम्यकों का कंक्रीट संकर्म में उपयोग किया जाता है,—

(i) ऐसे प्रक्रम्यकों को भूसंपर्कित किया जाएगा।

(ii) ऐसे प्रक्रम्यकों की प्रवाही तारें अत्यधिक विद्युतरोधी होंगी और

(iii) जब इन प्रक्रम्यकों का उपयोग नहीं किया जा रहा हो तब विद्युत धारा को बन्द कर दिया जाएगा।

170. धारा 40 निरीक्षण और पर्यवेक्षण— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) ऐसा कोई व्यक्ति जो कंक्रीट के संकर्म के लिए उत्तरदायी है वह फर्मा, टेक, कसाव और अन्य सहायों का जो ऐसे कंक्रीट संकर्म में उपयोग किया जा रहा है, निरीक्षण करता है;
- (ख) ऐसा कोई व्यक्ति जो कंक्रीट संकर्म के लिए उत्तरदायी है वह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसा प्रत्येक फर्मा, परिनिर्माण के पश्चात् सुरक्षित है प्रत्येक फर्मा का पूर्ण रूप से निरीक्षण करता है;
- (ग) ऐसा कोई व्यक्ति जो कंक्रीट संकर्म के लिए उत्तरदायी है कंक्रीट जमाये जाने के दौरान फर्मा, टेक, कसाव पुनर्टेक और अन्य सहायों का नियमित रूप से निरीक्षण करता है;
- (घ) खंड (क) और खंड (ग) के अधीन उल्लिखित निरीक्षणों के दौरान किसी असुरक्षित दशा का पता चलता है तो उसका तुरन्त उपचार किया जाता है;
- (ङ) ऐसा कोई व्यक्ति जो कंक्रीट संकर्म के लिए उत्तरदायी है कार्य स्थल पर ऐसे निरीक्षणों के सम्बन्ध में खंड (क) और खंड (ख) में निर्दिष्ट निरीक्षणों के सभी अभिलेख रखता है और उन्हें अधिकारिता रखने वाले किसी निरीक्षक को मांग किये जाने पर निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करता है।

171. धारा 40 लट्टा, तल और छतें— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कंक्रीट संकर्म में उपयोग की जा रही फर्मा की संरचनात्मक स्थिरता बनाए रखने के लिए यथा आवश्यक क्षितिजीय और द्विकोणीय कसाव अनुदैर्घ्य और अनुप्रस्थ दशाओं में उपबन्ध किया गया है और ऐसे कंक्रीट संकर्म में उपयोग की गई टेकें समुचित रूप से शिखर पर और निर्माण तल पर रखी गई हैं तथा वे अपने स्थानों पर सुरक्षित हैं;
- (ख) जहां कंक्रीट संकर्म में टेकें उपयोग की जा रही हैं वहां शेष भूतल, आधार प्लेटें उपलब्ध कराई जाती हैं जिससे कि ऐसी टेकें भज्जबूत और समतल बनी रहें;
- (ग) जहां किसी कंक्रीट संकर्म की तल से छत तक की ऊंचाई नौ मीटर से अधिक हो या जहां ऐसे कंक्रीट संकर्म में उपयोग किए गए फर्मा के डैकों का दो या अधिक मंजिल में सन्निर्माण किया गया है और किसी टेक द्वारा सहारा लिया हुआ है या ऐसे कंक्रीट संकर्म में उपयोग किये गये फर्मा पर अचल, चल और संघट्टभाट प्रति वर्ग मी० सात सौ कि. ग्रा. से अधिक हों वहां ऐसे फर्मा का ढांचा सुसंगत क्षेत्र के किसी व्यावसायिक इंजीनियर द्वारा डिजाइन किया जाता है और ऐसे फर्मा के विनिर्देश और आरेख ऐसे सन्निर्माण स्थल पर रखे जाते हैं तथा उन्हें अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक के समक्ष मांग किए जाने पर प्रस्तुत किया जाता है;
- (घ) जहां कंक्रीट संकर्म में उपयोग किए गए फर्मा की संरचना किसी व्यावसायिक इंजीनियर द्वारा डिजाइन की जाती है वहां ऐसा इंजीनियर सन्निर्माण और ऐसी संरचना के स्थायित्व के पर्यवेक्षण के लिए उत्तरदायी होगा।

172. धारा 40 निर्लेपन— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कंक्रीट संकर्म में उपयोग किये गए फर्मा का निर्लेपन तब तक आरम्भ नहीं किया जाएगा जब तक कि ऐसे फर्मा पर कंक्रीट पूर्ण रूप से सेट नहीं हो जाती, उसका परीक्षण नहीं कर लिया जाता और उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा इस निमित्त उसे प्रमाणित नहीं कर दिया जाता ऐसे परीक्षण और प्रमाणन का अभिलेख रखा जाता है;
- (ख) कंक्रीट संकर्म में निर्लेपित किए गए फर्मा हटा लिये जाते हैं या उन सभी क्षेत्रों से जिन में भवन निर्माण कर्मकारों का कार्य करना या गुजरना अपेक्षित है उन्हें निर्लेपित करने के पश्चात् शीघ्रता से समूह में इकट्ठा कर दिया जाता है;
- (ग) बाहर निकली हुई कीलें, तार, तारबन्धानी और अन्य फर्मा के उपांग जो पश्चात्काली कंक्रीट संकर्म के लिए अपेक्षित नहीं हैं उन्हें खींच लिया जाता है, काट दिया जाता है या अन्यथा सुरक्षित बना दिया जाता है।

173. धारा 40 पुनर्टेकन— कोई नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) कंक्रीट संकर्म में उपयोग की गई पुनर्टेकनें उसके निर्लेपन के पश्चात् किसी स्लैब या लट्टे में उसके सुरक्षित सहारे के लिए उपलब्ध कराई जाती है या ऐसे स्लैब या लट्टे के ऊपर सन्निर्माण होने के कारण अध्यासित भार के अधधीन होता है;
- (ख) इस अध्याय के अधीन किसी कंक्रीट संकर्म में टेक के सम्बन्ध में लागू उपबन्ध ऐसे संकर्म में पुनर्टेकन के लिए भी लागू होंगे।

अध्याय VII

भाग VIII

ध्वस्त करना

174. धारा 40 तैयारी— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी ध्वस्त करने सम्बन्धी कार्य को आरम्भ करने से पहले सभी सीसे या उसी प्रकार की सामग्री या बाहर की ओर खुलने वाली वस्तुओं को हटा दिया जाएगा और सभी जल, वाष्प, विद्युत, गैस और अन्य उसी प्रकार की प्रदाय सम्बन्धी लाईनों को बन्द किया जाएगा तथा उन पर समुचित रूप से ढक्कन लगाया जाएगा और समुचित सरकार के सम्बद्ध विभाग या स्थानीय प्राधिकारी को यह सूचना दी जाती है और ध्वस्त करने सम्बन्धी कार्य के आरम्भ करने से पूर्व जब कभी आवश्यक हो अनुज्ञा ली जाती है अर्थात् जहाँ कहीं जल, गैस, या विद्युत लाईन या विद्युत शक्ति को ऐसे ध्वस्त करने के दौरान बनाये रखना आवश्यक है वहाँ ऐसी लाईनें उसी प्रकार अवस्थित रहेंगी या उन्हें पर्याप्त रूप से ढक्कर उनकी संरक्षा की जाएगी जिससे कि इन्हें नुकसान से संरक्षित किया जा सके और भवन निर्माण कर्मकारों तथा आम जनता को सुरक्षा प्रदान की जा सके।

175. धारा 40 निकटवर्ती संरचनाओं का संरक्षण— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या किसी अन्य संकर्म स्थल पर किसी ध्वस्त करने सम्बन्धी कार्य के लिए उत्तरदायी है, ऐसे ध्वस्त करने सम्बन्धी संकर्म के ध्वस्तकरण के दौरान ध्वस्त की जाने वाली संरचना के निकटवर्ती सभी संरचनाओं की दीवारों का निरीक्षण उनकी मोटाई और ऐसे निकटवर्ती संरचनाओं की या सड़ारों की पद्धति अवधारित करेगा और यदि ऐसे नियोजक के पास यह विश्वास करने का कारण हो कि ऐसी निकटवर्ती संरचना असुरक्षित है या ऐसे ध्वस्तकरण प्रक्रिया के दौरान असुरक्षित होने की सम्भावना है तथा वह ऐसी निकटवर्ती असुरक्षित संरचना पर प्रभाव डालते हुए ध्वस्तकरण कार्य तब तक नहीं करेगा जब तक कि उपचारात्मक उपाय अर्थात् चादरें खड़ी करने के टेकबंदी, कसाव या अन्य वैसे ही साधनों का उपयोग नहीं किया गया हो जिससे कि ऐसी असुरक्षित निकटवर्ती संरचना को ढहने से सुरक्षित और स्थिर रखा जा सके।

176. धारा 40 दीवारों, सम्भागों आदि को ध्वस्त करना— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या किसी भवन या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) दीवारों या संभागों का कोई भी ध्वस्त करने सम्बन्धी कार्य सुव्यवस्थित रीति से नानक सुरक्षा प्रचालन परिपाटी के अनुसार आरम्भ किया गया है और ऐसे शहतीर के सहारे को हटाने से पूर्व प्रत्येक मजिल के प्रत्येक स्तर से किसी तल की शहतीर हटाने सम्बन्धी कार्य को पूरा कर लिया गया है;
- (ख) चिनाई को न तो ढीला छोड़ा गया है और न ही उसे अत्यधिक मात्रा में या आखतन में या भार में गिरने दिया जाता है जिससे कि किसी तल की संरचनात्मक स्थिरता या संरचनात्मक सहारे को खतरा हो;
- (ग) कोई दीवार, विमनी या अन्य संरचना या संरचना के किसी अन्य भाग को ऐसी स्थिति में असुरक्षित नहीं छोड़ा गया है कि वह वायु दाव या प्रकम्पन के कारण गिरे, ढहे या कमजोर हो जाए;
- (घ) हाथ से बाह्य दीवारों को ध्वस्त किये जाने की दशा में, ऐसा ध्वस्त करने के लिए नियोजित भवन निर्माण कर्मकारों के लिए खड़े होने की समुचित व्यवस्था की गई है इसके लिए खड़े होने की मजबूत मचान या पाड़ की व्यवस्था की गई है; तथा
- (ङ) ऐसी दीवारों या उनके संभाग जिन्हें हाथ से ध्वस्त किया जाना है सबसे ऊँचे तल पर जिस पर व्यक्ति काम कर रहा है, एक मजिल से अधिक की ऊँचाई तक खड़ा नहीं छोड़ा जाता।

177. धारा 40 प्रचालन की पद्धति— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि मलबा, ईंटें और अन्य सामग्री या वस्तुएं हटाई जाएगी—

- (क) शूट, माध्यम द्वारा,
- (ख) बाल्टी या उत्तोलक साधन द्वारा,
- (ग) तलों को खोलकर, या
- (घ) किसी अन्य सुरक्षित साधन द्वारा।

178. धारा 40 तल तक पहुंच— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे भवन को ध्वस्त किये जाने के दौरान सभी समय प्रत्येक भवन तक सुरक्षित पहुंच और निकास हो, जो प्रवेश बड़े कमरों के रास्ते, जाने के रास्ते या सीढ़ी द्वारा से किए गए हैं वे इस प्रकार सुरक्षित हों कि भवन सन्निर्माण कर्मकारों को गिरने वाली सामग्री या वस्तुओं के उपयोग में सुरक्षित रक्षोपाय उपलब्ध है।

179. धारा 40 संरचनात्मक इस्पात का ध्वस्त किया जाना— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी इस्पात संरचनाओं को स्तम्भ से स्तम्भ तक और सोपान से सोपान तक ध्वस्त किया गया है और प्रत्येक संरचनात्मक इकाई जिसे ध्वस्त किया जा रहा हो वह किसी पृष्ठ तनाव के अधीन नहीं हो और ऐसी संरचनात्मक इकाई की इसके किसी अनियंत्रित रूप से लटकने या झुकने या गिरने में उपयुक्त रूप से रोकने की व्यवस्था की गई है;
- (ख) बहुत संरचनात्मक इकाइयां भवन से फेंकी या गिराई नहीं गई हैं किन्तु उपयुक्त सुरक्षित प्रणाली को अपनाकर सावधानीपूर्वक नीचे गिराई गई हैं;
- (ग) जहाँ उत्पादक साधित्र अर्थात् डैरिक ध्वस्त करने के लिए उपयोग में लाया गया है वहाँ वह तल जिस पर उत्पादक साधित्र लगाया गया है पूर्ण रूप से तख्तों से ढक दिया गया है या सहारा दिया गया है और ऐसे तल ऐसे उत्पादक साधित्र और उनके प्रचालन के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत हैं।

180. धारा 40 सामग्री या वस्तु का भंडारण— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी सामग्रियों और वस्तुएं किसी भवन के जिसे ध्वस्त किया जा रहा है चबूतरे तल या जीमेन्टार पर भंडारित करके नहीं रखे गए हैं ;
परन्तु यह कि यह खंड किसी भवन के तल के लिए तब लागू नहीं होगा जब ऐसा तल इतना भजबूत न हो कि जो ऐसी सामग्री या वस्तुओं को भंडारित किए जाने के द्वारा अध्यारोपित भार को सुरक्षापूर्ण सहारा देने के लिए पर्याप्त है;
- (ख) किसी सीढ़ीद्वार या गलीद्वार की पहुंच किसी सामग्री या वस्तु के भण्डारण किये जाने से प्रभावित नहीं हुई है या रुकी नहीं है।
- (ग) उपयुक्त रुकावटों का उपबन्ध किया गया है जिससे कि भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग में लाये जा रहे किसी स्थान में सामग्री या वस्तुओं को रुकावट या टकराव न हो।

181. धारा 40 तल का खोला जाना— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक तल से मलबे को हटाने के लिए उपयोग में लाये जा रहे प्रत्येक निष्कासन द्वार को जिसे पहुंच के लिए बन्द नहीं किया गया है केवल सबसे उपरी तल या उस तल के सिवाए जहां कार्य हो रहा है, जिनमें उसे तल से छत तक कोई संलग्नक लगाया गया है और ऐसे निकास द्वार को इस प्रकार रोका गया है कि कोई भवन निर्माण ऐसे निकास द्वार से जिससे मलबा गिराया जा रहा है छह मीटर की क्षितिजीय दूरी के भीतर नहीं पहुंच सके।

182. धारा 40 निरीक्षण— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि वह व्यक्ति जो ध्वस्त किये जाने के कार्य के लिए उत्तरदायी है ऐसे ध्वस्त किये जाने की प्रक्रिया के दौरान निरंतर निरीक्षण करता है, जिससे कि ऐसे ध्वस्त किये जाने की प्रक्रिया के दौरान कमजोर या जर्जर तलों या दीवारों या खुली हुई सामग्री या वस्तुओं से होने वाले खतरे का पता चल सके और यह कि किसी भवन निर्माण कर्मकार को जहां ऐसा खतरा विद्यमान है तब तक अनुज्ञा नहीं दी जाती है जब तक कि ऐसे खतरे को रोकने के लिए टेकबन्दी या कसाव जैसे उपचारात्मक उपाय नहीं कर दिये जाते।

183. धारा 40 चेतावनी संकेत, रुकावट आदि— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) ध्वस्त किये जाने की संक्रियों के दौरान ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण संकर्म में व्यक्तियों के अप्राधिकृत प्रवेश को रोकने के लिए ध्वस्त किये जाने वाले किसी भवन या अन्य सन्निर्माण संकर्म के प्रत्येक और लम्बाई और चौड़ाई में रुकावट और चेतावनी संकेत परिनिर्मित किया जाता है;
- (ख) किसी बाह्य दिनाई की दीवार या किसी छत के ध्वस्त किये जाने के दौरान ऐसी दीवार या छत के निकटवर्ती भूतल स्तर के ऊपर बारह मीटर से अधिक से किसी बिन्दु पर यदि, व्यक्ति ऐसी दीवार या छत के नीचे वस्तुएं गिरा रहा है उपयुक्त और सुरक्षित पकड़ चबूतरे का उपबन्ध किया जाता है और वह कार्य किये जाने वाले स्तर से छह मीटर से अधिक के ऊपर स्तर पर अवस्थित होता है और उसका अनुरक्षण किया जाएगा वहां के सिवाय जहां ऐसे व्यक्तियों की पर्याप्त सुरक्षा के लिए बाहर की ओर बनी हुई पाड़ की व्यवस्था की गई है;
- (ग) राष्ट्रीय मानकों के अनुसार उपयुक्त और मानक चेतावनी संकेत कार्य स्थल के सहज दृश्य स्थानों या स्थलों पर संप्रदर्शित या परिनिर्मित किये जाते हैं।

184. धारा 40 ध्वस्त किये जाने की यांत्रिक पद्धति— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ध्वस्त किये जाने के प्रयोजन के लिए ध्वस्त किये जाने की यांत्रिक पद्धति अर्थात् लटकते हुए भार क्लेम सेल बाल्टी, विद्युत बेलचा, बुलडोजर या अन्य उसी प्रकार की यांत्रिक पद्धतियों के उपयोग किये जाने की दशा में, निम्नलिखित अपेक्षा पूरी की जा रही है अर्थात् ;

- (क) कि भवन या संरचना या उनके भाग ऊंचाई में चौबीस मीटर से अधिक नहीं होंगे;
- (ख) कि जहां ध्वस्त किये जाने के लिए किसी लटकते हुए भार का उपयोग किया जाता है, वहां इस प्रकार ध्वस्त किये जाने वाली संरचना या उसके भाग की ऊंचाई के कम से कम डेढ़ गुणे व्यास का ऐसा ध्वस्तकरण कोई जोन, ऐसे लटकते हुए भार के बिन्दुओं के आसपास बनाये रखा जाएगा;
- (ग) जहां ध्वस्तकरण के लिए किसी क्लेम सेल बाल्टी का उपयोग किया जा रहा है वहां ऐसी बाल्टी की मात्रा रेखा के आठ मीटर के भीतर ध्वस्तकरण का एक जोन बनाये रखा जाएगा;
- (घ) कि जहां किसी भवन या अन्य सन्निर्माण संकर्म को पूर्ण रूप से या भारत गिराये जाने के लिए अन्य यांत्रिक पद्धतियों का उपयोग किया जा रहा है वहां उस क्षेत्र में जो ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण संकर्म का जो गिरने वाला है के प्रभावित होने वाले भाग में एक ध्वस्तकरण जोन जो उसे ऐसे प्रभावित भाग के डेढ़ गुणा ऊंचाई पर बनाये रखा जाएगा; तथा

- (ड) ध्वस्त किये जाने की सक्रिया में लगे भवन सन्निर्माण कर्मकार या अन्य आवश्यक व्यक्तियों से भिन्न किसी व्यक्ति को खंड
(क) में निर्दिष्ट किसी ध्वस्तकरण जोन में प्रवेश करने की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी जिसके साथ पर्याप्त रुकावटों की व्यवस्था होगी।

अध्याय VII

भाग IX

उत्खनन और सुरंग खोदने का संकर्म

185. धारा 40 उत्खनन और सुरंग खोदने के संकर्म को करने के आशय के लिए अधिसूचना— (1) प्रत्येक नियोजक जो किसी भवन संकर्म स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर उत्खनन या सुरंग खोदने का संकर्म कर रहा है, ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के प्रारम्भ करने से पूर्व तीस दिन के भीतर महानिदेशक को ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के विस्तृत आरेख, सन्निर्माण की पद्धति और उसके कार्यक्रम के बारे में लिखित सूचना देगा।

(2) ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म या उसके किसी आनुषांगिक संकर्म या ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के लिए अपेक्षित संकर्म में सम्पीड़क वायु का उपयोग किये जाने की दशा में, मेन लॉक के तकनीकी व्योरे और आरेख सभी सन्निर्माण चिकित्सा अधिकारियों जिनके पास इन नियमों से उपबद्ध अनुसूची V में अधिकथित अर्हता हैं, के नाम और पतों सहित और ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के प्रयोजन के लिए जो ऐसे नियोजक द्वारा नियत किए गए हैं, मुख्यनिरीक्षक को भेजा जाएगा।

186. धारा 40 परियोजना इंजीनियर— (1) प्रत्येक नियोजक जो कोई उत्खनन या सुरंग खोदने का संकर्म कर रहा है ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म की परियोजना के सुरक्षित प्रचालन के लिए जिसके लिए ऐसा इंजीनियर नियुक्त किया गया है, किसी परियोजना इंजीनियर की नियुक्ति करेगा;

(2) ऐसा परियोजना इंजीनियर ऐसी परियोजना के क्रिया कलाओं का सम्पूर्ण रूप से नियंत्रण करेगा और वह सुरक्षापूर्ण कार्यकलाओं के किये जाने के लिए उत्तरदायी होगा।

187. धारा 40 उत्तरदायी व्यक्ति— (1) प्रत्येक नियोजक जो किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर उत्खनन या सुरंग खोदने का संकर्म कर रहा है ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के सुरक्षापूर्ण प्रचालन के लिए किसी उत्तरदायी व्यक्ति की नियुक्ति करेगा;

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति के कर्तव्य और दायित्वों में निम्नलिखित सम्मिलित होगा :—

(क) ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म को निर्बाध रूप से करना;

(ख) ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के संबंध में किसी खतरनाक स्थिति का निरीक्षण और उसे दूर करना;

(ग) ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म से संबंधित किसी अमुरक्षित प्रक्रिया या शर्तों से बचने के लिए उपचारात्मक उपाय करना;

(3) उपनियम (1) में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति का नाम और पता मुख्यनिरीक्षक को भेजा जाएगा।

188. धारा 40 चेतावनी संकेत और सूचनाएं— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म को कर रहे भवन सन्निर्माण कर्मकारों की सुरक्षा के लिए अपेक्षित समुचित चेतावनी संकेत या सूचनाएं किसी सहज दृश्य स्थान पर हिन्दी और उस भाषा में जो ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में लगे अधिकांश भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा समझी जाती है सम्प्रदर्शित और परिनिर्मित किये जायेंगे;

(ख) सम्पीड़क वायु में कार्य करने के सम्बन्ध में ऐसे चेतावनी संकेत और सूचनाएं निम्नलिखित होंगे—

(i) ऐसे सम्पीड़क वायु संकर्म में अन्तर्वलित खतरे;

(ii) आग और विस्फोट जोखिम;

(iii) ऐसे खतरे या जोखिम से बचाव के लिए आपातकाल प्रक्रियाएं।

189. धारा 40 रोजगार आदि का रजिस्टर— (1) प्रत्येक नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि जहां उत्खनन या सुरंग खुदाई कार्य चल रहा हो वहां ऐसे उत्खनन या सुरंग खुदाई कर रहे भवन निर्माण कर्मकारों का एक रजिस्टर रखा जाता है और अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक को मांग किये जाने पर प्रस्तुत किया जाता है।

(2) ऐसे उत्खनन या सुरंग कार्य की अवधि जिसमें ऐसे भवन सन्निर्माण कर्मकार नियोजित हैं रजिस्टर को दिन-प्रतिदिन के आधार पर रखी जाएगी और ऐसा रजिस्टर अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक के मांग किये जाने पर प्रस्तुत किया जाएगा।

190. धारा 40 प्रदीप्तिकरण— (1) प्रत्येक नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि उन सभी कार्य स्थलों को जिसमें उत्खनन या सुरंग खोदने का काम चल रहा है सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार पर्याप्त रूप से प्रदीप्त किया जाएगा;

(2) प्रत्येक नियोजक जो किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर उत्खनन या सुरंग खुदाई कार्य कर रहा है ऐसे सन्निर्माण स्थलों पर आपातकालीन जेनरेटरों की व्यवस्था करेगा जिससे कि उन सभी संकर्म स्थलों पर जहां ऐसे उत्खनन कार्य या सुरंग खुदाई के कार्य चल रहे हैं विद्युत आपूर्ति में रुकावट आने पर पर्याप्त प्रदीप्तिकरण को सुनिश्चित किया जा सके।

191. धारा 40 संरचना का स्थिरीकरण— प्रत्येक नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जहां कार्य स्थान या उत्खनन किये जाने वाले अन्य क्षेत्रों में या जिसमें सुरंग खुदाई का कार्य किया जा रहा है के निकटवर्ती किसी संरचना के स्थिरीकरण के सम्बन्ध में कोई सन्देह होने पर नियम 186 में निर्दिष्ट परियोजना इंजीनियर ऐसी संरचना को सहारा देने के लिए और ऐसी संरचना के निकटवर्ती स्थान पर कार्य कर रहे किसी भवन निर्माण कर्मकार को क्षतिग्रस्त होने से रोकने के लिए या ऐसी संरचना के निकटवर्ती किसी सम्पत्ति या समतुल्य को नुकसान से बचाने के लिए पुस्ता लगाना, इस्पात की चादरें खड़ी करना, टेकबन्दी करना, कसाव करना जैसे साधनों या अन्य वैसे ही उपायों की व्यवस्था करेगा;
- (ख) जहां कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार जो उत्खनन कार्य में लगा है उसके ऊपर ऐसे उत्खनन स्थल या किसी किनारे से किसी खतरनाक वस्तु के गिरने या सामग्री फिसलने से खतरा होने का पता चलता है जो उसके खड़े होने के स्थान से डेढ़ मीटर अधिक ऊंचा है ऐसे कर्मकार को ऐसे किनारे या छोर पर पर्याप्त आड़ खड़ी कर के संरक्षित किया जाता है;
- (ग) उत्खनन स्थल या उसके आसपास की जांच नियम 187 में निर्दिष्ट किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा प्रत्येक वर्षा, तूफान या ऐसे ही घटित होने वाली अन्य घटनाओं के पश्चात् की जाएगी और ऐसी जांच करते समय किसी खतरे का पता चलने की दशा में ऐसे खतरे को रोकने के लिए तथा फिसलने और धसकने के विरुद्ध पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया जाता है;
- (घ) किसी प्रतिधारण दीवार का सन्निर्माण करने के लिए अधिस्थापित अस्थायी खड़ी की गई चादरें उत्खनन के पश्चात् हटाई नहीं जाती हैं सिवाय तब कि जब नियम 187 में निर्दिष्ट किसी उत्तरदायी व्यक्ति ने कोई निरीक्षण किये जाने के पश्चात् ऐसी सलाह न दी हो;
- (ङ) जहां किसी उत्खनन स्थल के किनारे काटे जा रहे हों तथा किसी ऐसे लटके हुए किनारे के ऊपर सामग्री या किसी वस्तु से सहारे की व्यवस्था की जाती है;
- (च) किसी खुले उत्खनन या खाई के किनारे से 0.65 (शून्य दशमलव छः पांच) मीटर पर उत्खनित सामग्री भंडारित नहीं की जाती है और ऐसे उत्खनन का किनारा या खाई खुरची जाती है खंडित चट्टानें और अन्य सामग्री जो फिसल, लुढ़क या गिर सकती है ऐसे किनारे के नीचे कार्य कर रहे किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार पर वह चट्टानें गिरने न पायें;
- (छ) किसी व्यक्ति को उत्खनन या खाई में गिरने से रोकने के लिए उत्खनन कार्य स्थल के किसी सहज दृश्य स्थान पर पर्याप्त और समुचित चेतावनी संकेत लगाया जाता है;
- (ज) नियम 187 में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति उत्खनन कार्य स्थल पर यह सुनिश्चित करता है कि किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार को वहां कार्य करने की अनुज्ञा नहीं दी जाती है जहां ऐसे उत्खनन में उपयोग की गई उत्खनन सामग्री या वस्तुओं से ऐसे किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार को आघात या खतरा हो सकता है।

192. धारा 40 बल्ली लगाना, टेकबन्दी करना और कसाव— प्रत्येक नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) उत्खनन या सुरंग खोदने के कार्य में चादर खड़ने के काम में उपयोग में लाया गया तख्ता मजबूत सामग्री का और पर्याप्त टिकाऊ है;
- (ख) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में उपयोग किया गया टेकबन्दी या कसाव पर्याप्त विभाओं के और ऐसे स्थान पर लगाये हैं कि वे उन आशयित परियोजना के लिए प्रभावी हो सकें;
- (ग) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में उपयोग में लाये गये भूतल सहारे टेकबन्दी या कसाव पर्याप्त रूप से खड़े होने के क्षेत्र और स्थिरता वाले हैं, जिससे कि ऐसे टेकबन्दी या कसाव के हिलने को रोका जा सके।

193. धारा 40 सुरक्षित पहुंच— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि निसैनी, जीना या रैम्पस की उत्खनन में यथास्थिति सुरक्षित पहुंच और उत्खनन को फिसलने से बचाने के लिए जहां ऐसे उत्खनन की गहराई डेढ़ मीटर से अधिक है, की व्यवस्था की गई है और ऐसे निसैनी, जीना या रैम्प सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हों।

194. धारा 40 खाईयां— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी व्यक्ति के खाई या उत्खनन की गहराई डेढ़ मीटर से अधिक है और ऐसी सुरंग जहां ऐसी गहराई 4 मीटर से अधिक है वहां किसी व्यवसायिक इंजीनियर की डिजाइन और आरेख के अनुसार किसी सुधरी हुई संरक्षण की व्यवस्था की गई है।

195. धारा 40 खाईयों की गहराई— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जहां किसी खाई की गहराई में चादर खड़ी करने की दो लम्बाईयों में एक दूसरे के ऊपर चादरें खड़ी करने की अपेक्षा है नीचे की पाइलिंग तल की गहराई पर या उपरी पाइल की दीवारों पर लगाई जाती है और ऐसे चादर की पाइलिंग नीचे की ओर ले जाई जाती है और उत्खनन जारी रखने के दौरान उसे कस दिया जाता है;
- (ख) सभी लोहे की चादरों की पाइलें जो उत्खनन या किसी खाई के उपयोग में लाई जाती हैं उनकी सुरक्षित रूप से किन्हीं अन्य साधनों द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे पर झलाई की जाती है।

196. धारा 40 मशीनरी का लगाना और उपयोग करना— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसी कोई मशीनरी की जो उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में उपयोग करने के लिए लगाई जाती है, उससे उस परिक्षेत्र में मशीनरी के प्रचालक या अन्य किसी व्यक्ति को कोई खतरा नहीं है।

197. धारा 40 श्वसन साधित्र— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) किसी भवन निर्माण कर्मकार को जब वह सम्पीड़क वायु पर्यावरण में कार्य कर रहा है तथा उसके उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में उपयोग करने के लिए समुचित श्वसन साधित्रों की व्यवस्था की गई है;
- (ख) ऐसे श्वसन साधित्रों को हर समय अच्छी हालत में बनाये रखा जाता है।

198. धारा 40 सुरंग खोदने संबंधी सामग्री के लिए सुरक्षा उपाय— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जहां किसी छत या किसी सुरंग की दीवार सामग्री के गिरने या फिसलने का कोई खतरा हो, वहां पर्याप्त उपाय अर्थात् टेकबंदी, रॉकबोल्ट या इस्पात के सेट आदि द्वारा सहाय देकर भवन निर्माण कर्मकारों की सुरक्षा की व्यवस्था की जाती है;
- (ख) उत्खनन करने या सुरंग खोदने वाले क्षेत्र समुचित रूप से डिजाइन किये गये और अधिष्ठापित इस्पात सेट, रॉक बोल्ट या वैसे ही अन्य सुरक्षित साधनों द्वारा सुरक्षित किये जाते हैं;
- (ग) नियम 187 में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति किसी सुरंग में कार्य आरम्भ होने से पूर्व में और तत्पश्चात् नियमित अंतरालों पर ऐसे सुरंगों में भवन सन्निर्माण कर्मकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण और निरीक्षण करेगा;
- (घ) खंडित भूमि या चट्टानों वाले किसी सुरंग के निर्वाहिका क्षेत्र में जहां किसी व्यक्ति को क्षति पहुंचने की सम्भावना है उन्हें सहारों द्वारा पर्याप्त रूप से सुरक्षित किया जाएगा।

199. धारा 40 गैस यांत्रिकी औजार— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि सुरंग के भीतर उपयोग किए जाने वाले गैस यांत्रिकी औजारों के लिए प्रदाय लाइनें, यथास्थिति, तल या सुरक्षा वेन या सुरक्षा तार द्वारा फिट की गई हैं।

200. धारा 40 शेफ्ट— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) उत्खनन या सुरंग संकर्म में उपयोग किये जाने वाले शेफ्ट के चारों ओर समुचित उंचाईयों का सन्निर्माण करके बह जाने से सुरक्षित किया जाता है;
- (ख) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर किसी शेफ्ट में प्रविष्टि करने के लिए अपेक्षित किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार को ऐसी प्रविष्टि के लिए सुरक्षित उपायों की व्यवस्था की जाती है;
- (ग) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर प्रत्येक शेफ्ट में स्टील फेंसिंग, कंकीट पाइलिंग, टिम्बर शोरिंग या अन्य पर्याप्त मजबूती की सामग्री से ऐसे शेफ्ट को भवन सन्निर्माण कर्मकार को कार्य करने के लिए सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है;
- (घ) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर किसी शेफ्ट को ऐसे केंसिंग ब्रासिंग के लिए समुचित डिजाइन के अनुसार किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर ऐसे केंसिंग की गहराई तक व्यवस्था की जाती है; तथा
- (ङ) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर यदि किसी शेफ्ट में प्रवेश के आसपास यदि ऐसे प्रवेश के भूतल के चारों ओर अस्थिरता या असुरक्षा है तो किसी पुनर्प्रचलित शेफ्ट और शहतीर की व्यवस्था की जाती है।

201. धारा 40 शेफ्ट के लिए लिफ्ट—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म स्थल पर किसी शेफ्ट में अवरोही कम में पचास मीटर से अधिक नीचे भवन सन्निर्माण कर्मकारों और सामग्री या वस्तुओं के परिवहन के लिए लिफ्ट की व्यवस्था की गई है।

202. धारा 40 संचार के साधन—कोई नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर अच्छी और प्रभावी संचार व्यवस्था करने के लिए निम्नलिखित अवस्थितियों में विश्वसनीय और प्रभावी संचार साधनों अर्थात् टेलीफोन या वाकी टॉकी का उपबंध किया जाता है, अर्थात्—

- (i) किसी उत्खनन के सामने लॉकिंग चेम्बर;
- (ii) सुरंग के साथ सौ मीटर के अंतराल में;
- (iii) किसी मेन लॉक के दरवाजे के निकट ऐसे मेन लॉक के कृत्यकारी चेम्बर होना;
- (iv) किसी मेन लॉक के प्रत्येक चेम्बर के अन्तः भाग;
- (v) सहज दृश्य लॉक अटेंडेंस की स्थिति की अवस्थिति;
- (vi) सम्पीड़क संयंत्र;
- (vii) प्राथमिक उपचार केन्द्र और;
- (viii) निवाहिका या किसी शेफ्ट के शिरे के बाहर;

(ख) खंड (क) के उपखंड (i) से उपखंड (viii) तक में निर्दिष्ट अवस्थितियों में हर समय उतनी संख्या में घंटियां और सीटियां उपलब्ध कराई जाती हैं जितनी ऐसी अवस्थितियों पर व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए आवश्यकता हो।

203. धारा 40 संकेत—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि मानक श्रव्य और दृश्य संकेत उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में उपयोग किया जाता है और कार्य स्थल तथा ऐसे अन्य अवस्थानों में जो ऐसे उत्खनन या सुरंग खुदाई के संकर्म में नियोजित सभी भवन सन्निर्माण कर्मकारों की जानकारी में लाये जाने आवश्यक हैं, कार्य स्थलों के सहज दृश्य स्थान पर अवस्थित या उनके निकट सम्प्रदर्शित किये गये हैं।

204. धारा 40 निकासी—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

(क) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई के संकर्म में उपयोग किये गये किसी यान के किसी भाग और किसी जुड़नार या अन्य उपस्कर के बीच ऐसे जुड़नार या उपस्कर की फेंक या झूलन को अनुज्ञात करने के पश्चात् आधा मीटर की न्यूनतम पार्श्विक निकासी की जाती है;

(ख) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म का किसी लोकोमोटिव ड्राइव के लिए सीसों पर निकासी ऐसे ड्राइवर की सीट से ऊपर एक दशमलव दस मीटर से अधिक और उस प्लेटफार्म के ऊपर जहां ऐसा ड्राइवर उस चबूतरे पर खड़ा होता है, से दो मीटर से अन्यून नहीं है या किसी भी अन्य विभा से जो सुसंगत राष्ट्रीय मानक के अनुसार है।

205. धारा 40 परिरक्षण — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि भवन सन्निर्माण कर्मकारों को उनके रक्षोपाय के लिए पर्याप्त संख्या में परिरक्षण उपलब्ध कराये गए हैं, क्योंकि कार्य करने के दौरान उन्हें यान के भ्रमण या किसी सुरंग में अन्य सामग्री की उठाई-धराई करने वाले उपस्करों से आघात हो सकता है।

206. धारा 40 आंतरिक दहन इंजन का उपयोग—नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में किसी आंतरिक दहन इंजन का उपयोग तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि वह इस प्रकार न बनाये गये हों कि—

(क) इंजन में प्रविष्ट वायु को इसके प्रवेश करने से पहले ही निकाल दिया जाता है; तथा

(ख) इंजन द्वारा कोई गन्ध या चिंगारियां नहीं निकलती है।

207. धारा 40 प्रज्ज्वलनशील तेल—नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि प्रज्ज्वलनशील तेल जिसमें प्रज्ज्वलन बिंदु कार्यकारी तापक्रम से कम है जिससे किसी सुरंग में समागम किए जाने की सम्भावना है उसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में उपयोग में नहीं लाया जाता है।

208. धारा 40 कपलिंग और होसेस—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि भूमिगत हाइड्रोलिक संयंत्र पर केवल उच्च दबाव हाइड्रोलिक कपलिंग और होसेस का उपयोग किया जाता है और ऐसे होसेस और कपलिंग उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में किसी सम्भाव्य नुकसान के विरुद्ध पर्याप्त रूप से संरक्षित है।

209. धारा 40 होज अधिष्ठापन—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में मनुष्य के साथ दुर्घटनाओं के विरुद्ध सभी हाइड्रोलिक लाइनें और संयंत्र जो सत्तर सेंटीग्रेड से अधिक के तापक्रम पर कार्य कर रहे हैं उन्हें पर्याप्त रोधी या अन्यथा द्वारा संरक्षित किया जाता है।

210. धारा 40 अग्नि प्रतिरोधी होसेस— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि जब हाइड्रोलिक सकिवात्मक मशीनरी और उपस्कर सुरंग में लगाए जाते हैं तब अग्नि प्रतिरोधी हाइड्रोलिक होसेस से भिन्न कोई अग्नि प्रतिरोधी हाइड्रोलिक होसेस प्रयोग में नहीं लाया जाता है।

211. धारा 40 ज्वालारोधी उपस्कर— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि जहां सुरंग के भीतर प्रज्ज्वलनशील या विस्फोटक वातावरण प्रचलित है और खतरा बना हुआ है वहां केवल ज्वालारोधी उपस्कर जो समुचित प्रकार का है तथा सुसंगत राष्ट्रीय मानक के अनुसार है का उपयोग किया जाता है।

212. धारा 40 तेल और भूमिगत ईंधन का भंडारण— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सभी तेल, ग्रीज या भूमिगत भंडारित ईंधन उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में मजबूती से सील किये गये आधानों तथा अग्नि प्रतिरोधी क्षेत्रों में विस्फोटक और अन्य प्रज्ज्वलनशील रसायनों से सुरक्षित दूरी पर रखे जाते हैं ;
- (ख) समुचित ज्वालारोधी अधिष्ठापन का ऐसे भंडारण क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है जो उपखंड (1) में यथा विनिर्दिष्ट हैं।

213. धारा 40 भूमिगत गैस का उपयोग— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) नियम 186 के अधीन परियोजना इंजीनियर के पूर्वानुमोदन के सिवाय सुरंग के भीतर पेट्रोल या तरल पेट्रोलियम गैस या किन्हीं अन्य प्रज्ज्वलनशील पदार्थों का उपयोग और भंडारण नहीं किया जाता है ;
- (ख) खंड "क" में विनिर्दिष्ट पेट्रोल या तरल पेट्रोलियम गैस या उच्च प्रज्ज्वलनशील पदार्थों का उपयोग करने के पश्चात्, सभी अवशिष्ट पेट्रोल या तरल पेट्रोलियम गैस या उच्च प्रज्ज्वलनशील पदार्थों को ऐसी सुरंग से तुरंत हटा दिया जाता है; तथा
- (ग) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म में किसी ऑक्सीएसीटिलीन गैस का सम्पीडित वायु पर्यावरण में उपयोग नहीं किया जाता है।

214. धारा 40 अग्निशमन के लिए जल— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म या पर्याप्त संख्या में जल निकासों का उपबंध किया गया है और पूरी सुरंग में अग्निशमन संबंधी प्रयोजन के लिए आसानी से पहुंच के भीतर रखा जाता है और ऐसे जल निकासों को प्रभावी रूप से अग्निशमन के लिए बनाये रखा जाता है;
- (ख) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर सभी एयर ब्लॉक अग्निशमन सुविधाओं से सुसज्जित होते हैं;
- (ग) जब कभी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर अग्नि लगती है तो भवन सन्निर्माण कर्मकारों को चेतावनी देने के लिए किसी श्रव्य अग्नि चेतावनी यंत्र का उपबंध किया जाता है;
- (घ) उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर लगी किसी अग्नि के शमन के लिए सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार पर्याप्त संख्या और प्रकार के अग्निशामक यंत्र की व्यवस्था की जाती है और आसानी से उपलब्ध रहते हैं;
- (ङ) सुरंग या अन्य अवरुद्ध स्थानों पर वाष्पीकरण द्रव्यों उच्च दाब कार्बनडाईआक्साइड वाले अग्निशामकों का उपयोग नहीं किया जाता है;
- (च) किसी उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर अग्निशमन के लिए किए जाने वाले उपायों के सम्बन्ध में अनुदेश, हिन्दी या ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म पर नियोजित अधिकांश भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा समझी जाने वाली स्थानीय भाषा में लिखित रूप में ऐसे उत्खनन या सुरंग खोदने के संकर्म के किसी सहज दृश्य और सुरक्षित स्थान पर समग्रदर्शित किए जाते हैं।

215. धारा 40 जल प्लावन— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जहां किसी शेफ्ट से एक से अधिक सुरंग प्रचलित किये जाते हैं, खुदाई संकर्म के दौरान जल-प्लावन को रोकने के लिए किसी सुरंग के प्रवेश द्वार पर जलरोधी भित्ति दरवाजे अधिष्ठापित किये जाते हैं ;
- (ख) जब किसी ऐसे संकर्म का भित्ति दरवाजा बन्द किया जाता है तब यह सुनिश्चित करने के लिए किसी सुरंग के एकांत भाग में कोई कर्मकार फंस नहीं जाए उसके लिए आवश्यक उपाय दिये जाते हैं ;
- (ग) जहां सुरंग खोदने के संकर्म के दौरान किसी सुरंग में जल-प्लावन या जल भरने की सम्भावना है तो ऐसे जल भराव में से जल को बाहर निकालने के लिए तुरंत जल-पम्पों को आरंभ करने की व्यवस्था की जाती है और खतरा से भवन सन्निर्माण कर्मकारों तथा अन्य व्यक्तियों को बाहर निकालने के लिए चेतावनी संकेत दिये जाते हैं।

216. धारा 40 इस्पात की कनातें— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि सुरंग खोदने के संकर्म पर जहां जल-प्लावन होने की सम्भावना है वहां वायुरोधी इस्पात कनातों की व्यवस्था की जाती है अवरोही सुरंग की दशा में ऐसी कनातें ऐसी सुरंगों के उपरी अर्द्धभाग पर लगाई जाती हैं जिससे कि वायु के पाकेटों को बचाव प्रयोजन के लिए प्रतिधारित किया जा सके।

217. धारा 40 विश्राम गृह— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जहां किसी सुरंग खोदने के संकर्म में भवन सन्निर्माण कर्मकारों को सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में नियोजित किया जाता है और उन्हें दबाव से भी सम्पीड़ित करने के पश्चात कार्य स्थल पर एक घंटा या उससे अधिक रहना पड़ता है वहां ऐसे भवन सन्निर्माण कर्मकारों को विश्राम करने के लिए पर्याप्त और समुचित सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं ;
- (ख) किसी सुरंग खुदाई संकर्म और उत्खनन पर प्रत्येक मेनलॉक, मेडिकल लॉक या किन्हीं अन्य सुविधाओं को इन लॉकों में स्वच्छ अवस्था और अच्छी मरम्मतशुदा स्थिति में रखा जाता है;
- (ग) किसी सुरंग खोदने के संकर्म में सन्निर्माण स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा कक्ष का उपबंध किया जाता है और उसे हर समय उपलब्ध रखा जाता है;
- (घ) प्रत्येक मेडिकल लॉक परिचर केन्द्र पर किसी सुरंग खुदाई संकर्म के सन्निर्माण स्थल पर प्राथमिक चिकित्सा पेटी उपलब्ध कराई जाती है।

218. धारा 40 रसायनों के प्रभावों की अनुज्ञेय सीमा— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) किसी सुरंग या किसी शेफ्ट में कार्य करने का पर्यावरण जिसमें भवन सन्निर्माण कर्मकार नियोजित है, कार्य करने के पर्यावरण में इन नियमों से उपबद्ध अनुसूची XI में या अधिकथित अनुज्ञेय सीमा से अधिक किन्हीं खतरनाक पदार्थों का सांद्रण अन्तर्विष्ट नहीं है;
- (ख) नियम 187 में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति किसी सुरंग खोदने के संकर्म में कार्य आरंभ करने से पूर्व दिन में मुख्यनिरीक्षक द्वारा अनुज्ञेय नियत किये अन्तरालों पर आवश्यक निरीक्षण करता है जिससे कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रभाव की अनुज्ञेय सीमा अधिक नहीं है और ऐसे परीक्षण का अभिलेख रखा जाता है तथा अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक को मांग किये जाने पर निरीक्षण के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

219. धारा 40 संवातन— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी वायु मुक्त सुरंग में वह कार्य क्षेत्रों में मुख्यनिरीक्षक द्वारा यथा अनुमोदित संवातन पद्धति का उपबंध किया गया है, ताजा वायु प्रत्येक भवन भवन-सन्निर्माण कर्मकारों के लिए जो ऐसी सुरंग में भूमिगत नियोजित है प्रत्येक मिनट छः घनफुट मीटर से कम नहीं है और अवधि वायु प्रवाह ऐसे सुरंग के भीतर नौ मीटर प्रति मिनट से कम नहीं है।

220. धारा 40 वायु प्रदाय प्राप्ति बिन्दु— नियोजक किसी भवन सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि सभी वायु सम्पीड़कों के लिए वायु प्राप्ति बिन्दु उन स्थानों पर अवस्थित हैं जहां वे वायु प्राप्त बिन्दु धूल, गन्ध, वाष्प और निर्वर्तित गैसों या अन्य संदूषणों से संदूषित नहीं हों।

221. धारा 40 आपात जेनरेटर— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) किसी सुरंग में प्रत्येक सम्पीड़क वायु प्रणाली में ऐसी सम्पीड़क वायु प्रणाली में सम्पीड़क वायु के अबाध प्रदाय को बनाये रखने के लिए आपातकालीन विद्युत प्रदाय प्रणाली की व्यवस्था की गई है, जो ऐसे सम्पीड़क वायु प्रणाली के वायु सम्पीड़क और आनुषांगिक प्रणालियों के प्रचालन के लिए सक्षम है; तथा
- (ख) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर आपातकालीन विद्युत प्रदाय प्रणाली बनाये रखी जाती है और वह हर समय आसानी से उपलब्ध रहती है।

222. धारा 40 वायु मुख्य द्वार— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक वायु मुख्य द्वार जिससे कार्य चेम्बर मेनलॉक या मेडिकल लॉक को जो किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में उपयोग किया जाता है, वायु प्रदाय कर रहा है, उन्हें दुर्घटनाग्रस्त नुकसानियों से संरक्षित किया जाता है, जहां ऐसे संरक्षण उपलब्ध कराना व्यवहारिक नहीं है वहां दूसरे वायु मुख्य द्वार की व्यवस्था की जाती है।

223. धारा 40 बल्क हेड और एयर लॉक— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) जब किसी बल्क हेड या वायुरोधी डायफार्म जो सम्पीड़क वायु को प्रतिधारित करता है, तब उनका उपयोग किसी सुरंग या किसी शेफ्ट में किया जाता है, उन्हें ऐसे बल्क हेड या डायफार्म के अधिकतम कार्यकरण दबाव के 1.25 गुणे अधिकतम दबाव पर सन्निर्मित किया जाता है और ऐसे बल्क हेड या डायफार्म को नियम 187 में निर्दिष्ट किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए ऐसे बल्क हेड या डायफार्म समुचित कार्यकरण स्थिति में हैं, इसका प्रत्येक उपयोग के पूर्व परीक्षण किया जाता है;
- (ख) ऐसा उत्तरदायी व्यक्ति खंड (क) में निर्दिष्ट प्रत्येक परीक्षण का अभिलेख रखता है और ऐसी अभिलेख, अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक के मांग किये जाने पर निरीक्षक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है;

- (ग) खंड (क) में निर्दिष्ट बल्क हैड या डायफार्म पर्याप्त प्रबलता और मजबूत सामग्री से तैयार किया जाता है और वह अधिकतम दबाव धारित करने की क्षमता रखता है जिसके लिए वे किसी भी समय उपयोग के अधीन रहता है; तथा
- (घ) किसी बल्क हैड एंकरेज और वायुलॉक को, उनके कार्य स्थल पर किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर उन्हें अधिष्ठापित किये जाने के तुरंत पश्चात् उस स्थान पर परीक्षण किया जाता है।

224. धारा 40 डायफार्म— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि सभी डायफार्म जो किसी शेफ्ट में आरपार क्षितिजीय डैक के रूप में हैं, उन्हें उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर सुरक्षित रूप से स्थिर किया जाता है।

225. धारा 40 वहनीय विद्युत हस्त औजार— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में भूमिगत या किसी बन्द स्थान में उपयोग किये जाने वाले सभी वहनीय विद्युत हस्त औजार और निरीक्षण लैम्प चौबिस वोल्ट से अनधिक की किसी वोल्टता पर प्रभावित किए जाते हैं।

226. धारा 40 सर्किट ब्रेकर— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग किये जाने वाले प्रत्येक विद्युत वितरण प्रणाली और उसकी उप प्रणालियों के लिए भिन्नात्मक भूमिगत दोष सर्किट ब्रेकर का पर्याप्त संख्या में अधिष्ठापन किया गया है और प्रत्येक सर्किट की संवेदनशीलता सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार दी गई अपेक्षाओं के अनुरूप समायोजित की जाती है;
- (ख) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म में भूमिगत स्थल पर किसी अर्द्ध अनुलग्न फ्यूज यूनिट का उपयोग नहीं किया जाता है।

227. धारा 40 ट्रांसफार्मर — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि सम्पीड़ित वायु के अधीन किसी सुरंग के किसी भाग में किसी ट्रांसफार्मर का तब तक उपयोग नहीं किया जाता जब तक कि ऐसे ट्रांसफार्मर का शुष्क प्रकार का और सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप न हों।

228. धारा 40 विद्युतधारा युक्त तारें— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म के कार्य क्षेत्रों में जिनकी पहुंच उन कर्मचारों से जो ऐसे विद्युतधारा युक्त लाइनों पर काम करने के लिए प्राधिकृत हैं, से भिन्न भवन सन्निर्माण कर्मचारों तक है वहां कोई खुला विद्युतधारायुक्त तार न हो।

229. धारा 40 वेल्टिंग सेट— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी सुरंग में उपयोग किए जाने वाले सभी वेल्टिंग सेट मुख्य निरीक्षक द्वारा अनुमोदित पर्याप्त क्षमता के और समुचित प्रकार के हैं।

230. धारा 40 वायु की क्वालिटी और मात्रा— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर प्रत्येक कार्यकारों चेम्बर जिसमें सम्पीड़ित वायु का उपयोग किया जाता है वहां ऐसी वायु का प्रदाय कार्य कर रहे प्रति व्यक्ति प्रति मिनट शून्य दशमलव तीन घनमीटर से अधिक अन्यून अनुरक्षित हो;
- (ख) किसी सुरंग खुदाई संकर्म में उपयोग किये गये मेन लॉक और मेडिकल लॉक के लिए सदैव सम्पीड़ित वायु का कोई सुरक्षित प्रदाय उपलब्ध कराया जाता है ;
- (ग) किसी सुरंग खुदाई संकर्म में किसी सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में प्रदाय की गई वायु यथाशक्य साध्य गन्ध और अन्य संदूषणों अर्थात् धूल, सुगंध और अन्य विषैले पदार्थों से मुक्त है।

231. धारा 40 कार्य संचालन तापक्रम— नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म के किन्हीं कृत्यकारी चेम्बर में जहां भवन निर्माण कर्मकार नियोजित किये गए हैं वहां तापक्रम 29 (उन्नतीस) डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होता है और यह कि अभिलेख रखने के लिए व्यवस्था की जाती है जिसमें तापक्रम ऐसे कृत्यकारी चेम्बर के भीतर प्रत्येक घंटे पर शुष्क बल्ब और आर्द्र बल्ब द्वारा नापा जाता है और ऐसे अभिलेख अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक को मांग किए जाने पर निरीक्षण के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं।

232. धारा 40 मेन लॉक और सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में कार्य करना—नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) किसी सुरंग खुदाई संकर्म के उपयोग किये जाने वाले मेनलॉक पर्याप्त प्रबलता के हैं, मजबूत सामग्री के बने हुए हैं और किसी वायु दाब, आन्तरिक या बाह्य को धारित करने के लिए डिजाइन किये गए हैं, जिसके लिए यह सामान्य उपयोग या किसी आपातकालीन उपयोग के अधीन होते हैं;
- (ख) (i) किसी उत्खनन या सुरंग खुदाई संकर्म पर मेन लॉक के दरवाजे इस्पात के बनाये जाते हैं;
- (ii) किसी सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग किये गये मेन लॉक वायुरोधी होते हैं और जब ऐसे लॉक वायु दबाव में अधीन हों दरवाजों को सील करने के लिए उपकरणों की व्यवस्था की गई है;

- (iii) सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग में लाये गये किसी मेन लॉक का जड़ाव मेनलाक पर वायु द्वारा पड़ने वाला दबाव को सहन करने के लिए पर्याप्त प्रबलता का है;
- (iv) सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग किए गए मेनलॉक में कार्य कर रहे भवन सन्निर्माण कर्मकारों के लिए पर्याप्त कक्ष उपलब्ध हैं;
- (v) जहां किसी सम्पीड़ित वायु सुरंग में कार्य किया जा रहा है ऐसे सुरंग के लिए सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार किसी मेनलॉक का उपयोग किया जाता है;
- (ग) (i) जहां किसी सुरंग खुदाई संकर्म में मेनलॉक का उपयोग किया जाता है वहां हिन्दी और स्थानीय भाषा में जो वहां काम कर रहे अधिकांश भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा समझी जाती है सुरक्षा निर्देश ऐसे सुरंग खुदाई संकर्म के सहज दृश्य स्थान पर सम्प्रदर्शित किये जाते हैं;
- (ii) आपातकाल के सिवाय सम्पीड़न और विसम्पीड़न सक्रियाएं सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग में लाये गये किसी मेनलॉक में की जाती हैं;
- (iii) किसी आपातकाल में भवन निर्माण कर्मकारों के सम्पीड़न और विसम्पीड़न के लिए किसी सुरंग खुदाई संकर्म में उपयोग में लाये गये किन्हीं मेटिरियल लॉक का उपयोग किया जा सकेगा और इस का लिखित में अभिलेख रखा जाता है तथा अधिकारिता रखने वाले निरीक्षक को मांग किये जाने पर निरीक्षण के लिए प्रस्तुत किया जाता है;
- (iv) जहां किसी सुरंग खुदाई संकर्म पर मेनलॉक और मेटिरियल लॉक दोनों का अधिष्ठापन किया जाना अव्यहार्य है वहां भवन निर्माण कर्मकारों के सम्पीड़न और विसम्पीड़न के लिए, मुख्यनिरीक्षक की अनुज्ञा से मेटिरियल लॉक का उपयोग किया जाता है;
- (v) सुरंग खुदाई संकर्म पर सभी कर्मकारों का वातावरणीय दशाओं में सम्पीड़न मुख्य निरीक्षक द्वारा अनुमोदित किसी विसम्पीड़न प्रक्रिया के अनुसार किया जाता है;
- (vi) भवन सन्निर्माण कर्मकार के सम्पीड़न या विसम्पीड़न से भिन्न किसी अन्य प्रयोजन के लिए सुरंग खुदाई संकर्म में मेनलॉक का उपयोग नहीं किया जाता है;
- (vii) किसी आपातकाल के सिवाय सुरंग खुदाई संकर्म पर भवन सन्निर्माण कर्मकारों का निस्तारण मुख्य निरीक्षक के पूर्वानुमोदन के बिना नहीं किया जाता है;
- (viii) किसी सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग में लाये गये किसी मेनलॉक में उसके विसम्पीड़न के दौरान किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार के गिर जाने या उसके बीमार पड़ जाने की दशा में, ऐसे मेनलॉक का लॉक परिचर ऐसे मेनलॉक में तब तक दबाव डालता है जब तक कि ऐसे दबाव अधिकतम दबाव के बराबर न हो जाये जिसमें ऐसे विसम्पीड़न से पूर्व भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा कृत्यकारी चेम्बर में लगाया गया था और ऐसा लॉक परिचर, ऐसे गिर जाने की घटना के सम्बन्ध में, मेडिकल लॉक परिचर और ऐसी सुरंग खुदाई संकर्म में ड्यूटी पर तैनात चिकित्सा अधिकारी को तुरन्त रिपोर्ट करता है;
- (ix) ऐसा कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार जिसने किसी प्रशिक्षित भवन निर्माण कर्मकार से सुरंग खुदाई संकर्म में किसी सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में कार्य करने का पूर्व प्रशिक्षण लिया था उसे ऐसे सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए नियोजित किया जाता है;
- (x) ऐसा कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार, जो सुरंग खुदाई संकर्म पर आठ घंटे की अवधि के भीतर एक छड़ से अधिक के दबाव से तीन विसम्पीड़कों से गुजर चुका है, उसे बचाव कार्य करने के प्रयोजन के सिवाय, किसी सम्पीड़क वायु पर्यावरण में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाती है;
- (xi) ऐसा कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार जो किसी सुरंग खुदाई संकर्म में आठ घंटे की अवधि के लिए किसी सम्पीड़क वायु पर्यावरण में नियोजित किया जाता है उसे तब तक दोबारा ऐसे पर्यावरण में नियोजित किया जाता जब तक उसने वातावरणीय दाब में निरंतर बारह घंटे से अत्यून का समय विश्राम में नहीं बिताया हो;
- (xii) किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार को, किसी सम्पीड़क वायु पर्यावरण में, उस दाब पर जो तीन छड़ों से अधिक है, सुरंग खुदाई संकर्म में तब तक नियोजित नहीं किया जाता जब तक कि मुख्य निरीक्षक से ऐसे नियोजित किये जाने के संबंध में लिखित में पूर्व अनुज्ञा न ले ली गई हो;
- (xiii) किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार को, किसी सुरंग खुदाई संकर्म में एक मास के दौरान किसी सम्पीड़क वायु पर्यावरण में लगातार चौदह घंटे से अनधिक के लिए नियोजित नहीं किया जाता है;
- (xiv) किसी सुरंग खुदाई संकर्म पर सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में नियोजित सभी भवन सन्निर्माण कर्मकारों के रोजगार का एक रजिस्टर रखा जाता है;

- (xv) सुरंग खुदाई संकर्म में सम्पीड़क वायु पर्यावरण किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार के लिए एक पहचान बैज प्रदान किया जाता है;
- (xvi) उपखंड (xv) में निर्दिष्ट किसी भवन सन्निर्माण कर्मकार के बैज में उसका नाम कार्य के लिए उसको आवंटित किये गये मेडिकल लॉक की अवस्थिति, उसके उपचार के लिए सम्बद्ध चिकित्सा अधिकारी का टेलीफोन नम्बर और उसकी अज्ञात बीमारी और संदेहपूर्ण कारणों की दशा में निदेश अन्तर्विष्ट होते हैं;
- (xvii) उपखंड (xvi) के अधीन भवन सन्निर्माण कर्मकार को प्रदाय किये गये सभी पहचान बैजों का अभिलेख एक रजिस्टर में रखा जाता है;
- (xviii) ऐसे सभी भवन सन्निर्माण कर्मकार जिनका नाम उपखंड (xvii) में निर्दिष्ट रजिस्टर में है उन्हें खंड (xv) के अधीन प्रदाय किये गये बैज सुरंग खुदाई संकर्म पर उनके कार्य समय के दौरान सभी समय पहनने होते हैं;
- (xix) सुरंग खुदाई संकर्म पर सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में समुचित चेतावनी संकेत निम्नलिखित को रोकने के लिए सम्प्रदर्शित किये जाते हैं, अर्थात् :-
- (क) अल्कोहलिक पेयों का उपभोग;
 - (ख) लाईटर, माचिस या आग लगने के अन्य स्रोतों का उपयोग और ले जाया जाना;
 - (ग) धूम्रपान; और
 - (घ) ऐसे व्यक्ति की प्रविष्टि जिसने अल्कोहलिक पेयों का उपभोग किया हो।

233. धारा 40 सुरक्षा अनुदेश - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि सभी भवन सन्निर्माण कर्मकार जो सुरंग खुदाई संकर्म पर सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में नियोजित हैं ऐसे नियोजन के दौरान उनको सुरक्षा के लिए जारी किये गये निदेशों का पालन करेगा।

234. धारा 40 मेडिकल लॉक - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) सुरंग खुदाई संकर्म पर जहां भवन सन्निर्माण कर्मकार एक छड़ से अधिक दाब के किसी कार्यकारी चेम्बर में नियोजित किये जाते हैं वहां समुचित रूप से सन्निर्माण मेडिकल लॉक की व्यवस्था की जाती है;
- (ख) जहां किसी सम्पीड़ित वायु पर्यावरण में किसी सुरंग खुदाई संकर्म पर एक छड़ से अधिक का सम्पीड़ित वायु दबाव है वहां प्रत्येक सौ भवन सन्निर्माण कर्मकारों के लिए या उसके भाग के लिए एक मेडिकल लॉक का उपबंध किया जाता है और ऐसा मेडिकल लॉक ऐसे सुरंग खुदाई संकर्म पर उपयोग किये गये मुख्य लॉक के यथासम्भव निकट स्थित होता है।

अध्याय VII

भाग - X

दुरारोह छत का सन्निर्माण, मरम्मत और अनुस्क्षण

235. धारा 40 दुरारोह छत पर संकर्म - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि जब कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार दुरारोह छत पर कार्य कर रहा है तो उसे गिरने से बचाने के लिए सभी व्यवहार्य उपाय किये जाते हैं।

236. धारा 40 छत की रुकावटों का सन्निर्माण और अधिष्ठापन - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) छत ब्रेकेटों का निर्माण - दुरारोही छत के गड़ढे को भरने के लिए छत ब्रेकेट्स का सन्निर्माण किया जाता है और ऐसे ब्रेकेट्स का उपयोग चबूतरे को समतल करने में किया जाता है;
- (ख) खंड (क) में निर्दिष्ट छत अपने स्थान पर ऐसे ब्रेकेट के भीतरी और संलग्न कील बिंदु वाली धातु प्रक्षेपकों द्वारा सुरक्षित है और उस दुरारोह छत पर जिस पर इसका उपयोग किया जाता है सुरक्षित रूप से चलाया जाता है या चोटी के खम्भे के ऊपर किसी रस्सी को डालकर सुरक्षित किया जाता है और ऐसी छत से बांधा जाता है।

237. धारा 40 रिंगड बोर्ड - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) दुरारोह छत पर कार्य करने के लिए उपयोग में लाये गए सभी रिंगड बोर्ड पर्याप्त प्रबलता के हैं, मजबूत सामग्री के बने हैं और सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार उपयोग के प्रयोजन के लिए अनुमोदित प्रकार के हैं;
- (ख) खंड (क) में निर्दिष्ट रिंगड बोर्ड की अच्छी तरह मरम्मत की जाती है और उनको प्रयोग में लाने से पूर्व किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जाता है;

- (ग) खंड (क) में निर्दिष्ट रिगड बोर्ड में किसी दुरारोह छत पर जहां पर इसका उपयोग किया जाता है चोटी हुक या अन्य प्रभावी साधनों द्वारा सुरक्षित है;
- (घ) खंड (क) में निर्दिष्ट प्रत्येक रिगड बोर्ड के अतिरिक्त ऐसे रिगड बोर्ड के उपयोग किये जाते समय उसकी सम्पूर्ण लम्बाई के साथ पर्याप्त प्रबलता में जकड़ी हुई बचाव रस्सी लगी होगी।

अध्याय VII

भाग - XI

निसैनी और सोपान निसैनी

238. धारा 40 सन्निर्माण और सुरक्षित उपयोग - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) प्रत्येक निसैनी या सोपान निसैनी जो भवन सन्निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म में उपयोग में लाई जाती है वह अच्छी संरचना, मजबूत सामग्री से बनी और पर्याप्त प्रबलता की है तथा उस प्रयोजन के लिए है जिसके लिए निसैनी या सोपान निसैनी उपयोग में लाई जाती है;
- (ख) जब किसी निसैनी का संचार के साधन के रूप में उपयोग किया जाता है तब उसे किसी स्थिर ढांचे से बांध दिया जाता है जिससे कि ऐसी सीढ़ी पर कार्य करते समय वह फिसल न जाये;
- (ग) कोई निसैनी या सोपान निसैनी खुली हुई ईंटों पर या अन्य खुली पैकिंग पर खड़ी नहीं की जाती है और उसका आधार स्थल समतल और मजबूत होता है ;
- (घ) स्थिर निसैनी का उपयोग की दशा में, जहां यह अपेक्षित है, पर्याप्त पैर रखने की जगह और तथा, भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाती है;
- (ङ) प्रत्येक निसैनी :-
- (i) सुरक्षित है जिससे कि असम्यक् झूलन को रोका जा सके ;
 - (ii) इसके प्रत्येक सोपान पर समान रूप से समुचित रूप से टेक लगाए गए हैं ;
 - (iii) इस प्रकार उपयोग में लाये जाएं जिससे कि घसकन न हो ;
 - (iv) यथा सम्भव इस प्रकार निकट रखा जाये जिससे कि एक पर चार का तारतम्य बना रहे; तथा
 - (v) सभी निसैनी और सोपान निसैनी उनके उपयोग के लिए सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हों उपयोग में लाई जाएं ।

239. धारा 40 डंडे - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि कोई निसैनी जिसमें कोई डंडा गायब हो या दोषयुक्त है या ऐसे डंडे जो पूर्ण रूप से उसके कीलों के सहारे के लिए, नोक या अन्य वैसी ही जुड़नार पर निर्भर हैं का उपयोग न किया जाए।

240. धारा 40 निसैनी के लिए सामग्री - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि भवन सन्निर्माण संकर्म में उपयोग में लाई गई सभी काष्ठ की निसैनी-

- (क) पर्याप्त प्रबलता की सन्निर्मित हों, और सीधी ग्रेडवुड से बनी हो और दोषों से मुक्त हों और ऐसे काष्ठ की लंबाई में ग्रेन हो;
- (ख) सीधी ग्रेडवुड से बने डंडे दोषों से मुक्त और सीधे हों उनके मोरटाइज या सुरक्षित रूप से खांचे बनाये गये हों; तथा
- (ग) यदि ऐसी निसैनी के जोड़ बैजों द्वारा सुरक्षित नहीं हैं तो उसे पुनर्प्रवलित धातु से बांधा गया हो।

अध्याय VII

भाग XII

कैच प्लेटफार्म और होर्डिंग, शूट सुरक्षा बेल्ट और जाल

241. धारा 40 कैच प्लेटफार्म - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) कैच प्लेटफार्म सामग्री का भंडारण या किसी कार्यकारी प्लेटफार्म के रूप में उपयोग नहीं किया जाता ;

- (ख) कैच प्लेटफार्म कम से कम दो मीटर चौड़ा और झुका हुआ है जिससे कि ऐसे प्लेटफार्म की बाहरी किनारे की स्थिति आंतरिक किनारे से पन्द्रह सौ मिलीमीटर ऊंची हो;
- (ग) कैच प्लेटफार्म का खुला हुआ किनारा एक मीटर से अत्यून की ऊंचाई पर समुचित रूप से तारों से घेरा गया हो।

242. धारा 40 होर्डिंग्स — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि होर्डिंग्स का सन्निर्माण तब किया जाता है जब मुख्य निरीक्षक इसे भवन सन्निर्माण कर्मकारों के संरक्षण के लिए आवश्यक समझे और ऐसे नियोजक को ऐसे होर्डिंग्स के सन्निर्माण करने का निर्देश दे।

243. धारा 40 शूट इसका सन्निर्माण और उपयोग — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) काष्ठ या धातु की शूट जो क्षितिजीय पैतालीस डिग्री के कोण पर है और सामग्री के हटाने के उपयोग में लाई जाती हैं वे सभी ओर बंद हैं सिवाय उनके जो खुले उपयोग के लिए सामग्री या वस्तुओं के प्राप्त करने या उनका निर्वहन करने के लिए उपयोग में लाई जाती हैं;
- (ख) शूट के सभी छोर उनके सिरे के छोरों के सिवाय जब वे उपयोग में नहीं हैं, बन्द कर दिए जाते हैं;
- (ग) प्रत्येक शूट—
- (i) मजबूत सामग्री से सन्निर्मित है पर्याप्त प्रबलता की है और उस प्रयोजन के लिए जिसका उपयोग आशयित है उपयुक्त है;
 - (ii) ऊंचाई में बारह मीटर से अधिक है और उसका सन्निर्माण किसी व्यवसायिक इंजीनियर द्वारा ऐसे सन्निर्माण के लिए तैयार की गई डिजाइन या आरेख तथा मुख्य निरीक्षक के अनुमोदन के अनुसार किया जाता है;
- (घ) प्रत्येक शूट के निर्वहन के समय एक समुचित-चेतावनी सूचना सहज दृश्य अवस्थिति पर हिन्दी में लिख कर सम्प्रदर्शित की जाती है;
- (ङ) प्रत्येक शूट को तब पास किया जाता है जब मलबा जो एक ऊंचाई तक इकट्ठा हो जाता है, जिससे भवन सन्निर्माण कर्मकारों को खतरा हो सकता है किन्तु ऐसा पास किया जाना किसी भी दशा में दिन में एक बार से कम की आवृत्ति पर नहीं किया जाता।

244. धारा 40 सुरक्षा बेल्ट और इसका उपयोग — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) सुरक्षा बेल्ट, लाइफ लाइन और ऐसे लाइफ लाइन से संलग्न करने के लिए अन्य उपकरण सुसंगत राष्ट्रीय मानक के अनुरूप होते हैं;
- (ख) प्रत्येक भवन सन्निर्माण कर्मकार को उसके संरक्षण के लिए सुरक्षा बेल्ट और सुरक्षा लाइफ लाइन प्रदाय की जाती है और ऐसे भवन सन्निर्माण कर्मकार ऐसे बेल्ट और लाइफ लाइनों को अपने कार्य निष्पादन के दौरान उपयोग करते हैं;
- (ग) सुरक्षा बेल्ट और सुरक्षा लाइन का उपयोग करने वाले सभी भवन सन्निर्माण कर्मकारों को ऐसे बेल्ट और लाइफ लाइन के सुरक्षित उपयोग और अनुरक्षण का ज्ञान होता है तथा इसके उपयोग के लिए आवश्यक अनुदेश प्रदाय किये जाते हैं;
- (घ) खंड (ख) में निर्दिष्ट सुरक्षा बेल्ट और सुरक्षा लाइफ लाइन के उपयोग का पर्यवेक्षण करने वाला उत्तरदायी व्यक्ति निरीक्षण करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सुरक्षा बेल्ट और लाइफ लाइन उपयोग के लिए दिए जाने से पूर्व ठीक है।

245. धारा 40 सुरक्षा जाल और इसका उपयोग — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) प्रत्येक सुरक्षा जाल पर्याप्त प्रबलता का है, मजबूत सामग्री का बना है और सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उपयोग किये जाने के लिए उपयुक्त है;
- (ख) सुरक्षा जाल और उनके उपयोग के अनुरक्षण के लिए उत्तरदायी व्यक्ति ऐसे सुरक्षा जालों के सुरक्षित उपयोग को सुनिश्चित करता है और ऐसे सुरक्षा जालों के उपयुक्त और पर्याप्त बांधे जाने की व्यवस्था करता है जिससे कि वह प्रयोजन जिसके लिए ऐसे सुरक्षा जाल आशयित है, उपयोग किये जाने के प्रयोजन को पूरा करता है।

246. धारा 40. सुरक्षा बेल्ट और जाल आदि का भंडारण — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल का अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि सुरक्षा बेल्ट सुरक्षा लाइफ लाइन और सुरक्षा जालों के सुरक्षित भंडारण के लिए, जब वे प्रयोग में नहीं हैं समुचित व्यवस्था की गई है और यांत्रिक नुकसानी रसायनों से नुकसानी और जैव वैज्ञानिक कारकों से नुकसानी के विरुद्ध संरक्षण प्रदान किया गया है।

अध्याय - VII

भाग- XIII

संरचनात्मक चौखटा और फर्मा

247. धारा 40 साधारण उपबंध — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल पर या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) किसी व्यक्ति के पर्यवेक्षणाधीन संरचनात्मक चौखटा और फर्मा के लिए प्रशिक्षित भवन सन्निर्माण कर्मकार, ऐसे संरचनात्मक चौखटा या फर्मा, भवन या ढांचे को खोलने और किसी इंजीनियरी संकर्म फर्मा, कच्चे संकर्म और टेकबन्दी संकर्म के परिनिर्माण करने के लिए नियोजित किये जाते हैं;
- (ख) किसी ढांचे के अस्थायी कमजोरी की दशा में या अनुपयुक्तता की दशा में खतरा उत्पन्न होने से रक्षा करने के लिए पर्याप्त उपाय किये जाते हैं।

248. धारा 40 फर्मा, कच्चा संकर्म और टेकबन्दी — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) फर्मा और कच्चे संकर्म का इस प्रकार डिजाइन, सन्निर्माण और अनुरक्षण किया जाएगा कि ऐसे फर्मा और कच्चे संकर्म उस भार को जो उन पर अधिरोपित किए जाएं सहारा दे सकें;
- (ख) ऐसे फर्मा को इस प्रकार परिनिर्मित किया जाता है कि कृत्यकारी चबूतरा, पहुंच के साधन, कसाव उठाई-धराई करने और स्थिरीकरण के साधन आसानी से ऐसे फर्मा के साथ जोड़े जा सकें।

249. धारा 40 इस्पात के पूर्वरचित ढांचे का परिनिर्माण और उसे खोलना — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) इस्पात ढांचे और पूर्वरचित ढांचे के परिनिर्माण और उसे खोलने में नियोजित भवन सन्निर्माण कर्मकारों को खतरे से सुरक्षा समुचित साधन अर्थात् निम्नलिखित का उपयोग करके सुनिश्चित किया जाता है, अर्थात् :-
 - (i) निसैनी मार्ग या जोड़ा हुआ चबूतरा;
 - (ii) चबूतरे, बाल्टियां, नावनुमा कुर्सियां या अन्य समुचित साधन जो उत्थापक साधित्रों निलंबित किये गए हैं;
 - (iii) संकट में सुरक्षा, लाइफ लाइन, पकड़ जाल या पकड़ चबूतरा;
 - (iv) विद्युत् शक्ति से प्रचालित चल कार्यकारी चबूतरा;
- (ख) भवन या संरचना या फर्मा या कच्चे संकर्म या टेकबन्दी या किसी सिविल इंजीनियरी संकर्म के परिनिर्माण या खोलने का कार्य प्रशिक्षित भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा ऐसे संकर्म के लिए उत्तरदायी किसी व्यक्ति के पर्यवेक्षणाधीन किये जाते हैं;
- (ग) इस्पात या पूर्वरचित ढांचे इस प्रकार डिजाइन किए और बनाये जाते हैं कि ऐसे ढांचे सुरक्षित रूप से परिवहनित, परिनिर्मित किये जा सकें और ऐसे ढांचे की प्रत्येक यूनिट का भार ऐसे यूनिट के ऊपर स्पष्ट रूप से अंकित किये जाते हैं;
- (घ) ऐसे प्रत्येक भाग का डिजाइन, खंड (क), खंड (ख) और खंड (ग) में निर्दिष्ट ढांचे के प्रत्येक भाग की स्थिरता को बनाए रखता है, जब परिनिर्मित किया जाए, और खतरे को रोका जाए, तब डिजाइन में निम्नलिखित को स्पष्ट रूप से ध्यान में रखा जाएगा :-
 - (i) ऐसे भागों के परिनिर्माण के दौरान छिलाई, परिवहन, भंडारण और स्थायी सहारे संबंधी प्रचालनों में सुसंगत दशाएं और संलग्नक करने की पद्धति; तथा
 - (ii) कार्यकारी चबूतरे के साथ रेलिंग के उपबंध और ऐसे रेलिंग या चबूतरों का ढांचागत इस्पात या पूर्वरचित पुर्जों का आसानी से चढ़ाने के लिए रक्षोपाय;
- (ङ) ढांचागत इस्पात या पूर्वरचित पुर्जों पर हुक और अन्य उपकरणों का बनाना या उपलब्ध कराना जो उत्थापन और परिवहन के लिए अपेक्षित है, ऐसे भाग को इस प्रकार आकार दिया जाता है, विमाओं में बनाया जाता है और ऐसे पृष्ठ तनावों को जिनके लिए ऐसे हुक या अन्य उपकरण अध्याधीन हैं सहारा देने के लिए अवस्थित किये जाते हैं;

- (च) कंक्रीट से बनाये गये पूर्व रचित पुर्जे ऐसे कंक्रीट के सेट होने और आरेख में उपबधित पर्याप्त सीमा तक उनके कठोर होने से पूर्व छीले या परिनिर्मित नहीं किये जाते हैं और ऐसे पुर्जों का उनके उपयोग किये जाने से पूर्व उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा नुकसानी के किसी चिह्न का पता लगाने के लिए परीक्षण किया जाता है;
- (छ) भंडारण स्थान इस प्रकार सन्निर्मित किये जाते हैं कि -
- (i) ढांचागत इस्पात या पूर्व रचित पुर्जों के गिरने या लुढ़कने का जोखिम न हो;
 - (ii) भंडारण की दशाओं में साधारणतः यह सुनिश्चित किया जाता है कि भंडारण की पद्धति और वातावरणीय दशाओं को ध्यान में रखते हुए स्थिरता को बनाये रखा जाता है और नुकसानी से बचाया जाता है; तथा
 - (iii) रैकों को मजबूत आधार पर सेट किया जाता है और इस प्रकार डिजाइन किया जाता है कि यूनिटें ऐसे भंडारण स्थलों में संयोगवश हिल न सकें;
- (ज) ढांचागत इस्पात या पूर्वरचित पुर्जों जब वे भंडारित या परिवहनित या उठाये या गिराये जा रहे हों उनके प्रतिकूल दबाव के अधीन न हों;
- (झ) ढांचागत इस्पात और पूर्वरचित पुर्जों के उत्थापन के लिए चिमटे, क्लैम्प और अन्य साधित्र -
- (क) ऐसे आकार और विमाओं के हों जिससे ऐसे पुर्जों को नुकसान पहुंचाये बिना कोई सुरक्षित पकड़ सुनिश्चित की जा सके; तथा
- (ख) अधिकतम प्रतिकूल उत्थापन दशाओं में अधिकतम अनुज्ञेय भार अंकित किया जाता है;
- (ञ) ढांचागत इस्पात या पूर्वरचित पुर्जे ऐसी पद्धति और साधित्रों द्वारा उत्थापित किये जाते हैं जो जिससे उनके दुर्घटनाग्रस्त घुमाव को रोका जा सके;
- (ट) ढांचागत इस्पात या पूर्व रचित पुर्जे ऐसे पुर्जों से किसी संकर्म के किये जाते समय ऐसे पुर्जों के उत्थापन से पूर्व भवन सन्निर्माण कर्मकारों, सामग्री या वस्तुओं के गिरने के कारण नुकसानी को रोकने के लिए रेलिंग और कार्यकारी चबूतरों की व्यवस्था की गई है;
- (ठ) ढांचागत इस्पात द्वारा पूर्वरचित पुर्जों की उठाई-धराई या भंडारण या परिवहन या उनके उत्थापन या उनको उतारने के समय भवन सन्निर्माण कर्मकारों, भवन संरचना या उपस्करों को होने वाली क्षति से बचने के लिए सभी आवश्यक व्यवहार्य उपाय किये जाते हैं;
- (ड) ढांचे पर तेज तूफान या तीव्र हवाओं या किन्हीं अन्य खतरनाक परिस्थितियों में कार्य नहीं किया जाता;
- (ढ) उस भवन सन्निर्माण कर्मकारों के जो उच्च या ढालू गार्डरों पर चल रहे हैं, गिरने के जोखिम को पर्याप्त सामूहिक सुरक्षा के संपूर्ण साधनों द्वारा या गर्दिश में सुरक्षा के उपयोग द्वारा जो पर्याप्त रूप से किसी मजबूत सहारे के लिए अच्छी तरह से सुरक्षित हैं, की सीमा तक, प्रकट किया गया है;
- (ण) ढांचागत इस्पात पुर्जे जिन्हें अत्यधिक ऊंचाई पर परिनिर्मित किया जाए उन्हें यथा व्यवहार्य रूप में धरातल पर समज्जित किया जाता है;
- (त) जब ढांचागत इस्पात पूर्व निर्मित पुर्जे परिनिर्मित किए जा रहे हों कार्य स्थल के समीप पर्याप्त विस्तारित क्षेत्र को तारों से घेर कर सुरक्षित किया जाएगा;
- (थ) ऐसे इस्पात बंध जिन्हें परिनिर्मित किया जा रहा है, उनकी तब तक पर्याप्त रूप से टेकबन्दी, कसाव या तारबधाई नहीं की जाती है जब तक कि वह स्थायी रूप से सुरक्षित स्थिति में नहीं है;
- (द) जब कोई भवन सन्निर्माण कर्मकार ऐसी स्थिति में हो कि उसको ऐसे प्रचालन से चोट लगने की संभावना है तो संरचनात्मक संघटक उत्थापक मशीनों द्वारा उस स्थान पर नहीं रखा जाता है।

250. धारा 40 फर्मा - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) सभी फर्मा, भवन सन्निर्माण कर्मकारों, भवन या संरचना की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए समुचित रूप से डिजाइन किये गये हैं;
- (ख) संरचनात्मक चौखटे और फर्मे के लिए कोई उत्तरदायी व्यक्ति-
- (i) सामग्री, काष्ठ, ढांचागत इस्पात और पाड़ को प्रबलता तथा समुचितता को उपयोग में लाये जाने से पूर्व निरीक्षण और परीक्षण करता है;

- (ii) ऐसे संरचनात्मक चौखटे और फर्मा के सभी प्रक्रमों को इसके अन्तर्गत लाने की प्रक्रिया अधिदृष्टित करता है;
- (iii) ऐसे संरचनात्मक चौखटे और फर्मा का पर्यवेक्षण करता है;
- (iv) ऐसे संरचनात्मक चौखटे और फर्मा, संकर्म के निष्पादन के दौरान दुर्घटना या होने वाली खतरनाक घटनाओं को रोकने को ध्यान में रखते हुए, किसी ऐसी स्थिति को ठीक करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाता है या उपाय करता है।

251. धारा 40 टेक हटाना — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) जब टेक हटाई जाती है तो किसी खतरे से बचने के लिए ऐसी टेकबन्दी के स्थान पर पर्याप्त अवलंब छोड़ दिए जाते हैं, तथा
- (ख) किसी खतरे से बचने के लिए टेक हटाये जाने पर किसी सहारे के साथ पर्याप्त रूप से कसाव या खिंचाव किया जाता है।

अध्याय VII

भाग - XIV

चट्टा लगाना और चट्टा हटाना

252. धारा 40 सामग्री और वस्तुओं के चट्टे लगाना और चट्टे हटाना — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) जहां सन्निर्माण सामग्री या वस्तुओं का चट्टा लगाने या चट्टा हटाने, भराई या खाली करने या उसके संबंध में उठाई-धराई की जा रही हो तथा उसे बिना सहायता के सुरक्षापूर्ण ढंग से नहीं किया जा सकता, ऐसी उठाई-धराई से होने वाले किसी खतरे को रोकने के लिए दुर्घटना या खतरनाक घटनाओं के होने को रोकने के लिए टेकबन्दी या अन्य उपाय द्वारा युक्तियुक्त उपाय किये जाते हैं ;
- (ख) सामग्री या वस्तुओं में चट्टा लगाने का कार्य मजबूत नींव पर किया जाता है जो ऐसी सामग्री या वस्तुओं के टिकने या झुंघर-उधर होने के लिए दायी नहीं है और ऐसे तल पर अधिक भार नहीं डाला जाता है जिस पर ऐसे चट्टे लगाने का कार्य चल रहा है ;
- (ग) सामग्री या वस्तुओं के किसी भांडागार या भंडारण स्थान के भाग या दीवारों पर तब तक चट्टे नहीं लगाए जाते जब तक यह ज्ञात न हो कि ऐसी सामग्री वस्तुओं के दबाव को सहने के लिए ऐसे भाग या दीवार पर्याप्त रूप से मजबूत न हो;
- (घ) सामग्री या वस्तुओं के चट्टे इतनी ऊंचाई पर और उस रीति में नहीं लगाये जाते जिससे कि ऐसे चट्टे की श्रेणी अस्थायी हो जाए और भवन सन्निर्माण कर्मकारों या आम मापकों को खतरा उत्पन्न हो;
- (ङ) जहां भवन सन्निर्माण कर्मकार डेढ़ मीटर से अधिक की ऊंचाई के चट्टे पर कार्य कर रहा हो वहां चट्टे पर सुरक्षित पहुंचने के साधनों की व्यवस्था की जाती है;
- (च) चट्टा लगाने या चट्टा हटाने संबंधी सभी सक्रियाएं, ऐसे चट्टे लगाने या चट्टे हटाने के लिए उत्तरदायी किसी व्यक्ति के पर्यवेक्षणाधीन की जाती हैं ;
- (छ) सन्निर्माण सामग्री या वस्तुओं के चट्टे, उत्खनन, शेफ्ट, गड्ढे या किन्हीं अन्य ऐसे अभिमुख के निकट नहीं लगाये जाते हैं; तथा
- (ज) ऐसे चट्टे बहुत संकरे या अस्थिर होने वाले हैं या गिरने वाले हैं तो उनके चारों ओर रुकावटें लगाई जाती हैं।

253. धारा 40 सीमेंट और अन्य सामग्री के थैलों के चट्टे लगाना — नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) चट्टे का खांचा ऊंचाई में दस थैलों से अनधिक को ऊंचाई पर नहीं होता है जब तक कि ऐसे चट्टे के खांचे को समुचित अनुलग्नक या अन्यथा पर्याप्त रूप से सहारा प्रदान करने के लिए चट्टे न लगाये गये हों;
- (ख) चट्टे के खांचे से थैलों को निकालते समय ऐसे चट्टे के खांचे की स्थिरता को सुनिश्चित किया जाता है;
- (ग) सीमेंट या चूने वाले थैलों को शुष्क स्थानों पर भंडारित किया जाता है;
- (घ) ईंटें, टाइलें या ब्लाकों को मजबूत आधार पर भंडारित किया जाता है;
- (ङ) पुनः प्रबलित इस्पात को उसके आकार, प्रकार और लंबाई के अनुसार भंडारित किया जाता है;

- (घ) पुनः प्रबलित इस्पात के चट्टे यथासम्भव कम ऊँचाई पर रखे जाते हैं;
- (छ) किसी पाइप को ऐसे रैक या चट्टे में जिसमें ऐसे पाइप के मोड़े जाने में गिरने की संभावना हो, भंडारित नहीं किया जाता है;
- (ज) जहाँ किसी खुली सामग्री के चट्टे लगाये जाते हैं वहाँ प्रतिस्थापित कोण बनाये रखा जाता है;
- (झ) जब धूलकण ग्रस्त सामग्री भण्डारण या उसकी उठाई-धराई की जानी है तो ऐसे भंडारण या उठाई-धराई से उत्पन्न होने वाली धूल को दबाने के लिए उपाय किया जाता है और ऐसे भंडारण या उठाई-धराई के लिए भवन संनिर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग किये जाने वाले उपयुक्त संरक्षात्मक उपस्कर प्रदाय किये जाते हैं।

अध्याय VII

भाग - XV

पाइ

254. धारा 40 पाइ का सन्निर्माण - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करता है कि :-

- (क) प्रत्येक पाइ और उसके संघटक पर्याप्त रूप से सन्निर्मित हैं, मजबूत सामग्री से बने हैं, दोषों से मुक्त हैं और उस प्रयोजन के लिए जिसके लिए इसका उपयोग किया जाना आशयित है, सुरक्षित है;
- (ख) पाइ के लिए बांस के उपयोग किये जाने की दशा में ऐसे बांस उपयुक्त क्वालिटी तथा अच्छी स्थिति का है और इसकी गांठें बाहर निकली हुई नहीं होंगी और ऐसे बांस का काम करते समय भवन सन्निर्माण कर्मकारों को होने वाले किसी क्षति से, बचाने के लिए उन्हें छीला जाता है;
- (ग) भवन निर्माण या अन्य सन्निर्माण कार्य में उपयोग की जाने वाली सभी धातु की पाइें सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हैं।

255. धारा 40 किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा पर्यवेक्षण - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी पाइ को परिनिर्मित करने, उसके जोड़ने, परिवर्तित करने या उसे खोले जाने के कार्य ऐसे परिनिर्माण, जोड़े जाने, परिवर्तन या खोले जाने के लिए किसी उत्तरदायी व्यक्ति के पर्यवेक्षण के अधीन के सिवाए नहीं किये जाते हैं।

256. धारा 40 अनुरक्षण - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) भवन सन्निर्माण या अन्य सन्निर्माण संकर्म में उपयोग की गई पाइ को अच्छी मरम्मत करके अनुरक्षित किया जाता है और इसके दुर्घटनापूर्ण विस्थापन या किन्हीं अन्य खतरों के विरुद्ध उपाय किया जाता है;
- (ख) किसी पाइ या उसके भाग को भागतः निसमज्जित नहीं किया जाता है और न ही उसे ऐसी स्थिति में रहने दिया जाता है जब तक कि -
 - (i) ऐसे पाइ की सुरक्षा के लिए किसी उत्तरदायी द्वारा ऐसे पाइ के शेष भाग पर स्थिरता या सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जाती है;
 - (ii) भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा ऐसी पाइ के शेष भाग का उपयोग न किये जाने की दशा में, हिन्दी और किसी ऐसी भाषा में जो अधिकांश भवन सन्निर्माण कर्मकारों द्वारा समझी जाती है लिखित में यह आवश्यक सावधानी सूचना कि ऐसी पाइ उपयोग में लाने के लिए अनुपयुक्त है, उस स्थान पर जहाँ ऐसी पाइ का परिनिर्माण किया जाता है, संप्रदर्शित की गई है।

257. धारा 40 मानक, आड़, अड़वार - नियोजक किसी भवन के सन्निर्माण स्थल या अन्य सन्निर्माण संकर्म पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) पाइ के मानक निम्न प्रकार हैं:-
 - (i) साहुल, जहाँ साध्य हो;
 - (ii) ऐसी पाइ के आशयित उपयोग के लिए सभी संभाव्य कृत्यकारी परिस्थितियों और दशाओं को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाइ की स्थिरता को सुरक्षित बनाने के लिए एक दूसरे को पर्याप्त रूप से सटी हुई दूरी पर स्थिर किया जाना; तथा
 - (iii) ऐसी पाइ की सुरक्षा और स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए यथा साध्य निकट दूरी रखना;
- (ख) यथावश्यक पूर्ण प्लेट या किसी आधार प्लेट की व्यवस्था करके किसी पाइ के मानक के विस्थापन को रोकने के लिए पर्याप्त उपाय किये जाते हैं;
- (ग) ऐसी पाइ की सुरक्षा और स्थिरता का सम्यक् ध्यान रखते हुए धातु की पाइ की आड़ों को लंबवत् अंतरालों पर रखा जाता है;

(घ) बांस की पाड़ की आड़ों को यथासम्भव निकट रखा जाता है, ऐसे पाड़ की स्थिरता का सम्यक् ध्यान रखते हुए किसी पाड़ के मानकों पर जकड़ा जाता है।

258. धारा 40 कृत्यकारी चबूतरा — नियोजक किसी भवन के संनिर्माण स्थल या अन्य संनिर्माण संकर्म स्थलों पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) कृत्यकारी चबूतरा संनिर्माण ऐसे भवन के स्थायी उपरी तल के निकट वाले किसी भवन के सामने या उसके किनारे पर और किसी ऐसे स्तर पर जहां ऐसे भवन का संनिर्माण कार्य किया जा रहा है उपलब्ध कराया जाता है;
- (ख) किसी पाड़ के प्रत्येक खंड पर नियोजित किये जाने वाले भवन संनिर्माण कर्मकारों की संख्या, ऐसे चबूतरों पर पाड़ का कार्य और सामग्री या वस्तुएं तथा औजार जो उनके साथ ऐसे खंड पर ले जाये जाते हैं के अनुकूल एक चबूतरा का डिजाइन किया जाता है।
- (ग) किसी पाड़ के प्रत्येक खंड में सुरक्षित कार्यकारी भार और भवन संनिर्माण कर्मकारों की संख्या जिन्हें नियोजित किया जाना है, ऐसे संनिर्माण स्थल पर नियोजित सभी भवन संनिर्माण कर्मकारों की जानकारी के लिए सम्प्रदर्शित की जाती है।

259. धारा 40 बोर्ड, तख्ता और छत — नियोजक किसी भवन के संनिर्माण स्थल या अन्य संनिर्माण संकर्म स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) कृत्यकारी चबूतरा के संनिर्माण में उपयोग किये गये बोर्ड, तख्ता और छत समान आकार और प्रबलता के हों और ऐसे भवन संनिर्माण कर्मकारों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार भार और भवन निर्माण कर्मकारों की संख्या को सहारा देने के लिए समर्थ हैं;
- (ख) धातु की छत जो किसी कृत्यकारी चबूतरा को एक भाग बनाती है बिना फिसलने वाले पृष्ठतल की व्यवस्था की गई है;
- (ग) ऐसा कोई बोर्ड या तख्ता जो कार्यकारी चबूतरा का भाग बनाता है, इसके किनारे की टेक के परे तब तक प्रक्षेपित नहीं किये जाते हैं जब तक कि इसे प्रभावी रूप से मुड़ने या उठने से रोका नहीं जाता;
- (घ) बोर्ड तख्ता या छत जकड़े जाते हैं और सुरक्षित किये जाते हैं;
- (ङ) किसी ऐसे एक समय में प्रत्येक दिन दो से अधिक कृत्यकारी चबूतरा ऐसे खंड पर भवन निर्माण कर्मकारों या सामग्री या वस्तुओं को सहारा देने के लिए उपयोग में नहीं लाए जाते हैं;
- (च) ऐसी किसी क्षति को रोकने के लिए, जो सामग्री या वस्तुओं के गिरने के कारण कारित होती हैं, सुरक्षा जालों या अन्य समुचित साधनों का उपयोग करके समुचित उपाय किये जाते हैं;
- (छ) ऐसी पाड़ के किसी चबूतरा पर कंक्रीट या अन्य मलबे या सामग्री को इकट्ठा होने की अनुज्ञा नहीं दी जाती है;
- (ज) किसी दीवार के छोर पर जहां कार्य किया जाना है, ऐसे कार्य स्थल पर कृत्यकारी चबूतरा या जहां साध्य हो, ऐसी दीवार के छोर के परे कम से कम शून्य दशमलव साठ मीटर दूरी पर बनायी जाती है।

260. धारा 40 क्षतिग्रस्त पाड़ की मरम्मत — नियोजक भवन या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) कोई भी भवन निर्माण कर्मकार ऐसी पाड़ पर जो क्षतिग्रस्त या क्षीण हो गई है, जब तक ऐसे भवन निर्माण कर्मकार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यथोचित सुरक्षा उपाय नहीं कर लिए जाते हैं कार्य करने के लिए अनुज्ञात नहीं है।
- (ख) ऐसे स्थानों पर, जहां पाड़ की मरम्मत का जिम्मा ले लिया हो, चेतावनी संकेत सम्प्रदर्शित कर दिये जाते हैं।

261. धारा 40 खुली जगह — नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) ऐसे कार्यकरण प्लेटफार्म पर पहुंचने के सिवाय, किसी भी कार्यकरण प्लेटफार्म में कोई भी खुली जगह नहीं है;
- (ख) किसी प्लेटफार्म पर जहां भी खुली जगह अपरिहार्य है, ऐसे प्लेटफार्म से सामग्री या भवन निर्माण कर्मकारों के गिरने से परित्राण के लिए उपयुक्त सुरक्षाजाल, पट्टे या इसी प्रकार के कोई अन्य साधनों की व्यवस्था करके आवश्यक उपाय कर लिए गए हैं;
- (ग) किसी पाड़ पर एक कार्यकरण प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर पहुंचना यदि अपेक्षित हो, ऐसे प्लेटफार्मों पर काम करने वाले भवन निर्माण कर्मकारों के उपयोग के लिए उपयुक्त और सुरक्षित निसैनी की व्यवस्था कर दी जाती है;

262. धारा 40 रक्षक पटरियां — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि किसी ऐसे कार्यकरण प्लेटफार्म की प्रत्येक से पार्श्व पर जिससे किसी व्यक्ति के गिरने की संभावना है ऐसे प्लेटफार्म से किसी भवन निर्माण कर्मकार, सामग्री या औजारों को गिरने से रोकने के लिए उपयुक्त और सुरक्षित रक्षक पटरियों और यथोचित मजबूती के टो-बोर्ड की व्यवस्था कर दी जाती है।

263. धारा 40 विभिन्न नियोजकों के भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग में लाई गई पाड़ — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) जहां किसी ऐसी पाड़ या पाड़ के किसी ऐसे भाग का उपयोग किया जाता है जिसका उपयोग पूर्व में किसी अन्य नियोजक द्वारा उसके भवन निर्माण कर्मकारों के लिए किया गया है, ऐसी पाड़ या उसके भाग का उपयोग केवल उसके उपयोग के लिए किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा उसके ऐसे निरीक्षण और जांच के पश्चात् ही किया जाता है कि ऐसी पाड़ या भाग ऐसे उपयोग के लिए सुरक्षित और उपयुक्त है;
- (ख) यदि किसी पाड़ या उसके भाग में उसके उपयोग के सुभीते के लिए किसी सुधार, परिवर्तन या उपांतरण की जरूरत समझी जाती है, तो ऐसा सुधार, परिवर्तन या उपांतरण ऐसी पाड़ या भाग के उपयोग में लाने से पूर्व खण्ड (क) में निर्दिष्ट उत्तरदायी व्यक्ति के परामर्श से किया जाता है।

264. धारा 40 विद्युत शक्ति लाइन से संरक्षण — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि, पाड़ पर कार्य करने वाले ऐसे किसी भी भवन निर्माण कर्मकार को विद्युततारों या खतरनाक उपस्कर के सम्पर्क में आने से रोकने के लिए परिमाण के लिए सभी आवश्यक और व्यवहारिक उपस्कर लिए जाते हैं।

265. धारा 40 रक्षावरण जाल और तार की जालियां — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि जहां पाड़ किसी ऐसे क्षेत्र में परिनिर्मित की जाती है जहां संनिर्माण क्रियाकलापों से नजदीक के पैदल चलने वालों या यानीय यातायात को सामग्री के गिरने से परिसंकट की संभावना हो सकती है, वहां ऐसी पाड़ के आवरण के लिए तारों की जालियां या रक्षावरण जाल उपयोग किए जाते हैं।

266. धारा 40 टावर पाड़— नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में उपयोग में ली गई प्रत्येक टावर पाड़ की ऊंचाई ऐसी पाड़ के आधार माप की लघुतर की आठ गुनी से अधिक नहीं है,
- (ख) टावर पाड़ को भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग में लाए जाने के पूर्व किसी भवन या किसी स्थिर इमारत के साथ रस्सी से बांध दिया जाता है,
- (ग) कोई भी ऐसी टावर पाड़ जिसे घुमाया या संचयक किया जा सकता है —
 - (i) उसके स्थायित्व को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाता है और यदि आवश्यक हो, उसके आधार पर यथोचित रूप से भारित किया जाता है;
 - (ii) उसका केवल समतल और भूतल पर ही उपयोग किया जाता है; और
 - (iii) जिसमें ऐसी पाड़ को स्थिति में रखने के लिए सकारात्मक परिबंधन युक्तियों के साथ कास्टरो की व्यवस्था है,
- (घ) कोई भी भवन निर्माण कर्मकार, औजार, सामग्री पाड़ पर नहीं रहता है जब उसे एक स्थिति से दूसरी स्थिति में बदला जाता है।

267. धारा 40 पाड़ के निलंबन के लिए गियर — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) पाड़ के निलंबन के लिए उपयोग में ली गई जंजीरें, रस्से या उठाने वाले गियर यथोचित मजबूती की अच्छी सामग्री के बने और उनके उपयोग के प्रयोजनों के लिए उपयुक्त हैं तथा अच्छी मरम्मत से पोषित किए जाते हैं;
- (ख) पाड़ के निलंबन के लिए प्रयुक्त जंजीरें, तार, रस्से और धातु की नालियां —
 - (i) प्रत्येक जकड़ बिन्दु पर और ऐसी पाड़ के समर्थन के लिए प्रयुक्त उस पाड़ के अन्य मुख्य सहायक सदस्यों की आड़ी लकड़ियों को उचित रूप से तथा मजबूती से जकड़कर बांध दी जाती हैं, और
 - (ii) इस प्रकार की स्थिति में रखी जाती हैं जिससे कि पाड़ की स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

268. धारा 40 मंचिका पाड़ और शहतीर पाड़ — नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) कोई भी मंचिका पाड़ तीन खन से अधिक संनिर्मित नहीं की जाती है या यदि उसका कार्यकरण प्लेटफार्म भूमि या फर्श या अन्य भूतल जिस पर ऐसी पाड़ निर्मित की जाती है, से ऊपर चार फुट पांच मीटर से अधिक है तो ऐसी मंचिका पाड़ की व्यावसायिक इंजीनियर द्वारा डिजाइन की जाती है और उपयोग में लिए जाने से पूर्व मुख्य निरीक्षक का अनुमोदन प्राप्त किया जाता है,
- (ख) कोई भी मंचिका पाड़ किसी निलंबित पाड़ पर निर्मित नहीं की जाती है,
- (ग) कोई भी शहतीर या जिब पाड़ जब तक उसके सहारे के सामने के पार्श्व यथोचित रूप से समर्थित, स्थिर या जकड़ नहीं दिया जाता है और यथोचित लम्बाई का बाहरी सहारे को जहां आवश्यक हो ऐसी पाड़ की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त रूप से सहारा नहीं दिया जाता है उपयोग में नहीं ली जाती है।
- (घ) जब तक ऐसे धारक जो यथोचित मजबूती वाले हैं, दीवार से होकर कस नहीं दिए जाते हैं और वह दूसरी तरफ मजबूती से बांधे नहीं जाते हैं कोई भी ऐसा कार्यकरण प्लेटफार्म जो धारकों पर आधारित है जिसका एक सिरा दीवार में लगा दिया जाता है और बिना दूसरे सहारे के उपयोग नहीं किया जाता है।

269. धारा 40 भवन द्वारा समर्थित पाड़ - नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) जब तक उस भवन का ऐसा भाग पर्याप्त मजबूती से और सुरक्षित समर्थन देने के लिए मजबूत सामग्री का नहीं बनाया जाता है, भवन को किसी भी भाग का किसी पाड़ के समर्थन या उसके भाग के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है;
- (ख) बाहर निकले हुए छज्जे, परनाले पाड़ के समर्थन के लिए उपयोग में नहीं लिए जाते हैं;
- (ग) निलंबित पाड़, भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा उपयोग किए जाने के पूर्व सुसंगत राष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाई जाती है।

270. धारा 40 निलंबित पाड़ के लिए विंच और क्लाइम्बर्स का उपयोग - नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

- (क) जब तक ऐसी पाड़ मजबूत सामग्री से यथोचित ताकत की नहीं बनाई जाती है और उपयोग में लिए जाने से पहले किसी सक्षम व्यक्ति द्वारा ऐसे उठाने और नीचा करने के लिए विंच या क्लाइम्बर के उपयोग के लिए उसका परीक्षण नहीं कर लिया गया है और उसके द्वारा निरापद प्रमाणित नहीं कर दी गई है, कोई भी निलंबित पाड़ विंच या क्लाइम्बर्स द्वारा ऊंची या नीची नहीं की जाती है;
- (ख) प्रतिभार द्वारा प्रति संतुलित सभी निलंबित पाड़ की टाइप ऐसी हैं जो भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के लिए उपयोग में लिए जाने से पहले मुख्य निरीक्षक द्वारा अनुमोदित की जाती है;
- (ग) निलंबित पाड़ के कार्यकरण प्लेटफार्म को सुरक्षा की दृष्टि से और ऐसे प्लेटफार्म को हिलने से रोकने के लिए भवन या इमारत से मजबूती से बांध दिया जाता है;
- (घ) उस सुरक्षित कार्यकरण भार को जिसे निलंबित पाड़ वहन कर सकती है वहां संप्रदर्शित कर दिया जाता है जहां पर ऐसी पाड़ का उपयोग किया जाता है।

271. धारा 40 निलंबित पाड़ के लिए सुरक्षा युक्तियां- नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि विंच क्लाइम्बर्स द्वारा उठाई गई या नीची की गई प्रत्येक निलंबित पाड़ के साथ ऐसे प्रत्येक रस्से पर लगी स्वचालित सुरक्षा युक्ति के साथ एक सुरक्षा रस्सा की इसके प्रत्येक निलंबन बिन्दु पर व्यवस्था की जाती है ताकि ऐसी स्वचालित सुरक्षा युक्ति वाला ऐसा सुरक्षा रस्सा ऐसी निलंबित पाड़ को उठाने या नीचा करने के लिए प्रयुक्त प्राथमिक निलंबन तार के रस्सों, विंच, क्लाइम्बर या ऐसी मैकेनिज्म के किसी भाग के असफल होने की स्थिति में ऐसी पाड़ के प्लेटफार्म को समर्थन देता है।

परन्तु यह नियम निम्नलिखित दशा में लागू नहीं होगा -

- (क) जहां ऐसी पाड़ का प्लेटफार्म, जिसके ऐसे प्लेटफार्म के प्रत्येक सिरे पर या उसके निकट दो स्वतंत्र निलंबन तार रस्सों से समर्थन मिलता है ताकि ऐसे एक निलंबन तार रस्सा के काम न करने की स्थिति में दूसरा रस्सा ऐसे प्लेटफार्म के वजन और इसके भार को उठाने और इसे झुकने से रोकने में समर्थ हो;
- (ख) जहां किसी ऐसी पद्धति समाविष्ट है जो ऐसी पाड़ के प्राथमिक निलंबन तार रस्सा के काम न करने की स्थिति में ऐसी पाड़ के प्लेटफार्म और इसके भार को समर्थन देने के लिए स्वचालित रूप से प्रचालित होती है।

अध्याय VII

भाग - XVI

जलापरोध और नींव कोष्ठक

272. धारा 40 साधारण उपबंध - नियोजक भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-

(क) प्रत्येक जलापरोध और नींव कोष्ठक -

- (i) अच्छी बनावट, मजबूत सामग्री का और यथोचित सामर्थ्य का है;
- (ii) यथास्थिति ऐसे जलापरोध या नींव कोष्ठक की चोटी पर पानी के आधिक्य की स्थिति में भवन निर्माण कर्मकारों के लिए सुरक्षित रूप से पहुंचने के लिए यथोचित साधनों का प्रबंध है;
- (iii) यथास्थिति ऐसे जलापरोध और नींव कोष्ठक के ऐसे प्रत्येक स्थान पर, जहां, भवन निर्माण कर्मकार नियोजित किए जाते हैं, पहुंचने के सुरक्षित साधनों की व्यवस्था है;

(ख) जलापरोध या नींव कोष्ठकों के निर्माण, स्थिति बनाने, उपांतरण या उनको नष्ट करने से संबंधित कार्य किसी उत्तरदायी व्यक्ति के पर्यवेक्षण के अधीन संपादित किया जाता है;

(ग) सभी जलापरोध और नींव कोष्ठक मुख्य निरीक्षक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट अन्तरालों पर किसी उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा निरीक्षित किए जाते हैं;

- (घ) मुख्य निरीक्षक द्वारा यथा अनुमोदित ऐसी पिछली अवधि के भीतर ऐसे जलापरोध या नींव कोष्ठक का उत्तरदायी व्यक्ति द्वारा निरीक्षण कर लिया जाता है और सुरक्षित पाया जाता है। उसके पश्चात् ही जलापरोध या नींव कोष्ठक में किसी भवन निर्माण कर्मकार को कार्य करने दिया जाता है और ऐसे निरीक्षण का अभिलेख एक रजिस्टर में घोषित किया जाता है।
- (ङ) किसी जलापरोध या नींव कोष्ठक में संपीड़ित वायु में कार्य -
- (i) सुसंगत राष्ट्रीय मानकों में अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार संपादित किया जाता है;
 - (ii) ऐसे भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा संपादित किया जाता है जो अठारह वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं और नियम 221 के अधीन यथा अपेक्षित जिनकी चिकित्सीय परीक्षा कर ली जाती है;
 - (iii) किसी उत्तरदायी व्यक्ति के पर्यवेक्षण के अधीन संपादित किया जाता है;
- (च) यदि जलापरोध या नींव कोष्ठक में कार्य पारियों में संपादित किया जाता है तो प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार द्वारा ऐसी प्रत्येक पारी में किए गए कार्य के लिए व्यतीत समय का अभिलेख, ऐसे भवन निर्माण कर्मकार के संपीड़न के लिए, लिए गए समय की विशिष्टियों के साथ यदि कोई हो, एक रजिस्टर में पोषित किया जाता है;
- (छ) जलापरोध या नींव कोष्ठक में प्रत्येक कार्य स्थल या परियोजना पर जहां भवन निर्माण कर्मकार संपीड़ित वायु पर्यावरण में कार्य करने के लिए नियोजित किए जाते हैं, ऐसे कार्य के दौरान ऐसे स्थल या परियोजना पर एक नर्स या प्रशिक्षित प्राथमिक उपचार परिचर द्वारा सहायता प्राप्त एक निर्माण चिकित्सा अधिकारी सभी समयों पर उपलब्ध है;
- (ज) जलापरोध या नींव कोष्ठक में प्रत्येक कार्य स्थल या परियोजना पर आपातकाल के लिए एक आपात उपलब्ध संपीड़क है।
- 273. धारा 40 दाब संयंत्र और उपस्कर -** नियोजक भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि :-
- (क) दाब संयंत्र और उपस्कर -
- (i) ऐसे कार्य के लिए उपयोग में लिए जाने से पूर्व सक्षम व्यक्ति द्वारा जांच और परीक्षित कर लिए जाते हैं;
 - (ii) उपयुक्त डिजाइन और मजबूत सामग्री का बना हुआ है तथा उस कार्य के संपादन की यथोचित सामर्थ्य का है जिसके लिए वह उपयोग किया जाता है;
 - (iii) अच्छी मरम्मत और कार्यकरण की दशा में उचित रूप से पोषित किया जाता है;
- (ख) उपनियम (क) में निर्दिष्ट दाब संयंत्र और उपस्कर के साथ निम्नलिखित लगा हुआ है:-
- (i) किसी भी समय अधिकतम सुरक्षित दाब को आगे बढ़ते हुए को निकालने के लिए एक उपयुक्त सुरक्षा वाल्व;
 - (ii) ऐसे संयंत्र और उपस्कर पर अधिकतम सुरक्षित कार्यकरण दाब के साथ प्रति वर्ग सेंटीमीटर किलोग्राम में आंतरिक दाब और चिन्हित सभी समयों पर आसानी से दिखने योग्य और दर्शित करने के लिए बनाया गया एक प्वाइंट पांच गुना से अन्यनू और अधिकतम कार्यकरण दाब के दुगुने से अनधिक की एक डायल रेंज के साथ एक उपयुक्त दाब गेज;
 - (iii) एक उपयुक्त स्टाप वाल्व या ऐसे वाल्व जिनके द्वारा दाब संयंत्र या दाब संयंत्र की प्रणाली को दाब के प्रदाय के स्रोत या अन्यथा से अलग-थलग किया जा सकेगा ;
- (ग) प्रत्येक दाब संयंत्र या उपस्कर का सक्षम व्यक्ति द्वारा पूर्णतया परीक्षण किया जाएगा -
- (i) बाह्य रूप से छः मास की प्रत्येक अवधि में एक बार;
 - (ii) आंतरिक रूप से बारह मास की प्रत्येक अवधि में एक बार;
 - (iii) जलीय परीक्षण द्वारा चार वर्ष की अवधि में एक बार।

अध्याय VII

भाग - XVII

सुरक्षा संगठन

274. धारा 38 सुरक्षा समितियां - (1) प्रत्येक स्थापना जिसमें पांच सौ या उससे अधिक भवन निर्माण कर्मकार साधारणतः नियोजित हैं, वहां नियोजक द्वारा एक सुरक्षा समिति गठित की जाएगी जो नियोजक और भवन निर्माण कर्मकारों के प्रतिनिधियों की समान संख्या द्वारा रुपित होगी। किसी भी दशा में नियोजक के प्रतिनिधियों की संख्या भवन निर्माण कर्मकारों के प्रतिनिधियों से अधिक नहीं होगी। जहां भी ऐसे संघ विद्यमान हैं समिति मान्यता प्राप्त संघों के प्रतिनिधियों द्वारा रुपित होगी।

(2) सुरक्षा समिति के मुख्य कृत्य निम्नलिखित होंगे :-

- (क) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य में दुर्घटना के अधिसंभाव्य कारणों और असुरक्षित पद्धतियों को पहचानना और उपचारी उपाय सुझाना;

- (ख) जैसे ही और जब भी अपेक्षित या जैसे ही आवश्यक हो सुरक्षा सप्ताहों, सुरक्षा प्रतियोगिता, बात-चीतों और सुरक्षा पर फिल्म प्रदर्शनों, इश्तहार तैयार करके या वैसे ही अन्य उपायों के आयोजन द्वारा नियोजक और भवन निर्माण कर्मकारों के हित में सुरक्षा को बढ़ावा देना;
- (ग) असुरक्षित पद्धतियों की जांच पड़ताल करने तथा असुरक्षित दशाओं का पता लगाने के उद्देश्य से निर्माण स्थल का दौरा करना और उनके सुधार के लिए उपचारी उपाय जिसके अन्तर्गत प्रथम उपचार चिकित्सीय और कल्याणकारी सुविधाएँ भी हैं, की सिफारिश करना;
- (घ) विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों, रसायनों और अन्य निर्माण सामग्री की उठाई-धराई से सम्बद्ध स्वास्थ्य परिसंकेतों का ध्यान रखना तथा उचित व्यक्तिगत संरक्षा उपस्कर के उपयोग जिसके अंतर्गत उपचारी उपाय भी हैं सुझाना;
- (ङ) निर्माण स्थल में कल्याणकारी सुख सुविधाएँ समुन्नत करने और भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा कल्याण के अन्य विविध पहलुओं के लिए उपाय सुझाना;
- (च) भवन निर्माण और अन्य निर्माण कार्य के दौरान उपयोग किए जाने वाले उपस्कर के उपयोग, उठाई-धराई तथा रख रखाव से सम्बद्ध परिसंकेतों का, नियोजक को ध्यान दिलाना।

(3) सुरक्षा समिति की नियमित अंतरालों पर कम से कम एक मास में एक बार बैठक होगी और निर्माण स्थल के काम काज पर संपूर्ण नियंत्रण रखने वाला ज्येष्ठ व्यक्ति इसकी अध्यक्षता करेगा।

(4) बैठक की कार्य सूची और कार्य वृत्त सभी सरोकार रखने वालों को परिचालित की जाएगी और यह भवन निर्माण कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली भाषा में होगी तथा निरीक्षण के लिए मांग किए जाने पर निरीक्षक को प्रस्तुत की जाएगी।

(5) सुरक्षा समिति के विनिश्चयों तथा सिफारिशों का नियोजक द्वारा युक्ति युक्त समय सीमाओं के भीतर पालन किया जाएगा।

275. धारा 38 सुरक्षा अधिकारी— (1) ऐसे प्रत्येक स्थापना में जहां पर पांच सौ या इससे अधिक कर्मकार साधारणतया नियोजित किए जाते हैं, नियोजक इन नियमों से संलग्न अनुसूची-XII में अधिकथित वेतनमान के अनुसार सुरक्षा अधिकारियों को भी नियुक्त करेगा। ऐसे सुरक्षा अधिकारी उपयुक्त तथा यथोचित कर्मचारी वृंद द्वारा सहायता प्राप्त हो सकेंगे।

(2) उपनियम (1) के अधीन नियुक्त सुरक्षा अधिकारियों के कर्तव्य, अर्हताएं और सेवा-शर्तें इन नियमों से संलग्न अनुसूची-XII में यथा उपबोधित होंगी।

(3) जहां भी एकल नियोजक द्वारा नियोजित कर्मकारों की संख्या पांच सौ से कम है, वहां नियोजक एक समूह बना सकेंगे और मुख्य निरीक्षक की पूर्व अनुज्ञा से नियोजकों के ऐसे समूह के लिए एक सामूहिक सुरक्षा अधिकारी नियुक्त कर सकेंगे।

276. धारा 39 दुर्घटनाओं की रिपोर्ट देना — (1) निर्माण स्थल पर ऐसी दुर्घटना जो या तो —

(क) जीवन हानि कारित करती है; या

(ख) दुर्घटना के ठीक बाद अड़तालीस घंटे या इससे अधिक की अवधि के लिए किसी भवन निर्माण कर्मकार को कार्यकरण से निर्योग्य बनाती है, घातक दुर्घटनाओं की दशा में चार घंटों के भीतर और ऐसी अन्य दुर्घटनाओं की दशा में जिसमें भवन निर्माण कर्मकार अंतर्ग्रस्त है, बहत्तर घंटों के भीतर तार, दूरभाष, फैक्स या वैसे ही अन्य साधन जिसके अंतर्गत विशेष संदेश वाहक भी हैं, द्वारा निम्नलिखित को तुरन्त सूचना भेजी जाएगी —

(i) उस क्षेत्र की अधिकारिता वाला जिसमें ऐसी स्थापना अवस्थित है जिसमें ऐसी दुर्घटना या खतरनाक घटना घटित हुई। ऐसा सहायक निदेशक, औद्योगिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य अधिनियम की धारा 39 के अधीन नियुक्त प्राधिकारी होगा;

(ii) बोर्ड जिसके साथ दुर्घटना में अंतर्ग्रस्त भवन निर्माण कर्मकार हिताधिकारी के रूप में रजिस्ट्रीकृत किया गया था;

(iii) मुख्य निरीक्षक; तथा

(iv) दुर्घटना में अंतर्ग्रस्त भवन निर्माण कर्मकार का निकट संबंधी या अन्य संबंधी।

(2) भवन निर्माण या अन्य सनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर कोई ऐसी दुर्घटना जो —

(क) जीवन हानि कारित करती है; या

(ख) दुर्घटना के ठीक बाद दस दिन से अधिक के लिए ऐसे भवन निर्माण कर्मकार को काम से निर्योग्य बनाती है; की सूचना निम्नलिखित को भी भेजी जाएगी —

(i) निकटतम पुलिस थाना का भारसाधक अधिकारी;

(ii) जिला मजिस्ट्रेट या यदि जिला मजिस्ट्रेट आदेश द्वारा ऐसा चाहता है तो उपमण्डल मजिस्ट्रेट को।

(3) उपनियम (1) के खंड (ख) या उपनियम (2) के खंड (ख) के अधीन होने वाली दुर्घटना की दशा में, आहत भवन निर्माण कर्मकार को प्राथमिक उपचार दिया जाएगा और उसके बाद चिकित्सीय उपचार के लिए किसी अस्पताल या अन्य स्थान में तुरन्त अंतरित कर दिया जाएगा।

(4) जहां कोई दुर्घटना निश्चिन्ता कारित करते हुए तत्पश्चात् किसी भवन निर्माण कर्मकार की मृत्यु में परिणित हो जाती है, तो ऐसी मृत्यु की लिखित रूप में सूचना ऐसी मृत्यु के बहत्तर घंटे के भीतर उपनियम (1) और उपनियम (2) में यथा उल्लिखित प्राधिकारियों को संसूचित की जाएगी।

(5) खतरनाक घटनाओं के निम्नलिखित वर्ग चाहे उनसे किसी भवन निर्माण कर्मकार की मृत्यु या निश्चिन्ता कारित होती है या नहीं, उपनियम (1) में विहित रीति में अधिकारिता वाले निरीक्षक को रिपोर्ट की जाएगी, अर्थात्:-

- (क) उत्पादक साधनों या उत्तोलक या प्रवह्यी या भवन या निर्माण सामग्री की उठाई धराई के लिए अन्य वैसे ही उपस्कर का ढह जाना या निष्फल हो जाना या रस्सा, जंजीर या वियोजित गियरों का निष्फल हो जाना, भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में उपयोग की जाने वाली केनों का उलट जाना, उंचाई से वस्तुओं का गिर जाना;
- (ख) मिट्टी, किसी दीवार, फर्श, गैलरी, छत या किसी संरचना प्लेटफार्म, मंजिल, पाड़ के किसी अन्य भाग या पहुंच के किसी साधन जिसके अंतर्गत फॉर्मवर्क (प्ररूप कार्य) भी है का ढह जाना या धसाव;
- (ग) संविदा कार्य, उत्खनन, पारेषण बूजों, पुलों आदि का ढह जाना;
- (घ) भवन निर्माण सामग्री के रूप में उपयोग की जाने वाली किसी गैस या गैसों या किसी द्रव या ठोस के भंडाकरण के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रापके वादपात्र का वातावरणिक दबाव से अधिक दबाव पर विस्फोट;
- (ङ) ऐसे निर्माण स्थल पर, जहां भवन निर्माण कर्मकार नियोजित किए जाते हैं क्षति कारित करने वाली अग्नि और विस्फोट;
- (च) हानिकारक पदार्थों का बहाव या रसाव और उनके आधानों की क्षति;
- (छ) यातायात उपस्कर का ढह जाना, लुढ़क पर गिर जाना या टकरा जाना;
- (ज) निर्माण स्थल पर हानिप्रद विषैली गैसों का रसाव या निर्माण ।

(6) भवन निर्माण या अन्य संनिर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर किसी उत्पादक साधन, वियोजित गियर, उत्तोलक या भवन निर्माण और अन्य संनिर्माण कार्य मशीनरी तथा यातायात उपस्कर की असफलता की दशा में ऐसे साधन, गियर, उत्तोलक मशीनरी या उपस्कर और ऐसी घटना के उस स्थल का जब तक अधिकारिता वाले निरीक्षक द्वारा निरीक्षण नहीं कर लिया जाता है, यथासाध्य अविशुद्ध रखा जाएगा।

(7) उपनियम (1), उपनियम (2) या उपनियम (4) के अधीन दी गई प्रत्येक सूचना के अनुसरण में उचित अभिस्वीकृति के अधीन निरीक्षक, अधिनियम की धारा 39 के अधीन प्राधिकारी, बोर्ड और मुख्य निरीक्षक को प्ररूप XLVI में एक लिखित रिपोर्ट भेजी जाएगी।

277. धारा 39 दुर्घटना या खतरनाक घटना के कारणों के जांच की प्रक्रिया- (1) अधिनियम की धारा 39 की यथास्थिति उपधारा 2 या उपधारा (3) के अधीन जांच, नियम 276 के उपनियम (1) के खंड (ख) के उपखंड (1) में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित रीति में की जाएगी अर्थात्:-

- (क) जांच यथाशीघ्र प्रारंभ की जाएगी और किसी भी दशा में नियम 276 के अधीन दुर्घटना या खतरनाक घटना की सूचना की प्राप्ति के पंद्रह दिनों के भीतर प्रारंभ की जाएगी;
- (ख) जांच, नियम 276 के उपनियम (1) के खंड (ख) के उपखंड (1) में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा स्वयं या ऐसे प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार नियुक्त किसी जांच अधिकारी द्वारा संचालित की जाएगी;
- (ग) यथास्थिति प्राधिकारी या जांच अधिकारी, ऐसी जांच में हाजिर होने के हकदार उन सभी व्यक्तियों को जिनके नाम और पते ऐसे प्राधिकारी या जांच अधिकारी को ज्ञात है, ऐसी जांच की तारीख, समय और स्थान संसूचित करते हुए लिखित में सूचनाओं की तामील करेगा या तामिल करवाएगा;
- (घ) खंड (ख) के उपबंध के होते हुए भी, ऐसे अन्य व्यक्ति जो किसी तरह से ऐसी जांच में संबद्ध या हितबद्ध है, यथास्थिति, प्राधिकारी या जांच अधिकारी अधिसूचित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी जांच की तारीख, समय और स्थान संसूचित करते हुए, एक या अधिक स्थानीय समाचार पत्रों में ऐसी जांच की सूचना प्रकाशित कर सकेंगे।

(2) जांच के लिए हाजिर होने के हकदार व्यक्ति के अंतर्गत निम्नलिखित आ सकेगा:-

- (क) अधिनियम के सुरक्षा उपबंधों और संबंधित स्थापना के लिए इन नियमों के प्रवर्तन या अनुपालन से संबद्ध केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या किसी उपक्रम या लोक निकाय का निरीक्षक या कोई अधिकारी;
- (ख) व्यवसाय संघ या कर्मकारों का संगम या नियोजकों का संगम;
- (ग) दुर्घटना में अंतर्ग्रस्त कर्मकार या उसका वैधिक वारिस या प्राधिकृत प्रतिनिधि;
- (घ) उप परिसर का स्वामी जिसमें घटना घटी ;

- (ड) यथास्थिति, प्राधिकारी या जांच अधिकारी के विवेकाधिकार पर कोई अन्य ऐसा व्यक्ति जो किसी दुर्घटना के कारण में हितबद्ध हो सकेगा या कारण से संबद्ध हो सकेगा या जो ऐसे कारण के बारे में जानकारी रखता है या जिसके ऐसी दुर्घटना या खतरनाक घटना के संबंध में तत्त्विक साक्ष्य या सुसंगत दस्तावेज प्रस्तुत करने की संभावना है।
- (3) यदि उपनियम (2) में निर्दिष्ट हकदार व्यक्ति कोई निगमित निकाय, कोई कम्पनी या कोई अन्य संगठन, संगम, व्यक्तियों का समूह है, तो ऐसे समूह को किसी प्राधिकृत प्रतिनिधि जिसके अंतर्गत कांउसेल या सोलीसीटर भी है के माध्यम से प्रतिनिधित्व किया जा सकता है।
- (4) उपनियम (5) के उपबंधों के अधीन रहते हुए जांच सार्वजनिक रूप से की जाएगी।
- (5) ऐसी दशाओं में जहां —
- (क) राज्य सरकार की यह राय है कि जांच के विषय या उसका कोई भाग ऐसी प्रकृति के हैं कि सार्वजनिक रूप से जांच करना राष्ट्र की सुरक्षा के हितों के प्रतिकूल होगी और यथास्थिति उक्त प्राधिकारी की जांच उक्त अधिकारी को बन्द कमरे में जांच करने का निर्देश देती है; या
- (ख) जांच के किसी पक्षकार द्वारा उसको लिए गए आवेदन पर, उपनियम (1) में निर्दिष्ट, यथास्थिति, प्राधिकारी या जांच अधिकारी, यदि उसकी यह राय है कि सार्वजनिक जांच करने से किसी व्यवसाय गुप्त से संबंधित जानकारी का प्रकटीकरण होगा, उस जांच या इसके ऐसे भाग की जांच बन्द कमरे में करने का विनिश्चय करता है तो ऐसी जांच सार्वजनिक रूप से नहीं की जाएगी।
- (6) सुनवाई के दौरान किसी व्यक्ति द्वारा प्रकट की गई जानकारी या उपनियम (5) के अंतर्गत आने वाले मामलों में साक्ष्य, जांच के प्रयोजन सिवाए किसी व्यक्ति को प्रकट नहीं की जाएगी।
- (7) किसी जांच में साक्ष्य या व्यपदेशन देने के लिए बुलाया गया उपनियम (2) के अधीन हाजिर होने का हकदार व्यक्ति, केवल जांच करने वाले प्राधिकारी या जांच अधिकारी द्वारा अनुज्ञात सीमा तक और अवस्था पर ही प्रारंभिक कथन करने, साक्ष्य देने, विनिर्दिष्ट दस्तावेज या साक्ष्य के लिए मांग करने के लिए जांच अधिकारी को अनुरोध करने अन्य व्यक्ति की साक्ष्य की प्रति परीक्षा करने का हकदार होगा।
- (8) किसी जांच का कोई भी साक्ष्य जांच के दौरान प्राधिकारी या जांच अधिकारी के विवेकाधिकार पर ही ग्रहण किया जायेगा जो यह भी निर्देश दे सकेगा कि साक्ष्य में पेश किए जाने वाले दस्तावेजों को किसी हकदार या ऐसी जांच में हाजिर होने के लिए अनुज्ञात व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जा सकेगा और यह कि उनकी प्रतियां लेने या प्राप्त करने के लिए ऐसे व्यक्ति को सुविधाएं प्रदान की जा सकेंगी।
- (9) प्राधिकारी या जांच करने वाला जांच अधिकारी किसी ऐसे व्यक्ति को, जो राज्य सरकार का अधिकारी है, जहां आवश्यक हो, जांच करने के प्रयोजन के लिए ऐसे प्राधिकारी या जांच अधिकारी की सहायता करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा; और इस प्रकार प्राधिकृत किया गया अधिकारी संबद्ध स्थापना के परिसर में कार्य के घंटों के दौरान प्रवेश कर सकेगा, और ऐसी जांच से सुसंगत अभिलेखों का निरीक्षण कर सकेगा, अन्वेषण कर सकेगा और ऐसे साक्ष्य ले सकेगा जो ऐसी जांच करने के लिए अपेक्षित हों।
- (10) गवाहों के कथनों सहित, मूल रूप में सभी साक्ष्यों के साथ जांच के निष्कर्षों को, ऐसे मामलों में, जहां उप जांच ऐसे प्राधिकारी द्वारा स्वयं नहीं की गई थी, जांच की समाप्ति के पांच दिन के भीतर अधिनियम की धारा 39 के अधीन विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को भेज दिया जाएगा।
- (11) इस नियम के अधीन की गई जांच से संबंधित तथ्यों के संक्षिप्त विवरण के साथ, निष्कर्षों की एक प्रति मुख्य निरीक्षक और राज्य सरकार को नियम 276 के उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा भेजी जाएगी।

अध्याय - VII

भाग - XVIII

विस्फोटक

278. धारा 40 विस्फोटकों की उठाई-धराई — नियोजक भवन या सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि —

- (क) सभी विस्फोटकों की उठाई-धराई, उपयोग या भंडारण ऐसे विस्फोटकों के विनिर्माता द्वारा दिए गए अनुदेशों और सामग्री आंकड़े शीट के अनुसार किए जाते हैं।
- (ख) विस्फोटकों का उपयोग किसी भी व्यक्ति को क्षति से बचाने के लिए सुरक्षित रीति से और किसी जिम्मेदार व्यक्ति के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के अधीन किया जाता है।
- (ग) किसी विस्फोटक के उपयोग से पूर्व, आवश्यक चेतावनी और खतरा के संकेत भवन कर्मचारों और साधारण जनता को ऐसे उपयोग में अंतर्गत खतरे की चेतावनी देने के लिए, ऐसे उपयोग के सहन दृश्य स्थानों पर परिनिर्मित किए जाते हैं।

279. धारा 40 पूर्वावधानियां— नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि—

- (क) नियम 278 के उपबंधों के होते हुए भी, ऐसे विस्फोटकों के परिवहन, उठाई-धराई, भंडारण और उपयोग के स्थानों पर, निम्नलिखित पूर्वावधानियों का पालन किया जाता है, अर्थात्:-
- (i) जहां विस्फोटकों की उठाई-धराई, भंडारण और उपयोग किया जाता है उसके आस-पास में धूम्रपान, खुली बत्तियाँ और अन्य ज्वलन के स्रोतों का प्रतिषेध;
 - (ii) विस्फोटकों के पैकजों को खोलते समय सुरक्षित दूरी रखना तथा चिनगारी न छोड़ने वाले औजारों का उपयोग करना;
 - (iii) जब मौसम के हालात ऐसे उपयोग या उठाई-धराई के लिए उपयुक्त नहीं हों तो विस्फोटकों के उपयोग और उनकी उठाई-धराई को बंद रखना;
- (ख) इस अध्याय के उपबंधों के अतिरिक्त विस्फोटक अधिनियम, 1884 (1884 का 4), के अधीन बनाए गए नियम के अधीन विस्फोटकों के उपयोग, उठाई-धराई, भंडारण या परिवहन के लिए पालन किए जाने वाले सभी अपेक्षित उपायों और पूर्वावधानियों का अनुपालन किया जाता है।

अध्याय VII

भाग - XIX

पाइलिंग

280. धारा 40 साधारण उपबंध- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि:-

- (क) सभी पाइल चालन उपस्कर एर्गोनोमिक सिद्धांतों का विचार करते हुए अच्छी डिजाइन और ठोस सन्निर्माण के हैं तथा उपयुक्त रूप से पोषित किए जाते हैं;
- (ख) पाइल चालक को किसी भारी काष्ठ सिल कंक्रीट बैठ या अन्य सुरक्षित आधार पर मजबूत सहारा दिया जाता है;
- (ग) यदि किसी पाइल ड्राइवर के किसी विद्युत कंडक्टर के खतरनाक सामीप्य में परिनिर्मित किए जाने की अपेक्षा की जाती है तो सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक पूर्वावधानियां ली जाती हैं;
- (घ) वाष्प के हौज और वायु हथौड़ा ऐसे हथौड़े से मजबूती से बांध दिए जाते हैं ताकि कनेक्शन या ब्रेक की दशा में कशाताड़न से उनको रोका जा सके;
- (ङ) पाइल चालक को उलटने से रोकने के लिए यथोचित पूर्वावधानी ली जाती है;
- (च) हथौड़े को पाइल से चूकने से रोकने के लिए समस्त आवश्यक पूर्वावधानी ली जाती है;
- (छ) पाइल चालन उपस्कर के निरीक्षण के लिए जिम्मेदार व्यक्ति इसके उपयोग में लेने से पूर्व ऐसे उपस्कर का निरीक्षण करता है और ऐसे उपस्कर द्वारा पाइलिंग कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भवन कर्मचारों की सुरक्षा के लिए यथा अपेक्षित समस्त समुचित उपाय लेता है।

281. धारा 40 पार्श्वस्थ संरचना की स्थिरता- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि जहां संरचना की स्थिरता का कोई प्रश्न है उसके साथ लगे हुए क्षेत्र के लिए पाइल किए जाने के लिए जिसका ऐसी संरचना को, जहां आवश्यक हो, अंदर पाइलिंग शीट पाइलिंग, शोरिंग ब्रासिंग द्वारा या ऐसी संरचना की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के और किसी व्यक्ति की क्षति रोकने के लिए अन्य साधनों का सहारा दिया जाता है ;

282. धारा 40 आपरेटर का संरक्षण- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर वह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक पाइल चलन उपस्कर का आपरेटर वस्तुओं, वाष्प, सिंडरों या पानी गिरने से सारत आवरक द्वारा या अन्यथा या अन्य साधकों द्वारा संरक्षित है।

283. धारा 40 पाइल चालन उपस्कर पर कार्य करने वाले भवन निर्माण कर्मचारों को अनुदेश तथा उनका पर्यवेक्षण- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि पाइल चलन उपस्कर पर कार्य करने वाले प्रत्येक कर्मकार को पाइलिंग प्रचालन में अनुसरण की जाने वाली सुरक्षित कार्य प्रक्रिया के विषय में अनुदेश दे दिया जाता है और ऐसे समस्त कार्य के दौरान किसी जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा पर्यवेक्षित होता है।

284. धारा 40 अप्राधिकृत व्यक्ति का प्रवेश- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि सभी पाइलिंग क्षेत्र जहां पाइल चालन उपस्कर उपयोग में हैं, अप्राधिकृत व्यक्तियों का प्रवेश रोकने के लिए प्रभावी रूप से परिवेष्टित कर दिए जाते हैं।

285. धारा 40 पाइल चलन उपस्कर का निरीक्षण और अनुरक्षण- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि:-

- (क) पाइल-चालन उपस्कर, जब तक किसी जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा इसका निरीक्षण नहीं कर लिया गया है और ऐसे उपयोग के लिए सुरक्षित होना नहीं पाया गया है उपयोग में नहीं लिया जाता है;
- (ख) उपयोग में चल रहे पाइल-चालन उपस्कर का ऐसे उपस्कर पर कार्य करने वाले भवन निर्माण कर्मकार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त अंतरालों पर ऐसे निरीक्षण के लिए जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जाता है;
- (ग) सभी पाइल लाइनों और पुल्ली ब्लाकों का पाइलिंग प्रचालन की प्रत्येक पारी के शुरू होने से पूर्व किसी जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जाता है।

286. धारा 40 पाइल-चालन उपस्कर का प्रचालन- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि:-

- (क) केवल अनुभवी और प्रशिक्षित भवन निर्माण कर्मकार ही पाइल-चालन प्रचालित करता है ताकि ऐसे प्रचालन से किसी अधिसंभाव्य खतरे से बचा जा सके;
- (ख) पाइल-चालन संक्रियाएं साधारणतः प्रचालित या स्वीकृत संकेतों से शासित होती हैं ताकि ऐसी संक्रियाओं में अधिसंभाव्य खतरा रोका जा सके;
- (ग) पाइल-चालन प्रचालन में नियोजित या ऐसे पाइल-चालन प्रचालन के सामीप्य में भवन निर्माण कर्मकार कर्ण परिमाण और सुरक्षा हेल्मेट या सख्त टोप और सुरक्षा जूते पहनता है।
- (घ) पाइल चालन संक्रियाओं के स्थान से कम से कम सबसे लम्बे पाइल की लम्बाई की दुगुनी लम्बाई के बराबर की दूरी पर पाइल तैयार किए जाते हैं;
- (ङ) जब कोई पाइल चालक प्रयोग में नहीं है ऐसे पाइल चालक का हथौड़ा ऐसे पाइल चालक के सिरों के पेंदे पर निरुद्ध कर दिया जाता है।

287. धारा 40 पाइलिंग चौखटों पर कार्यकरण प्लेटफार्म- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि जहां कोई संरचनात्मक बर्ज पाइल-चालक के शीशा को सहारा देती है, वहां ऐसे शीशों के समतलों पर यथोचित ताकत के उपयुक्त कार्यकरण प्लेटफार्मों की व्यवस्था की जाती है जो कि भवन निर्माण कर्मकारों के लिए काम करने के लिए आवश्यक है और ऐसे पाइल चालक के हथौड़े या ऐसे प्लेटफार्म के शीशा के पार्श्वों को छोड़कर ऐसे प्लेटफार्मों में सुरक्षा रेलिंग और ऐसे प्लेटफार्मों की प्रत्येक पार्श्व पर दो बोर्ड लगाए जाते हैं और जहां ऐसे प्लेटफार्मों में ऐसी रेलिंग और दो बोर्डों की व्यवस्था नहीं की जा सकती, वहां प्रत्येक ऐसे भवन निर्माण कर्मकार को एक सुरक्षा बेल्ट प्रदान की जाती है।

288. धारा 40 पाइल परीक्षण- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि:-

- (क) पाइल का परीक्षण ऐसे परीक्षण के लिए जिम्मेदार व्यक्ति के पर्यवेक्षण के अधीन संचालित किया जाता है;
- (ख) जहां पाइल परीक्षण किया जाता है वहां सभी यथा साध्य उपाय जैसे चेतावनी, सूचनाओं का प्रदर्शन, क्षेत्र का अवरुद्ध करना और अन्य इसी प्रकार के उपाय क्षेत्र की संरक्षा के लिए किए जाते हैं;
- (ग) सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पाइल परीक्षण क्षेत्र में साधारण जनता का प्रवेश प्रतिषिद्ध किया जाता है।

अध्याय VIII

मुख्य निरीक्षक और निरीक्षकों की शक्तियां

289. धारा 42 विशेषज्ञ, अभिकरण रखने की शक्ति-(1) मुख्य निरीक्षक जैसा आवश्यक समझे सिविल इंजीनियरी, संरचनात्मक इंजीनियरी, स्थापत्यकला तथा उपजीविकाजन्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण की अन्य शाखाओं के क्षेत्र से किसी निरीक्षण, अन्वेषण या किसी दुर्घटना या किसी खतरनाक घटना या अन्यथा के कारण जांच करने के संचालन के प्रयोजन के लिए जब भी अपेक्षित हो विशेषज्ञ या अभिकरण रख सकेगा।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास-

- (क) किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से सुसंगत क्षेत्र में डिग्री होगी;
- (ख) सुसंगत क्षेत्र में दस साल से अनूयुक्त का कार्यकरण का अनुभव होगा, जिसमें से कम से कम पांच वर्ष का उपजीविकाजन्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में होगा

(3) उपनियम (1) में निर्दिष्ट अभिकरण सुसंगत क्षेत्र में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की होगी और सुसंगत विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत होगी।

(4) राज्य सरकार समय-समय पर उपनियम (1) में निर्दिष्ट विशेषज्ञों और अभिकरणों का पैनल तैयार कर सकेगी।

(5) उपनियम (1) के अधीन नियोजित इंजीनियर या विशेषज्ञ या अभिकरण को ऐसे यात्रा भत्ते या दैनिक भत्तों का संदाय किया जाएगा जो उसे उसके संगठन द्वारा अनुज्ञात हैं जहां वह नियोजित है या ऐसा यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ता जो राज्य सरकार के श्रेणी-1 के रैंक के अधिकारी को अनुज्ञेय है।

(6) उपनियम (5) में निर्दिष्ट किसी इंजीनियर या वास्तुविद या अभिकरण को यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ता के साथ-साथ उनकी समय-समय पर ऐसी दरों पर भानदेय का भी संदाय किया जाएगा जो राज्य सरकार राजपत्र में अधिसूचना द्वारा समय-समय पर विनिर्दिष्ट करती हैं।

290. धारा 43 निरीक्षकों की शक्तियां—(1) निरीक्षक ऐसा स्थानीय सीमाओं के भीतर जिसके लिए वह नियुक्त किया जाता है भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर—

- (i) ऐसे भवन या सन्निर्माण कार्य के लिए उपयोग किए गए या उपयोग किए जाने वाले ऐसे सन्निर्माण स्थल या स्थान या परिसर का परीक्षण कर सकेगा;
- (ii) किसी व्यक्ति की ऐसी साक्ष्य घटना स्थल पर या अन्यथा से ले सकेगा कि जिसे वह प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसे भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य के संबद्ध किसी परीक्षण या जांच के प्रयोजन के लिए आवश्यक समझता है;
- (iii) परन्तु ऐसे व्यक्ति को किसी प्रश्न के जवाब के लिए या उसे अपराध में फंसाने के लिए उन्मुख किसी साक्ष्य देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।
- (iv) फोटोचित्र, वीडियो क्लिप्स, सेम्पल वजन या माप या अभिलेख ले सकेगा या ऐसे रेखाचित्र बना सकेगा जो इन नियमों के अधीन किसी परीक्षण या जांच के प्रयोजन के लिए वह आवश्यक समझता है।
- (v) किसी ऐसी दुर्घटना या खतरनाक घटना के कारण की जांच कर सकेगा जिसके लिए उसके पास यह विश्वास करने के लिए कारण हैं कि वह ऐसे भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य से संबद्ध या किसी संकिया का परिणाम था या अधिनियम या इन नियमों के उपबंधों में से किसी का अनुपालन का परिणाम था।

(2) निरीक्षक ऐसी स्थानीय सीमाओं के भीतर जिसके लिए वह नियुक्त किया जाता है अधिनियम या नियमों के अधीन उपबंधित भवन निर्माण कर्मकारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य या कल्याण के विषय में नियोजकों को कारण बताओ सूचना या चेतावनी जारी कर सकेगा।

(3) निरीक्षक ऐसी स्थानीय सीमाओं के भीतर जिसके लिए वह नियुक्त किया जाता है अधिनियम के अधीन किसी अपराध के संबंध में अधिकारिता वाले न्यायालय में कोई परिवाद या अन्य कार्यवाही फाइल कर सकेगा।

(4) निरीक्षक ऐसी स्थानीय सीमाओं के भीतर जिसके लिए वह नियुक्त किया जाता है इन नियमों के उपबंधों के अनुसार किसी ठेकेदार या किसी नियोजक को भवन निर्माण कर्मकारों की स्वास्थ्य परीक्षा करवाने के लिए निदेश दे सकेगा।

(5) निरीक्षक ऐसी स्थानीय सीमाओं के भीतर जिसके लिए वह नियुक्त किया जाता है भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल के पर्यवेक्षण तथा नियंत्रण की शक्ति वाले यथास्थिति किसी व्यक्ति या ऐसे सन्निर्माण स्थल के नियोजक, परियोजना, भार साधक या स्थल भार साधक में ऐसे साधन या सहायता उपलब्ध करवाये जाने की अपेक्षा कर सकेगा जो अधिनियम की धारा 43 की उपधारा (1) या ऐसे सन्निर्माण स्थल या परियोजना से संबंधित इस नियम के अधीन उसकी शक्तियों का प्रयोग करने के लिए ऐसे निरीक्षक द्वारा प्रवेश, निरीक्षण, परीक्षण या जांच के लिए अपेक्षित हैं।

291. धारा 43 प्रतिषेध आदेश—(1) यदि निरीक्षक को यह प्रतीत होता है कि किसी ऐसे स्थल या स्थान जिस पर कोई भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य किया जा रहा है जो ऐसी हालत में है कि भवन कर्मकारों या आम जनता के जीवन, सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है तो वह लिखित में भवन निर्माण कर्मकारों के नियोजक पर या उस स्थापना के स्वामी पर या उस स्थल या स्थान के प्रभारी व्यक्ति पर ऐसे स्थल या स्थान पर किसी भवन या निर्माण कार्य को प्रतिषिद्ध करते हुए आदेश तामील कर सकेगा जब तक कि उसे समाधानपूर्ण रूप में खतरे के कारण को दूर करने के लिए उपाय नहीं कर लिए जाते हैं।

(2) उपनियम (1) के अधीन आदेश तामील करने वाला निरीक्षक मुख्य निरीक्षक को एक प्रति पृष्ठांकित करेगा।

(3) ऐसे प्रतिषेध आदेश का नियोजक द्वारा तुरन्त पालन किया जाएगा।

(4) यदि ऐसे आदेश की स्थापना या भार साधक व्यक्ति द्वारा 24 घण्टे के सुसंगत समय के भीतर अनुपालना नहीं की जाती है तो निरीक्षक किसी लोक सेवक, जिसमें पुलिस शामिल है, की सहायता से प्रतिषेध आदेश लागू करेगा।

(5) किसी प्रतिषिद्ध आदेश की अवज्ञा भारतीय दंड संहिता, 1860 (1860 का 45), की धारा 188 के अधीन दण्डनीय होगी।

(6) उपनियम (1) के अधीन किसी आदेश द्वारा व्यथित कोई व्यक्ति उस तारीख से जिसको उसे ऐसा आदेश संसूचित किया जाता है, पन्द्रह दिन के भीतर मुख्य निरीक्षक को या जहां ऐसा आदेश मुख्य निरीक्षक द्वारा सचिव, राज्य सरकार, श्रम को अपील कर सकेगा और यथास्थिति मुख्य निरीक्षक या सचिव अपीलेंट को सुने जाने का अवसर देने के पश्चात् यथासंभव शीघ्रता से अपील का निपटारा करेगा :

परन्तु यथास्थिति मुख्य निरीक्षक या सचिव का यदि यह समाधान हो जाता है कि अपीलेंट द्वारा समय के भीतर अपील फाइल न करने का पर्याप्त कारण था तो वह पन्द्रह दिन की उक्त समयावधि की समाप्ति के पश्चात् अपील ग्रहण कर सकेगा :

परन्तु यह और कि प्रतिषेध आदेश का मुख्य निरीक्षक तथा सचिव, राज्य सरकार श्रम के विनिश्चय तक पालन किया जाएगा।

अध्याय IX

भाग - I

विशेष प्रावधान

(विनियोजकों, वास्तुविदों, परियोजना इंजीनियरों और डिजाइनरों, भवन कर्मचारियों आदि के दायित्व और कर्तव्य)

292. धारा 44 विनियोजकों, कर्मचारियों और अन्य के कर्तव्य और दायित्व- (1)- ऐसे प्रत्येक नियोजक का जो भवन या अन्य सन्निर्माण से संबंधित या उसके आनुषंगिक ऐसी किन्हीं संक्रियाओं या संकर्मों को कर रहा है, जिसे यह नियम लागू होते हैं यह कर्तव्य होगा कि वह-

(क) इन नियमों की ऐसी अपेक्षाओं की पालना करे जो उससे संबंधित हैं :

परन्तु यह कि इस खण्ड की अपेक्षाएं किसी भवन कर्मकार को प्रभावित नहीं करेंगी यदि और जब तक किसी कार्यस्थल में उसकी उपस्थिति उसके नियोजक के निमित्त किसी कार्य को करने के अनुक्रम में नहीं है और उसे उसके नियोजक द्वारा कार्य करने के लिए अभिव्यक्त रूप से या विवक्षित रूप से प्राधिकृत या अनुज्ञात नहीं किया गया है; और

(ख) इन नियमों की उन अपेक्षाओं की अनुपालना करे जो उसके द्वारा किए गए या किए जाने वाले किसी कार्य, कृत्य या संक्रिया के संबंध में उससे संबंधित है;

(2) प्रत्येक नियोजक का, जो किसी मचान का परिनिर्माण या उसमें परिवर्तन करता है, इन नियमों के उपबन्धों की ऐसी अपेक्षाओं को अनुपात करने का कर्तव्य होगा जिसका संबंध ऐसे प्रयोजन या प्रयोजनों का ध्यान रखते हुए जिसके लिए परिनिर्माण या परिवर्तन करने के समय मचान को डिजाइन किया गया था, मचान के परिनिर्माण या परिवर्तन से है; और ऐसा नियोजक, जो किसी ऐसे संयंत्र या उपस्कर का परिनिर्माण संस्थापन कार्य का उपयोग करता है, जिसे इन नियमों का कोई उपबन्ध लागू होता है, ऐसे संयंत्र या उपस्कर का परिनिर्माण, संस्थापन, कार्य या उपयोग ऐसी रीति से करेगा, जो उन उपबन्धों की अनुपालना में हो।

(3) जहां कोई ठेकेदार, जो ऐसी किसी संक्रिया या संकर्म का वचनबद्ध करता है जिसे ये नियम लागू होते हैं, सेवाओं के लिए संविदा के अधीन कोई कार्य या सेवा को करने के लिए किसी कारीगर, व्यापारी या अन्य व्यक्ति को नियुक्त करता है तो ठेकेदार का यह कर्तव्य होगा कि वह इन नियमों की ऐसी अपेक्षाओं की अनुपालना करे जो उक्त कारीगर, व्यापारी या अन्य व्यक्ति को प्रभावित करती हैं और इस प्रयोजन के लिए इन नियमों में किसी कर्मचारी के प्रति निर्देश अन्तर्गत ऐसे कारीगर, व्यापारी या अन्य व्यक्ति के प्रति निर्देश होगा और ठेकेदार उसका नियोजक समझा जाएगा।

(4) प्रत्येक कर्मचारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इन नियमों की ऐसी अपेक्षाओं की अनुपालना करे जो उसके द्वारा किसी कृत्य को करने या उससे विरत रहने से और इन नियमों को क्रियावित करने में सहयोग करने से संबंधित है।

(5) प्रत्येक नियोजक का यह कर्तव्य होगा कि वह किसी कर्मचारी को कोई ऐसी बात करने के लिए अनुज्ञात न करे जो राज्य सरकार द्वारा तथा विनिर्दिष्ट भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य से संबंधित मानक सुरक्षित प्रचालन व्यवहारों के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसार न हो।

(6) कोई कर्मचारी, कोई ऐसी बात नहीं करेगा जो राज्य सरकार द्वारा यथा विनिर्दिष्ट भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य से संबंधित मानक सुरक्षा प्रचालन व्यवहारों के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसार नहीं है।

(7) किसी भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य से संबंधित कोई व्यक्ति जान बूझ कर ऐसा कोई कृत्य नहीं करेगा जिससे उसे या किसी अन्य व्यक्ति को हानि पहुंचे।

(8) प्रत्येक नियोजक का यह कर्तव्य होगा कि वह किसी भवन कर्मकार द्वारा प्रयोग करने के लिए ऐसे उत्पादक साधित्र, उत्पादक गियर, उत्पादक युक्ति, परिवहन उपस्कर, यान या किसी अन्य युक्ति या उपस्कर के उपयोग को अनुज्ञात न करे जो इन नियमों में दिए गए उपबन्धों के अनुरूप न हो।

(9) नियोजक का यह कर्तव्य होगा कि वह शौचालयों, मूत्रालयों धोवन सुविधाओं और कैंटीन को स्वच्छ और स्वास्थ्यकर परिस्थितियों में बनाए रखे। कैंटीन ऐसे स्थान पर होगा जो शौचालयों और मूत्रालयों और प्रदूषित वातावरण से दूर हों और साथ ही साथ भवन कर्मकारों की सहज पहुंच में हो।

(10) नियोजक का यह कर्तव्य होगा कि वह इन नियमों के अनुसार किसी अवधि के लिए मजदूरी के संदाय के लिए उसके द्वारा नियत और अधिसूचित तारीखों का पालन करें और ऐसी तारीखों और ऐसी अवधि में कोई परिवर्तन भवन कर्मकारों और निरीक्षक को सूचना के बिना प्रभावी नहीं किया जाएगा। नियोजक इन नियमों के अधीन विनिर्दिष्ट यथा समय और उसके द्वारा अधिसूचित स्थान और समय पर मजदूरी के संदाय सुनिश्चित करेगा। जहां कोई नियोजक ठेकेदार हों वहां वह यह सुनिश्चित करेगा कि भवन कर्मकारों को मजदूरी का संदाय स्थापन के नियोजक या परिसर के स्वामी के जिससे उसने ठेके पर कार्य प्राप्त किया है, प्रतिनिधि की उपस्थिति में किया जाता है, और ऐसे प्रतिनिधि के हस्ताक्षर मजदूरी के संदाय के साक्ष्य के प्रतीक स्वरूप प्राप्त करेगा।

(11) नियोजक का यह कर्तव्य होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि उसके द्वारा लिए गए भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य में प्रयुक्त उत्थापक साधित्र, उत्थापक गियर, मिट्टी हटाने वाले उपस्कर, परिवहन उपस्कर या यान, इन नियमों के अधीन यथा उपबन्धित ऐसे उपस्कर के परीक्षण, परीक्षा और जांच संबंधित अपेक्षाओं के अनुरूप हों। सरकार या किसी स्थानीय या अन्य लोक प्राधिकारी की सेवा में प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होगा कि वह इन नियमों में दी गई उससे संबंधित अपेक्षाओं की अनुपालना करे।

293. धारा 40 वास्तुविदों, परियोजना इंजीनियरों और डिजाइनरों के उत्तरदायित्व— (1) किसी परियोजना या उसके भाग या किसी भवन या अन्य धारा सन्निर्माण कार्य की डिजाइन के लिए उत्तरदायी वास्तुविद, परियोजना इंजीनियर या डिजाइनर का यह कर्तव्य होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि योजना प्रक्रम पर ऐसे भवन कर्मकारों की सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी बातों पर सम्यक् रूप से ध्यान दिया जाता है जो यथास्थिति, ऐसी परियोजनाओं और संरचनाओं के परिनिर्माण, प्रचालन और निष्पादन में नियोजित हैं।

(2) परियोजना में अंतर्गृहीत वास्तुविद, परियोजना इंजीनियर और अन्य वृत्तिकों द्वारा इस बात की पर्याप्त सतर्कता बरती जाएगी कि डिजाइन में ऐसी कोई बात सम्मिलित न की जाए जिसमें ऐसी खतरनाक संरचना या अन्य प्रक्रिया या सामग्री का प्रयोग अन्तर्वर्तित हो, जो, यथास्थिति परिनिर्माण, प्रचालन और निष्पादन के अनुक्रम के दौरान भवन कर्मकारों के स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए परिसंकटमय हो।

(3) भवनों, संरचनाओं या अन्य सन्निर्माण परियोजनाओं की डिजाइन में अन्तर्वर्तित वृत्तिकों का यह भी कर्तव्य होगा कि संरचनाओं और भवनों के अनुरक्षण और रखरखाव से सहबद्ध सुरक्षा संबंधी पहलुओं को ध्यान में रखे जहां अनुरक्षण और रखरखाव विशेष जोखिम वाला है।

294. धारा 40 कर्मकारों के कर्तव्य और दायित्व— (1) प्रत्येक भवन कर्मकार का यह कर्तव्य होगा कि वह इन नियमों की ऐसी अपेक्षाओं की अनुपालना करे जो उससे संबंधित हैं और इन नियमों की अपेक्षाओं के क्रियान्वयन के लिए और सहयोग करे और यदि वह परिवहन उपस्कर या अन्य उपस्करों से संबंधित उत्थापक साधित्र, उत्थापक गियर, उत्थापक युक्ति में कोई त्रुटि पाता है तो बिना अनुचित विलम्ब के ऐसी त्रुटियों की रिपोर्ट उसके नियोजक या फोरमैन या प्राधिकारवान किसी अन्य व्यक्ति को करे।

(2) कोई भवन कर्मकार, जब तक कि सम्यक् रूप से प्राधिकृत न हो या आवश्यकता की दशा में के सिवाय, ऐसी किसी बाड़, मार्गिका, गियर, नसैनी, हैच छादन, जीवन रक्षक साधित्र, प्रकाश या कोई भी अन्य वस्तुएं जिनका उपबन्ध किया जाना अधिनियम और इन नियमों द्वारा अपेक्षित हो, नहीं हटाएगा या उनसे छेड़छाड़ नहीं करेगा। यदि पूर्वोक्त किसी वस्तु को हटाया जाता है तो ऐसी वस्तु ऐसी अवधि की समाप्ति पर जिसके दौरान उसका हटाया जाना आवश्यक था, उक्त कार्य में लगे व्यक्तियों द्वारा प्रत्यावर्तित की जाएगी।

(3) प्रत्येक भवन कर्मकार, प्रवेश के केवल ऐसे साधनों का उपयोग करेगा जिनका उपबन्ध इन नियमों के अनुसार किया गया है और कोई व्यक्ति, किसी अन्य व्यक्ति को ऐसे प्रवेश के साधनों से भिन्न प्रवेश के साधनों का उपयोग करने के लिए प्राधिकृत या आदेशित नहीं करेगा।

(4) भवन कर्मकार का यह कर्तव्य होगा कि वह उसके कल्याण सुनिश्चित करने के लिए नियोजक द्वारा उपबन्धित शौचालय, मूत्रालय, धोवन बिन्दु, कैटीन और अन्य सुविधाओं की स्वच्छ और स्वास्थ्यकर स्थितियों में रखे।

295. धारा 40 छूट— राज्य सरकार, लिखित में आदेश द्वारा और ऐसी शर्तों के अधीन और ऐसी अवधि के लिए जो इसमें विनिर्दिष्ट की जाए, इन नियमों की सभी या किसी अपेक्षा से निम्नलिखित को छूट दे सकेगी —

(क) कोई भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य, यदि ऐसी सरकार का यह समाधान हो जाता है कि ऐसा भवन कार्य ऐसे कर्मकारों तक सीमित है जहां इन नियमों में उपबन्धित उपायों का किया जाना सुविधाकारक नहीं है, या

(ख) कोई साधित्र, गियर, उपस्कर, यान या अन्य युक्ति, यदि ऐसी सरकार का यह समाधान हो जाता है कि ऐसे साधित्र, गियर, उपस्कर, यान या अन्य युक्ति की अपेक्षाएं प्रयोग के लिए आवश्यक नहीं हैं या उसके बदले में समान रूप से प्रभावी उपाय कर लिए गए हैं;

परन्तु ऐसी सरकार इस नियम के अधीन तब तक छूट नहीं देगी जब तक कि यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी छूट, भवन कर्मकारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं करेगी।

अध्याय IX**भाग - II****मजदूरी**

296. धारा 45 मजदूरी का संदाय- नियोजक भवन या सन्निर्माण कार्य करने के लिए निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) ऐसे सन्निर्माण स्थल पर जहां ऐसे भवन निर्माण कर्मकार एक हजार से कम नियोजित किए जाते हैं, वहां नियोजित किए गए प्रत्येक भवन निर्माण कर्मकार की मजदूरी का उस समयावधि जिसकी बाबत ऐसी मजदूरी संदेय है के सातवें दिन की समाप्ति से पूर्व संदाय किया जाता है और अन्य दशाओं में उस समयावधि जिसकी बाबत ऐसी मजदूरियां संदेय हैं, के अंतिम दिन के पश्चात् दसवें दिन की समाप्ति से पूर्व संदाय किया जाता है ;
- (ख) यदि ऐसे भवन निर्माण कर्मकार का नियोजन ऐसे नियोजक द्वारा या उसकी ओर से समाप्त किया जाता है, तो ऐसे भवन निर्माण कर्मकार द्वारा अर्जित मजदूरियों का संदाय उस दिन से, जिसको ऐसे भवन निर्माण कर्मकार का नियोजन समाप्त किया जाता है, द्वितीय कार्यकरण दिन को समाप्ति से पूर्व संदाय किया जाता है;
- (ग) मजदूरियों के सभी संदाय ऐसे सन्निर्माण स्थल पर और कार्यकरण समय के दौरान और पहले से ही अधिसूचित तारीख को कार्यकरण दिन में किए जाते हैं और यदि कार्य पूरा हो जाता है तो ऐसे कार्य समापन के अड़तालीस घंटों के भीतर मजदूरियों का अंतिम संदाय किया जाता है।

297. धारा 62 मजदूरियों के संदाय की तारीख के बारे में मजदूरी की सूचनाओं का प्रदर्शन- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसी कालावधि जिसके लिए मजदूरियों का संदाय किया जाता है ऐसी मजदूरियों के वितरण के स्थान और समय को दर्शाने वाली एक सूचना अंग्रेजी, हिन्दी और ऐसे सन्निर्माण स्थल पर नियोजित भवन निर्माण कर्मकारों की बहुसंख्या द्वारा समझी जाने वाली स्थानीय भाषा में ऐसे सन्निर्माण स्थल के सहज दृश्य स्थान पर संप्रदर्शित की जाती है।

अध्याय IX**भाग - III****भारतीय मानक ब्यूरो को सूचना**

298. धारा 40 भारतीय मानक ब्यूरो को सूचना देना- नियोजक भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के निर्माण स्थल पर यह सुनिश्चित करेगा कि-

- (क) भवन या अन्य सन्निर्माण परियोजना के निष्पादन में अंतर्ग्रस्त प्रत्येक वास्तुविद और अन्य वृत्तिक जैसे संरचना इंजीनियर या परियोजना इंजीनियर भवन निर्माण सामग्री, वस्तुओं या ऐसे भवन में उपयोग की गई प्रक्रिया के संपादन और विचलन या कमी यदि कोई हो, तथा अन्य सन्निर्माण परियोजन जिसके लिए भारतीय मानक पहले से ही उपलब्ध हैं के विषय में ब्यूरो भारतीय मानक ब्यूरो को देता है;
- (ख) खंड (क) में निर्दिष्ट वास्तुविद और अन्य वृत्तिक भवन निर्माण सामग्री, वस्तुओं या ऐसे भवन में उपयोग की गई प्रक्रियाओं तथा अन्य ऐसे सन्निर्माण कार्य कलाप जिसके लिए भारतीय मानक ब्यूरो के साथ भारतीय मानक विद्यमान नहीं हैं और ऐसी सामग्री वस्तुओं या प्रक्रियाओं के संपादन के ब्यूरो, भारतीय मानक ब्यूरो के विचार करने और आवश्यक मानक स्थापित करने में उसे समर्थ बनाने के लिए उनके सुधार के लिए सुझावों के साथ भारतीय मानक ब्यूरो को जानकारी देता है।

अनुसूची I

(देखिए नियम 90)

निरन्तर शोर के मामलों में अनुज्ञेय उच्छन्न

उच्छन्न का कुल समय (निरन्तर अथवा अल्पकालीन उच्छन्नों की संख्या) प्रतिदिन (घंटों में)	ध्वनि दाब स्तर (डी.बी.ए. में)
(1)	(2)
8	90
6	92
4	95
3	97
2	100
1/2	102
1	105
3/4	107
1/2	110
1/4	115

- टिप्पणियां : 1. 115 डी.बी.ए. से अधिक का कोई उच्छन्न अनुज्ञात नहीं है
2. उच्छन्न की किसी ऐसी अवधि के लिए, जो खाना 1 में उपदर्शित किसी अंक उसके निकटतम ऊपर वाले अथवा नीचे वाले अंक के बीच में आती है, ध्वनि दाब स्तर अनुपातिक आधार पर बहिर्बष्ण द्वारा निश्चित किया जाएगा।

अनुसूची II

[देखिए नियम 147 (iv) और 111(क) (iii)]

भवन निर्माण कर्मकारों की चिकित्सीय जांच की आवर्तिता

- नियोजक ऐसी सभी भवन निर्माण कर्मकारों की जो उत्पादक साधित्रों अथवा परिवहन उपस्करों में चालकों, आपरेटरों के रूप में नियुक्त हैं, नियुक्ति से पूर्व और बीमारी अथवा शारीरिक क्षति के पश्चात्, यदि यह प्रतीत होता है कि बीमारी अथवा शारीरिक क्षति उसकी समर्थता को प्रभावित किया है और उसके पश्चात् चालीस वर्ष की आयु तक प्रत्येक दो वर्ष में एक बार और तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष में एक बार चिकित्सीय जांच की व्यवस्था करेगा।
- चिकित्सीय जांच का संपूर्ण और गोपनीय अभिलेख नियोजक अथवा नियोजक द्वारा प्राधिकृत चिकित्सक रखेगा।
- चिकित्सीय जांच में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे—
 - संपूर्ण चिकित्सीय और उपजीविकीय इतिहास।
 - निम्न के प्रति विशिष्ट निर्देश में रोग विषयक जांच—
 - सामान्य शरीर गठन;
 - दृक्शक्ति—मानक और थेरेटर जैसे कि टिटमस दृक् शक्ति परीक्षक का उपयोग करके टोटल विजुअल जरफार्मस का प्राक्कलन किया जाएगा और विहित नौकरी मानकों के अनुसार नियोजन की उपयुक्तता अभिनिश्चित की जाएगी;

- (iii) श्रवण शक्ति—सामान्य श्रवण वाले व्यक्ति किसी फोर्सड सरगोशी को चौबीस फुट की दूरी से सुनने में समर्थ होने चाहिए। श्रवण सहाय प्रयोग में लाने वाला व्यक्ति कोलाहलपूर्ण कार्यकरण परिस्थितियों में चेतावनी पुकार सुनने में समर्थ होना चाहिए;
- (iv) श्वसन: मानक पीक फलो मीटर का प्रयोग करते हुए पीक फलो दर का और इस प्रकार की गई जांच के पाठ्यांकों से औसत पीक फलो दर का निर्धारण। पूर्व-नियोजन चिकित्सीय जांच के अभिलिखित परिणाम-उस व्यक्ति के, उसी उंचाई पर पश्चात्तर्वी जांचों के लिए मानक निर्देश के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं;
- (v) उपरी अंग: पर्याप्त बाजू कृत्य और पकड़ (दोनों बाजूओं की);
- (vi) निचला अंग: पर्याप्त टांग और पांव कृत्य;
- (vii) रीढ़ की हड्डी: संबंध नौकरी के लिए पर्याप्त लचीली;
- (viii) साधारण: अच्छे आंख, हांथ-पांव समन्वयन के साथ दिमागी सतर्कता और स्थिरता; और
- (ग) अन्य कोई परीक्षण जिसे जांच करने वाला डाक्टर आवश्यक समझता है।

अनुसूची - III (देखिए नियम 113)

परिसंकटमय प्रक्रिया :

- (1) छत कार्य।
- (2) इस्पात निर्माण।
- (3) पानी के भीतर और ऊपर कार्य।
- (4) विद्वंस करना ।
- (5) परिरुद्ध स्थानों में कार्य।

अनुसूची-IV [देखिए नियम 113(ख)]

व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में दी जाने वाली सेवाएं और सुविधाएं :

- (1) ऐसे भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में जो एक हजार तक कर्मकारों का नियोजन करता है, के लिए एक पूर्णकालिक निर्माण चिकित्सा अधिकारी और प्रत्येक अतिरिक्त एक हजार कर्मकारों और उसके भाग के लिए एक अतिरिक्त निर्माण चिकित्सा अधिकारी।
- (2) प्रत्येक निर्माण चिकित्सा अधिकारी के साथ पूर्ण कार्य-घंटों के लिए स्टाफ जिसमें एक नर्स, एक ड्रेसर एवं कंपाउंडर सफाई वाला एवं वार्ड -बॉर्ड सम्मिलित हैं।
- (3) व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र जिसका फर्श क्षेत्र के न्यूनतम पन्द्रह वर्ग मीटर हो जिस पर चिकनी दीवारों और इनपोतियश सेवा वाले दो कमरे बने हों और जो पर्याप्त मात्रा में प्रदीप्त और संवातित हों।
- (4) रोजमर्रा के उपचार के लिए पर्याप्त उपस्कर।
- (5) किसी चिकित्सीय आपातकाल के नियंत्रण के लिए आवश्यक उपस्कर।

अनुसूची V

[देखिए नियम 185(2) और नियम 113(ग)]

निर्माण चिकित्सा अधिकारी की अर्हताएं—

- (1) भारतीय चिकित्सा परिषद से मान्यता प्राप्त चिकित्सा संस्थान से एमबीबीएस की उपाधि।
- (2) औद्योगिक स्वास्थ्य में डिप्लोमा अथवा औद्योगिक स्वास्थ्य में प्रशिक्षण का समतुल्य स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र।
- (3) एक चिकित्सा अधिकारी के लिए जिसे, खानों, पतन तथा डाक कारखानों और भवन निर्माण तथा अन्य निर्माण कार्यों में नियोजित कर्मचारों की नीति, निष्पादन तथा सलाह और सुरक्षा तथा स्वास्थ्य से जुड़े संगठन/स्थापन में कम से कम तीन वर्ष का कार्यकरण अनुभव हो, महानिदेशक के समाधान के अधीन, ऊपर मद (2) में निर्दिष्ट प्रशिक्षण का रखना आवश्यक नहीं है।
- (4) उपरोक्त प्रमाण पत्र के लिए पाठ्यक्रमों का पाठ्य विवरण और ऐसे पाठ्यक्रम चलाने वाले संगठन केन्द्रीय सरकार से अनुमोदित होंगे और वह समय-समय पर ऐसे संगठनों का पैनल बना सकेगी।
- (5) निर्माण चिकित्सा अधिकारी के नाम, अर्हता और अनुभव सहित संपूर्ण विशिष्टियां अधिकारिता रखने वाले इन्सपेक्टर को प्रज्ञापित की जाएगी।

अनुसूची - VI

[देखिये नियम 114]

एम्बुलेंस कमरे के लिए विषय सूची

- (i) एक कांचक सिंक जिसमें गर्म और ठंडा पानी सदैव उपलब्ध रहे।
- (ii) चिकने फलक वाली एक मेज जो कम से कम 180 सेंटीमीटर X 105 सेंटीमीटर हो।
- (iii) उपकरणों को विसंक्रमित करने के साधन।
- (iv) एक कोच।
- (v) दो स्ट्रेचर।
- (vi) दो बाटियां अथवा पात्र जिनके ढक्कन मजबूती से बंद होते हों।
- (vii) दो रबड़ के गर्म पानी के थैले।
- (viii) एक कंतीली और स्पिरिट स्टोव अथवा पानी उबालने का कोई उपयुक्त साधन।
- (ix) बारह लकड़ी के समतल स्पलिनट 900 सेंटीमीटर X 100 सेंटीमीटर X 6 सेंटीमीटर।
- (x) बारह लकड़ी के समतल स्पलिनट 350 सेंटीमीटर X 75 सेंटीमीटर X 6 सेंटीमीटर।
- (xi) छह लकड़ी के समतल स्पलिनट 250 सेंटीमीटर X 50 सेंटीमीटर X 12 सेंटीमीटर।
- (xii) छह ऊन के कंबल।
- (xiii) तीन धमनी चिमटी के जोड़े।
- (xiv) स्पिरिट एनिमी एरिमेंशन की एक बोतल (120 मिलीलिटर)।
- (xv) स्मैलिंग साल्ट (60 ग्राम)।
- (xvi) दो मध्यम आकार की स्पंज।
- (xvii) छह छोटे तौलिए।
- (xviii) चार गुर्दा ट्रे।
- (xix) चार हाथ धोने के साबुन की टिक्कियां जो अधिमानतः प्रतिरोधी हो।
- (xx) दो कांच के गिलास और दो वाइन के गिलास।
- (xxi) दो क्लीनिकल थर्मामीटर।

- (xxii) दो छोटे चम्मच ।
- (xxiii) दो अशांकित मापन गिलास (120 मिलीलिटर) ।
- (xxiv) दो न्यूनतम मापन गिलास ।
- (xxv) आखे धोने के लिए वॉश बोतल (1000 सीसी) ।
- (xxvi) कार्बोलिक लोशन 20 में एक बोतल (एक लीटर) ।
- (xxvii) तीन कुर्सियां ।
- (xxviii) एक स्क्रीन ।
- (xxix) एक छोटी बिजली टार्च ।
- (xxx) चार प्राथमिक उपचार पेटिकाएं या आलमारियां जिनमें अनुसूची VII में विहित मानकों के अनुसार सामान हो ।
- (xxxi) टेटनस टोक्साईड की पर्याप्त पूर्ति ।
- (xxxii) मार्फिया, पेथिडाइन, एट्रोफिन, एडरेनेलिन, कोरामाइन, नाबोकाईन के टीके (प्रत्येक 6) ।
- (xxxiii) कमाइन द्रव (60 मिलीलिटर) ।
- (xxxiv) एन्टीहिस्टामिनिक, एन्टीस्थास्मोडिक की गोलियां (प्रत्येक 25) ।
- (xxxv) सिरिजे-2 सी.सी., 5 सी.सी., 10 सी.सी. और 500 सी.सी. की सुईयों के साथ ।
- (xxxvi) तीन शल्यक कैंचियां ।
- (xxxvii) दो सुई पकड़ने वाले, एक छोटा और एक बड़ा ।
- (xxxviii) टांका लगाने वाली सुईयों और सामान ।
- (xxxix) तीन विच्छेदन करने वाली चिमटियां ।
- (xl) तीन मरहम पट्टी करने वाली चिमटियां ।
- (xli) तीन क्षुरिकाएं ।
- (xlii) एक परिक्षावक और एक बी.पी. उपकरण ।
- (xliii) रबड़ पट्टी-दाब पट्टी ।
- (xliv) आक्सीजन सिलेंडर आवश्यक संलग्नकों के साथ ।
- (xlv) ट्रोपाइन आंखों का विलेपन ।
- (xlvi) आई.बी. तरल और सेट 10 की संख्या में ।
- (xlvii) उचित, पांव से खुलने वाले, ढक्कन वाले, कचरे के पात्र ।
- (xlviii) पर्याप्त संख्या में विसंक्रमित, असंस्कृत रबड़ के दस्तानों के जोड़े ।

अनुसूची VII

[देखिए नियम 115]

एम्बुलेंस वैन अथवा गाड़ी की अन्तर्वस्तुएं
एम्बुलेंस वैन में ऐसे उपस्कर होंगे जो निम्न विहित हैं;

- (क) साधारण : एक वहनीय स्ट्रेचर जिसके साथ मुड़ना और समायोजी युक्तियां हों, साथ ही स्ट्रेचर का शीर्ष ऊपर मुड़ने में समर्थ हो । उपस्कर के साथ स्थिर चूषण ईकाई । उपस्कर के साथ स्थिर आक्सीजन आपूर्ति/तकिया गिलाफ के साथ चादरें, कम्बल, तौलिए, आपातकालीन थैला, बैड पैन्, मूत्रपात्र गिलास ।
- (ख) सुरक्षा उपस्कर : तीन हजार मिनट तक सक्रिय रहने वाला फलारोस, फलोर लाइटें, फलैश लाइटें, अग्निशामक (शुष्क पावर टाइप) विद्युत्तरोधी गन्टलेट ।
- (ग) आपातकालीन देखभाल उपस्कर :

- (i) पुनरुज्जीवन : वहनीय चूषण इकाई, वहनीय आक्सीजन ईकाई, बेगबाल्व मास्क, हाथ से चलने वाली कृत्रिम राबातन इकाई, वायु मार्ग, माउथगैग-ट्रेकियोस्टोमी अनुकूलक, छोटा स्पाइन बोर्ड, अन्तः शिररीय तरल लगाने वाली इकाई के साथ, रक्तचाप मेनोमीटर, कफ परिश्रावक;
- (ii) अनम्यता : लम्बे और छोटे गद्देदार बोर्ड, तार सीढ़ी स्पलिट, त्रिभुजाकार पट्टी-लम्बे और छोटे स्पाइन बोर्ड;
- (iii) मरहम पट्टी : गाज पैड-100 मि. X 100 मि.ली. युनिवर्सल मरहम पट्टी 250 X 1000 मि.ली., एल्युमिनियम फाइल का रोड, साफ्ट रोलर पट्टी 150 मि.मी. X 5 मि.मी. गज चिपकने वाली टेप .75 मि.मी. के रोल में सेफ्टी पिन, बेन्डेज शीट, बर्न शीट;
- (iv) विषाक्तता : इपेकाक का सिरप, सक्रियित चारकोल पूर्व पेकेटिड डोरा, सर्पदंश किट, पीने का पानी;
- (v) आपातकालीन दवाइयां : आवश्यकता के अनुसार (निर्माण चिकित्सा अधिकारी की सलाह के अधीन)।

अनुसूची VIII

[देखिए नियम 118 (क)]

भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य में अधिसूचनीय उपजीविका जन्य रोग

1. उपजीविकाजन्य त्वचा शोध
2. उपजीविकाजन्य कैन्सर
3. एस्वेस्टोसिस
4. सिलीकोसिस
5. सीसा विषाक्तता जिसमें सीसे की किसी निर्मिती या सम्मिश्रण या उनके अनुगम की विषाक्तता सम्मिलित है
6. बैनजीन विषाक्तता जिसमें इसकी किसी सजातीय, उनके नाइट्रो अथवा अमाइडो व्युत्पन्न या इसके अनुगम की विषाक्तता सम्मिलित है।
7. उपजीविकाजन्य दमा
8. जीवनाशी विषाक्तता
9. कार्बन मोनो आक्साइड विषाक्तता
10. विषैली पीलिया
11. विषैली रक्तक्षीणतता
12. संपीडित वायु रुग्णता (रो नीष कोष्ठक)
13. शोर प्रेरित श्रवण क्षति।
14. आइसोसाइनेट विषाक्तता
15. विषैली नैफराइटिस।

अनुसूची - IX

[देखिए नियम 119 (ख)]

प्राथमिक उपचार पैटिका की अन्तर्वस्तु

- (i) आसुत जल अथवा उपयुक्त द्रव से भरी नेत्र घटन बोतलों की पर्याप्त संख्या जो सदैव दृश्यमान सुभेदक चिन्ह द्वारा उपदर्शित होंगी।
- (ii) 4 प्रतिशत जाइलोक्रेन आई ड्राप्स और बोरिक एसिड आई ड्राप्स और सोडा बाई कार्बोनेट आई ड्राप्स
- (iii) चौबीस छोटी विसंकमित मरहम पट्टी
- (iv) बारह मध्यम आकार की विसंकमित मरहम पट्टी
- (v) बारह बड़े आकार की विसंकमित मरहम पट्टी
- (vi) बारह बड़े आकार की विसंकमित बर्न मरहम पट्टी
- (vii) बारह (पन्द्रह सेंटीमीटर) विसंकमित रुई के पैकेट
- (viii) सिटरी माईड घोल (1 प्रतिशत) या उपयुक्त पूर्तिरोधी घोल की बोतल (दो सौ मिलीलिटर)
- (ix) पानी में मरक्युरोक्रोम (2 प्रतिशत) घोल की 1 बोतल (दो सौ मिलीलिटर)
- (x) एमोनियम कार्बोनेट की 1 बोतल (1 सौ बीस मिलीलिटर) जिसके लेबल पर डोज और उसको देने/लगाने की रीति उपदर्शित हो
- (xi) एक कैंची
- (xii) आसंजक प्लास्टर का एक रोल (छ सेंटीमीटर x एक मीटर)
- (xiii) आसंजक प्लास्टर का दो रोल (दो सेंटीमीटर x एक मीटर)
- (xiv) पृथक पैकेट में सीलबंद बारह विसंकमित आई पैड।
- (xv) सौ एस्प्रिन या अन्य कोई पीड़ाहारी गोलियां (प्रत्येक तीन सौ पच्चीस मिलीग्राम की) से युक्त एक बोतल
- (xvi) दस सेंटीमीटर चौड़ी बारह रोलर पट्टियां
- (xvii) पांच सेंटीमीटर चौड़ी बारह रोलर पट्टियां
- (xviii) एक दुर्निकेत
- (xix) उपयुक्त स्पलिट की पूर्ति
- (xx) सुरक्षा पिन के तीन पैकेट
- (xxi) गुरदा ट्रे
- (xxii) एक सर्पदंश नशतर
- (xxiii) पोटेशियम परमैंगनेट क्रिस्टल्स से युक्त एक बोतल (तीस मिलीलिटर)
- (xxiv) महानिदेशालय द्वारा जारी किए गए प्राथमिक उपचार के पर्चे की एक प्रति
- (xxv) छ त्रिभुजाकार पट्टियां
- (xxvi) दो उपयुक्त, विसंकमित, असंस्कृत खंड के दस्तानों के जोड़े।

अनुसूची - X

[देखिए नियम 122 (क), 128(क), 136(क), 137(क) (ii)]

उत्थापक साधित्र, वियोजित गियर और तार रज्जु के प्रथम उपयोग से पूर्व किए जाने वाली जांच और परीक्षण की रीति।

जांच भार :

(1) उत्थापक साधित्र :

प्रत्येक उत्थापक साधित्र इसके उपराखन गियर के साथ, ऐसे जांच भार के अधधीन रखा जाएगा जो निरापद कार्यकरण भार (निकाभा) से इस प्रकार अधिक होगा जैसा निम्नलिखित सारणी में विनिर्दिष्ट है :-

सारणी	
निरापद कार्यकरण भार	जांच भार
20 टन तक	निरापद कार्यकरण भार से 25 प्रतिशत अधिक
20 से 50 टन	निरापद कार्यकरण भार से 5 प्रतिशत टन अधिक
50 से अधिक	निरापद कार्यकरण भार से 10 प्रतिशत अधिक

(2) वियोजित गियर:

- (क) प्रत्येक रिंग, हुक, चैन, शैकल, सिववैल, आई-बोल्ट, प्लेट क्लैम्प, त्रिभुजाकार प्लेट अथवा घिरनी खंड (सिवाप एकल शीव खंड के) ऐसे जांच भार के अध्याधीन रखा जाएगा जो निम्नलिखित सारणी में विनिर्दिष्ट भार से कम नहीं होगा:

सारणी	
निरापद कार्यकरण भार (टनों में)	जांच भार (टनों में)
25 तक	2 X निरापद कार्यकरण भार
25 से ऊपर	(1.22 X निरापद कार्यकरण भार)+20

- (ख) एकल शीव खंड के मामले में निरापद कार्यकरण भार ऐसा अधिकतम भार होगा जिसे खंड, जब इसे शीर्ष फिटिंग द्वारा लटकाया गया हो और भार उस रज्जु से जोड़ा गया हो जो खंड की शीव के चारों ओर लिपटी है, सुरक्षित रूप से उठा सकता है और प्रस्तावित निरापद कार्यकरण भार के चार गुणा से कम जांच भार खंड के शीर्ष पर नहीं लगाया जाएगा।

- (ग) बहु शीव खंड के मामले में, जांच भार निम्नलिखित सारणी में विनिर्दिष्ट भार से कम नहीं होगा:-

सारणी	
निरापद कार्यकरण भार (टनों में)	जांच भार (टनों में)
25 तक	2 X निरापद कार्यकरण भार
25 से 160	(0.9933 X निरापद कार्यकरण भार)+ 27
160 से ऊपर	1.1 X निरापद कार्यकरण भार

- (घ) हस्त-चालित घिरनी खंडों के, जो स्थिर चैनों और रिंगों, हुकों, शैकलस अथवा इससे स्थायी रूप से जुड़ी सिववेल के साथ प्रयुक्त होते हैं, मामले में वह जांच भार लगाया जाएगा जो निरापद कार्यकरण भार से कम से कम 50 प्रतिशत अधिक होगा।
- (ङ) बालटी से युक्त घिरनी खंड की दशा में, बालटी की जांच की जाएगी और उस खंड की जांच के दौरान बालटी पर लगाए गए भार को बालटी के जांच भार के रूप में स्वीकार किया जाएगा।
- (च) दो टांगों वाली स्लिंग की दशा में, निरापद कार्यकरण भार तब संगणित किया जाएगा जब दोनों टांगों के बीच 90 अंश का कोण हो। कई टांगों वाली स्लिंग की दशा में निरापद कार्यकरण भार राष्ट्रीय मानकों के अनुसार संगणित किया जाएगा।
- (छ) प्रत्येक उत्पापक बीम, उत्पापक विरचना, छिड़काव करने वाला पात्र (कन्टेनर सप्रेडर) बालटी, टब अथवा अन्य समान युक्तियों पर नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट भार से कम जांच भार नहीं लगाया जाएगा:

सारणी	
प्रस्तावित निरापद कार्यकरण भार (टनों में)	जांच भार (टनों में)
10 टन तक	2 X निरापद कार्यकरण भार
10 से 160	(1.04 X निरापद कार्यकरण भार)+ 9.6
160 से ऊपर	1.1 X निरापद कार्यकरण भार

- (ज) तार रज्जु: तार रज्जुओं की दशा में एक नमूने की, जब तक वह नष्ट न हो जाए, जांच की जाएगी। जांच प्रक्रिया मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय मानकों के अनुसार होगी। निरापद कार्यकरण भार उस भार को जिस पर नमूना टूट जाता है, उपयोग के गुणांक से जो निम्नलिखित सारणी में विनिर्दिष्टानुसार अवधारित होता है, भाग देकर निश्चित किया जाएगा:

सारणी

मद	उपयोग का गुणांक
(क)	वह तार रज्जु जो स्लिंग का भाग है।
	स्लिंग का निरापद कार्यकरण भार 10 टन तक तथा
	उसके बराबर निरापद कार्यकरण भार
	10 टन से ऊपर तथा 160 टन तक या
	160 टन के बराबर
	5
	10

$$8.85 \times \text{निरापद कार्यकरण भार} + 1910$$

160 टन से ऊपर निरापद कार्यकरण भार

3

- (ख) वह तार रज्जु जो उत्पापक साधित्र का अभिन्न अंग है :

उत्पापक साधित्र का निरापद कार्यकरण भार 160 टन तक या उसके बराबर निरापद कार्यकरण भार

10

$$(8.85 \times \text{निरापद कार्यकरण भार}) + 1910$$

160 टन से ऊपर निरापद कार्यकरण भार

- (ग) कोई जांच कार्यान्वित की जाती है से पूर्व, शामिल उत्पापक साधित्र, या वियोजि गियर या दृष्टि निरीक्षण किया जाएगा तथा, कोई दृश्य खराब गियर बदला जाएगा या नवीकृत किया जाएगा।

- (ज) जांच करने के बाद, सभी वियोजित गियर यह देखने के लिए परीक्षित किए जाएंगे कि क्या जांच द्वारा कोई भाग अपकृत या स्थायी रूप से विकृत हो गया है।

जांच की प्रक्रिया :

(3) डेरिक :

- (क) डेरिक की जांच ऐसी अवस्था में होगी जब इसकी बूम इसके क्षेतिज से जिसके लिए डेरिक बनाया गया है, न्यूनतम कोण पर हो (साधारणतया 15 अंश) अथवा कोई ऐसा बड़ा कोण जिस पर सहमति हो। वह कोण जिस पर जांच की गई है जांच प्रमाण-पत्र में उल्लिखित होगा। जांच और चल बाटों के उत्तोलन द्वारा लगाया जाएगा, जांच, के दौरान बूम को जांच भार के साथ दोनों दिशाओं में, जहां तक हो सके झुलाया जाएगा।

- (ख) लटके हुए भार के साथ शक्ति से ऊपर उठाये जाने के लिए बनाये गये डेरिक बूम को (क) में की जांचों के अतिरिक्त (लटके हुए भार के साथ) क्षेतिज से और दो बाह्यतम स्थितियों से अधिकतम कार्य करण कोण तक उठाया जाएगा।

- (ग) भारी उत्पापक डेरिक पर जांच भार लगाते हुए, जांच के लिए जिम्मेदार सक्षम व्यक्ति उस पर चल बांट लगाते समय पोत के मालिक या चलायमान प्लेटफार्म से यह अभिनिश्चित करेगा कि पोत या चलायमान प्लेटफार्म जांच के लिए पर्याप्त मजबूत है।

(4) खंड (3) के अधीन जांचे गए डेरिक का उपयोग संघ क्रय रिंग में तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि :

- (क) संघ क्रय रिंग डेरिकों की जांच संघ क्रय में निरापद कार्यकरण भार के समुचित जांच भार से नहीं की जाती (बनाए गए हैडरूम पर और जब डेरिक बूम अपनी अनुमोदित कार्यकरण स्थितियों में हो);

- (ख) उस डेरिक का संघ क्रय रिंग में दिया निरापद कार्यकरण भार किसी सक्षम व्यक्ति द्वारा प्ररूप V की रिपोर्ट में भी विनिर्दिष्ट नहीं कर दिया जाता;

- (ग) उक्त रिपोर्ट में विनिर्दिष्ट परिसीमाओं या शर्तों का अनुपालन नहीं किया जाता; और

- (घ) दोनों उत्तोलक रज्जुओं की रिववेल असेम्बली द्वार इकट्ठे युग्मित नहीं किया जाता।

टिप्पण :- डेरिकों का निरापद कार्यकरण भार (संघ क्रय सहित रिंग की प्रत्येक रीति के लिए) जांच के प्रमाण-पत्र पर उपदर्शित किया जाएगा और डेरिक बूमों पर भी चिह्नकित किया जाएगा।

(5) उत्पापक साधित्र :

- (क) जांच भार को ऊपर उठाया जाएगा और दोनों दिशाओं में जिनकी दूरी तक संभव हो झुलाया जाएगा। यदि क्रेन के जिव या बूम का अर्ध व्यास परिवर्तन शील है तो उसकी जांच अधिकतम और न्यूनतम अर्ध व्यासों पर जांच भार लगा कर की जाएगी। हाइड्रोलिक क्रेनों के दशा में जब दबाव की परिसीमा के कारण मद (1) के अधीन सारणों के अनुसरण में जांच भार उठाना असंभव है तब सर्वाधिक संभव भार को जो निरापद कार्यकरण भार से अधिक होगा, उठाना पर्याप्त है।
- (ख) जांच अधिकतम, न्यूनतम और मध्यवर्ती अर्धव्यास बिन्दुओं पर और साथ ही चक्रानुक्रम के वृत्तांश के ऐसे बिन्दुओं पर जो सक्षम व्यक्ति विनिश्चित करे संपादित की जाएगी। जांच में उत्तोलन, नीचे करना, तोड़ना और सभी स्थितियों में घुमाना और समान्यतः संपादित सक्रियाएं सम्मिलित हैं। निरापद कार्यकरण भार लटकाकर मशीन का उसकी अधिकतम कार्यकरण गति पर परिचालन कर एक अतिरिक्त जांच भी की जाएगी।

(6) जांच भार डालने के लिए सिंग या हाइड्रोलिक तुला इत्यादि का उपयोग :

सामान्यतः सभी जांच स्थावर बांटों की सहायता से की जाएगी। कालिक जांच प्रतिस्थापना या नवीकरण, की दशा में जांच भार सिंग या हाइड्रोलिक तुला के द्वारा लगाया जा सकता है। ऐसे मामलों में, जांच भार, जब बूम दोनों दिशाओं में यथासाध्य बाहर हो, लगाया जाएगा। जांच को तब तक संतोषप्रद नहीं माना जाएगा जब तक कि तुला-20 प्रतिशत तक की यथार्थता के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित नहीं की जाती और मशीन की सुई जांच भार पर कम से कम पांच मिनट की अवधि के लिए स्थिर नहीं रहती।

(7) जांच करने वाली मशीनें और स्थावर बाट :

- (क) जंजीरों, तार रज्जुओं और अन्य उत्पापक गियरों की जांच के लिए उपयुक्त जांच मशीनों का उपयोग किया जाएगा;
- (ख) जांच भार लगाने, जांच और चैक करने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली जांच मशीनों और तुलाओं का उपयोग तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि वे सक्षम प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती बारह मासों में कम से कम एक बार यथार्थता के लिए प्रमाणित नु किए गए हों ;
- (ग) उत्पापक साधित्रों को जांच भार लगाने में प्रयुक्त होने वाले जंगम बाट, जिनका निरापद कार्यकरण भार बीस टन से अधिक नहीं है, यथार्थता के लिए प्रमाणित यथार्थता वाली उपयुक्त तुलन मशीन द्वारा चैक किए जाएंगे।

(8) जांच अथवा जांच के लिए भार लगाने के पश्चात् संपूर्ण परीक्षण :

जांच अथवा जांच के लिए भार लगाने के पश्चात् प्रत्येक उत्पापक साधित्र और सहयुक्त गियर की संपूर्ण जांच यह देखने के लिए की जाएगी कि जांच के दौरान इनके किसी भाग को नुकसान तो नहीं पहुंचा अथवा वह स्थायी तौर पर विरूपित तो नहीं हो गया। इस प्रयोजन के लिए उत्पापक साधित्र या गियर को उस प्रमाण तक खोला जाएगा जिसे सक्षम व्यक्ति आवश्यक समझता है।

अनुसूची - XI

[देखिये नियम 218 (क)]

कार्यनुकूल वातावरण में कतिपय रसायनिक पदार्थों का अनुज्ञात स्तर

क्रम संख्या	पदार्थ	उच्छन्न की अनुज्ञा सीमा			
		टाईम-वेएड औसत सांद्रता (टी डब्ल्यू ए) (8 घंटे)		लघु-अवधि उच्छन्न की सीमा (एस टी ई एल) (15 मिनट)	
		पी0 पी0एम0	मि0 ग्रा0/मि0	पी0पी0एम0	मि0ग्रा0/3
1	2	3	4	5	6
1	ऐसीटेबलडीहाईड	100	180	150	270
2	एसिटिक एसिड	10	25	15	37
3	एसिटोन	750	1780	1000	2375
4	एट्रोलियन	0.1	0.25	0.3	0.8
5	एकरिलोनाइट्राइल-त्वचा (एस.सी)	2	4.5	—	—
6	एल्लिन त्वचा	—	0.25	—	—
7	एलाइल क्लोराइड	1	3	2	6
8	अमोनिया	25	18	35	27
9	एनीलाइन-त्वचा	2	10	—	—
10	एनीसाइडाइन-स्कन (ओ.पी.आई.सोमरस) त्वचा	0.1	0.5	—	—
11	आरसिनिक और विलय सम्मिश्रण (ए. एस. के. रूपा में)	—	0.2	—	—
12	बैनजीन (एस.सी)	10	30	—	—
13	बेरिलियम और सम्मिश्रण (बी ई के रूप में) (एस.सी)	—	0.002	—	—
14	बोरोन ट्राईफ्लोराइड-सी	1	3	—	—
15	ब्रोमाइन	0.1	0.7	0.3	2
16	ब्यूटेन	800	1900	—	—
17	2-ब्यूटानोन (मेथायल-इथायल कीटोन-एम.बी.के.)	200	590	300	885
18	एन-ब्यूटाइल एसीटेट	150	710	200	950
19	एन.ब्यूटाइल एल्कोहल-त्वचा-सी	50	150	—	—
20	सेकेण्डरी/टर्शरी ब्यूटाइल एसीटेट	200	950	—	—
21	ब्यूटाइल मर्कपटान	0.5	1.5	—	—
22	कैडमियम धूल और साल्ट (सी0डी0 के रूप में)	—	0.05	—	—
23	कैल्शियम आक्साइड	—	2	—	—
24	कार्बटाईल (सविन)	—	5	—	—
25	कार्बोफ्युरान (फयूराडान)	—	0.1	—	—
26	कार्बन डाइसल्फाईड -त्वचा	10	30	—	—
27	कार्बन मोनो-आक्साइड	50	55	400	440
28	कार्बन टैट्राक्लोराइड-त्वचा (एस0सी0)	5	30	—	—
29	क्लोरोडेन-त्वचा	—	0.5	—	—
30	क्लोरीन	1	3	3	9

31	क्लोरोबेनजीन (मोनो-क्लोरो-बेनजीन)	75	350	—	—
32	क्लोरोफार्म (एस.सी)	10	50	—	—
33	बिस (क्लोरोमेथी)(ईथर)(एच० सी०)	0.001	0.005	—	—
34	क्रोमिक एसिड, क्रोमेट्स (सी आर के रूप में) (पानी में विलेय)	—	0.05	—	—
35	क्रोमस साल्ट्स (सी०आर० के रूप में)	—	0.5	—	—
36	कॉपर फ्यूम	—	0.2	—	—
37	कॉटन, धूल, कच्ची	—	0.2	—	—
38	क्रिसोल, सभी -आइसोमर -त्वचा	5	22	—	—
39	साइनाइड्स (सी०एन० के रूप में) त्वचा	—	1	—	—
40	साइनोजेन	10	20	—	—
41	डी.डी.टी डाइक्लोरोडाई फिनायल ट्राइ क्लोरोइथेन)	—	1	—	—
42	डिमेटोन-त्वचा	0.01	0.1	—	—
43	डायोजिनोन- त्वचा	—	0.1	—	—
44	डायब्यूटाइलो थैलेट	—	5	—	—
45	डाइक्लोरबोस (डी.डी.वी.पी) -त्वचा	0.1	1	—	—
46	डाइएल्ट्रिन- त्वचा	—	0.25	—	—
47	डाइनाइट्रोबेनजीन (सभी आइसोमर) त्वचा	0.15	1	—	—
48	डाइनाइट्रोटोलवीन- त्वचा	—	1.5	—	—
49	डायफिनायल (बाइफिनायल)	0.2	1.5	—	—
50	एण्डोसल्फेन (थायोडेन- त्वचा)	—	0.1	—	—
51	एन्ड्रिन- त्वचा	—	0.1	—	—
52	इथायल एसीटेट	400	1400	—	—
53	इथायल एल्कोहल	1000	1900	—	—
54	इथायल-अमीन	10	18	—	—
55	फ्लोराइड (एफ के रूप में)	—	2.5	—	—
56	फ्लोरीन	1	2	2	4
57	फोरमेल्टीहाइड (एस.सी)	1.0	1.5	2	3
58	फोर्मिक एसिड	5	9	—	—
59	गैसोलीन	300	900	500	1500
60	हाइड्रोजीन- त्वचा (एस.सी)	0.1	0.1	—	—
61	हाइड्रोजन क्लोराइड -सी	5	9	—	—
62	हाइड्रोजन सायनाइड-त्वचा -सी	10	10	—	—
63	हाइड्रोजन फ्लोरीन (एफ के रूप में)-सी	3	2.5	—	—
64	हाइड्रोजन पर-आक्साइड	1	1.5	—	—
65	हाइड्रोजन सल्फाइड	10	14	15	21
66	आयोडीन-सी	0.1	1	—	—
67	आयरन आक्साइड फ्यूम(एफ०ई०ओ०) (एफ०ई० के रूप में)	—	5	—	—

68	आइसोएमायल एसीटेट	100	525	—	—
69	आइसोएमायल एल्कोहल	100	360	125	450
70	आइसोब्यूटायल एल्कोहल	50	150	—	—
71	सीसा, इनऑर्गेनिक धूलें और फ्यूम (पी बी के रूप में)	—	0.15	—	—
72	लिनडेन-त्वचा	—	0.5	—	—
73	मैलाथियोन-त्वचा	—	10	—	—
74	मैगनीज धूल और सम्मिश्रण (एम एन के रूप में)-सी	—	5	—	—
75	मैगनीज फ्यूम (एम0एन0 के रूप में)	—	1	—	—
76	पारा (एच जी के रूप में)- त्वचा	—	0.01	—	0.03
I	एल्कायल सम्मिश्रण	—	0.01	—	0.03
II	सिवाय एल्कायल वाष्प के सभी रूपा	—	0.05	—	—
III	एटायल और इनऑर्गेनिक सम्मिश्रण	—	0.1	—	—
77	मिथायल एल्कोहल (मिथानोल)- त्वचा	200	260	250	310
78	मिथायल कोलोसाल्व (2 मिथोक्सी-इथेनोल)-त्वचा	5	16	—	—
79	मिथायल आइसोब्यूटाइल किटोन	50	205	75	300
80	मिथायल आइसोसायनेट- त्वचा	0.02	0.05	—	—
81	नेपथालीन	10	50	15	75
82	निकेल कार्बोनाइड (एन0आई0 के रूप में)	0.05	0.35	—	—
83	नाइट्रिक एसिड	2	5	4	10
84	नाइट्रिक ऑक्साइड	25	30	—	—
85	नाइट्रोबेनजीन- त्वचा	1	5	—	—
86	नाइट्रोजन डाइ-ऑक्साइड	3	6	5	10
87	ऑयल मिस्ट मिनरल	—	5	—	10
88	ओजोन	0.1	0.2	0.3	0.6
89	पैराथिऑन- त्वचा	—	0.1	—	—
90	फिनोल-त्वचा	5	19	—	—
91	फोरेट (थिमेट)-त्वचा	—	0.05	—	0.2
92	फॉसजीन (कार्बोक्साइल क्लोराइड)	0.1	0.4	—	—
93	फॉसफीन	0.3	0.4	1	1
94	फॉसफोरिक एसिड	—	1	—	3
95	फॉसफोरस (पीला)	—	0.1	—	—
96	फासफोरस पेन्टाक्लोराइड	0.1	1	—	—
97	फॉसफोरस ट्राइक्लोराइड	0.2	1.5	0.5	3
98	पियरे एसिड त्वचा	—	0.1	—	0.3
99	पिरिडीन	5	15	—	—
100	सिलेन (सिलिकोन टेट्राहाइड्राइड)	5	7	—	—
101	सोडियम हाइड्रोक्साइड (सी)	—	2	—	—
102	स्टाइरीन, मोनोमर (फिनायल इथायलीन)	50	215	100	425

103	सल्फर डाइआक्साइड	2	5	5	10
104	सल्फर हैक्साफ्लोराइड	1000	6000	—	—
105	सल्फ्यूरिक एसिड	—	1	—	—
106	टैट्राइथायल लेड (पी0बी0 के रूप में) - त्वचा	—	0.1	—	—
107	टोलयून (टोलयून)	100	375	150	560
108	(ओ-टोल्यूडीन)-त्वचा (एस.सी.)	2	9	—	—
109	(ड्राई इब्यूटवी फास्फेट)	0.2	2.5	—	—
110	ट्राईक्लोरायथाईलीन	50	270	200	1080
111	यूरेनियम, प्राकृतिक (यू0 के रूप में)	—	0.2	—	0.6
112	विनायल क्लोराइड (एच.सी.)	5	10	—	—
113	वैलडिंग फ्यूम	—	5	—	—
114	जाइलीन (ओ.एम.पी. आइसोमर)	100	435	150	655
115	जिक आक्साइड				
I	फ्यूम	—	5.0	—	10
II	धूल (कुल धूल)	—	10.0	—	—
116	जिरकोनियम सम्मिश्रण (जैड आर के रूप में)	—	5	—	10

पीपीएम 250 सें. और एच जी के 760 मि.मि. पर वोल्यूम से दूषित वायु के प्रति दस लाख भाग में वाष्प अथवा गैस के भाग वायु के प्रति व्यूबिक मीटर में पदार्थ के मिली ग्राम

मि.ग्रा./मी. एक दिन में 4 बार से अधिक नहीं और आनुक्रमिक उच्छन्नों में कम से कम 60 मिनट का अंतराल हो।

मि.ग्रा./मी. मालीक्यूलर भार X पी पी एम

24.45

जी. अधिकतम सीमा का द्योतक है।

त्वचा — त्वचीय मार्ग से जिसमें श्लेष्म झिल्ली और आंख भी सम्मिलित हैं, होने वाले समग्र उच्छन्न को संभाव्य अभिदाय का द्योतक है।

एस.सी. संदिग्ध मानवीय कर्कट जनकों का द्योतक है।

एच.सी. कुष्ठ मानवीय कर्कट जनकों का द्योतक है।

पदार्थ	अनुज्ञा टाइम-बेएड औरत सांद्रता (टी डब्ल्यू ए) (8 घंटे)
(क) स्फाटकीय	10600
(i) स्फटिक	$2\% \text{ स्फटिक} + 10$ एम पी पी सी एम
(1) धूल गणना के रूप में	10
(2) सांस लेने योग्य धूल के रूप में	$\% \text{ सांस लेने योग्य स्फटिक} + 2$ मि.ग्रा./मी.
(3) कुल धूल के रूप में	30 मि.ग्रा./मी.
	$\% \text{ स्फटिक} + 3$
(ii) क्रिस्टोवेलाइड	स्फटिक के प्रति दी गई सीमा से आधी।
(iii) ट्राइडवमाइड	स्फटिक के प्रति दी गई सीमा से आधी।
(iv) सिलीका, फ्यूस्ड	वह सीमा जो स्फटिक के लिए है।
(v) ट्राइपोली	वह सीमा जो मद (2) में सूत्र में स्फटिक के प्रति दी गई है।

(ख) अर्गोफस सिलिकेट्स एसबेस्टस (एच सी) /	10 मि.ग्रा./मी., कुल धूल ● फाइबर्स/मि.ली. लंबाई में 5 मी. से अधिक और चौड़ाई में 3 मी0 से कम जिसका लंबाई चौड़ाई अनुपात 3:1 के समतुल्या या अधिक है	
पेट्रलैंड सीमेंट	10 मि.ग्रा./मी. कुल धूल जिसमें स्फटिक 1% से कम है।	
कोयला धूल	2 मि.ग्रा./मी. सांस लेने योग्य धूल का भाग जिसमें स्फटिक 5 % से कम है।	
एम पी पी सी एम	लाईट-फील्ड तकनीकों द्वारा गणित इक्विंगर सैम्पल पर आधारित, वायु ने प्रति क्यूबिक मीटर से दस लाख कण।	
● जैसा कि 400-450 X मैग्निफिकेशन (4 मि.मी. आब्जेक्टिव फेस कन्ट्रास्ट पर इल्युमिनेशन पर मेक्वरेन फिल्टर विधि द्वारा विनिश्चित सांस लेने योग्य धूल।		
निम्नलिखित लक्षणों वाला भाग जो साइज-सलेक्टर से गुजरता है:		
एअरोडायनमिक व्यास (मी) (यूनिट इन सिटी सफीयर)	सलेक्टर से %	गुजरने वाला %
2		90
2.5	75	
3.5	50	
5.0	25	
10		0

अनुसूची XII

[देखिए नियम 275 (1) और (2)]

सुरक्षा अधिकारियों की संख्या, अर्हताएं, कर्तव्य, इत्यादि

सुरक्षा अधिकारियों की नियुक्ति

सुरक्षा अधिकारियों की संख्या- इन नियमों के प्रवर्तन के छः माह के भीतर प्रत्येक ऐसी स्थापना जो पांच से अधिक भवन निर्माण कर्मकारों का नियोजन करती है और भवन निर्माण कर्मकारों का प्रत्येक नियोजक सुरक्षा अधिकारियों की, जैसा कि नीचे दिए गए मापमान में अधिकथित किया गया है, नियुक्ति करेगा:-

1. 1000 भवन निर्माण कर्मकारों तक-एक सुरक्षा अधिकारी ।
2. 2000 भवन निर्माण कर्मकारों तक-दो सुरक्षा अधिकारी ।
3. 5000 भवन निर्माण कर्मकारों तक-तीन सुरक्षा अधिकारी ।
4. 10000 भवन निर्माण कर्मकारों तक-चार सुरक्षा अधिकारी ।

प्रत्येक अतिरिक्त 5000 भवन निर्माण कर्मकारों या उसके भाग के लिए एक सुरक्षा अधिकारी। कोई भी नियुक्ति, जब की जाए ऐसे सुरक्षा अधिकारी की सेवा की अर्हताओं, निबंधनों और शर्तों के पूरे ब्यौरे देते हुए क्षेत्र में अधिकारिता रखने वाले इन्स्पेक्टर को अधिसूचित की जाएगी।

अर्हताएं : (क) कोई भी व्यक्ति जब तक सुरक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्ति का पात्र नहीं होगा तब तक कि वह

- (i) इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी या स्थापत्यकला को किसी शाखा में मान्यताप्राप्त उपाधि रखता हो और उसे किसी भवन निर्माण या किसी अन्य निर्माण कार्य में पर्यवेक्षक की हैसियत में दो वर्ष के कार्य का व्यवहारिक अनुभव रखता हो अथवा इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी या स्थापत्यकला की किसी शाखा में मान्यता प्राप्त डिप्लोमा रखता हो और उसे किसी भवन निर्माण या किसी अन्य निर्माण कार्य में पर्यवेक्षण की हैसियत में कम से कम पांच वर्ष के कार्य का व्यवहारिक अनुभव हो;
- (ii) औद्योगिक सुरक्षा में मान्यता प्राप्त उपाधि या डिप्लोमा रखता हो जिसका कम से कम एक पेपर निर्माण सुरक्षा (ऐच्छिक विषय के रूप में) हो; और
- (iii) उस निर्माण स्थल के, जहां उसकी नियुक्ति की जानी है, बहुसंख्यक भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा बोली जाने वाली भाषा की पर्याप्त जानकारी रखता हो।

(ख) खण्ड (क) में किसी उपबंध के होते हुए, कोई भी व्यक्ति जो—

- (i) इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी या स्थापत्यकला में मान्यता प्राप्त उपाधि या डिप्लोमा रखता है और ऐसे क्षेत्र में जो फैक्टरी अधिनियम, 1948 या डाक कर्मकार (सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण) अधिनियम 1986 और या भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कर्मकार (नियोजन की विनियमिता और सेवा की शर्तें) अधिनियम 1996 के प्रशासन से जुड़ा हो, कम से कम पांच वर्ष का अनुभव रखता है।
- (ii) इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी में मान्यता उपाधि या डिप्लोमा रखता है और या भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य से जुड़े किसी उद्योग पतन या किसी संस्था या किसी स्थापना में दुर्घटना निवारण के क्षेत्र में शिक्षा, परामर्श या अनुसंधान का प्रशिक्षण लिया हो।

सुरक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्ति का पात्र होगा :

परन्तु यह कि, ऐसे व्यक्ति के मामले में जो भवन निर्माण का अन्य निर्माण कार्य से जुड़े किसी उद्योग या पतन, संस्था या किसी स्थापना में सुरक्षा अधिकारी के रूप में इन नियमों के प्रवृत्त होने की तारीख की कम से कम तीन वर्ष से कार्य कर रहा हो, मुख्य निरीक्षक, ऐसी शर्तों के अधीन जिन्हें वह विनिर्दिष्ट करे, उपर्युक्त अर्हताओं से सभी को या किसी को शिथिल कर सकता है।

सेवा की शर्तें:

- (क) जहां नियुक्त सुरक्षा अधिकारियों की संख्या एक से अधिक हो, वहां उनमें से एक मुख्य सुरक्षा अधिकारी के रूप में नाम निर्दिष्ट किया जाएगा और उसकी हैसियत अन्यो से ऊपर होगी। मुख्य सुरक्षा अधिकारी उपखंड (IV) में परिकल्पित सभी सुरक्षा कृत्यों का और उसके नियन्त्रण के अधीन कार्य करने वाले अन्य सुरक्षा अधिकारियों के समग्र प्रभार में होगा।
- (ख) मुख्य सुरक्षा अधिकारी या सुरक्षा अधिकारी जहां केवल एक सुरक्षा अधिकारी नियुक्त है, को वरिष्ठ कार्यपालक की हैसियत प्रदान की जाएगी तथा वह अपने मुख्य कार्यपालक के निर्माणाधीन कार्य करेगा। अन्य सभी सुरक्षा अधिकारियों को समुचित हैसियत दी जाएगी ताकि अपने कृत्यों का प्रभावी रूप से निष्पादन कर सकें।
- (ग) सुरक्षा अधिकारियों जिनमें मुख्य सुरक्षा अधिकारी भी सम्मिलित है, वेतनमान और भत्ते प्रदान किए जाएंगे और उनकी सेवा शर्तें भी वहीं होंगी, जो उस स्थापना के जिसमें वे नियोजित हैं कि तत्समान अधिकारियों की हैं।

सुरक्षा अधिकारी के कर्तव्य

- (क) सुरक्षा अधिकारी का कर्तव्य नियोजक को उसकी कानूनी अथवा अन्य वैयक्तिक क्षति की रोकथाम और सुरक्षित कार्यकरण वातावरण बनाए रखने संबंधी बाध्यताओं को पूरा करने के लिए सलाह और सहायता देना है। इन कर्तव्यों में निम्नलिखित शामिल हैं, अर्थात:-
 - (i) भवन निर्माण कर्मकारों को, वैयक्तिक क्षति को प्रभावी नियंत्रण के आवश्यक उपायों की योजना बनाने और उनके आयोजन करने के लिए सलाह देना;
 - (ii) किसी भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य में सुरक्षा पहलुओं पर सलाह देना और चुनिंदा कार्यकलापों का ब्यौरेवार सुरक्षा अध्ययन करना;
 - (iii) वैयक्तिक क्षति की रोकथाम के लिए किए गए प्रभावहीन उपायों अथवा प्रस्तावित उपायों की जांच पड़ताल और मूल्यांकन करना;
 - (iv) वैयक्तिक सुरक्षा उपकरण की खरीद की सलाह देना और उसकी क्वालिटी को राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सुनिश्चित करना;

- (v) भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य की, कार्य की भौतिक परिस्थितियों और भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा अपनाए जाने वाली कार्य पद्धति और प्रक्रिया के अनुपालन के लिए सुरक्षा निरीक्षण करना और असुरक्षित भौतिक परिस्थितियों को दूर करने और भवन निर्माण कर्मकारों द्वारा किए जाने वाले असुरक्षित कार्यों को रोकने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर सलाह देना ;
- (vi) सभी घातक और चुनिंदा दुर्घटनाओं का अन्वेषण करना;
- (vii) व्यावसायिक रोग लगने के मामलों और रिपोर्ट किए जाने योग्य खतरनाक घटनाओं का अन्वेषण करना;
- (viii) ऐसे अभिलेखों को, जो दुर्घटनाओं, खतरनाक घटनाओं और व्यावसायिक रोगों के संबंध में आवश्यक है, बनाए रखने पर सलाह देना;
- (ix) सुरक्षा समितियों के कार्यकरण को बढ़ावा देना और ऐसी समितियों के सलाहकार के रूप में कार्य करना;
- (x) संबंधित विभागों के सहयोजन से अभियान, प्रतिस्पर्धाओं प्रतियोगिताओं अन्तर्वस्तु और अन्य गतिविधियों का, जो भवन निर्माण कर्मकारों की कार्य की सुरक्षित परिस्थितियों और प्रक्रियाओं की स्थापना में अभिरुचि बढ़ाए और बनाए रखें ;
- (xi) भवन निर्माण कामकारों की दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए स्वतंत्र रूप से या अन्य अभिकरणों के सहयोग से उपयुक्त प्रशिक्षण तथा शिक्षा कार्यक्रम चलाना;
- (xii) स्थापन के ज्येष्ठ अधिकारियों के परामर्श से सुरक्षा नियमों और सुरक्षित कार्यकरण पद्धतियों को बनाना;
- (xiii) स्थापन के भवन और अन्य निर्माण कार्यों में लिए जाने वाले सुरक्षा पूर्वावधानियों कार्य पर्यवेक्षण करना और मार्गदर्शन करना।

सुरक्षा अधिकारियों को दी जाने वाली सुविधाएं :- नियोजक प्रत्येक सुरक्षा अधिकारी को ऐसी सुविधाएं, उपस्कर और जानकारी उपलब्ध कराएगा जो उसके कर्तव्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए आवश्यक है।

अन्य कर्तव्यों के पालन का निषेध :- कोई सुरक्षा अधिकारी ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा अथवा ऐसा कोई कार्य करने की अनुज्ञा नहीं होगी जो इस अनुसूची में विहित कर्तव्यों से जुड़ा न हो, असंगत अथवा उनके पालन में अहितकर हो।

छूट :- मुख्य निरीक्षक किसी नियोजक अथवा नियोजकों के किसी अन्य समूह को उसके द्वारा ऐसी छूटों के आदेश में, यथा अनुमोदित और अधिसूचित किसी अनुकंपी इंतजाम के अनुपालन के अधीन इन नियमों के किसी या सभी उपबंधों से लिखित में छूट दे सकता है।

प्ररूप - I

[देखिये नियम 17 (i)]

भवन निर्माण कर्मकारों का नियोजन करने वाली स्थापनाओं के रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन

1. स्थापना का नाम और अवस्थिति जहां भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य होना है।
2. स्थापना का डाक पता।
3. स्थापना का पूरा नाम और स्थायी पता, यदि कोई हो।
4. स्थापना के प्रबन्धक अथवा उसके पर्यवेक्षण और नियंत्रण के लिए उत्तरदायी व्यक्ति का पूरा नाम और पता।
5. स्थापना में हो चुके/होने वाले भवन अथवा अन्य सन्निर्माण कार्य की प्रकृति।
6. किसी दिन नियोजित किये जाने वाले भवन निर्माण कार्यकारों की अधिकतम संख्या।
7. भवन अथवा अन्य सन्निर्माण कार्य प्रारंभ होने की अनुमानित तारीख।
8. भवन अथवा अन्य सन्निर्माण कार्य समाप्त होने की अनुमानित तारीख।
9. मांग ड्राफ्ट की विशिष्टियां (बैंक का नाम, रकम, मांग ड्राफ्ट और तारीख) संलग्न करें।

नियोजक द्वारा घोषणा:-

- (i) मैं यह घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं।
- (ii) मैं भवन निर्माण और अन्य सन्निर्माण कर्मकार (नियोजन तथा सेवा शर्तें विनियमन) अधिनियम, 1996 और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों का पालन करने का वचन देता हूँ।

मुख्य नियोजक

मुद्रा और स्टाम्प

भवन निर्माण और अन्य सन्निर्माण कर्मकारों (नियोजक तथा सेवा शर्तें विनियमन)

अधिनियम, 1996 और उसके अधीन बनाए गए केन्द्रीय नियमों के अंतर्गत

रजिस्ट्रीकरण अधिकारी का कार्यालय।

आवेदन प्राप्ति की तारीख :

प्ररूप - II

[देखिये नियम 18 (1)]

हरियाणा सरकार

सं०

तारीख.....

रजिस्ट्रीकरण अधिकारी का कार्यालय

भवन निर्माण और अन्य कर्मकार (नियोजन तथा सेवा शर्तें विनियमन) अधिनियम, 1996 की धारा 7 की उपधारा 3 के तथा इसके अधीन बनाये गए नियमों के अधीन, उपाबद्ध में अधिकथित शर्तों के अधीन रहते हुए मैंसर्स.....को निम्नलिखित विशिष्टियों से युक्त रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

1. डाक पता/अवस्थिति जहां नियोजक द्वारा भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य किया जाना है।
2. नियोजक का नाम और पता जिसमें भवन अथवा अन्य निर्माण कार्य की अवस्थिति भी सम्मिलित है।
3. स्थापन का नाम और स्थायी पता।
4. कार्य की प्रकृति जहां भवन निर्माण कर्मकार नियोजित है या नियोजित किए जाने हैं।
5. नियोजक द्वारा किसी भी दिन नियोजित जाने वाले भवन निर्माण कर्मकारों की अधिकतम संख्या।
6. कार्य के प्रारंभ होने और समाप्त होने की संभावित तारीख।
7. भवन निर्माण कर्मकारों के नियोजन के लिए सुसंगत अन्य विशिष्टियाँ।

रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के हस्ताक्षर मुद्रा के साथ

उपाबद्ध

यहां ऊपर प्रदान किया गया रजिस्ट्रीकरण निम्नलिखित शर्तों के अधीन है, अर्थात्:-

- (क) रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र अस्थानान्तरणीय होगा;
- (ख) किसी भी दिन नियोजित कर्मकारों या स्थापना में भवन निर्माण कर्मकारों की संख्या रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र में विनिर्दिष्ट अधिकतम संख्या से अधिक नहीं होगी;
- (ग) इन नियमों में यथा उपबंधित के सिवाय, रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र के प्रदान के लिए संदत्त की गई फीस अप्रतिदेय होगी;
- (घ) भवन निर्माण कर्मकारों को नियोजक द्वारा संदेय मजदूरी दर, ऐसे नियोजन के लिये जहां वह लागू है, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 (1948 का 11) के अधीन विहित दरों से कम नहीं होगी और जहां दरें किसी करार, समझौते या पंचाट द्वारा नियम की गई हैं। वहां इस प्रकार नियम दरों से कम नहीं होगी; और
- (ङ) नियोजक अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों का अनुपालन करेगा।

प्ररूप III

[देखिये नियम 19 (2)]

स्थापनों का रजिस्टर

क्रम संख्या	रजिस्ट्रीकरण संख्या और तारीख	रजिस्ट्रीकृत स्थापना का, जहां भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य होना है, नाम और पता अवस्थिति	नियोजक का नाम और उसका पता	भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य की प्रकृति
1	2	3	4	5
स्थापना का नाम और स्थायी पता	कार्य प्रारंभ होने की संभावित तारीख	किसी भी दिन नियोजित किए जाने वाले भवन निर्माण कर्मकारों की अधिकतम संख्या	भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य की संभाव्य कार्यविधि और कार्य समाप्ति की संभावित तारीख	टिप्पणियां
6	7	8	9	10

प्ररूप IV

[देखिये नियम 20(3) और नियम 86 (1)]

भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य के प्रारंभ/समाप्ति की सूचना

- (i) स्थापना का नाम और पता (स्थायी)
- (ii) नियोजक का नाम और पता
- स्थान का, जहां भवन निर्माण और अन्य निर्माण करने का प्रस्ताव है, नाम और स्थिति
- रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र की संख्या और तारीख.....
- निर्माण कार्य के भारसाधक व्यक्ति का नाम और पता
- वह पता जहां भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य से संबंधित सूचना भेजी जा सके।
- कार्य की प्रकृति और संयंत्र तथा मशीनरी सहित प्रदान की गई प्रसुविधाएं।
- भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य में उपयोग होने वाले विस्फोटक, यदि कोई है तो, का भंडारण इंतजाम।
- कार्य प्रारंभ की सूचना की दशा में, कार्य की संभावित कालावधि।

मैं/हम यह सूचना देता हूँ/देते हैं कि भवन निर्माण अथवा अन्य निर्माण कार्य (कार्य का नाम) जिसका रजिस्ट्रीकरण संख्या..... तारीख..... है,तारीख से/को प्रारंभ/समाप्त होने की संभावना है।

नियोजक के हस्ताक्षर

सेवा में

नियोजक

प्ररूप V

[(देखिए-नियम 28 (4))]

पंजीकरण हेतु आवेदन

- (1) नाम
- (2) पता
- (3) क्या अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति से संबंधित है
- (4) पिता का नाम
- (5) दाम्पत्य दर्जा - विवाहित/अविवाहित या तलाकशुदा
- (6) जन्म तिथि
- (7) उस स्थापन का नाम, पता, पंजीकरण संख्या जहां आवेदनकर्ता काम करता हो
- (8) ई0एस0आई0/भविष्य निधि संख्या
- (9) नियोजक का नाम और पता
- (10) कुल सेवा काल
- (11) अंशदान-दर
- (12) बैंक और शाखा का नाम जहां अंशदान का भुगतान किया जाता है
- (13) यदि आवेदन कर्ता, किसी अन्य कल्याण बोर्ड का पहले से सदस्य हो तो उस बोर्ड का नाम और आवेदनकर्ता की पंजीकरण संख्या ऊपर वर्णित तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और जानकारी के अनुसार सही हैं।

स्थान
तिथि

आवेदन कर्ता के हस्ताक्षर
नियोजक का नाम और हस्ताक्षर

प्ररूप VI

[(देखिए-नियम 28 (7))]

नामांकन प्ररूप

मैं, अपने अधिकार प्राप्त आश्रितों के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों को मेरी ओर से कोष से सभी बनती शेष राशि प्राप्त करने और मेरी मृत्यु होने की स्थिति में मेरे शेष बनते सभी लाभों की राशि प्राप्त करने के लिए नामित करता हूँ।

नामित व्यक्ति/व्यक्तियों के नाम तथा पते	सदस्य के साथ संबंध	नामित व्यक्ति की आयु	प्रत्येक नामित व्यक्ति को दी जाने वाली राशि
1	2	3	4

स्थान :
तिथि :

नाम, पता, पंजीकरण संख्या और कर्मकार का पता

प्ररूप- VII

[(देखिए नियम 28 (8)]

पहचान पत्र का प्ररूप

पृष्ठ I

फोटो

पंजीकरण प्राधिकारी के हस्ताक्षर, तिथि तथा पदनाम (कार्यालय मोहर सहित)

पृष्ठ II

सदस्य का नाम

पता

पुरुष/महिला

नौकरी का नाम

पंजीकरण संख्या

जिला

पंजीकरण तिथि

बैंक तथा शाखा का नाम जहां अंशदान राशि का भुगतान करना है ।

अंशदान-दर: 20 रुपये

पृष्ठ III

जन्म तिथि

पूरी की गई आयु

सेवा निवृत्ति तिथि

दाम्पत्य स्थिति-विवाहित/अविवाहित

पति/पत्नी का नाम

पता

क्या पति/पत्नी में से कोई इस बोर्ड का सदस्य है ? हां/नहीं

यदि हां तो नाम और पंजीकरण संख्या

नामित व्यक्ति का नाम

सदस्य के साथ सम्बन्ध

सदस्य के हस्ताक्षर/अंगूठे का निशान

पंजीकरण प्राधिकारी के कार्यालय पद नाम और हस्ताक्षर

प्ररूप VIII

[देखिए नियम 28 (8)]

पहचान पत्र-रजिस्टर

जिले का नाम					
क्रमांक	पहचान पत्र संख्या	जारी करने की तिथि	श्रमिकों का नाम और पता	जिला कार्यकारी अधिकारी के हस्ताक्षर	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6

प्ररूप IX

[देखिए नियम 30 (2)]

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड

श्रमिकों के विवरण संबंधी		मास के लिए विवरणी		
स्थापन का नाम और पता				
क्रमांक	पिछले महीने के समाप्ति पर कर्मकार संख्या	महीने में नौकरी छोड़ने वाले कर्मकारों की संख्या और नाम	पंजीकरण करने वाले कर्मकारों की संख्या और नाम	चालू महीने की समाप्ति पर कर्मकारों की संख्या
1	2	3	4	5

स्थान :

तिथि :

नियोजक का नाम और हस्ताक्षर
(कार्यालय मोहर)

प्ररूप- X

[देखिए नियम 30 (3)]

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड

स्थापन की विशिष्टियाँ	
1	स्थापन का नाम :
2	स्थापन प्रकार—क्या कम्पनी/हिस्सेदारी फर्म/एकल स्वामित्व है :
3	हिस्सेदारों/निदेशकों/स्वामी के नाम :
4	प्रबन्धन हिस्सेदार/प्रबन्धन निदेशक/स्थापन के संपूर्ण नियंत्रण वाले व्यक्ति का नाम :
5	शाखाओं का विवरण :
6	अधिष्ठताओं का विवरण :
स्थान तिथि :	नाम, हस्ताक्षर और पदनाम (कार्यालय मोहर)

प्ररूप XI

[देखिए नियम 50]

मातृत्व लाभ के लिए आवेदन

1	आवेदनकर्ता का नाम और पता
2	पंजीकरण संख्या
3	आयु तथा जन्म तिथि
4	पति का नाम
5	प्रसूति तिथि
6	क्या आपने इससे पहले इस लाभ हेतु आवेदन किया है
7	यदि हां, तो कितनी बार (विवरण दें)
8	पंजीकरण तिथि
9	प्रथम अंशदान के भुगतान की तिथि और राशि
10	अन्तिम अंशदान के भुगतान की तिथि

11	बैंक का नाम और स्थान
12	प्रस्तुत दस्तावेज सूची (क) चालान की प्रति अथवा पास बुक की प्रति (ख) मूल रूप में डाक्टरी प्रमाणपत्र
मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार उपरोक्त दिए गए तथ्य सही हैं।	
स्थान :	आवेदनकर्ता का नाम तथा हस्ताक्षर
तिथि :	
डाक्टरी प्रमाणपत्र का प्ररूप	
चिकित्सा अधिकारी से, जो सहायक सर्जन की पदवी से नीचे का न हो, प्राप्त किया जाना है।	
मैंने श्रीमती	आयु और श्री
की पत्नी का डाक्टरी मुआयना किया है। वह गर्भवती है और	मास चल रहा है।
उसने	को बच्चे को जन्म दिया है।
स्थान :	डाक्टर का नाम तथा मोहर
तिथि :	

प्ररूप XII

[देखिए-नियम 52 (1)]

पैन्शन हेतु आवेदन

1	आवेदनकर्ता का नाम और पता
2	पंजीकरण संख्या
3	60 वर्ष की आयु पूरी करने की तिथि
4	प्रथम अंशदान के भुगतान की तिथि (राशि और बैंक का नाम)
5	यदि कोई चूक हुई है तो उसके कारण
6	अन्तिम अंशदान के भुगतान की तिथि (राशि, तिथि तथा बैंक का नाम)
7	दस्तावेजों की सूची (क) पहचान पत्र (ख) पास बुक (ग) चालान
8	पता जहां पैन्शन भेजी जानी है

9	कोई अन्य जानकारी (किसी अन्य कल्याण बोर्ड से प्राप्त कोई लाभ हो तो उनका विवरण)
उपरोक्त वर्णित तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही है।	
स्थान :	आवेदनकर्ता का नाम तथा हस्ताक्षर
तिथि :	

प्ररूप XIII

[देखिए नियम 52 (6)]

पैन्शन भुगतान-रजिस्टर

पी०पी०ओ० नम्बर	डी०बी०ओ०सी० डब्ल्यू०डब्ल्यू० बोर्ड की सदस्यता संख्या सहित पैन्शन धारक का नाम तथा पता	जन्म तिथि योजना में प्रविष्टि की तिथि	सेवा निवृत्ति की तिथि	कुल सेवा काल	स्वीकृति प्राधिकारी का आदेश संख्या और तिथि	पैन्शन शुरू होने की तिथि
1	2	3	4	5	6	7

पैन्शन की मासिक दर	सचिव/डी०ई०ओ० के आदेश (तिथि के साथ)	टिप्पणी पैन्शन आदि रद्द करने के आदेश। यहां सचिव/डी०ई०ओ० के आदेश के अधीन प्रभावी तिथि के साथ, कारणों समेत दर्ज किए जा सकते हैं।
8	9	10

भुगतान, पेंशन का विवरण

मास / वर्ष	पेंशन राशि	मनीआर्डर भेजने की तिथि	डी०ई०ओ०/एस० एस० के आद्यक्षर और तिथि	टिप्पणी (यदि पत्र आदि वापिस आया तो यहां दर्ज किया जाए (विवरण सहित))
1	2	3	4	5

प्ररूप XIV

[देखिए नियम 53 (1)]

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड

आवेदन संख्या

फीस

रुपये

एच०बी०ए० के लिए आवेदन

- (1) (क) आवेदनकर्ता का नाम :
(ख) स्थाई पता :
(ग) वर्तमान पता :
- (2) जन्म तिथि :
- (3) सेवा निवृत्ति की तिथि :
- (4) (क) रजिस्टर संख्या :
(ख) पंजीकरण की तिथि :
(ग) राशिदान की दर :
(घ) प्रथम राशिदान तिथि :
(ङ) अन्तिम राशिदान तिथि :
(च) राशिदान में दी गई कुल राशि :
- (छ) क्या कभी सदस्यता पुनर्जीवित हुई, यदि ऐसा हो तो उसका विवरण
- (ज) पुनर्जीवन के पूरे विवरण
- (5) पेशगी राशि लेने का उद्देश्य (नया निर्माण/रख रखाव/ भूमि-भवन के साथ खरीद)
- (6) क्या आवेदनकर्ता का अपना घर है (यदि हां तो विवरण दें) :
- (7) पेशगी राशि की अपेक्षित राशि :
- (8) भूमि सम्पत्ति का विवरण :
(क) पंचायत/कस्बा :
(ख) गांव :
(ग) ताल्लुका :
(घ) जिला :

(ड) क्षेत्रफल :

(च) सर्वेक्षण संख्या :

(छ) सम्पत्ति का मूल्यांकन :

- (9) क्या आवेदनकर्ता ने मकान निर्माण पेशगी के रूप में कोई अन्य ऋण लिया है (विवरण दें)
- (10) नक्शे के अनुसार निर्माण/भवन रखरखाव का अनुमान
- (11) ऋण के अतिरिक्त उठाई गई राशि का विवरण
- (12) क्या आवेदनकर्ता ने इस बोर्ड से पहले भी ऋण लिया है।

घोषणा

मैं एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त कथन मेरे समुचित ज्ञान और विश्वास के अनुसार सही है।

स्थान :

हस्ताक्षर

तिथि :

नाम

पेश किए जाने वाले दस्तावेजों का विवरण :

- 1 (स्वीकृत) नक्शा और अनुमान
- 2 14 वर्ष का कोई व्यवधान न होने का प्रमाणपत्र
- 3 अवस्थिति प्रमाणपत्र
- 4 भूमिकर की रसीद
- 5 मूल दस्तावेज
- 6 रख रखाव आवेदन के लिए राशनकार्ड (पृष्ठ 2,4) की सत्यापित प्रति
- 7 भवन का स्वामित्व (केवल रख रखाव हेतु)
- 8 टर्मिनल लाभ घोषणा
- 9 पहचान पत्र और पास बुक की सत्यापित प्रतियाँ
- 10 स्वत्व स्पष्टीकरण प्रमाणपत्र
- 11 भवन आयु प्रमाणपत्र (केवल रखरखाव के लिए)
- 12 भवन का मूल्यांकन प्रमाणपत्र (केवल रख रखाव हेतु)
- 13 निर्माण के लिए संबंधित प्राधिकारी से अनापत्ति प्रमाणपत्र
- 14 आवेदनकर्ता से घोषणापत्र कि न तो उसको और न ही उसके पति/पत्नी अथवा बच्चों का अपना मकान है (नए निर्माण हेतु)

बन्धकपत्र

यह बन्ध पत्र _____ दिन _____ मास वर्ष दो हजार _____ को श्री/ श्रीमती _____ पुत्र/ पुत्री/पत्नी श्री _____ आयु _____ निवासी _____ गांव _____ ताल्लुका _____ जिला _____ और श्री/श्रीमती _____ पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री _____ आयु _____ निवासी गांव _____ ताल्लुका _____ जिला _____ द्वारा (इसके बाद जिन्हें बन्धकर्ता कहा जाएगा इसमें उस/ उन के निष्पादक, प्रबंधक, कानूनी प्रतिनिधि तथा भार सौंपने वाला शामिल होगा/ होंगे) भवन और अन्य निर्माण श्रमिक कल्याण अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित हरियाणा भवन और अन्य निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड के पक्ष में जिसका मुख्य कार्यालय चण्डीगढ़ में है (इसके बाद जिसे बन्धकधारी कहा जाएगा जिसमें इसके वारिस अथवा भार सौंपने वाला जैसा भी संदर्भ अथवा अर्थ इसकी अनुमति देते हैं, या अपेक्षित है शामिल होंगे)।

चूंकि जबकि बन्धकर्ता/ कर्ताओं ने इसके अधीन लिखित अनुसूची में लिखित विशेष रूप से उल्लिखित तथा वर्णित भूमि पर मकान बनाने के लिए बंधकदार के पास 50000/-रु० (केवल पचास हजार रुपये) के ऋण के लिए आवेदन किया है।

और चूंकि जबकि बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं के निवेदन पर बन्धकधारक, बन्धककर्ता को दो किस्तों में 50000/-रु० (केवल पचास हजार रुपए) की राशि पेशगी राशि के रूप में इसमें शामिल निर्बन्धनों तथा शर्तों के अधीन देने को सहमत हुआ है और इस राशि को लौटाने की विधि, इसमें वर्णन के अनुसार सुनिश्चित की गई है।

अब इस बंधकपत्र की गवाही निम्न प्रकार से है :

1. उक्त समझौते के अनुसरण में और बंधकधारक द्वारा, बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं को 50,000/-रु० (केवल पचास हजार रुपए) की राशि ऋण रूप में और पेशगी / और अदा करने (इसके द्वारा जिसकी बन्धककर्ता प्राप्ति स्वीकार करता है) को ध्यान में रखते हुए, बन्धककर्ता (बन्धककर्ताओं) एतद द्वारा सरल बन्धक के माध्यम से अचल सम्पत्ति हस्तांतरित करता/ करते हैं, विशिष्ट रूप से वर्णित और अनुसूची में स्पष्ट रूप से बताए गए और उस पर निर्माण किए जाने वाले भवन और उस पर समय समय पर सुधार करने के बारे में लिखित रूप से इस सीमा तक वह सम्पत्ति, उस पर निर्मित भवन और किए गए सुधार, उक्त ऋण की राशि ब्याज और खर्च राशि बंधक धारक को लौटाए जाने के लिए जमानत बने रहेंगे अथवा निगरानी में रहेंगे और बन्धकधारक का इन पर पहला अधिकार होगा।

2. ऋण की राशि बंधकधारक द्वारा, बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं को दो किस्तों में अदा की जाएगी जिसमें से पहली किस्त ऋण स्वीकृत राशि के 40 प्रतिशत के बराबर अर्थात् 20,000/-रुपए (केवल बीस हजार रुपए) बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं को निर्माण शुरू करने के लिए दी जाएगी और ऋण की राशि का 60 प्रतिशत के बराबर 30 हजार रुपए (तीस हजार रुपए) की दूसरी किस्त छत का निर्माण सम्पन्न होने और अन्तिम साज-सज्जा शुरू करने पर अदा की जाएगी। दूसरी किस्त की राशि का उपयोग करके भवन का निर्माण हर प्रकार से मुकम्मल किया जाएगा और अन्तिम किस्त प्राप्त होने के बाद दो महीने के अन्दर अन्दर, निर्माण संपूरित प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया जाएगा।

3. किस्त राशि की अदायगी केवल धनराशि की उपलब्धता के अधीन होगी और धनराशि की कमी के कारण, किस्त राशि न मिलने से बंधककर्ता/ बन्धककर्ताओं इसके हकदार नहीं होंगे कि वे पुरुष/ महिला इस आधार पर बंधकधारक से, हुई हानि की भरपाई करवाएँ।

4. बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं एतदद्वारा बन्धक धारक को यकीन दिलाएगा/ दिलाएंगे कि वह पुरुष/ महिला/ वे, यहां की अनुसूची में वर्णित सम्पत्ति के पूर्ण स्वामित्व वाला/ वाली/ वाले हैं और वे हर प्रकार के भार से अथवा किसी भी प्रकार के भार विवरण से मुक्त हैं वह चाहे कुछ भी हो अथवा कुर्की अथवा प्रथकता के प्रतिबंधों से मुक्त हैं।

5. बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं इस जमानत के दौरान कभी भी, इस अनुसूची में वर्णित सम्पत्ति अथवा इसके किसी भाग के संबंध में किसी भी प्रकार से इस को रहन करके अथवा वचन देकर अथवा किसी व्यवधान को पैदा कर अन्य स्थान पर बन्धक संबंध अथवा जिम्मे नहीं करेंगे और न ही तब तक, हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के मुख्य निष्पादन अधिकारी से लिखित में पूर्व अनुमति लिए बिना किराए या पट्टे पर दे सकेंगे जब तक मूल राशि का ब्याज सहित भुगतान नहीं कर दिया जाता।

6. ऋण पर ब्याज की दर 5 प्रतिशत वार्षिक होगी अथवा जो बन्धक धारक द्वारा समय समय पर निर्धारित उच्च दर होगी की जाए।

7. ऋण की वापसी, बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं द्वारा, बन्धकधारक द्वारा नियत अथवा सूचित दर पर मासिक किस्तों में की जाएगी। ऋण की राशि की पहली किस्त के भुगतान के बाद 6 महीने समाप्त होने पर, वापसी की पहली किस्त देय होगी। पश्चातवर्ती किस्तें 167 महीनों तक, आने वाले महीने के दसवें दिन अथवा पहले भुगतान की जाएगी। किस्त की राशि के लौटाने की तिथि पर यदि ब्याज की राशि, ऋण पर शेष बनेगी तो वह भी किस्त राशि के साथ ही लौटानी होगी।

8. ऋण की दूसरी किस्त की राशि अदा करते समय बन्धकधारक, दूसरी किस्त के भुगतान की तिथि तक, पहली ऋण किस्त पर बनते ब्याज और अन्य खर्चों की राशि, किस्त राशि में से काट कर शेष राशि अदा करेगा। यदि बंधकधारक, धनराशि की कमी के कारण, बन्धककर्ता को ऋण राशि का कुछ भाग ही अदा करता है तो उस अंश ऋण राशि की वापसी, बन्धककर्ता द्वारा, बंधकधारक द्वारा नियत और सूचित दर पर किस्तों में की जाएगी।

9. यदि ऋण की राशि की एक या अधिक किस्तें प्राप्त करने के बाद शेष ऋण राशि किस्तों के भुगतान से पूर्व बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं की मृत्यु हो जाती है और उस/ उन (पुरुष, महिला अथवा दोनों) का वारिस/ के वारिस, निष्पादक शेष ऋण राशि प्राप्त करने से इन्कार करता/ करते हैं और साथ ही पहली ऋण राशि किस्त मिलने की तिथि के बाद एक वर्ष में मकान का निर्माण स्वीकृत योजना और राशि अनुमान के अनुरूप पूरा करने से इन्कार करता/ करते हैं तो ऋण को पूरी राशि ब्याज समेत, मृत बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं की चल अथवा अचल सम्पत्ति के विरुद्ध शीघ्र कार्यवाही करके, तत्समय लागू राजस्व वसूली के उपबन्धों के अन्तर्गत और हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण नियमों के सुसंगत उपबन्धों के अधीन वसूल की जाएगी जैसा कि भूमि पर सार्वजनिक राजस्व की शेष राशि की वसूली की जाती अथवा ऐसे अन्य ढंग से वसूली की जाएगी जो बन्धकधारक ठीक समझे।

10. यदि मृत बन्धककर्ता/ बन्धककर्ताओं का वारिस निष्पादक/ के वारिस निष्पादक ऋण की शेष बनती राशि की आवश्यकता नहीं मानता/ मानते और, तथापि, अपने/ पुरुष/ महिला/ वे अपने खर्च पर मकान का निर्माण मुकम्मल करने का इच्छुक/ इच्छुक हैं तो पहले से ही

बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं को स्वीकृत की गई ऋण राशि में से, दी गई राशि को ही वास्तविक स्वीकृत ऋण राशि मान लिया जाएगा और उस ऋण राशि के लिए निर्धारित दर की किस्तों में वसूली प्रभावी होगी।

11. बन्धककर्ता/ बंधककर्ताओं द्वारा किस्त की राशि, बन्धकधारक द्वारा निर्धारित बैंक में, इस प्रयोजन से विनिर्दिष्ट रीति में जमा करवाई जाएगी अथवा यह राशि हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा निर्धारित चालान द्वारा जमा होगी।

12. यदि देय तिथि पर मूलधन या ब्याज की कोई किस्त जमा नहीं करवाई जाती तो सामान्य ब्याज दरों के अतिरिक्त 5 प्रतिशत दण्डनीय ब्याज दर की राशि जमा करनी होगी और साथ ही राशि देय तिथि तक बनती राशि देनी होगी।

13. ऋण की राशि का प्रयोग केवल उसी प्रयोजन के लिए किया जाएगा जिसके लिए ऋण स्वीकृत किया गया है। ऊपर खण्ड 11 में निर्दिष्ट ऋण की प्रत्येक किस्त, निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रयोग में लाई जाएगी। यदि बन्धककर्ता/ बंधककर्ताओं पहली किस्त की राशि निकलवाने के बाद तीन महीने के भीतर, अगली किस्त की राशि का दावा करने में असफल रहता/ रहते तो तब तक उसके पहली किस्त की राशि को ही अन्तिम किस्त माना जाएगा जब तक बन्धकदार समयावधि नहीं बढ़ाता और राशि की वसूली, ऋण प्रदान करने के लिए निर्धारित निबंधनों और शर्तों के अनुसार शुरू हो जाएगी।

14. यदि बन्धककर्ता ऋण की किसी किस्त की राशि का, अधिकतम अनुमति वाली समयावधि में प्रयोग करने में विफल रहता/ रहते हैं और शर्तों में यथाउपबन्धित ऋण की पश्चातवर्ती के लिए आवेदन नहीं करता/ करते तो पहले से उसे/ उन्हें दी गई पूरी की पूरी राशि उससे/ उनसे ब्याज समेत एक ही बार में वसूली योग्य होगी।

(क) यदि बन्धककर्ता/ कर्ताओं का पता चले कि बन्धकपत्र में विनिर्दिष्ट नियमों के अनुसार मकान के निर्माण के लिए, निर्धारित समयावधि इस्तेमाल करने में विफल रहा/ रहे हैं तो बन्धकधारक तीस दिन की अवधि के भीतर राशि वापसी के निर्देशों का पंजीकृत नोटिस जारी करने के बाद, संपूर्ण ऋण राशि और उसके साथ अन्य प्रभार ब्याज के साथ वसूल करने का हकदार होगा।

(i) यदि बन्धककर्ता, पूरी देय राशि निर्धारित समय में लौटा देता/ देते हैं तो बन्धकपत्र वापिस कर दिया जाएगा।

(ii) यदि बन्धककर्ता, ऊपर निर्धारित 60 दिन की अवधि में देय राशि लौटाने में विफल रहता/ रहते हैं तो बन्धकधारक को हक होगा कि पूरी राशि की वसूली के लिए बोर्ड के साथ मिलकर पत्र कार्रवाई करे। इसके अतिरिक्त, ऋण प्राप्तकर्ता द्वारा ली गई वास्तविक ऋण राशि पर दण्ड रूप में राशि जो ऋण राशि के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी अथवा 1,000 /-रु० (केवल एक हजार रुपये) इनमें से जो भी अधिक बनता हो, बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं से वसूल करेगा।

15. यदि आवेदन में भरकर दी गई कोई भी जानकारी झूठी मिले या विषयवस्तु में गलत पता चले तो बंधकधारक, ऋण को रद्द कर सकेगा और शेष बनती पूरी राशि और उस पर ब्याज की राशि समेत, उधार लेने वाले के विरुद्ध अनिवार्य मानी जाने वाली ऐसी कानूनी कार्यवाही करने के अतिरिक्त, बंधक सम्पत्ति को बेचकर वसूल कर सकेगा।

16. बंधककर्ता, तब तक जमानत के रूप में रखी जमीन भवन पर, सम्पत्ति का मूल्य कम करने के लिए, बंधकदार द्वारा स्वीकृत योजना के अनुरूप बने भवन में कोई परिवर्तन या सुधार नहीं करेगा/ करेंगे जब तक ब्याज समेत संपूर्ण राशि लौटाई नहीं जाती।

17. यदि किसी सूरत में बंधककर्ता किसी समय लगातार दो किस्तों की वापसी करने में चूक करता/ करते हैं, अथवा में दिये गये सभी या किन्हीं निबंधनों तथा शर्तों को भंग करता/ करते हैं तो मूलधन की शेष राशि जो उस समय तक चुकाई नहीं गई हो और उस पर बनता ब्याज और इन कारणों से बंधकधारक की बनती पूरी राशि तुरंत एक मुश्त देय होगी और यदि तुरंत पूरी राशि की वापसी नहीं की जाती तो बंधकधारक को अधिकार होगा कि किसी अदालत के हस्तक्षेप के बिना, बंधक सम्पत्ति को अपने कब्जे में ले सके और उसे बेच सके। बंधकधारक की बनती राशि के मिलान के बाद, सम्पत्ति की बिक्री शेष बची राशि, बंधककर्ता को वापस की जाएगी। बंधकधारक को सम्पत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 के उपबन्धों के अधीन बंधकधारक में निहित सभी शक्तियों का प्रयोग भी कर सकेगा।

18. बंधकदार के किसी अथवा सभी अन्य अधिकारों और उनके समाधानों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, इस समय बंधकधारक की देय सभी प्रकार की राशि इन उपस्थितियों के अधीन या धारा तत्समय लागू राजस्व वसूली अधिनियम के उपबन्धों के अधीन बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं तथा उसके/ उनके वारिस/ वारिसों की चल और अचल सम्पत्तियों में से यद्यपि वे भूमि पर देय सार्वजनिक राजस्व के बकाया हो और हरियाणा भवन और अन्य सहनिर्माण कर्मकार अधिनियम के सुसंगत उपबन्धों के अनुरूप या अन्य रीति में जो बंधकधारक उचित समझे वसूली योग्य होगी।

19. बंधककर्ता आवेदन पत्र की निबंधनों और उनके साथ जुड़ी शर्तों द्वारा बाध्य किया जाएगा जो इस बंधपत्र की भागरूप होंगी जैसे उन्हें बंधपत्र में निगमित किया गया है।

20. इस बंधक का पूरा विवरण बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं को समझा दिया गया है और बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं ने इन वर्तमान उपबन्धों का निष्पादन पूरी तरह उनके आशय को समझकर तथा उसने/ उन्होंने (पुरुष/ महिला) इसके अंतर्गत अपनी अनिवार्यताओं और ऐसी सलाह प्राप्त करने के बाद किया है।

ऊपर निर्दिष्ट अनुसूची

(यहां सभी भूमि तथा भवनों का विवरण दें)

बंधककर्ता/ बंधककर्ताओं श्री _____ ने गवाहों की उपस्थिति में _____
दिन, महीना, वर्ष को हस्ताक्षर किये हैं तथा निम्नलिखित गवाहों की उपस्थिति में श्री/ श्रीमती _____ द्वारा हस्ताक्षर किये गए

1

2

श्री/ श्रीमती _____ द्वारा निम्नलिखित गवाहों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए:-

1.

2.

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा आवास योजना के अन्तर्गत स्वीकृत, पेशगी राशि की दूसरी किस्त जारी करने के लिए निर्माण चरण प्रमाण पत्र

लाभपात्र	सम्पत्ति
1 पंजीकरण संख्या	जिला
2 नाम	ताल्लुका
3 पता	गांव
4 हस्ताक्षर	सर्वेक्षण संख्या

ऊपर विनिर्दिष्ट लाभ पात्र द्वारा ऊपर दी गई सम्पत्ति में भवन निर्माण कार्य नींव आधार के संपूर्ण निर्माण तक और लिटल स्तर तक संपूर्ण कार्य/लिटल कार्य के संपूर्ण होने/लिटल कार्य का पूरा होना तथा छत का 50 प्रतिशत और शटर्ज के कार्य संबंध सामग्री का भण्डार करने का काम/छत का काम पूरा करके नक्शे के अनुसार अन्तिम रूप देने का 40 प्रतिशत कार्य पूरा होने पर लाभ पात्र, हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा स्वीकृत ऋण की दूसरी किस्त पाने का पात्र है।

प्रमाणित किया जाता है कि

रु० मूल्य का कार्य

तिथि तक लाभपात्र द्वारा किया जा चुका है।

स्थान

जिला, कार्यकारी अधिकारी टी०ई०ओ० अथवा

तिथि

अन्य प्राधिकृत अधिकारी के हस्ताक्षर (नाम और पदनाम)

कार्यालय का नाम

प्ररूप XV

[देखिए नियम 54 (2)]

अशक्तता (अयोग्यता) पेंशन हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
- 2 आयु तथा जन्म तिथि
- 3 पंजीकरण संख्या
- 4 प्रथम अंशदान भुगतान तिथि (राशि और बैंक का नाम तथा शाखा)
- 5 अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि
(राशि और बैंक का नाम)
- 6 अंशदान की कुल राशि
- 7 रोग/दुर्घटना का विवरण
- 8 रोग/दुर्घटना के कारण हुई अशक्तता की प्रकार
- 9 सरकारी अस्पताल में उपचार का विवरण (दाखिले और छुट्टी की तिथियाँ)
- 10 क्या रोगी को पलस्तर लगा ?
यदि हां तो कितने दिनों तक का
- 11 उपचार पर खर्च राशि
(इलाज करने वाले डाक्टर द्वारा प्रति हस्ताक्षरित मैडीकल बिल साथ लगाए)
- 12 प्रस्तुत दस्तावेजों की सूची
- 13 इससे पहले प्राप्त लाभों का विवरण (यदि कोई हो)
- 14 ऊपर वर्णित उपचार हेतु यदि किसी सरकार या अन्य संस्था से लाभ लिया हो तो उसका विवरण

उपरोक्त तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही है।

स्थान :

तिथि :

आवेदनकर्ता का नाम तथा हस्ताक्षर

प्ररूप XVI

[(देखिए नियम 55)]

औजार ऋण हेतु आवेदन

- | आवेदन संख्या | फीस | रूपये |
|--|-----|-------|
| 1 आवेदनकर्ता का नाम | | |
| 2 पिता/पति का नाम | | |
| 3 निवास का पता | | |
| 4 रजिस्टर संख्या | | |
| 5 बैंक का नाम, जहां योगदान राशि जमा करवाई है | | |
| 6 आयु तथा जन्म तिथि | | |
| 7 मासिक आय | | |
| 8 आवेदनकर्ता के पास यदि अन्य सम्पत्ति (स्वामित्व और कब्जे में) हो तो उस का विवरण | | |

- 9 जमानत देने वालों का विवरण
नाम और पता
उपजीविका और पता
आयु और जन्म तिथि
वर्तमान शुद्ध मासिक आय
जमानत देने वाले के स्वामित्व/कब्जे वाली अन्य सम्पत्तियों का विवरण
क्या जमानत देने वाले ने पहले किसी अन्य
लेन देन में जमानत की पेशकश की है ?
यदि हां तो उसका विवरण
- 10 क्या नियोजक से लेकर वेतन प्रमाणपत्र साथ में लगाया गया है ?
- 11 खरीदे जाने वाले औजारों का विवरण
(क) विवरण
(ख) मार्का
(ग) माडल
(घ) बीजक मूल्य (प्रति संलग्न)
(ङ) पूर्तिकार/डीलर का नाम और पता
- 12 (क) आवेदन किए गए ऋण की राशि
(ख) राशि लौटाने की प्रस्तावित मासिक किस्तों की संख्या

घोषणा—

मैं/हम पुष्टि करते हैं कि राशि का इस्तेमाल केवल बताए गए उद्देश्य के लिए ही उपयोग किया जाएगा और इस का प्रयोग सट्टे और/अथवा समाज विरोधी उद्देश्यों में नहीं किया जाएगा।

मैं/हम समझते हैं कि यदि राशि का प्रयोग बताए गए उद्देश्य से न किया गया तो बोर्ड को धन राशि वापिस लेने का अधिकार है।

मैं/हम जानते हैं कि सुविधा स्वीकृति बोर्ड के विवेक और मैं/हम बोर्ड की सन्तुष्टि के अनुरूप आवश्यक सुरक्षा दस्तावेज निष्पादित करेंगे।

स्थान :

आवेदनकर्ता के हस्ताक्षर

तथि :

जमानती — नाम और हस्ताक्षर

(केवल कार्यालय उपयोग हेतु)

श्री _____ जो _____ रूप में _____ नियुक्त है, द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र की जांच की गई है। उधार लेने वाले जमानती के संबंध में नियुक्ति का प्रमाणपत्र और जमानती नियोजक द्वारा जिम्मेदारी के साथ संलग्न है।

रु० (शब्दों में) _____ रु० की राशि, उस उद्देश्य से स्वीकृत की जाए जिसके लिए निवेदन किया है/पात्रता बीजक की 75 प्रतिशत राशि _____ रु० की (शब्दों में) _____

_____) समान मासिक किस्तों में वसूल की जानी है। अन्तिम किस्त की राशि, अभी तक के भुगतान की _____ किस्त, पश्चात् शेष राशि के साथ, ऋण राशि के संपूर्ण भुगतान के समय तक की बोर्ड की शेष राशि का भुगतान भी किया जाएगा।

स्वीकृत/अस्वीकृत

जिला निष्पादन अधिकारी

सचिव

हरियाणा भवन तथा अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड नियुक्ति प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती

पुत्र/पुत्री/पत्नी

श्री

मकान नम्बर

कस्बा

देसम

गांव

ताल्लुका

जिला

इस समय निवासी

मकान नम्बर

कस्बा, देसम

स्थायी/स्थानापन्न/कार्यकारी/अस्थायी

(पदनाम) है

उसका सेवा विवरण निम्नलिखित प्रकार से है

1 सेवा में प्रवृष्टि तिथि

2 निरंतर सेवा में आने की तिथि

3 सेवा निवृत्ती की तिथि

उसके वेतन आदि का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है

1 मूल वेतन

(क) भविष्य निधि

2 महंगाई भत्ता

(ख) जीवन बीमा निगम की राशि वसूली

3 आवास किराया भत्ता

(ग) आयकर

4 प्रतिपूरक भत्ता

(घ) ऋण वसूली राशि

1

2

3

5. अन्य भत्ते

(ड) अन्य वसूलियां

कुल राशि (क)

कुल राशि (ख)

शुद्ध वेतन (क)

(ख) रुपये

स्थान:

हस्ताक्षर

तिथि:

नाम

कार्यालय मोहर

कार्यालय/ विभाग के मुखिया का पद नाम

वेतन से वसूली हेतु वचन

मैं (पूरा नाम)

कार्यालय/विभाग

हरियाणा भवन और अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड को वचन देता हूँ कि उधार लेने वाले ने उधार की राशि (शब्दों में) रु० की समान मासिक समान किस्तों में प्रत्येक महीने की तिथि को भुगतान करने का वचन दिया है। मैं यहां सहमति देता हूँ कि कथित लेन देन से संबंधित मासिक किस्तों के भुगतान में चूक की दशा में, समय-समय पर बोर्ड द्वारा निर्धारित राशि/मासिक किस्तों में मेरे वेतन से, स्रोत पर ही काट ली जाए बोर्ड निर्धारित राशि की सूचना देगा और बोर्ड अथवा उसके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधि के पास जमा करवाई जाए या इसका भुगतान किया जाए।

स्थान:

कर्मचारी के हस्ताक्षर

तिथि:

मैं उपरोक्त वसूलियों को प्रभावी करने के लिए सहमत हूँ।

स्थान:

तिथि:

कार्यालय मोहर

कार्यालय/ विभाग मुखिया के हस्ताक्षर

प्ररूप XVII

[देखिए नियम 56]

अन्तिम संस्कार के लिए प्रसुविधा राशि का आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
 - 2 आवेदनकर्ता का कर्मकार के साथ संबंध
 - 3 कर्मकार का नाम और पता
 - 4 पंजीकरण संख्या
 - 5 पंजीकरण की तिथि
 - 6 प्रथम अंशदान को भुगतान तिथि (राशि और बैंक का नाम, शाखा)
 - 7 अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि (राशि और बैंक का नाम, शाखा)
 - 8 सदस्यता की अवधि
 - 9 क्या सदस्यता कायम थी
 - 10 कर्मकार की मृत्यु की तिथि
 - 11 मृत्यु का कारण
 - 12 क्या आवेदनकर्ता, कर्मकार का नाम निर्देशित व्यक्ति है ?
 - 13 यदि नहीं तो क्या आवेदनकर्ता ने निर्भरता प्रमाणपत्र दिया है ?
 - 14 नाम निर्देशित व्यक्ति का नाम, आयु और जन्म तिथि
 - 15 यदि नाम निर्देशित व्यक्ति नाबालिग है तो अभिभावक का नाम और बच्चों के साथ उसका रिश्ता
 - 16 क्या अन्य नाम निर्देशित व्यक्तियों का सहमति प्रमाण पत्र दिया है ?
(जहां नाम निर्देशित व्यक्तियों की संख्या एक से अधिक हो)
 - 17 क्या नाबालिग बच्चों द्वारा अभिभावक का प्रमाण पत्र दिया गया है ?
 - 18 आवेदन की गई प्रसुविधा की राशि
- उपरोक्त मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही हैं ।

स्थान :

तिथि :

आवेदनकर्ता का नाम और पता

प्ररूप XVIII

[देखिए नियम 58 (1)]

मृत्यु लाभ हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
- 2 कर्मकार के साथ संबंध
- 3 कर्मकार का नाम और पता
- 4 पंजीकरण संख्या
- 5 आयु और जन्म तिथि
- 6 कर्मकार — क्या विवाहित है ?
- 7 मृत्यु कैसे हुई (विवरण दें)
- 8 प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
- 9 आवेदन की गई वित्तीय सहायता की राशि

उपरोक्त विवरण मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही है ।

स्थान :

तिथि :

हस्ताक्षर तथा नाम

प्ररूप XIX

[देखिए नियम 58 (4)]

मृत्यु लाभ - रजिस्टर

क्रमांक	आवेदन प्राप्ति की तिथि	कर्मकार का नाम और पंजीकरण संख्या	अंशदान भुगतान की अवधि	मृत्यु की तिथि	आदेश संख्या और तिथि	नामित व्यक्ति का नाम और पता तथा सदस्य के साथ संबंध	मृत्यु लाभ की राशि	वापिस की जाने वाली राशि	कुल राशि	आद्यक्षर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

प्ररूप XX

[देखिए नियम 59]

चिकित्सा प्रसुविधा हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
 - 2 आयु तथा जन्म तिथि
 - 3 पंजीकरण संख्या
 - 4 प्रथम अंशदान भुगतान तिथि
 - 5 अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि (राशि और बैंक का नाम)
 - 6 कुल दी जा चुकी अंशदान राशि
 - 7 रोग/सर्जरी संबंधी विवरण
 - 8 रोग/सर्जरी के कारण हुई अशक्तता, यदि कोई हो
 - 9 सरकारी अस्पताल में रोगी के रूप में चिकित्सा अवधि (अस्पताल में दाखिले की तिथि और छुट्टी की तिथि)
 - 10 प्रस्तुत दस्तावेजों की सूची
 - 11 यदि इससे पहले कोई चिकित्सा प्रसुविधा ली हो तो उसका विवरण
- मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार ऊपर वर्णित तथ्य सही हैं।

स्थान :

तिथि :

आवेदनकर्ता का नाम और पता

प्ररूप XXI

[(देखिए नियम 59)]

दुर्घटनाओं के लिए अनुग्रहपूर्वक चिकित्सा सहायता हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
- 2 आयु तथा जन्म तिथि
- 3 पंजीकरण संख्या
- 4 प्रथम अंशदान भुगतान तिथि (राशि , चालान, नम्बर और बैंक तथा शाखा का नाम)
- 5 अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि (चालान नम्बर, राशि, बैंक का नाम तथा शाखा)

- 6 अंशदान की कुल राशि
- 7 दुर्घटना संबंधी विवरण
- 8 दुर्घटना के कारण हुई अशक्तता की प्रकार
- 9 क्या इलाज सरकारी अस्पताल में हुआ ?
यदि हां तो अस्पताल में दाखिल की तिथि और छुट्टी की तिथि
- 10 क्या आवेदनकर्ता को पलस्तर लगा ?
यदि हां तो कितने दिन के लिए
- 11 प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
- 12 आवेदन की गई वित्तीय सहायता
- 13 क्या इससे पहले इलाज के लिए आपने कोई वित्तीय सहायता प्राप्त की है ? यदि हां तो विवरण दें
उपरोक्त तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही है।

स्थान :

तिथि :

आवेदनकर्ता के नाम तथा हस्ताक्षर

प्ररूप XXII

[(देखिए नियम 60)]

शिक्षण छात्रवृत्ति के लिए आवेदन

- 1 छात्र का नाम
- 2 पुरुष/महिला
- 3 (क) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति
(ख) क्या इसका प्रमाण संलग्न है ?
- 4 कालेज और सम्बद्ध और विश्वविद्यालय/बोर्ड का नाम
- 5 कोर्स का नाम और वर्ष
- 6 कोर्स में दाखिले की तिथि
- 7 छात्र की आयु और जन्म तिथि
- 8 पास की गई अर्हकारी परीक्षा का विवरण

परीक्षा का नाम

सम्बद्ध विश्वविद्यालय/ बोर्ड/
राज्य का नामअर्हकारी परीक्षा पास करने का
मास और वर्ष

9 अर्हकारी परीक्षा में प्राप्त अंक

विषय

प्राप्त अंक

अधिकतम अंक

प्रतिशतता

कुल अंक

10(क)

आवेदनकर्ता के माता पिता के नाम

- (ख) पंजीकरण संख्या
 (ग) प्रथम अंशदान भुगतान तिथि
 (घ) अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि
 (ङ) भुगतान किस्तों की संख्या
 (च) कुल अंशदान भुगतान राशि
 (छ) स्थाई पता
 (ज) क्या सदस्यता पुनः जीवित हुई है ? हां/नहीं

उपरोक्त वर्णित तथ्य मेरे ज्ञान के अनुसार सही है। यदि छात्रवृत्ति के लिए चयन हो जाता है तो मैं वचन देता हूँ कि मैं योजना में निर्धारित शर्तों का पालन करूँगा।

स्थान :

तिथि :

छात्र का नाम तथा हस्ताक्षर

छात्र के माता/पिता का शपथपत्र

मैं (नाम और पता) पुत्र अथवा पुत्री श्री
 (नाम और पता) निम्नलिखित विधिवत प्रतिज्ञान करता हूँ कि :

1 मेरा पुत्र/पुत्री श्री/श्रीमती (कोर्स का नाम तथा वर्ष)
 में पढ़ रहा/रही है।

2 मैं से बोर्ड का सदस्य हूँ मेरा पंजीकरण संख्या है।

3 (तिथि) तक अंशदान का भुगतान किया गया है।

4 यदि बाद में उपरोक्त तथ्य गलत पाए जाते हैं तो छात्र को दी गई छात्रवृत्ति की राशि, मेरे द्वारा वापिस लौटा दी जाएगी। सचिव का इस संबंध में निर्णय मेरे पर लागू होगा और यह निर्णय अन्तिम होगा और मैं इससे सहमत हूँ।

5 मैं, चूक होने पर मेरी ओर बनती राशि वसूल किए जाने के लिए भी सहमत हूँ।

स्थान :

तिथि :

हस्ताक्षर तथा नाम

(विधायक/सांसद/सदस्य पंचायत अध्यक्ष/राज्य अथवा केन्द्र के राजपत्रित अधिकारी के सामने हस्ताक्षर करने होंगे)

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती/श्री ने

मेरी उपस्थिति में यह हस्ताक्षर किए हैं।

स्थान :

तिथि :

(मोहर)

तसदीक कर्ता अधिकारी नाम - पदनाम

मैं (संस्था का नाम) का मुखिया इसके द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती/श्री

(नाम) वर्ष का कोर्स का छात्र है। मैंने छात्र द्वारा प्रस्तुत आवेदन की जांच की है और मैं विश्वस्त हूँ कि यह सही है। यह संस्था विश्वविद्यालय/बोर्ड से सम्बद्ध है।

स्थान :

(कार्यालय

प्रिंसीपल/मुखिया

तिथि :

मोहर)

के हस्ताक्षर

नाम

पद नाम

जिला कार्यकारी अधिकारी की जांच रिपोर्ट

- 1 श्री/श्रीमती इस बोर्ड की/का जीवित सदस्य है जिसका पंजीकरण संख्या है और नियमित रूप से अंशदान का भुगतान कर रही/रहा है।
- 2 उसने से तक नियमित रूप से अंशदान राशि का भुगतान किया है उसने अंशदान भुगतान में कभी चूक नहीं की है। से तक की अवधि के लिए उसकी सदस्यता बहाल हुई है। मैं आवेदन की सिफारिश करती हूँ/नहीं करता हूँ (रद्द करण के कारण)

जिला कार्यकारी अधिकारी

प्ररूपा -- XXIII

[(देखिए नियम 61)]

शादी-सहायता हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम
- 2 पता
- 3 पंजीकरण संख्या
- 4 आयु तथा जन्म तिथि
- 5 प्रथम अंशदान भुगतान तिथि (राशि, बैंक तथा शाखा का नाम)
- 6 अन्तिम अंशदान भुगतान तिथि (राशि, बैंक तथा शाखा का नाम)
- 7 सदस्यता की अवधि
- 8 क्या सदस्यता बरकरार है ?
- 9 यदि आवेदन पुत्र/पुत्री की शादी के लिए है तो
 - (1) क्या पति या पत्नी बोर्ड का सदस्य है ?
 - (2) यदि हां तो क्या उसने (पति/पत्नी) ने वित्तीय सहायता हेतु आवेदन किया है ?
 - (3) जिस पुत्र/पुत्री की शादी हो रही है उसकी जन्म तिथि
 - (4) पुत्र/पुत्री के वधु अथवा वर का पता
 - (5) शादी की तिथि और स्थान
 - (6) शादी प्रमाण पत्र की तिथि और संख्या
प्रमाण पत्र जारी करने वाले प्राधिकारी का नाम और पता
 - (7) क्या आपने अपने किसी अन्य पुत्र/पुत्री की शादी हेतु आवेदन किया है ? यदि हां तो विवरण दें।
- 10 यदि आवेदन अपनी शादी के लिए है (केवल महिला श्रमिक हेतु तो)
 - (1) पति/वर का नाम तथा पता --
 - (2) शादी की तिथि और स्थान --
 - (3) शादी के प्रमाण पत्र की संख्या --

प्राधिकारी का नाम जिसने प्रमाण पत्र जारी किया और तिथि

11. क्या आपको सरकार अथवा किसी अन्य संस्था से इस उद्देश्य के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है ?
उपरोक्त तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही हैं।

स्थान :
तिथि :

आवेदनकर्ता का नाम तथा हस्ताक्षर

प्ररूप - XXIV

[(देखिए नियम 62)]

पारिवारिक पेंशन हेतु आवेदन

- 1 आवेदनकर्ता का नाम और पता
- 2 पेंशन धारक/कर्मकार का पता
- 3 कर्मकार के साथ सम्बन्ध
- 4 कर्मकार की मृत्यु की तिथि
- 5 कर्मकार को मिल रही मासिक पेंशन
- 6 क्या आवेदनकर्ता सरकार/अर्धसरकारी अथवा किसी अन्य संस्था से पेंशन प्राप्त कर रहा है।
यदि हां तो इसका विवरण।
- 7 क्या आवेदनकर्ता को सरकारी/अर्धसरकारी/गैर सरकारी संस्था से वेतन मिल रहा है?
यदि हां तो इसका विवरण।
- 8 प्रस्तुत दस्तावेजों की सूची -

उपरोक्त तथ्य मेरे समुचित ज्ञान और सूचनाओं के अनुसार सही है।

स्थान :

तिथि :

आवेदनकर्ता का नाम तथा हस्ताक्षर

आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेजों की सूची

- 1 कर्मकार का मृत्यु प्रमाण पत्र
- 2 आवेदनकर्ता और कर्मकार के बीच संबंध दर्शाने वाला ग्राम अधिकारी का प्रमाणपत्र
- 3 ग्राम अधिकारी से प्रमाणपत्र जिसमें वर्णन हो कि आवेदनकर्ता को सरकारी/अर्धसरकारी/गैरसरकारी संस्था से कोई पेंशन प्राप्त नहीं हो रही है।
- 4 ग्राम अधिकारी से प्रमाण पत्र जिसमें वर्णन हो कि आवेदनकर्ता को किसी सरकारी/अर्धसरकारी/गैर सरकारी संस्था से वेतन नहीं मिल रहा है।

प्ररूप - XXV

(देखिए नियम 87)

नियोजक द्वारा नियोजित भवन कर्मकार का रजिस्टर

उस स्थापन का नाम और पता

जहां पर भवन और अन्य

संनिर्माण कार्य किया जाता है।

कार्य का प्रकार और स्थान

स्थापन का नाम और स्थायी पता

क्रम संख्या	कर्मकार का नाम और उपनाम	आयु और लिंग	पिता / पति का नाम	नियोजन की प्रकृति और पदनाम	कर्मकार के घर का स्थायी पता (ग्राम, ताल्लुका और जिला)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1					
2					
3					

स्थानीय पता	नियोजन के प्रारंभ की तारीख	कर्मकार का हस्ताक्षर या अंगूठा निशान	कर्मकार के पर्यवसान की तारीख	पर्यवसान के लिए कारण
(7)	(8)	(9)	(10)	(11)

यदि वह रजिस्ट्रेशन भवन कर्मकार / हिताधिकारी था तो हिताधिकारी के रूप में रजिस्ट्रेशन की तारीख, रजिस्ट्रेशन सं. और कल्याण बोर्ड का नाम	टिप्पणियां
(12)	(13)

प्ररूप -XXVI

[देखिए नियम 88(1)(क)]

मस्टर रोल

स्थापन का नाम और स्थायी पता
भवन या सन्निर्माण भवन और अन्य
किया जाना है

उस स्थापन का नाम और पता जहां पर अन्य
सन्निर्माण कार्य का प्रकार कार्य किया गया है

नियोजक का नाम और पता

मास के लिए

क्रम सं०	भवन कर्मकार का नाम	पिता/पति का नाम	लिंग	तारीख	टिप्पणियां
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
				1.	
				2.	
				3.	
				4.	
				5.	

प्ररूप - XXVII

[देखिए नियम 88 (i) (क)]

मजदूरी का रजिस्टर

उस स्थापन का नाम और पता जहाँ पर भवन या अन्य

स्थापन का नाम और स्थायी पता

सन्निर्माण कार्य किया जाता है

भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य का प्रकार

नियोजक का नाम और पता

मजदूरी अवधि: मासिक

क्रम संख्या	कर्मकार का नाम	कर्मकार के रजिस्टर में क्रम संख्या	किए गए कार्य का नाम/प्रकार	कार्य किए गए दिनों की संख्या	किए गए कार्य की यूनिट
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

अर्जित मजदूरी की रकम

दैनिक मजदूरी की दर/ मात्रानुपाती दर	मूल मजदूरी	महंगाई भत्ते	अतिरिक्त	अन्य नकद संदाय (संदाय का प्रकार उपदर्शित करें)	कुल
(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)

कटौती यदि कोई हो, (उपदर्शित करें)	शुद्ध संदत रकम	कर्मकार के हस्ताक्षर/अंगूठा निशान	नियोजक या उसके प्रतिनिधि के आद्यक्षर
(13)	(14)	(15)	(16)

प्ररूप - XXVIII

[देखिए नियम 88 (1) (क)]

मजदूरी-सह-मस्टर रोल के रजिस्टर का प्ररूप

उस स्थान का नाम और पता जहाँ पर भवन या अन्य

स्थापन का नाम और स्थायी पता

संनिर्माण कार्य किया गया है/किया जाना है।

भवन या अन्य संनिर्माण कार्य के प्रकार

क्रम संख्या (1)	भवन कर्मकार के रजिस्टर में क्रम संख्या (2)	कर्मचारी का नाम (3)	कार्य का नाम/प्रकार (4)	दैनिक उपस्थिति / किए गए कार्य की यूनिट (5)	कुल उपस्थिति/किए जा चुके कार्य की यूनिट (6)
--------------------	--	------------------------	----------------------------	---	--

1 1
2 2
3 3
4 4
5 5

अर्जित मजदूरी की रकम

दैनिक मजदूरी की दर मात्रानुपाती दर (7)	मूल मजदूरी (8)	महंगाई भत्ते (9)	अतिरिक्त (10)	अन्य नकद संदाय (संदाय का प्रकार उपदर्शित करें) (11)	कुल (12)
--	-------------------	---------------------	------------------	--	-------------

कटौती यदि कोई हो, (उपदर्शित करें) (13)	शुद्ध संदत रकम (14)	कर्मकार के हस्ताक्षर/अंगूठा निशान (15)	नियोजक या उसके प्रतिनिधि के आद्यक्षर (16)
---	------------------------	--	---

प्ररूप - XXIX

[देखिए नियम 88(1) (ख)(10)]

नुक्सान या हानि के लिए कटौती का रजिस्टर

उस स्थान का नाम और
पता जहां पर भवन या अन्य
सन्निर्माण कार्य किया गया है/
किया जाना है।

भवन कर्मकार का नाम
और स्थायी पता

नियोजक का नाम
और स्थायी पता

भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के प्रकार

क्रम संख्या	कार्य का नाम	पिता/पति का नाम	नियोजन का नाम/प्रकार	नुक्सान या हानि की विशिष्टियां	नुक्सान या हानि की तारीख	यदि भवन कर्मकार के विरुद्ध कटौती की जानी है तो कारण दर्शाएं
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)

उस व्यक्ति का नाम जिसकी उपस्थिति में भवन कर्मकार का स्पष्टीकरण सुना गया था	अधिशेषित कटौती की रकम	किस्तों की संख्या	वसूली की तारीख	
			प्रथम किस्त	अंतिम किस्त
(8)	(9)	(10)	(11)	(12)

प्ररूप - XXX

[देखिए नियम 88(1)(ख) , (10)]

उस स्थापना का नाम और
पता जहाँ पर भवन या अन्य
सन्निर्माण कार्य किया गया है/
किया जाना है।

स्थापन का नाम और स्थायी पता

भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य के प्रकार

नियोजक का नाम और स्थायी पता

क्रम सं.	भवन कर्मकार का नाम	पिता/पति का नाम	नियोजन का नाम/प्रकार	कार्य/चूक जिसके लिए जुर्माना अधिशोधित किया गया	अपराध की तारीख
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

यदि भवन कर्मकार के विरुद्ध जुर्माना किया गया है तो कारण बताएं	उस व्यक्ति का नाम जिसकी उपस्थिति में भवन कर्मकार का स्पष्टीकरण सुना गया था	मजदूरी कालावधि और संदेय मजदूरी	अधिशोधित जुर्माने की रकम	तारीख जिसको जुर्माना वसूल किया गया	टिप्पणियां
(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)

प्ररूप - XXXI

[देखिए नियम 88(1)(ख) (10)]

अग्रिमों का रजिस्टर

स्थापन का नाम और

स्थापन का नाम और स्थायी पता

पता जहां भवन निर्माण या अन्य

निर्माण कार्य किया जाता है/
किया जाना है।

भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य की प्रकृति

नियोजक का नाम और पता

क्रम संख्या	नाम	पिता/पति का नाम	नियोजन/पदाभिदान प्रकृति	मजदूरी की अवधि और संदेय मजदूरी	दिए गए अग्रिम की तारीख और रकम
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

प्रयोजन जिसके लिए अग्रिम दिया गया है	किस्तों की संख्या जिनमें अग्रिम का संदाय किया जाना है।	प्रति संदत्त प्रत्येक किस्त की तारीख और रकम	अन्तिम किस्त के प्रति संदाय की तारीख	टिप्पणियां
(7)	(8)	(9)	(10)	(11)

प्ररूप - XXXII

[देखिए नियम 88(1)(ग), (10)]

अतिकाल का रजिस्टर

स्थापन का नाम और पता

स्थापन का नाम

जहां भवन निर्माण या अन्य

और स्थायी पता

निर्माण कार्य किया जाता है/
किया जाना है।

क्रम संख्या	निर्माण कर्मकार का नाम	पिता/पति का नाम	लिंग	पदाभिदान/नियोजन की प्रकृति	जिस तारीख को अतिकाल किया गया
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

कुल अतिकाल किया गया या मात्रानुपाती दर की दशा में उत्पादन	सामान्य दर की मजदूरी	अतिकाल दर की मजदूरी	उपार्जित अतिकाल	तारीख जिसको अतिकाल मजदूरी दी गई	टिप्पणियां
(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)

प्ररूप -- XXXIII

[देखिए नियम 88(2)(क)]

मजदूरी पुस्तिका

नियोजक का नाम और पता

स्थापन का नाम और स्थायी पता

स्थापन का नाम और पता जहां

भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य की प्रकृति

भवन निर्माण या अन्य निर्माण कार्य किया जाना है।

सप्ताह/पाक्षिक/माह.....तक के लिए

1. दिनों की संख्या जब तक कार्य किया
.....
2. मात्रानुपाति दर के कर्मकारों की दशा में कार्य
की गई इकाईयों की संख्या
.....
3. दैनिक दर/मासिक मजदूरी/
मात्रानुपाति दर
.....
4. अतिकाल मजदूरी की रकम
.....
5. दी जाने वाली सकल मजदूरी
.....
6. निम्नलिखित कटौतियां, यदि कोई हों, के कारण :-
(क) जुर्माना
(ख) नुकसान या हानि
(ग) ऋण और उधार
(घ) भविष्य निधि के लिए अभिदान
(ङ) भवन निर्माण कर्मकारों के कल्याण की निधि के लिए अभिदान
(च) अन्य कटौतियां जैसे सहकारी सोसाइटी के लिए अभिदान या सहकारी सोसाइटी / आवास ऋण से उधार लेखा/मजदूरी संदाय अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (2) के खंड (त) के उपबंध के अनुसार कोई अन्य राहत निधि में अंशदान या किसी अन्य एल.आई.सी. के प्रीमियम के संदाय के लिये
7. शुद्ध रकम की दी गई मजदूरी

नियोजक या उसके प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

प्ररूप - XXXIV

[देखिए नियम 88(2)(ख)]

सेवा प्रमाणपत्र

स्थापन का नाम और स्थाई पता नाम और पता/वह स्थान जहां निर्माण या अन्य निर्माण कार्य किया जाता है/किया जाना है।

कार्य की प्रकृति और स्थान

कर्मकार का नाम और पता

आयु या जन्म की तारीख

पहचान चिह्न

पिता/पति का नाम

क्रम संख्या	नियोजन की कुल अवधि से तक		किए गए कार्य की प्रकृति	मजदूरी की दरें (मात्रानुपाति कार्य) की दशा में (यूनिट की विशिष्टियां)	यदि भवन निर्माण का कर्मकार हिताधिकारी था तो उसका रजिस्ट्रीकरण संख्या, तारीख और बोर्ड का नाम
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

पर्यवसित नियोजन के कारण/आधार	टिप्पणियां
(7)	(8)

हस्ताक्षर

प्रारूप -XXXV

[देखिए नियम 89]

रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को दी जाने वाली नियोजक की वार्षिक विवरणी

31 दिसम्बर को समाप्त होने वाला वर्ष

1. स्थापन का पूरा नाम और पूरा पता जहां भवन निर्माण और अन्य कार्य किया जाना है
(स्थान, डाकघर, जिला)
2. स्थापन का नाम और स्थाई पता
3. नियोजक का नाम और पता
4. किये जा रहे भवन निर्माण और अन्य निर्माण कार्य की प्रकृति
5. स्थापन के पर्यवेक्षण और नियंत्रण के उत्तरदायी प्रबंधक या किसी अन्य व्यक्ति का पूरा नाम
6. मामूली तौर से नियोजित भवन निर्माण कर्मकार की संख्या
7. वर्ष के दौरान कुल दिनों की संख्या जिसमें भवन निर्माण कर्मकार नियोजित थे
8. वर्ष के दौरान कुल कार्य के दिनों की संख्या जिनमें भवन निर्माण कर्मकारों ने काम किया
9. वर्ष के दौरान किसी अन्य दिन नियोजित अधिकतम भवन निर्माण कर्मकारों की संख्या
10. नीचे दी गई वर्ष के दौरान हुई दुर्घटनाओं की संख्या :-
(क) कुल दुर्घटनाओं की संख्या
(ख) ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या जिनके परिणामस्वरूप 48 घंटों से कम समय के लिए भवन निर्माण कर्मकार शारीरिक रूप से अशक्त हो गए हैं, दुर्घटनाग्रस्त भवन निर्माण कर्मकारों की संख्या तथा नष्ट कार्य दिवसों की संख्या
(ग) ऐसी दुर्घटनाओं की संख्या जिनके परिणामस्वरूप 48 घंटों से अधिक समय के लिए भवन निर्माण कर्मकार शारीरिक रूप से अशक्त हो गए हैं परन्तु ऐसी अशक्तता न तो आंशिक है और न पूर्ण रूप से स्थाई है, दुर्घटनाग्रस्त भवन निर्माण कर्मकारों की संख्या तथा ऐसी हुई दुर्घटनाओं के कारण से नष्ट हुए कार्य दिवसों की संख्या
(घ) ऐसी दुर्घटना की संख्या जिनके परिणामस्वरूप स्थाई, आंशिक अथवा पूर्वअशक्तता हुई दुर्घटनाग्रस्त कर्मकारों की संख्या और ऐसी दुर्घटनाओं के कारण नष्ट हुए कार्य दिवसों की संख्या;
(ङ) दुर्घटनाओं की संख्या जिन के कारण भवन कर्मकारों की मृत्यु हुई तथा परिणामित मृत्यु संख्या अधिनियम के अधीन राज्य सरकार द्वारा नियुक्त मुख्य निरीक्षक या निरीक्षक अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत स्थापन के स्वामियों को यह निदेश देगा कि वह संबद्ध राज्य सरकार या समुचित सरकार की बाबत इस अधिनियम की धारा 60 के उपबंधों के आधार पर रजिस्ट्रीकृत स्थापनाओं के नियोजकों द्वारा प्रस्तुत की गई वार्षिक विवरणियों की प्रतियां मुख्य निरीक्षण को भेजें।
इस अधिनियम के अधीन राज्य सरकार द्वारा नियुक्त मुख्य निरीक्षक या निरीक्षक ऐसे स्थापन के स्वामियों को, जो कि इस अधिनियम की धारा 60 के उपबंधों के आधार पर संबद्ध राज्य सरकार द्वारा नियुक्त रजिस्ट्रीकृत आफिसर द्वारा रजिस्ट्रीकृत किए गए, निदेश देगा कि वे अपनी वार्षिक विवरणियों की प्रतियां मुख्य निरीक्षक को भेजें।
11. स्थापन के प्रबंधन में, उसके स्थान या किसी अन्य में यदि तबदीली करनी है तो उसकी विशिष्टियों रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन में जिसमें तारीखें भी उपदर्शित हों, रजिस्ट्रीकरण आफिसर को देनी होगी।

स्थान :
तारीख :

नियोजक

प्ररूप - XXXVI

(देखिए नियम 111 (ग))

चिकित्सीय परीक्षा का प्रमाणपत्र

1. प्रमाण पत्र क्रम सं० तारीख तारीख

2. नाम

पहचान चिह्न (1)

(2)

3. पिता का नाम

4. लिंग

5. निवास पुत्र / पुत्री

5. जन्म की तारीख, यदि उपलब्ध हो

और/या आयु प्रमाण पत्र

6. शारीरिक स्वस्थता

मैं प्रमाणित करता हूँ (नाम) पुत्र/पुत्री/पत्नी जो
 का निवासी है जिसका परीक्षण मैंने व्यक्तिगत रूप से किया मेरे परीक्षण से उसकी आयु यथाशक्य निकटतम वर्ष अभिनिश्चित की
 जानी है और वह भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य में नियोजित होने की इच्छुक है और वह वयस्क/किशोर है जो में
 नियोजन के लिए उपयुक्त है।

7. कारण के लिए:-

(1) इन्कार करने के प्रमाण पत्र

(2) प्रतिसहत करने का प्रमाण पत्र

भवन कर्मकार के हस्ताक्षर/

बाएं हाथ के अंगूठे का निशान

चिकित्सीय निरीक्षक/ मुख्य चिकित्सा अधिकारी

के हस्ताक्षर मोहर सहित

टिप्पण - 1. शारीरिक निःशक्तता के कारण यथावत ब्यौरे स्पष्ट तौर पर विवरणित किए जाएं।

2. यदि निःशक्तता विवरण दिया गया है तो क्रियात्मक/उत्पादन कार्य योग्यताओं का भी विवरण दिया जाएगा।

प्ररूप - XXXVII

[देखिए नियम 111 (घ)]

स्वास्थ्य रजिस्टर

(भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य में नियोजित व्यक्तियों की बाबत जिसमें जोखिम वाली प्रक्रियाएं अंतर्ग्रस्त हैं) सन्निर्माण चिकित्सा/चिकित्सीय का नाम

(क) श्रीतारीखसेतक

(ख) श्रीतारीखसेतक

(ग) श्रीतारीखसेतक

क्रम संख्यां	संकर्म संख्यां	भवन कर्मकार का नाम	लिंग	आयु (जन्म की अंतिम तारीख को)	वर्तमान कार्य के नियोजन की तारीख	दूसरे कार्य पर चले जाने या स्थानांतरण की तारीख
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)

स्थानांतरण पर चले जाने या सेवोन्मुक्त करने का कारण	कार्य या उपजीविका की प्रकृति	कच्ची सामग्री या उप-उत्पाद को हाथ से उपयोग करना	प्रमाणकर्ता सर्जन चिकित्सीय निरीक्षक/मुख्य चिकित्सीय अधिकारी द्वारा चिकित्सीय परीक्षण की तारीख
(8)	(9)	(10)	(11)

चिकित्सीय परीक्षण का परिणाम	यदि कार्य से निलंबित हो तो विस्तृत कारणों सहित निलंबन अवस्था की अवधि	चिकित्सीय निरीक्षक मुख्य चिकित्सा अधिकारी के हस्ताक्षर सहित अपनी ड्यूटी पर फिर से वापस आने को उपयुक्त प्रमाणित किए गए	यदि कर्मकार को अनुपयुक्ता या निलंबन जारी किया गया है तो उसका प्रमाणपत्र
(12)	(13)	(14)	(15)

तारीख :- चिकित्सीय निरीक्षक/मुख्य चिकित्सा अधिकारी के हस्ताक्षर सहित

टिप्पण- (i) स्तंभ (8)- स्थानांतरण या सेवोन्मुक्त के लिए कारण ब्यौरेवार संक्षिप्त में विवरणित किए जाएं।

(iii) स्तंभ (12)- उपयुक्त/अनुपयुक्त/निलंबित के रूप में उल्लिखित किए जाएं।

प्ररूप - XXXVIII

[देखिए नियम 118 (क)]

विषाक्तता या उपजीविका जन्य अधिसूचनीय रोगों की सूचना

1. नियोजक का नाम और पता:
2. भवन कर्मकार का नाम और उसकी कार्य संख्या, यदि कोई हो;
3. भवन कर्मकार का पता
4. लिंग और आयु;
5. उपजीविका;
6. ठीक ठीक बताएं कि रोग लगने के समय मरीज क्या कर रहा था;
7. उस विषाक्तता या रोग की प्रकृति जिससे भवन कर्मकार पीड़ित है;

तारीख :

नियोजक/मुख्य चिकित्सा
अधिकारी के हस्ताक्षर

टिप्पणी : जब कोई भवन कर्मकार अनुसूची XII में विनिर्दिष्ट किसी रोग से पीड़ित है तब ऐसी सूचना तत्काल मुख्य निरीक्षक को भेजे।

प्ररूप - XXXIX

[देखिए नियम 136 (ख)]

तापानुशीलन से उत्थापक गियर का सम्पूर्ण दार्षिक परीक्षा से छूट प्राप्त का प्रमाणपत्र

(क) सन्निर्माण स्थल का नाम जहां पर उत्थापक गियर फिट/अवस्थिति/स्थापित किए गए हैं ;

अलग-अलग संस्था या विहन	गियर का वर्णन	आरंभिक और कालिक जांच और परीक्षण के प्रमाणपत्र की संख्या	टिप्पणीयां	जांच और परीक्षण करने वाली लोक सेवा, सहयोजन, कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापन का नाम और पता	लोक सेवा, सहयोजन, कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापन में सक्षम व्यक्ति का नाम और पद
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)

मैं प्रमाणित करता हू कि वर्ष की तारीख की, स्तंभ (2) में वर्णित उपरोक्त गियर की पूर्ण रूप से परीक्षण की गई है और यह कि इसमें स्तंभ (4) में उपदर्शित त्रुटियों से भिन्न इसके सुरक्षा कार्यकरण शर्त को प्रभावी करने वाली कोई अन्य त्रुटि नहीं मिली।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

सक्षम व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

मोहर

तारीख

प्ररूप - XL

[देखिए नियम 13(घ) और 140(ख) (ii)]

लूज गियर की प्रारंभिक और कालिक जांच तथा परीक्षण का प्रमाणपत्र

जांच प्रमाणपत्र संख्या

(क) सन्निर्माण स्थल का नाम जहां पर लूज गियर फिट किए गए/अवस्थित/स्थापित है,-

अलग अलग संख्या या चिह्न	गियर/युक्ति का वर्णन, आकार और सामग्री	जांच संस्था	जांच की तारीख	अनुप्रयुक्त जांच भार (टन)	सुरक्षा कार्यकरण भार (सु.का.भा.) (टन)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
विनिर्माता या प्रदायकर्ता का नाम और पता	प्रारंभिक जांच और परीक्षण प्रमाणपत्र सं. और तारीख (केवल कालिक जांच और परीक्षण की बाबत)	जांच और परीक्षण करने वाले लोक सेवा, सहयोजन कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापन का नाम और पता	लोक सेवा, सहयोजन, कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापन में सक्षम व्यक्ति का नाम और पद		
(7)	(8)	(9)	(10)		

मैं प्रमाणित करता हूँ कि वर्ष की तारीख को उपरोक्त गियर की जांच की गई थी और दूसरी ओर दी गई रीति से परीक्षण की गई उक्त गियर/युक्ति की परीक्षण ने यह दर्शाया कि इसमें बगैर किसी हानि अथवा विरूपता के जांच भार को सहन कर लिया है और उक्त गियर/युक्ति के सुरक्षा कार्यकरण भार को स्तंभ (6) में प्रदर्शित किया गया है।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

मोहर

तारीख

सक्षम व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

प्ररूप - XLI

[देखिए नियम 140(क)]

भाग - I

उत्थापक यंत्रों की आरंभिक और कालिक भार की जांच तथा उनका संपूर्ण वार्षिकी परीक्षण "संपूर्ण परीक्षण" से अभिप्रेत है चाक्षुण परीक्षा और यदि आवश्यक हो तो उसके अनुपरक के लिए किसी अन्य साधनों के द्वारा जैसे हथोड़ा परीक्षण जो कि यदि परिस्थितियां अनुज्ञात करें उसे सावधानीपूर्वक किया जाए, इसलिए कि मांगों की सुरक्षा का परीक्षण करके एक विश्वसनीय निष्कर्ष निकल सके, और यदि जरूरत हो तो ऐसे परीक्षण के लिए उत्थापक यंत्रों और गियर को खोल दिया जाए।

(क) उत्थापक यंत्र की आरंभिक और कालिक भार की जांच					
क्रम संख्या	जांच किए गए उत्थापक यंत्रों की अवस्थिति और वर्णन उसके साथ सुभेदन चिह्न यदि कोई हो	जांच का प्रमाणपत्र और सक्षम व्यक्ति के परीक्षण का संख्यांक	मैं प्रमाणित करता हूँ कि उस तारीख से जिसको मेरे हस्ताक्षर हुए हैं स्तंभ (1) में दर्शाया उत्थापक यंत्र की जांच हो गई थी और इसमें कोई खराबियां नहीं पाई गईं जोकि दर्शाई गई स्तंभ (5) से भिन्न उसके ठीक चलने की परिस्थिति पर प्रभाव डालती हों मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	टिप्पणियां (तारीख के साथ हस्ताक्षर किए हुए)
1	2	3	4	5	
1.					
2.					

(ख) सम्पूर्ण वार्षिक परीक्षण

मैं प्रमाणित करता हूँ कि उस तारीख से जिसको मेरे हस्ताक्षर हुए हैं स्तंभ (1) में दर्शाया उत्पापक यंत्र का सम्पूर्ण परीक्षण हो गया है और इसमें कोई खराबियाँ नहीं पाई गई जो कि दर्शाई गई स्तम्भ (12) से भिन्न उसके ठीक चलने की परिस्थिति पर प्रभाव डालती हों।

मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मोहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर
6	7	8	9	10	11	12

टिप्पणी :- यदि उत्पापक यंत्रों का सम्पूर्ण परीक्षण उसी तारीख को हो जाता है तो वे "सब उत्पापक यंत्रों" के स्तम्भ (1) में प्रविष्ट करने के लिए पर्याप्त है। यदि नहीं, तो वे उन तारीखों को स्पष्ट तौर पर उपदर्शित करें जिन पर उनका सम्पूर्ण परीक्षण किया गया है।

भाग -11

लूज गियर का आरंभिक और आवधिक भार परीक्षण और संपूर्ण वार्षिक परीक्षा

लूज गियर की सूची :-

लूज गियर की निम्नलिखित श्रेणियाँ हैं, अर्थात् :-

1. कुटनीय ढलवाँ लोहे से बनी चेनें ;
2. प्लेट से जुड़ी चेनें ;
3. इस्पात से बनी चेनें, रिंगें, हुक, कुन्डे और चूलछल्ला ;
4. पिच्छ चेनें ;
5. पिच्छ चेनें, पुली ब्लाक, आधीन स्प्रेअर्स, ट्रेज, स्लिंग, बास्केट आदि और वैसी ही कोई अन्य गियर के साथ स्थायी रूप से जुड़ी रिंगे हुक, कुन्डे और चूलछल्ले ;
6. स्कू थ्रेड वाले हुक और चूलछल्ले या बाल बियरिंग या अन्य केस हार्डन्टड पुर्ज ; और
7. वार्डो संयोजन

लूज गियरों का आरंभिक और आवधिक भार परीक्षण

सुमेक्षक संख्या या चिन्ह	परीक्षण और जांच किए गए लूज गियर का वर्णन	परीक्षण के प्रमाणपत्रों की संख्या और सक्षम व्यक्ति की जांच	मैं प्रमाणित करता हूँ कि उस तारीख को जिसको मेरे हस्ताक्षर उपाबद्ध किए गए हैं, स्तंभ (1) और (2) में दर्शित गियरों का परीक्षण किया गया था और उसमें स्तम्भ (6) में दर्शित के सिवाय, सुरक्षित कार्यकरण दशा को प्रभावित करने वाली कोई त्रुटियाँ नहीं हैं	
			मुहर सहित तारीख और हस्ताक्षर	मुहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

लूज गियर की वार्षिक सम्पूर्ण परीक्षा

टिप्पणियां (हस्ताक्षरित करना और तारीख के साथ)	मैं प्रमाणित करता हूँ कि उस तारीख को जिसको मैंने अपने हस्ताक्षर किए हैं, स्तम्भ (1) और स्तम्भ (2) में दर्शित लूज गियरों की मेरे द्वारा सम्पूर्णतः परीक्षा ली गई थी और उनके सुरक्षित कार्यकरण की दशा को प्रभावित करने वाली कोई त्रुटियाँ, सिवाय उनके जो स्तम्भ (10) में दर्शाई गई हैं, नहीं पाई गई थी			
	तारीख और मुद्रा सहित हस्ताक्षर	तारीख और मुद्रा सहित हस्ताक्षर	तारीख और मुद्रा सहित हस्ताक्षर	तारीख और मुद्रा सहित हस्ताक्षर
(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

भाग - III

चेनो, रिंगों, हुकों, कुडियां और चूलछल्लों (सिवाय उनके जिन्हें छूट प्राप्त है) का तापानुशीलन

(भाग - II देखिए)

सामान्य उपयोग में 12.5 मि. मी. वाले और इससे छोटे चेन, रिंगे, हुकों, कुडियां और चूल छल्ले	यदि विद्युत चलित उत्थापक साधित्र के साथ प्रयुक्त किया जाता है, तो प्रत्येक छह मास में कम से कम एक बार अवश्य तापानुशीलित किया जाना चाहिए।
उपयोग में अन्य चेन, रिंगे, हुकों, कुडियां और चूलछल्ले	यदि केवल हाथ से पकड़ कर उत्थापक साधित्र के साथ प्रयुक्त किया जाता है तो प्रत्येक बारह मास में कम से कम एक बार अवश्य तापानुशीलित किया जाना चाहिए।
	यदि विद्युत चलित उत्थापक साधित्र के साथ प्रयुक्त किया जाता है, तो प्रत्येक बारह मास में कम से कम एक बार अवश्य तापानुशीलित किया जाना चाहिए।
	यदि हाथ से पकड़ कर उत्थापक साधित्र के साथ प्रयुक्त किया जाता है तो प्रत्येक दो वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य तापानुशीलित किया जाना चाहिए।

टिप्पणी : यद्यपि नियमों द्वारा उपेक्षित नहीं है, यह सिफारिश की जाती है कि 30 मि. और 60 मिनट की अवधि तक 1100 डिग्री और 1300 डिग्री फारेनहाइट या 600 डिग्री और 700 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच तापमान को उचित रूप से किसी स्प्रिमीतित तापित फरनेस में तापानुशीलित किया जाना चाहिए।

सुमेक्षक संख्या या चिन्ह	तापानुशीलित गियर का वर्णन	प्रमाण पत्र की संख्या या परीक्षण और जांच	मैं प्रमाणित करता हूँ कि उस तारीख को, जिस को मेरे हस्ताक्षर उपाबद्ध किये गये हैं, स्तम्भ (1) स्तम्भ (2) में वर्णित गियर मेरे पर्यवेक्षण के अधीन प्रभावकारी रीति से तापानुशीलित या उसके पश्चात् इस प्रकार तापानुशीलित किये जा रहे प्रत्येक वस्तु की सावधानीपूर्वक जांच कर ली गई थी और स्तम्भ (7) दर्शित के सिवाय उसके सुरक्षित कार्यकरण दशा को प्रभावित करने वाली त्रुटियाँ नहीं थी	टिप्पणियां (हस्ताक्षर और तारीख)		
			मुहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मुहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	मुहर के साथ तारीख और हस्ताक्षर	
1	2	3	4	5	6	7

प्ररूप - XLII

[देखिये नियम 140(ख) (i) (क) अनुबंध-I]

जांच प्रमाण पत्र सं.

(क) निर्माण स्थल की दशा में, उस निर्माण स्थल का नाम जहां उत्पापक साधित्र फिट/अवस्थित/स्थापित है ;

सुभेदक संख्यांक का चिन्ह (यदि कोई है) वाले उन उत्पापक का साधित्रों और गियर का स्थान और विवरण, जिनकी जांच और पूर्ण रूप से परीक्षण किया गया है	हैरिक बूम के क्षेतिज के साथ वह कोण जिस पर जांच भार लगाया गया	लगाया गया जांच भार	खाना (2) में दिखाए गए कोण पर निरापद कार्यकरण भार	जांच और परीक्षण करने वाली लोक सेवा, सहयोजन कंपनी या फर्म या जांचकर्ता स्थापन का नाम और पता	लोक सेवा, सहयोजन कंपनी या फर्म या जांचकर्ता स्थापन के सक्षम व्यक्ति का नाम और पद
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
	(डिग्री)	(टन)	(टन)		

मैं यह सत्यापित करता हूँ कि खाना (1) में दर्शाए उत्पापक साधित्र को इसके आवश्यक गियर के साथ तारीख को पीछे वर्णित रीति के अनुसार मेरी उपस्थिति में जांच की गई, और यह कि उक्त उत्पापक साधित्र के सावधानीपूर्वक किये गये परीक्षण के पश्चात् की गई जांच ने यह दर्शाया कि इसने बिना किसी हानि; या स्थायी विरूपता के जांच भार का सहन कर लिया है और उक्त उत्पापक साधित्र और उपसाधन गियर का निरापद कार्यकरण भार खाना (4) में दर्शाया गया है।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

तारीख

मुद्रा

सक्षम व्यक्ति के रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

प्ररूप - XLIII

[देखें नियम 140 (बी0) (i)/(बी0)]

क्रेनों या उत्तोलकों और उनके उपसाधन गियर की प्रारंभिक और कालिक जांच तथा परीक्षण का प्रमाणपत्र

जांच प्रमाणपत्र संख्या

(क) सन्निर्माण स्थल का नाम जहां पर क्रेन या उत्तोलक फिट/अवस्थित/स्थापित किये गये हैं :

अवस्थिति और वर्णन	जिब क्रेन के लिए अर्द्धव्यास पर जांच भार अनुप्रयुक्त हुआ था	अनुप्रयुक्त जांच भार	जिब क्रेन के लिए सुरक्षा कार्यकरण भार खाना (2) में दर्शाए गए अर्द्धव्यास पर है	जांच और परीक्षण करने वाले लोक सेवा, सहयोजन या फर्म अथवा जांच स्थापना का नाम और पता	लोक सेवा, सहयोजन कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापना के सक्षम व्यक्ति का नाम और पद
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
	(मीटर)	(टन)	(टन)		

मैं प्रमाणित करता हूँ कि की तारीख को उपरोक्त उत्पादक साधित्रों की इसके उत्पादन गियर के साथ, दूसरी ओर दी गई रीति से जांच की गई जांच के पश्चात् उत्पादक साधित्र और गियर की सावधानी पूर्वक परीक्षण ने यह दर्शाया कि इसमें बगैर किसी हानि या स्थायी विरूपता के जांच भार को सहन कर लिया है और उक्त उत्पादक साधित्र तथा गियर के सुरक्षा कार्यकरण भार को खाना (4) में दर्शाया गया है।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

मोहर

दिनांक

(टिप्पणी 3 देखिए)

सक्षम व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

प्रारूप - XLIV

[देखिए नियम 140 (ख) (iii)]

उपयोग में लाए जाने से पूर्व वायर रोप के जांच और परीक्षण का प्रमाणपत्र

जांच प्रमाणपत्र संख्या

- (1) निष्पादन या प्रदायकर्ता का नाम और पता :
- (2) (क) परिधि/व्यास या रोप
 - (ख) उत्कूलन की संख्या
 - (ग) प्रत्येक उत्कूलन वायर की संख्या
 - (घ) ले (बटन)
 - (ङ) कोर (कोड)
- (3) वायर की क्वालिटी (सर्वोत्तम प्लाउ स्टील इत्यादि)
- (4) (क) रोप के नमूने की जांच की तारीख
 - (ख) वह भार जिस पर टूटे-फूटे नमूने (टनों में)
 - (ग) रोप की सुरक्षा कार्यकरण भार (टनों में)
 - (घ) आशयित उपयोग
- (5) जांच और परीक्षण करने वाले लोक सेवा, सहयोजन, कम्पनी या फर्म अथवा जांच स्थापन का नाम और पता।
- (6) जांच और परीक्षण करने वाले लोक सेवा, सहयोजन, कम्पनी या फर्म अथवा जांच स्थापन में सक्षम व्यक्ति का नाम और पद।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विशिष्टियाँ सही हैं और यह कि जांच परीक्षण मेरे जांच किए गए और इसमें ऐसी कोई त्रुटि नहीं मिली जिसमें उसका सुरक्षा कार्यकरण भार (सु.का.भा.) प्रभावित हो।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

मोहर

तारीख

सक्षम व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

प्ररूप - XLV

[देखिए नियम 140 (ख) (IV)]

उत्थापक गियर के तापानुशील का प्रमाणपत्र

जांच प्रमाणपत्र संख्या.....

(क) सन्निर्माण स्थल का नाम जहां पर उत्थापक गियर फिट/अवस्थिति/स्थापित किए गए हैं:

अलग-अलग संख्या	गियर का वर्णन	जांच और परीक्षण का प्रमाण पत्र सं.	तापानुशीलता संख्या	तापानुशीलन की तारीख	तापानुशीलन के पश्चात सावधानी पूर्वक निरीक्षण करने पर पाई गई त्रुटियां
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
तापानुशीलन और निरीक्षण किए जाने वाले लोक सेवा, सहयोजन कंपनी या फार्म अथवा जांच स्थापन का नाम और पता			लोक सेवा, सहयोजन, कंपनी या फर्म अथवा जांच स्थापन में सक्षम व्यक्ति का नाम और पद		
(7)			(8)		

मैं प्रमाणित करता हूँ कि स्तंभ (1) से (4) में वर्णित गियर स्तंभ (5) में दर्शाई गई तारीख को, मेरे पर्यवेक्षण के अधीन प्रभावी तौर पर तापानुशीलता की गई थी और यह कि इस प्रकार तापानुशीलन के पश्चात्, प्रत्येक वस्तु का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया गया और यह इसमें स्तंभ (6) में उपदर्शित त्रुटियों से भिन्न इसके सुरक्षा कार्यकरण शर्त को प्रभावी करने वाली कोई अन्य त्रुटि नहीं मिली।

सक्षम व्यक्ति के हस्ताक्षर

सक्षम व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण/प्राधिकरण संख्या

मोहर

प्ररूप - XLVI

[देखिए नियम 276 (7)]

दुर्घटनाओं और भयंकर घटनाओं की रिपोर्ट

1. परियोजना/कार्य का नाम

2. परियोजना/कार्य का स्थान

3. सन्निर्माण कार्य का प्रक्रम

4. नियोजक की विशिष्टियां

क. फर्म/कंपनी का मुख्य सविदाकार

(ख) उप सविदाकार की विशिष्टियां

नाम

नाम

पता

पता

फोन

फोन

व्यवसाय की प्रकृति

व्यवसाय की प्रकृति

5. क्षतिग्रस्त व्यक्ति की विशिष्टियां :

- | | | | |
|--|---------|---------|---------|
| (क) नाम | (प्रथम) | (मध्यम) | (उपनाम) |
| (ख) घर का पता | | | |
| (ग) उपजीविका | | | |
| (घ) कर्मकार की हैसियत नैमित्तिक नियमित | | | |
| (ङ) लिंग : पुरुष/स्त्री | | | |
| (च) आयु | | | |
| (छ) अनुभव | | | |
| (ज) वैवाहिक स्थिति: विवाहित/अविवाहित / विवाह-विच्छेद | | | |

6. दुर्घटना की विशिष्टियां:

- (क) वास्तविक स्थान जहां पर दुर्घटना हुई थी।
- (ख) तारीख
- (ग) समय
- (घ) क्या क्षतिग्रस्त व्यक्ति दुर्घटना के समय काम कर रहा था?
- (ङ) मौसम की हालत
- (च) इस विशिष्ट कार्य के लिए आप कितनी अवधि तक नियोजित थे?
- (छ) ऐसी विशिष्ट जिसमें उपस्कर/मशीन/औजार अंतर्ग्रस्त है दुर्घटना घटित होने के पश्चात् उसकी स्थिति वैसी ही हैं।
- (ज) दुर्घटना का संक्षिप्त विवरण

7. क्षतियों की प्रकृति

- (क) घातक
- (ख) अघातक
- (ग) यदि अघातक हो तो क्षतियों की प्रकृति का प्रमिततः (क्षति की प्रकृति के ब्यौरे का वर्णन, उदाहरणार्थ दाहिने अंग का भंग, मोच आदि)
- (घ) प्राथमिक उपचार: किया गया: नहीं किया गया:
- (ङ) यदि नहीं किया गया तो उसका कारण बताएं ?
- (च) ऐसे व्यक्ति का नाम और पदनाम जिसके द्वारा उपचार किया गया था;
- (छ) क्या अस्पताल में भर्ती है;
- उस अस्पताल का नाम;
- उस अस्पताल का पता;
- फोन नं. चिकित्सक का नाम;

8. उपयोग किए गए परिवहन का प्रकार

एम्बुलेंस ट्रक टेम्पो टैक्सी प्राइवेट कार

9. क. क्षतिग्रस्त व्यक्ति को हटाने में कितना समय लगा था? यदि बहुत विलंब हुआ तो उसके कारण बताएं।

ख. किस प्रकार रिपोर्ट की थी।

टेलीफोन से टेलीग्राम से विशेष संदेशवाहक से पत्र से

ग. दुर्घटना स्थल का पहली बार किसने निरीक्षण किया और उसके द्वारा क्या कार्यवाही प्रस्तावित की गई थी।

घ. नियोजक द्वारा दुर्घटना के अन्वेषण के लिए क्या कार्यवाही की जा रही है? (फोटोग्राफ/वीडियो फिल्म/दिए गए माप इत्यादि, के बारे में वर्णन करें)

10. साक्ष्य देने वाले व्यक्तियों की विशिष्टियां:

क. नाम	पता	उपजीविका
1.		
2.		
3.		
4.		

ख. क्या	अस्थायी	स्थायी
---------	---------	--------

11. प्राणांतक की दशा में विशिष्टियां:

तारीख	समय
-------	-----

यदि वह रजिस्टर्ड है तो भवन और अन्य सन्निर्माण
कर्मकार कल्याण बोर्ड का पंजीकृत संख्या दें।

12. विनियम संख्या के अन्तर्गत आने वाली खतरनाक घटनाएं (ब्यौरे दें):

- क. उत्थापक साधित्रों, उत्तोलक, प्रवहणियों आदि के बैठ जाने या फेल हो जाने।
- ख. मिट्टी, कोई दीवार, फर्श, गैलरी आदि के बैठ जाने या धंस जाने।
- ग. पारेषण टावरों, पाइपलाइनों, पुलों आदि के बैठ जाने।
- घ. रिसीवर, जलयान आदि का विस्फोट।
- ङ. अग्नि और विस्फोट।
- च. परिसंकटमय उपादानों को छलकन या रिसन।
- छ. परिवहन उपस्कर के बैठ जाने, उलट जाने, गिर पड़ने या टकराने।
- ज. सन्निर्माण स्थान पर हानिप्रद विषैली गैसों के रिसन या निर्मोचन।
- झ. उत्थापक साधित्र, लूज गियर, उत्तोलक या भवन और अन्य सन्निर्माण कार्य की तंत्र, परिवहन, उपस्कर आदि के फेल हो जाने।

13. नियोजक या प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता से प्रमाणपत्र।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि मेरी सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विशिष्टियां सभी प्रकार से सही हैं।

टिप्पणी:—यदि एक से अधिक व्यक्ति अंतर्बलित हैं तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए जानकारी पृथक प्ररूपों में दी जानी है।

प्रमिला ईसर,
वित्तायुक्त एवं प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
श्रम और रोजगार विभाग।